पोथी साहेब




















सन्त मीता दास जी की परम्परा के सन्तों की वाणी का संकलन

सम्पादक

डॉ० चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित 'ललित'

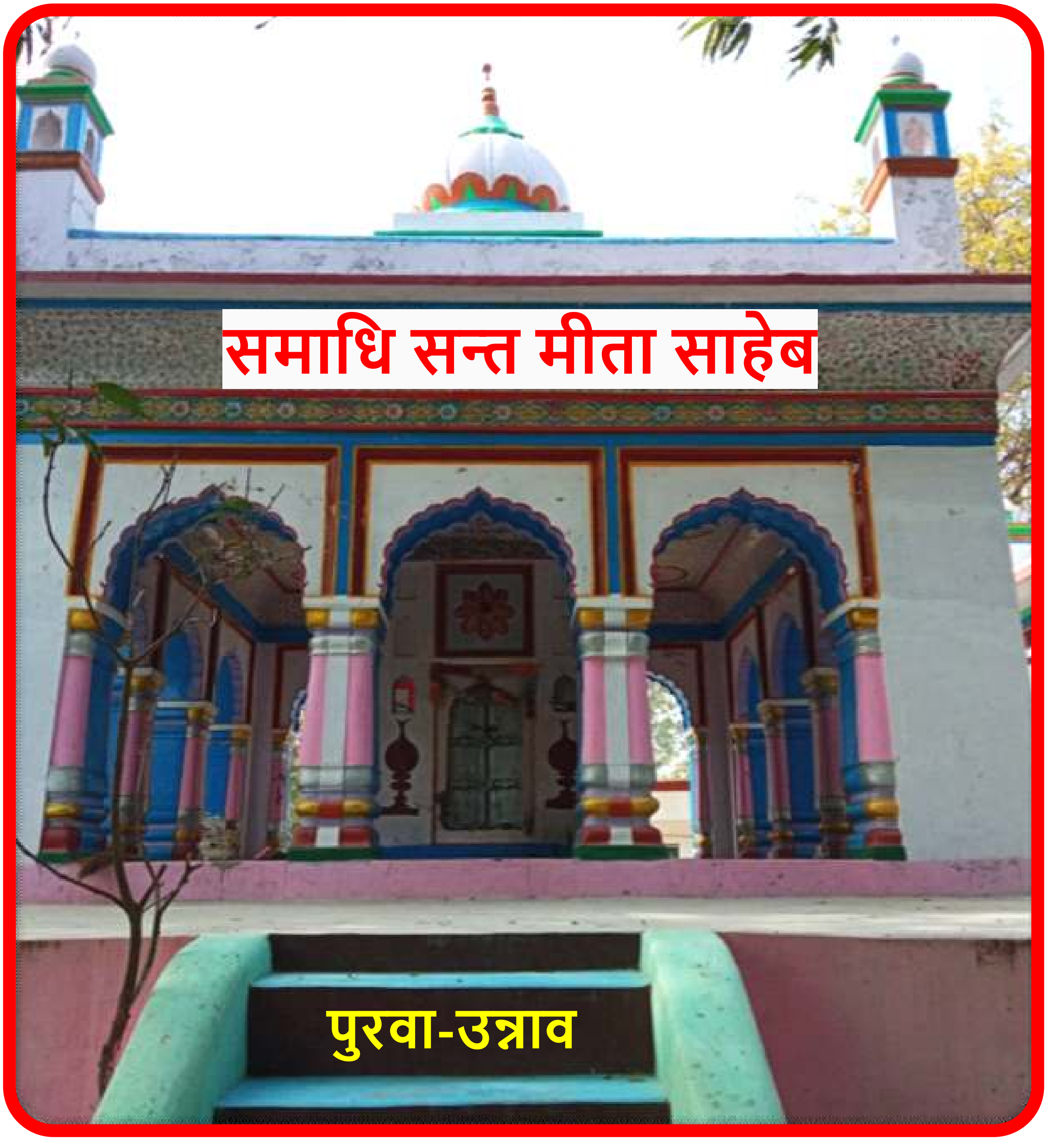
डी० लिट० (हिन्दी)

प्रकाशक एवं संकलन कर्ता

ठा० मदन सिंह

संचालक- समाधि सन्त मीता साहेब

चन्द दास साहित्य शोध संस्थान, बाँदा


समाधि सन्त मीता साहेब
पुरवा-उन्नाव

ब्रम्हलीन मुख्यग्रन्थी



सन्त गुरुनारायण कुशवाहा जी को सादर समर्पित

पोथी साहेब

सन्त मीता दास की परम्परा के सन्तों की वाणी का संकलन

सम्पादक

डॉ० चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित 'ललित'

डी० लिट० (हिन्दी)

प्रकाशक एवं संकलन कर्ता

ठा० मदन सिंह

संचालक- समाधि सन्त मीता साहेब

चन्द दास साहित्य शोध संस्थान, बाँदा

POTHI SAHEB

A collection of Saints' speech of Sant Meetadas' tradition

Edited by: Dr. Chandrika Prasad Dixit 'Lalit'
Publisher&Compilator: Sushil Kumar Singh{Madan Singh}
Cover Page & Decorator: Vivek Singh {B.Sc.(Maths)}
Edition: First
Publication year: 2022
Price: 500/-

Chanddas Literary Research Institute
Civil Lines, Banda (Uttar Pradesh)
E-mail : chanddasresearchinstituteup@gmail.com
ISBN : 978-93-5627-017-6

Printed at : Diamond Press, Lucknow Mob. : 9335815929

शुभकामना संदेश



मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि महान निर्गुण सन्त मीता दास जी की परम्परा के सन्तों के वाणी-वचन का संकलन "पोथी साहेब" के रूप में प्रकाशित होने जा रहा है।

मुझे विश्वास है कि यह अद्वितीय निर्गुण वाणी जगत के आध्यात्म-प्रेमियों एवं निर्गुण उपासकों को आत्म-साक्षात्कार की सच्ची राह दिखाएगी। सामाजिक बुराइयों पर कुठाराघात करते हुए आपसी प्रेम भाईचारा एवं सौहार्द करेगी और मानव समाज के लिए कल्याणकारी सिद्ध होगी।

"पोथी साहेब" की सफलता के लिए शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।



डॉ० सी० एल० सोनकर
डी० लिट्० (प्र.)

सम्पादकीय



उत्तर भारत की सन्त परम्परा के कबीर के परवर्ती किन्तु कबीर के समान धर्मा

मीता के मारग चलै कबीर सरीखा होय।
मीत कबीरा एकु हैं कहिबे के हैं दोय।।

का उद्‌घोष करने वाले "मीता का मत अगम है, जानन जोग कबीर"कहकर अगम के पहरू मीता ने कबीर पंथियों पर भी प्रहार किया, रूढ़ियों और आडम्बरों का मूलोच्छेदन किया। वैष्णव साधना के सर्वोच्च सूर और तुलसी की वाणी को सेमर के फूल की तरह सार विहीन घोषित करने का साहस दिखाया।

तुलसी सूरा की कविताई ज्यों सेमर का फूल।
वास न आवै फल ना लागै, सो तन का है शूल।।

"कबीर, दादू, नानक इनका ना पतियाव" कहकर महान सन्तों पर प्रश्न चिन्ह खड़े किए। भर्तहरि, गोपीचन्द आदि औघड़ सन्तों के प्रति और उनके तात्विक ज्ञान के प्रति अपरिमित आस्था व्यक्त की। कबीर, दादू, नानक को टकसाली मानते हुए उनके पंथ को भ्रामक और उनके नाम पर प्रचलित साहित्य की प्रमाणिकता को अस्वीकार कर दिया।

(अ)- कबीर, दादू, नानक इनका ना पतियाव।
(ब)- भर्तहरि कही सो मान लो, तत्वज्ञान का सार।
(स)- गोरख ब्रम्ह अगिनि उदगारी।

ऐसे महान क्रान्तिकारी सन्त मीता साहेब के वाणी-वचन का मूल कैथी लिपि से पाठ उनकी समाधि काल के लगभग दो सौ वर्षों तक मीता पंथ के अनुयायियों और संगतियों द्वारा सन्त मीता की समाधि स्थली पुरवा (उन्नाव) तथा अन्य स्थानों पर पोथी पाठ और मीता मेला के रूप में चलता रहा। सन्त मीता साहेब का साहित्य संगतियों के अलावा सर्वजन सुलभ नहीं था।

मुंशी ज्ञान सिंह जी ने अपरिमित निष्ठा और कई वर्षों के कड़े परिश्रम से मीता साहेब के कैथी लिपि में लिखे हुए साहित्य को देवनागरी लिपि में रूपान्तरित किया व पोथी पाठ के द्वारा संगतियों में एक नई ऊर्जा का संचार करते रहे।

"जनहित की भावना से मैंने इस कैथी लिपि में लिखे हुए साहित्य का हिन्दी रूपान्तरण करना प्रारम्भ किया। हिन्दी रूपान्तरण करते समय इसका विशेष ध्यान रखा गया कि मूल लेख के उच्चारण भाव तथा रूप में कोई अन्तर न आने पाये, ज्यों का त्यों हिन्दी रूप किया जाय। इस कार्य को पूरा करने में लगभग दो वर्ष का समय लगा। मेरा केवल इतना ही साहस था कि उपर्युक्त साहित्य की केवल एक प्रति ही हिन्दी रूपान्तरण कर छोड़ें। इसके आगे मेरी आर्थिक स्थिति ऐसी नहीं थी कि जन साधारण की जानकारी के लिए मैं प्रकाशन करा सकूँ।

संयोग से इसी बीच मेरी आध्यात्म के खोजी और अन्वेषी विद्वान डॉ० चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित 'ललित' जो चन्द दास शोध संस्थान के निदेशक और पं० जवाहर लाल नेहरू डिग्री कॉलेज, बाँदा में हिन्दी के प्रोफेसर हैं, से मेरी भेंट हो गई। उन्होंने मेरी भावनाओं को भलीभाँति सुना, समझा और इस सम्पूर्ण साहित्य को ज्यों का त्यों प्रकाशन कराने में अपनी सहमति व्यक्त की और मैंने सहर्ष स्वीकार कर अपने द्वारा किया गया रूपान्तर डॉ० दीक्षित जी को समर्पित कर दिया। मुझे महान खुशी होगी कि सन्त मीता साहेब का साहित्य प्रकाशित होकर हिन्दी जगत के विद्वानों और आध्यात्म के खोजियों तक जनसाधारण की जानकारी में आ सके।"

("मीता-ग्रन्थावली" में प्रकाशित मुंशी ज्ञान सिंह की अनुशंसा से उद्‌धृत)

मेरा यह परम सौभाग्य था कि जिन दिनों मैं हिन्दी के एक महान कवि और सन्त चन्द दास के साहित्य पर 'डॉक्टर ऑफ फिलासफी' के लिए शोध कार्य कर रहा था और सन्त साहित्य के महान आचार्य हिन्दी के लब्ध प्रतिष्ठ विद्वान डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी मेरे परीक्षक थे और मेरे शोध कार्य पर डॉक्ट्रेट की उपाधि प्रदान की, उसी समय महाकवि चन्द की प्रख्यात रचना 'पृथ्वीराज रासो' (प्राचीनतम प्रति सन् 1760 ई० उदयपुर) के अलावा चन्द कवि की दर्जनों काव्य कृतियाँ कैथी लिपि में और मिल गयीं तथा चन्द कवि का प्रामाणिक इतिहास खोज में मिल गया। सन् 1828 ई० की उनकी समाधि स्थली मिल गई तथा पता चल गया कि चन्द गुरुगोविंद सिंह के साथ थे और रूपक के द्वारा उन्हें पृथ्वीराज के रूप में वर्णन किया तथा वे खत्री जाति के थे- रासो में जहाँ सु चन्द खत्रियं पाठ मिल गया अन्य ग्रन्थों में भी उन्होंने- खत्री वरन विवेक देह धरि भक्ति बढ़ाई। सहगल खत्री वंश में कृत शरीर सुख पाय।

सन्त मीता साहेब ने भी चन्द किशोर खत्री कहकर चन्द को खत्री जाति का बताया है। साहित्य, पुरातत्व, इतिहास सभी से यह पुष्ट हो गया कि महाकवि चन्द 18 वीं शताब्दी में थे। इस खोज से प्रभावित होकर टेहरी, गढ़वाल के राजपरिवार के कैप्टन शूरवीर सिंह पी० सी० एस० अधिकारी जो फतेहपुर में नियोजन अधिकारी थे और जिन्होंने पुरवा-उन्नाव के सन्त मीता साहेब के वाणी-वचन सुने थे, उन्होंने टेहरी, गढ़वाल से मुझे कई पत्र लिखे और सन्त मीता साहेब को जन साधारण तक प्रसारित करने का संदेश दिया।

मैं कई बार सन्त मीता मेले में पुरवा-उन्नाव गया। संगतियों के साथ रोटी और चटनी खाई। मुंशी ज्ञान सिंह जी के साथ उनके गाँव दोस्तीनगर भी गया, जहाँ उनके साथ उनकी झोपड़ी में रात बिताई। कड़कड़ाई बिजली और घटाटोप बादलों की जल प्रलय के बीच सन्त मीता साहेब के पदों को सुनने का अवसर मिला।

सन्त मीता मेला में कई वर्ष गया, मुंशी ज्ञान सिंह जी से मीता के ग्रन्थों का मूल पाठ सुना। जब कभी मुंशी जी मुझसे कुछ पूँछते तो मैं सन्त विमर्श में कुछ विचार रखता। संगतियों ने मेरे द्वारा कैथी लिपि में लिखी रचनाओं के पाठ को सुनकर कहा यह तो मीता साहेब के ही 'अंकुरा' (अंकुर) जान पड़ते हैं, अन्यथा कैथी लिपि में लिखे लेखों को कैसे पढ़ते? ज्ञातव्य है कि चन्द दास के मूल ग्रन्थ कैथी लिपि में थे, जिसका अध्ययन मेरा विषय रहा।

मुंशी ज्ञान सिंह के साथ कई संगती भी कई बार बाँदा आए, पोथी पाठ हुआ। मेरे साथ मुंशी जी ने वाराणसी की यात्रा की और हम लोग डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी जी के आवास गए, मुंशी जी ने मीता साहेब के पद सुनाए। मैंने यथा संभव सन्त मीता साहेब के काव्य दर्शन और उनके कृतित्व के सम्बंध में चर्चा की। डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी से सम्पादन का अनुरोध किया। उन्होंने मुंशी जी से कहा 'यह तो कबीर के भी बाप लगते हैं/ कबीर से भी आगे हैं। मैं तो वृद्ध और अस्वस्थ हूँ। संपादन कार्य मेरे प्रिय और अत्यंत सुधी साहित्यकार, सन्त साहित्य के मर्मज्ञ डॉ० दीक्षित जी ही करेंगे। हम लोग लौट कर प्रयाग आए और एकेडमी प्रेस को मुद्रण के लिए दे दिया। उस समय लालदास कृत 'अवध-विलास' महाकाव्य जिसमें रामजन्म भूमि का भी साक्ष्य था, वह मुद्रण के लिए था। आर्थिक दबावों के कारण मैं भी कठिनाई में था, किन्तु मेरी पत्नी डॉ० शशिप्रभा दीक्षित ने अपने गहनों को इस दुर्लभ साहित्य के प्रकाशनार्थ सौंप कर एक बड़े यज्ञ की पूर्णाहुति की।

'मीता-ग्रन्थावली' (1984 ई०) में जन साधारण के लिए प्रकाशित हो सकी। मुंशी ज्ञान सिंह जी का सपना साकार हुआ। मुझे भी इस महान सन्त की कृतियों के संपादन का अपरिमित संतोष हुआ। कैप्टन शूरवीर सिंह की आत्मा को शांति मिली। मीता ग्रन्थावली की प्रतियाँ जो चन्द दास शोध संस्थान, बाँदा से प्रकाशित हुई थीं, वे संगतियों तक पहुँची। विश्व विद्यालयों तथा देश के बाहर विदेशों में भी कुछ प्रतियाँ पहुँच गयीं। हिन्दी साहित्य के प्रामाणिक इतिहास में न्यायाधीश डॉ० राजाराम यादव ने सन्त मीता का विवरण दिया।

'उत्तर प्रदेश के लोक धर्मी कवि एवं समाज' नामक पुस्तक में डॉ० सी० एल० सोनकर ने सन्त मीता को समाज सुधारक सन्तों में अग्रगण्य विचारक स्वीकार किया। चन्द दास शोध संस्थान, बाँदा द्वारा प्रकाशित 'मीता ग्रन्थावली' को गूगल ने सुरक्षित कर लिया। मीता ग्रन्थावली के सम्बंध में डॉ० किशोरीलाल गुप्त ने हिन्दुस्तानी एकेडमी पत्रिका में पुस्तक समीक्षा प्रकाशित की। डॉ० हरेराम समीप ने 'दोहाकोश' के अन्तर्गत मीता साहेब के दोहों को विश्व के दोहाकारों के साथ गौरवपूर्ण स्थान प्रदान किया है। मेरे निर्देशन में सन्त मीता साहेब के व्यक्तित्व एवं कृतित्व तथा सन्त मीता और कबीर का तुलनात्मक अध्ययन विषय शोधकार्य के लिए विश्वविद्यालय स्तर पर चयनित किए गए। लोकप्रियता के कारण मीता ग्रन्थावली की प्रतियाँ हाथों-हाथ वितरित हो गयीं और जन सामान्य में मीता साहेब की पंक्तियाँ गूँजने लगीं।

मुंशी ज्ञान सिंह के बाद उनके परमप्रिय शिष्यों में सन्त गुरुनारायण कुशवाहा मुख्य ग्रन्थी के रूप में कार्यरत हुए। कई बार मेरे पास आए और सन्त मीता साहेब के वाणी-वचन को मीता ग्रन्थावली के द्वितीय संस्करण के रूप में "परम ग्रन्थ" के रूप में प्रकाशित करने की योजना प्रस्तुत की। इस बार "परम ग्रन्थ" में मीता साहेब के मूल पाठ की तथा सन्त मीता और उनके अनुयायी सन्तों के समाधि के चित्रों का प्रकाशन हुआ। सन् 2019 ई० में नव्य संस्करण के रूप में "परम ग्रन्थ" (मीतादास जी की वाणी का संकलन) चन्द दास साहित्य शोध संस्थान, बाँदा से प्रकाशित हुआ। यह ग्रन्थ मूल पाठ की सुरक्षा, पद सूची विवरण तथा समाधियों के चित्रों और विभिन्न समाधियों में लगने वाले मेलों के विवरण की दृष्टि से अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुआ।

गुरुनारायण कुशवाहा जी के समाधि के बाद उनके कार्यों को गति देने के लिए सन्त मीता साहेब और उनकी परम्परा के सन्तों में गहरी पैठ रखने वाले गुणग्राही और तात्विक चिन्तक डॉ० मदन सिंह जी ने जो कार्य किया है, वह मीता साहेब की परम्परा को आगे बढ़ाने वाला है। डॉ० मदन सिंह जी ने सन्तों के वचन वाणी को प्रकाश में लाने का जो कार्य किया है, वह सर्वथा अभिनंदनीय है। उसके लिए उन्हें मेरा हार्दिक साधुवाद! आशा है यह कृति साहित्य, संस्कृति और आध्यात्म जगत में समादृत होगी।

डॉ० चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित 'ललित'

अनुशंसा

यह "पोथी साहेब" सन्त मीतादास जी की सन्त परम्परा की निर्गुण वाणी-वचन का संकलन है। सन्त मीता साहेब की शिष्या सन्त इन्दो साहेब, सन्त पन्नो साहेब, सन्त सहजी साहेब तथा शिष्य सन्त नान्हू साहेब और सन्त बदन साहेब का वाणी-वचन भी इस ग्रन्थ में संकलित किया गया है, जो कि लगभग दो सौ वर्षों से बिना प्रकाशन के सन्त मीता मत के अनुयायियों के बीच पढ़ा जाता रहा है। सभी शिष्यों ने मीता साहेब के कुशल नेतृत्व एवं मार्गदर्शन में परम लक्ष्य "मोक्ष" की प्राप्ति की। सन्त मीता साहेब के देह छोड़ने के बाद सन्त बदन सिंह साहेब आपके प्रथम उत्तराधिकारी हुए। जिन्होंने सन्त परम्परा को आगे बढ़ाया। सन्त मीता साहेब के द्वारा जो वाणी-वचन लिखा गया था, वह 'कैथी लिपि' में था। जो सन्त मीता साहेब के छठें उत्तराधिकारी सन्त मुंशी ज्ञान सिंह जी को अपने पूर्वजों से 'कैथी लिपि' में ही प्राप्त हुआ। जिसका हिन्दी रुपान्तरण सन्त मुंशी ज्ञान सिंह जी ने लगभग दो वर्ष के अथक प्रयास से सन् 1983 ई० में पूर्ण करते हुए, सन् 1984 ई० में "मीता-ग्रन्थावली" के नाम से प्रकाशित कराया था। "मीता-ग्रन्थावली" के सम्पादक डॉ० चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित 'ललित' जी ने कुछ प्रतियाँ विदेशों में विद्वानों को भेजी थीं। मुंशी ज्ञान सिंह जी के द्वारा किए गए इस महान कार्य के लिए देश अथवा विदेश के विद्वानों एवं आध्यात्म-प्रेमियों व संगतियों के द्वारा आपकी बड़ी प्रशंसा की गई।

संगतियों का ग्रन्थ के प्रति बढ़ता अपार स्नेह और जनसमूह को देखते हुए पूर्व में छपी हुई ग्रन्थ की सारी प्रतियाँ शीघ्र ही वितरित हो गई थीं। इसलिए सन्त मीतादास जी की परम्परा के सातवें उत्तराधिकारी सन्त गुरुनारायण साहेब के द्वारा दूसरी बार "मीता-ग्रन्थावली" का प्रकाशन "परम ग्रन्थ" के नाम से सन् 2019 ई० में कराया गया। जिसमें केवल मीता साहेब का ही वाणी-वचन उपलब्ध है, परन्तु परम्परा के अन्य संतों का वाणी-वचन, जो मीता साहेब के समकालीन लिखा गया था और मुंशी ज्ञान सिंह साहेब के द्वारा कैथी से हिन्दी में रूपान्तरित किया गया था। जिसको सन् 2019 में ही प्रकाशन में लाने हेतु सन्त गुरुनारायण साहेब प्रयासरत थे, परन्तु परमेश्वर के हुक्म के अनुसार आपने 21 सितम्बर सन् 2019 ई० को देह छोड़ दी।

देही हमारी छूटिहै, जबै अवादा होय।
जी अम्मर होय रहै, कहि मीता सुन लोय।। (परम ग्रन्थ में पृष्ठ सं० 7 से)

सन्त गुरुनारायण साहेब के देह छोड़ने के बाद संगतियों के मध्य "पोथी साहेब" को बिना किसी त्रुटि के पूर्ण करने पर विचार किया गया और संगतियों के पास संतों का जो भी वाणी-वचन था, उसको इकठ्ठा करके प्रकाशन में लाने का कार्य संगतियों के सहयोग से ही किया गया है।

मीता मत के अनुयायी जब आपस में मिलते हैं, तो "जी से राम" कह कर एक-दूसरे का अभिवादन करते हैं। नवागन्तुक अनुयायियों के मन में यह प्रश्न उठता है, कि "जी से राम" क्यों कहा जाता है? इसका अभिप्राय यह होता है, कि वह एक-दूसरे को ईश्वर को 'जी' से यानी 'मन' में स्मरण करने की याद दिलाते हैं। कुछ संगतियों को "जेसीराम" कहते सुनकर कुछ पढ़े-लिखे संगती भी "जी से राम" की जगह अपभ्रंश जेसीराम का उच्चारण करते हैं, जिसे सुधार कर "जी से राम" कहना ही उचित होगा।

"पोथी साहेब" में मीता साहेब की परम्परा के सन्तों के अलावा जिनको मीता साहेब ने स्वयं अपनी कलम से सन्त लिखा है, उन सभी सन्तों और उनकी परम्परा के अन्य सन्तों का वाणी-वचन भी इस ग्रन्थ में शामिल किया गया है। मीता साहेब के वचन के अनुसार-

"सन्त सन्त सबु एकु हैं रे आगू पाछू केर, कहँ लग सबै गनावऊँ बहु रामु पियारे लोग रे।" (परम ग्रन्थ में पृष्ठ सं०-201 से)

सन्त मीता साहेब के एक शिष्य प्रजापति तिवारी ग्राम नरवल जिला कानपुर नगर के निवासी थे। जिनके पास मीता साहेब के कतिपय हस्तलेख आज भी मौजूद हैं। इनके ही पास मीता साहेब के खड़ाऊँ व ढोलक भी रखी हुई हैं। जिसकी देख-रेख जगत नारायण तिवारी (पूती महराज) के बाद विजय कुमार अग्निहोत्री द्वारा की जा रही है।

"मीता ग्रन्थावली" व "परम ग्रन्थ" के सम्पादक आदरणीय डॉ० चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित "ललित" जी का ह्रदय से आभार व्यक्त करता हूँ। आपने "पोथी साहेब" के प्रकाशन कार्य में भी अपना सहयोग प्रदान किया है। "उत्तर प्रदेश के लोकधर्मी कवि एवं समाज" नामक पुस्तक के लेखक डॉ० सी० एल० सोनकर जी का भी आभार व्यक्त करता हूँ। जिन्होंने अपनी पुस्तक में सन्त मीता साहेब के वाणी-वचन को लगभग 35 पेजों में स्थान देकर सन्त मत को चारों दिशाओं में प्रकाश की भाँति फैलाने का पुनीत कार्य किया है। कैप्टन शूरवीर सिंह टेहरी (गढ़वाल) व कबीर साहित्य के विशिष्ट विद्वान आचार्य प्रवर डॉ0 हजारी प्रसाद द्विवेदी जी को भी ह्रदय से नमन करता हूँ। आपने सन्त मत का शोध करते हुए संतों की अमृतमयी वाणी को जन-जन तक पहुँचाने का पुनीत कार्य किया है। यह सभी ग्रन्थ {मीता ग्रन्थावली, परम ग्रन्थ व पोथी साहेब} निर्गुण उपासकों, आध्यात्म-प्रेमियों, सुज्जनों व पाठकों के लिये सच्चे मार्गदर्शक सिद्ध होंगे।

सभी आध्यात्म-प्रेमियों से मेरा निवेदन है, कि "पोथी साहेब" का आरम्भ से अंत तक अध्ययन एवं विचार करने का प्रयास अवश्य करें। यदि कहीं संयोगवश ग्रन्थ का उतार करते हुए लेखन में कोई त्रुटि रह गई हो तो पाठकों से मेरा विनम्र अनुरोध है, कि उसको समझ कर भावार्थ ग्रहण करें। यह सम्पूर्ण साहित्य जन वाणी बहुत ही स्पष्ट, निर्भीक व गज की भाँति निशंक होने के कारण ग्रन्थ के पाठकों को पढ़ने में कोई कठिनाई नहीं होगी। अति गूढ़ यह ''निर्गुण वाणी'' पूर्ण विचार विवेक के बाद ही आत्मसात की जा सकती है। इसी लिए सन्त इन्दो साहेब ने कहा है-

कही-कही करतार की, सुज्जन केरे काज।
इन्दो किये विवेक के, मिलति हवैं महराज।। पृष्ठ 52 दोहा 87

यदि कोई जन सन्त वाणी-वचन के अनुसार अपने जीवन में आचरण करता है, तो निश्चय ही उसका मन निर्मल हो जाता है। सन्त इन्दो साहेब ने लिखा है-

गुरु मीता हैं धोबिया, उजरा कै कै देंई।
कहि इन्दो हम जाना, जगतु न जानै कोई।। पृष्ठ 52 दोहा 100

ऐसे निर्मल वाणी-वचन को अपना मार्ग दर्शक बनाकर निर्वाण पदवी परम लक्ष्य "मोक्ष" को प्राप्त किया जा सकता है। आशा है, कि पाठक गण इस ग्रन्थ को आद्योपान्त पढ़ने का कष्ट सहर्ष स्वीकार करेंगे। इसी कामना के साथ सभी पाठकों, संगतियों एवं अनुयायियों को सादर "जी से राम"।

प्रेम पूर्वक
ठा० मदन सिंह
दीननगर, हरदोई (उ० प्र०)

सत्संग मेला कैलेण्डर
सम्वत् 2078 विक्रमी से 2100 विक्रमी (सन् 2022 से 2044 ई०) तक

मेला	समाधि बदन साहेब दोस्तीनगर-उन्नाव	समाधि बेनीराम साहेब बरई छतरुआ कानपुर	समाधि सुझारी साहेब अढ़ेना-फतेहपुर	समाधि मीता साहेब पुरवा-उन्नाव	समाधि केवल साहेब दुकनहा-रायबरेली	समाधि नान्हू साहेब अब्बासपुर-उन्नाव	समाधि पन्नो साहेब जोतपुर-पुरवा उन्नाव	समाधि मीता साहेब पुरवा-उन्नाव
तिथि व माह	फाल्गुन शुक्लपक्ष पंचमी व षष्ठी	चैत्र शुक्लपक्ष पंचमी व षष्ठी	वैशाख शुक्लपक्ष पंचमी व षष्ठी	ज्येष्ठ शुक्लपक्ष पंचमी व षष्ठी	भादौ कृष्णपक्ष पंचमी व षष्ठी	क्वांर कृष्णपक्ष पंचमी व षष्ठी	क्वांर पूर्णिमा व कार्तिक परेवा	कार्तिक पूर्णिमा व अगहन परेवा
सन् 2022 ई०	07/03/2022 सोमवार व 08/03/2022 मंगलवार	06/04/2022 बुधवार व 07/04/2022 गुरुवार	06/05/2022 शुक्रवार व 07/05/2022 शनिवार	04/06/2022 शनिवार व 05/06/2022 रविवार	16/08/2022 मंगलवार व 17/08/2022 बुधवार	15/09/2022 गुरुवार व 16/09/2022 शुक्रवार	09/10/2022 रविवार व 10/10/2022 सोमवार	08/11/2022 मंगलवार व 09/11/2022 बुधवार
सन् 2023 ई०	24/02/2023 शुक्रवार व 25/02/2023 शनिवार	26/03/2023 रविवार व 27/03/2023 सोमवार	25/04/2023 मंगलवार व 26/04/2023 बुधवार	24/05/2023 बुधवार व 25/05/2023 गुरुवार	श्रावण में मलमास 04/09/2023 सोमवार व 05/09/2023 मंगलवार	03/10/2023 मंगलवार व 04/10/2023 बुधवार	28/10/2023 शनिवार व 29/10/2023 रविवार	27/11/2023 सोमवार व 28/11/2023 मंगलवार
सन् 2024 ई०	14/03/2024 गुरुवार व 15/03/2024 शुक्रवार	13/04/2024 शनिवार व 14/04/2024 रविवार	12/05/2024 रविवार व 13/05/2024 सोमवार	11/06/2024 मंगलवार व 12/06/2024 बुधवार	24/08/2024 शनिवार व 25/08/2024 रविवार	22/09/2024 रविवार व 23/09/2024 सोमवार	17/10/2024 गुरुवार व 18/10/2024 शुक्रवार	15/11/2024 शुक्रवार व 16/11/2024 शनिवार
सन् 2025 ई०	04/03/2025 मंगलवार व 05/03/2025 बुधवार	02/04/2025 बुधवार व 03/04/2025 गुरुवार	02/05/2025 शुक्रवार व 03/05/2025 शनिवार	31/05/2025 शनिवार व 01/06/2025 रविवार	13/08/2025 बुधवार व 14/08/2025 गुरुवार	12/09/2025 शुक्रवार व 13/09/2025 शनिवार	14/10/2025 मंगलवार व 15/10/2025 बुधवार	05/11/2025 बुधवार व 06/11/2025 गुरुवार

मेला	समाधि बदन साहेब दोस्तीनगर-उन्नाव	समाधि बेनीराम साहेब बरई छतरुआ कानपुर	समाधि सुझारी साहेब अढ़ेना-फतेहपुर	समाधि मीता साहेब पुरवा-उन्नाव	समाधि केवल साहेब दुकनहा-रायबरेली	समाधि नान्हू साहेब अब्बासपुर-उन्नाव	समाधि पन्नो साहेब जोतपुर-पुरवा उन्नाव	समाधि मीता साहेब पुरवा-उन्नाव
सन् 2026 ई०	22/02/2026 रविवार व 23/02/2026 सोमवार	23/03/2026 सोमवार व 24/03/2026 मंगलवार	21/04/2026 मंगलवार व 22/04/2026 बुधवार	ज्येष्ठ में मलमास 19/06/2026 मंगलवार व 20/06/2026 बुधवार	01/09/2026 मंगलवार व 02/09/2026 बुधवार	01/10/2026 गुरुवार व 02/10/2026 शुक्रवार	26/10/2026 सोमवार व 27/10/2026 मंगलवार	24/11/2026 मंगलवार व 25/11/2026 बुधवार
सन् 2027 ई०	13/03/2027 शनिवार व 14/03/2027 रविवार	11/04/2027 रविवार व 12/04/2027 सोमवार	10/05/2027 सोमवार व 11/05/2027 मंगलवार	09/06/2027 बुधवार व 10/06/2027 गुरुवार	22/08/2027 रविवार व 23/08/2027 सोमवार	20/09/2027 सोमवार व 21/09/2027 मंगलवार	15/10/2027 शुक्रवार व 16/10/2027 शनिवार	14/11/2027 रविवार व 15/11/2027 सोमवार
सन् 2028 ई०	01/03/2028 बुधवार व 02/03/2028 गुरुवार	31/03/2028 शुक्रवार व 01/04/2028 शनिवार	29/04/2028 शनिवार व 30/04/2028 रविवार	28/05/2028 रविवार व 29/05/2028 सोमवार	10/08/2028 गुरुवार व 11/08/2028 शुक्रवार	09/09/2028 शनिवार व 10/09/2028 रविवार	03/10/2028 मंगलवार व 04/10/2028 बुधवार	02/11/2028 गुरुवार व 03/11/2028 शुक्रवार
सन् 2029 ई०	18/02/2029 रविवार व 19/02/2029 सोमवार	चैत्र में मलमास 19/04/2029 गुरुवार व 20/04/2029 शुक्रवार	18/05/2029 शुक्रवार व 19/05/2029 शनिवार	17/06/2029 रविवार व 18/06/2029 सोमवार	29/08/2029 बुधवार व 30/08/2029 गुरुवार	28/09/2029 शुक्रवार व 29/09/2029 शनिवार	22/10/2029 सोमवार व 23/10/2029 मंगलवार	21/11/2029 बुधवार व 22/11/2029 गुरुवार
सन् 2030 ई०	09/03/2030 शनिवार व 10/03/2030 रविवार	08/04/2030 सोमवार व 09/04/2030 मंगलवार	08/05/2030 बुधवार व 09/05/2030 गुरुवार	06/06/2030 गुरुवार व 07/06/2030 शुक्रवार	18/08/2030 रविवार व 19/08/2030 सोमवार	16/09/2030 सोमवार व 17/09/2030 मंगलवार	11/10/2030 शुक्रवार व 12/10/2030 शनिवार	10/11/2030 रविवार व 11/11/2030 सोमवार

मेला	समाधि बदन साहेब दोस्तीनगर-उन्नाव	समाधि बेनीराम साहेब बरई छतरुआ कानपुर	समाधि सुझारी साहेब अढ़ेना-फतेहपुर	समाधि मीता साहेब पुरवा-उन्नाव	समाधि केवल साहेब दुकनहा-रायबरेली	समाधि नान्हू साहेब अब्बासपुर-उन्नाव	समाधि पन्नो साहेब जोतपुर-पुरवा उन्नाव	समाधि मीता साहेब पुरवा-उन्नाव
सन् 2031 ई०	26/02/2031 बुधवार व 27/02/2031 गुरुवार	28/03/2031 शुक्रवार व 29/03/2031 शनिवार	26/04/2031 शनिवार व 27/04/2031 रविवार	26/05/2031 सोमवार व 27/05/2031 मंगलवार	भादौ में मलमास 07/08/2031 गुरुवार व 08/08/2031 शुक्रवार	05/10/2031 रविवार व 06/10/2031 सोमवार	30/10/2031 गुरुवार व 31/10/2031 शुक्रवार	28/11/2031 शुक्रवार व 29/11/2031 शनिवार
सन् 2032 ई०	16/03/2032 मंगलवार व 17/03/2032 बुधवार	14/04/2032 बुधवार व 15/04/2032 गुरुवार	14/05/2032 शुक्रवार व 15/05/2032 शनिवार	13/06/2032 रविवार व 14/06/2032 सोमवार	25/08/2032 बुधवार व 26/08/2032 गुरुवार	23/09/2032 गुरुवार व 24/09/2032 शुक्रवार	18/10/2032 सोमवार व 19/10/2032 मंगलवार	17/11/2032 बुधवार व 18/11/2032 गुरुवार
सन् 2033 ई०	05/03/2033 शनिवार व 06/03/2033 रविवार	04/04/2033 सोमवार व 05/04/2033 मंगलवार	03/05/2033 मंगलवार व 04/05/2033 बुधवार	02/06/2033 गुरुवार व 03/06/2033 शुक्रवार	15/08/2033 सोमवार व 16/08/2033 मंगलवार	13/09/2033 मंगलवार व 14/09/2033 बुधवार	08/10/2033 शनिवार व 09/10/2033 रविवार	06/11/2033 रविवार व 07/11/2033 सोमवार
सन् 2034 ई०	23/02/2034 गुरुवार व 24/02/2034 शुक्रवार	24/03/2034 शुक्रवार व 25/03/2034 शनिवार	23/04/2034 रविवार व 24/04/2034 सोमवार	आषाढ़ में मलमास 22/05/2034 सोमवार व 23/05/2034 मंगलवार	03/09/2034 रविवार व 04/09/2034 सोमवार	02/10/2034 सोमवार व 03/10/2034 मंगलवार	27/10/2034 शुक्रवार व 28/10/2034 शनिवार	25/11/2034 शनिवार व 26/11/2034 रविवार
सन् 2035 ई०	14/03/2035 बुधवार व 15/03/2035 गुरुवार	12/04/2035 गुरुवार व 13/04/2035 शुक्रवार	12/05/2035 शनिवार व 13/05/2035 रविवार	10/06/2035 रविवार व 11/06/2035 सोमवार	23/08/2035 गुरुवार व 24/08/2035 शुक्रवार	22/09/2035 शनिवार व 23/09/2035 रविवार	17/10/2035 बुधवार व 18/10/2035 गुरुवार	15/11/2035 गुरुवार व 16/11/2035 शुक्रवार

मेला	समाधि बदन साहेब दोस्तीनगर-उन्नाव	समाधि बेनीराम साहेब बरई छतरुआ कानपुर	समाधि सुझारी साहेब अढ़ेना-फतेहपुर	समाधि मीता साहेब पुरवा-उन्नाव	समाधि केवल साहेब दुकनहा-रायबरेली	समाधि नान्हू साहेब अब्बासपुर-उन्नाव	समाधि पन्नो साहेब जोतपुर-पुरवा उन्नाव	समाधि मीता साहेब पुरवा-उन्नाव
सन् 2036 ई०	03/03/2036 सोमवार व 04/03/2036 मंगलवार	01/04/2036 मंगलवार व 02/04/2036 बुधवार	30/04/2036 बुधवार व 01/05/2036 गुरुवार	30/05/2036 शुक्रवार व 31/05/2036 शनिवार	12/08/2036 मंगलवार व 13/08/2036 बुधवार	10/09/2036 बुधवार व 11/09/2036 गुरुवार	05/10/2036 रविवार व 06/10/2036 सोमवार	03/11/2036 सोमवार व 04/11/2036 मंगलवार
सन् 2037 ई०	20/02/2037 शुक्रवार व 21/02/2037 शनिवार	22/03/2037 रविवार व 23/03/2037 सोमवार	20/04/2037 सोमवार व 21/04/2037 मंगलवार	ज्येष्ठ में मलमास 18/06/2037 गुरुवार व 19/06/2037 शुक्रवार	31/08/2037 सोमवार व 01/09/2037 मंगलवार	29/09/2037 मंगलवार व 30/09/2037 बुधवार	24/10/2037 शनिवार व 25/10/2037 रविवार	22/11/2037 रविवार व 23/11/2037 सोमवार
सन् 2038 ई०	11/03/2038 गुरुवार व 12/03/2038 शुक्रवार	10/04/2038 शनिवार व 11/04/2038 रविवार	09/05/2038 रविवार व 10/05/2038 सोमवार	08/06/2038 मंगलवार व 09/06/2038 बुधवार	20/08/2038 शुक्रवार व 21/08/2038 शनिवार	18/09/2038 शनिवार व 19/09/2038 रविवार	13/10/2038 बुधवार व 14/10/2038 गुरुवार	11/11/2038 गुरुवार व 12/11/2038 शुक्रवार
सन् 2039 ई०	28/02/2039 सोमवार व 01/03/2039 मंगलवार	30/03/2039 बुधवार व 31/03/2039 गुरुवार	28/04/2039 गुरुवार व 29/04/2039 शुक्रवार	28/05/2039 शनिवार व 29/05/2039 रविवार	18/08/2039 मंगलवार व 19/08/2039 बुधवार	क्वाँर में मलमास 07/09/2039 बुधवार व 08/09/2039 गुरुवार	31/10/2039 सोमवार व 01/11/2039 मंगलवार	30/11/2039 बुधवार व 01/12/2039 गुरुवार
सन् 2040 ई०	17/03/2040 शनिवार व 18/03/2040 रविवार	16/04/2040 सोमवार व 17/04/2040 मंगलवार	16/05/2040 बुधवार व 17/05/2040 गुरुवार	15/06/2040 शुक्रवार व 16/06/2040 शनिवार	26/08/2040 रविवार व 27/08/2040 सोमवार	25/09/2040 मंगलवार व 26/09/2040 बुधवार	20/10/2040 शनिवार व 21/10/2040 रविवार	18/11/2040 रविवार व 19/11/2040 सोमवार

मेला	समाधि बदन साहेब दोस्तीनगर-उन्नाव	समाधि बेनीराम साहेब बरई छतरुआ कानपुर	समाधि सुझारी साहेब अढ़ेना-फतेहपुर	समाधि मीता साहेब पुरवा-उन्नाव	समाधि केवल साहेब दुकनहा-रायबरेली	समाधि नान्हू साहेब अब्बासपुर-उन्नाव	समाधि पन्नो साहेब जोतपुर-पुरवा उन्नाव	समाधि मीता साहेब पुरवा-उन्नाव
सन् 2041 ई०	07/03/2041 गुरुवार व 08/03/2041 शुक्रवार	05/04/2041 शुक्रवार व 06/04/2041 शनिवार	05/05/2041 रविवार व 06/05/2041 सोमवार	04/06/2041 मंगलवार व 05/06/2041 बुधवार	16/08/2041 शुक्रवार व 17/08/2041 शनिवार	14/09/2041 शनिवार व 15/09/2041 रविवार	09/10/2041 बुधवार व 10/10/2041 गुरुवार	08/11/2041 शुक्रवार व 09/11/2041 शनिवार
सन् 2042 ई०	24/02/2042 सोमवार व 25/02/2042 मंगलवार	26/03/2042 बुधवार व 27/03/2042 गुरुवार	24/04/2042 गुरुवार व 25/04/2042 शुक्रवार	24/05/2042 शनिवार व 25/05/2042 रविवार	श्रावण में मलमास 04/09/2042 गुरुवार व 05/09/2042 शुक्रवार	03/10/2042 शुक्रवार व 04/10/2042 शनिवार	28/10/2042 मंगलवार व 29/10/2042 बुधवार	27/11/2042 गुरुवार व 28/11/2042 शुक्रवार
सन् 2043 ई०	15/03/2043 रविवार व 16/03/2043 सोमवार	14/04/2043 मंगलवार व 15/04/2043 बुधवार	13/05/2043 बुधवार व 14/05/2043 गुरुवार	11/06/2043 गुरुवार व 12/06/2043 शुक्रवार	25/08/2043 मंगलवार व 26/08/2043 बुधवार	23/09/2043 बुधवार व 24/09/2043 गुरुवार	18/10/2043 रविवार व 19/10/2043 सोमवार	16/11/2043 सोमवार व 17/11/2043 मंगलवार
सन् 2044 ई०	04/03/2044 शुक्रवार व 05/03/2044 शनिवार							

यह सत्संग मेला कैलेण्डर सन्त मीता मत के अनुयाइयों की सुविधा के लिए उनकी सेवा में सादर प्रस्तुत है। इससे पूर्व यही कैलेण्डर "परम ग्रन्थ" में भी छापा गया है। संगतियों को होती असुविधा को देखकर सभी संगतियों की राय से माघ शुक्लपक्ष पंचमी व षष्ठी का मेला समाधि पन्नो साहेब पुरवा में किया जाता था, उसे बदलकर क्वांर पूर्णिमा व कार्तिक कृष्णपक्ष परेवा किया गया है। सभी आध्यात्म-प्रेमियों, निर्गुण उपासकों एवं श्रद्धालु संगतियों से अनुरोध है कि इस मेला कैलेण्डर के अनुसार निर्धारित तिथियों पर उपस्थित होकर अद्वितीय निर्गुण वाणी पर आधारित अनुपम सत्संग का लाभ अवश्य उठायें।

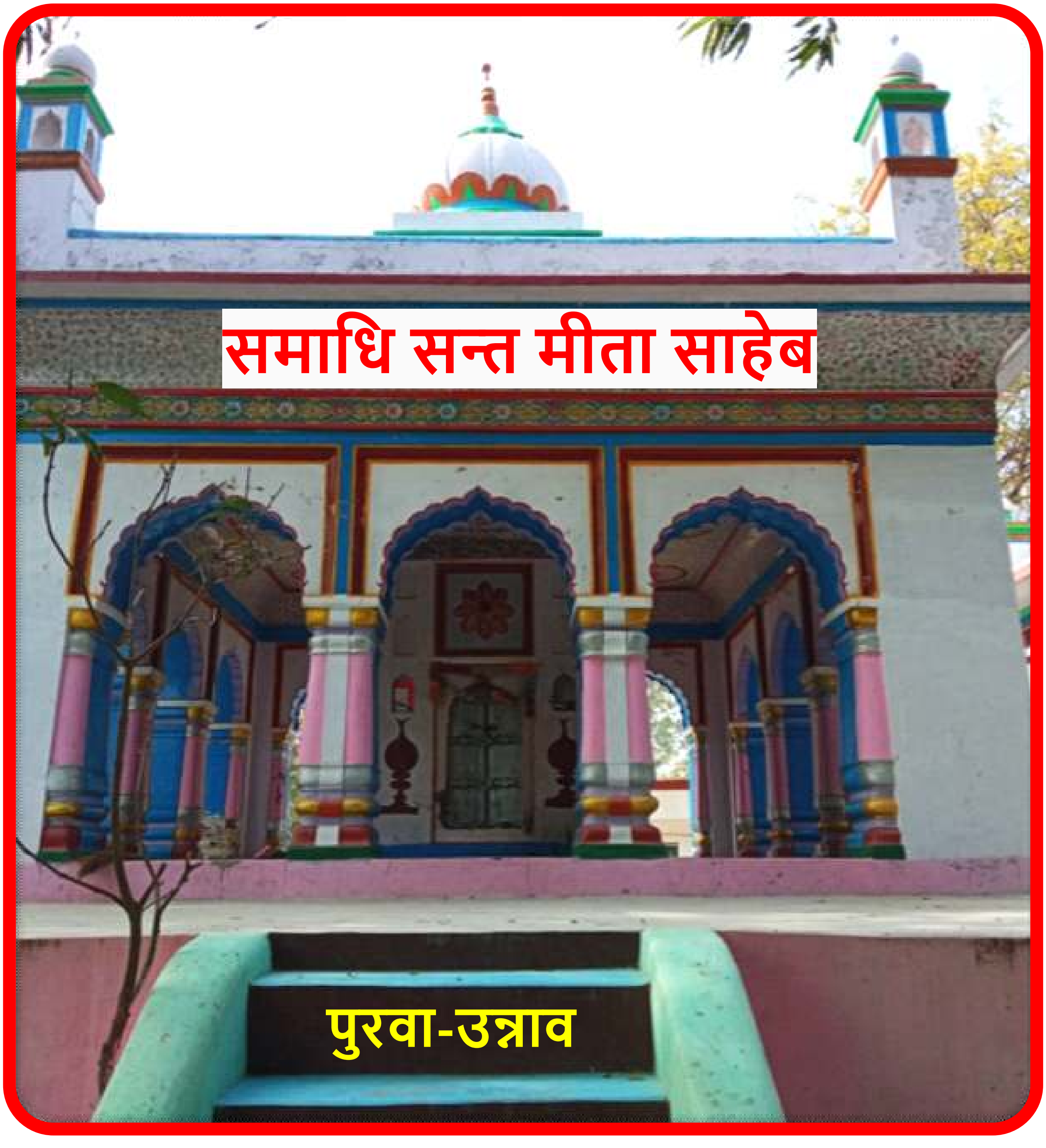
निवेदक- ठा० मदन सिंह दीननगर, हरदोई (मो० 9936703354)

“पोथी साहेब” में शामिल सन्तों के वाणी-वचन की सूची

-: पद सूची :-

सन्त मीता साहेब की परम्परा

क्रम सं.	सन्तों के नाम	उदय स्थान	उदय का समय	आयु	देह छोड़ने का समय	स्थान जहाँ देह छोड़ी	स्थान जहाँ देह रखी गई
(1)	**सन्त बेनीराम साहेब**	ग्राम बरईगढ़ जिला कानपुर नगर	संवत् 1675 विक्रमी सन् 1618 ई०	105 वर्ष	संवत् 1780 विक्रमी सन् 1723 ई०	बरईगढ़ कानपुर नगर	बरईगढ़ समाधि
(2)	**सन्त मीता साहेब**	फतुहाबाद फतेहपुर	संवत् 1747 विक्रमी सन् 1690 ई०	78 वर्ष	संवत् 1825 विक्रमी सन् 1768 ई०	कटरा पुरवा उन्नाव	कटरा समाधि
(3)	**सन्त बदन सिंह साहेब**	दोस्तीनगर उन्नाव	संवत् 1775 विक्रमी सन् 1718 ई०	85 वर्ष	संवत् 1860 विक्रमी सन् 1803 ई०	दोस्तीनगर उन्नाव	दोस्तीनगर समाधि
(4)	**सन्त रामदीन सिंह साहेब**	दोस्तीनगर उन्नाव	संवत् 1831 विक्रमी सन् 1774 ई०	45 वर्ष	संवत् 1876 विक्रमी सन् 1819 ई०	दोस्तीनगर उन्नाव	दोस्तीनगर समाधि
(5)	**सन्त पहलवान सिंह (पहली साहेब)**	दोस्तीनगर उन्नाव	संवत् 1844 विक्रमी सन् 1787 ई०	70 वर्ष	संवत् 1914 विक्रमी सन् 1857 ई०	दोस्तीनगर उन्नाव	दोस्तीनगर समाधि
(6)	**सन्त इन्द्रजीत सिंह साहेब**	दोस्तीनगर उन्नाव	संवत् 1904 विक्रमी सन् 1847 ई०	68 वर्ष	संवत् 1972 विक्रमी सन् 1915 ई०	दोस्तीनगर उन्नाव	दोस्तीनगर समाधि
(7)	**सन्त कामता प्रसाद साहेब**	बड़ी गुटैहा कानपुर नगर	संवत् 1919 विक्रमी सन् 1862 ई०	94 वर्ष	संवत् 2013 विक्रमी सन् 1956 ई०	बड़ी गुटैहा कानपुर नगर	हिन्दूखेड़ा मजरा थाना उन्नाव **स्मारक**-दोस्तीनगर (सन्-2017)
(8)	**सन्त मुंशी ज्ञान सिंह साहेब**	कुटवी मुजफ्फर नगर	संवत् 1964 विक्रमी 31 मार्च 1907 ई०	79 वर्ष 1 माह 1 दिन	1 अप्रैल 1986 ई० दिन-मंगलवार चैत कृष्ण अष्टमी	दोस्तीनगर उन्नाव	दोस्तीनगर समाधि
(9)	**सन्त गुरुनारायण कुशवाहा साहेब**	पश्चिमखेड़ा सिविल लाइन उन्नाव	संवत् 2007 विक्रमी 15 जनवरी 1951 ई० पौष शुक्ल अष्टमी सोमवार	68 वर्ष 8 माह 6 दिन	21 सितम्बर 2019 कुवांर कृष्णपक्ष सप्तमी शनिवार	गोपालपुर अढ़ेना फतेहपुर	बरवट उन्नाव समाधि


समाधि सन्त मीता साहेब
पुरवा-उन्नाव

परिचय
सन्त मीता साहेब

ईश्वरदूत महान निर्गुण सन्त मीतादास जी संवत् 1747 विक्रमी (सन् 1690 ई०) में फतुहाबाद (खजुहा) के दस्सन नामक दोसर वैश्य के घर में प्रकट हुए थे। आपकी उत्पत्ति गर्भ से नहीं हुई थी। मीतादास जी ने संवत् 1825 विक्रमी (सन् 1768 ई०) में ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी को 78 वर्ष की आयु में अपना शरीर छोड़ा। आपकी परम पावन अति भव्य समाधि उन्नाव-पुरवा रोड पर (ग्राम कटरा में) सिविल न्यायालय के ठीक सामने विशाल भूखण्ड पर बनी हुई है। समाधि प्रांगण की भूमि (समाधि मीता शाह पश्चिम कस्बा ग्राम व तहसील परगना पुरवा जिला उन्नाव) अकृषिक भूमि गाटा सं० 874 मि० (रक्बा 0.3650 हे०) खतौनी पर दर्ज है। समाधि का निर्माण डौड़ियाखेड़ा के तत्कालीन राजा बाबू बैरीशाल जी के द्वारा संवत् 1825 विक्रमी (सन् 1768 ई०) से संवत् 1831 विक्रमी (सन् 1774 ई०) के मध्य में कराया गया था। इस पावन समाधि के निर्माण में राजा साहेब ने स्वयं भी एक मजदूर की भाँति ईंट-गारा देने का कार्य किया था।

आपके कुशल मार्गदर्शन में फतुहाबाद की सहजी खत्रानी, शीतलगंज पुरवा की पन्नो ठाकुर, लखनऊ की इन्दो बीबी अग्रवालिनी, अब्बासपुर उन्नाव के नान्हू लोध व दोस्तीनगर उन्नाव के बदन सिंह चौहान निर्वाण को प्राप्त हुए। आपके देह छोड़ने के बाद सन्त बदन सिंह साहेब आपके प्रथम उत्तराधिकारी हुए। मीता साहेब द्वारा लिखे हुए वाणी वचन "परम ग्रन्थ" में लगभग 1000 निर्गुण पद व 3000 दोहे हैं। जिसमें से 21 पद, 2 आरती, 2 मंगल, 48 दोहे, 'सुज्जन का उपदेश' व 'हुकुम परम पुरुष का' इस "पोथी साहेब" में शामिल किया गया है। आपके दोहे व पद बेहतर समाज के निर्माण में अलौकिक ऊर्जा का स्रोत बनकर जन समूह को अभिसिंचित करने का कार्य युगों युगों तक करते रहेंगे । आपकी पावन समाधि स्थल पर प्रत्येक वर्ष जेष्ठ शुक्ल पंचमी व षष्ठी तथा कार्तिक पूर्णिमा और अगहन परेवा को आध्यात्मिक सत्संग मेले का आयोजन किया जाता है। इस अवसर पर सभी संगती सपरिवार आकर सत्संग मेले का लाभ उठाते हैं।

पद उपदेस

(1) साधौ भली सरन रघुराई, पाहन पूजे का पाई।
उइ तौ अभय दान का देते, पाहन मां अगिहाई।
पाहन पूजे पाहन होइहौ, ज्ञानु न उपजी भाई।
बिना ज्ञान कुछ सूझि न परिहै, अन्धरेन हाट लगाई।
या संसार कटइया बारी, चलते सन्त बचाई।
साँचु कहे ते भागन लागे, झूठ कहा ना जाई।
मूंदी मढ़ी उघारि दीन है, खोटी खरी बताई।
कहि मीता नइये सन्तन का, सकल ब्याधि टरि जाई।

(2) तिन पर बज्र परै रे भाई, जा घटु दाया नाहीं।
नाहक जीव पकरि कै मारै, कैसा होय कसाई।
नहाय खोरि चन्दन दै बैठे ज्यों बकु ध्यान लगाई।
मछरी निगलत बिलम न कीन्हा, देखो या उजराई।
वारौं असुर बीस दस इन पर, और असुर कहँ पाई।
तापर फाटि परै कुलनाई, पांड़े की गरुआई।
मीता करै पुकार दहूँ दिसि, न्याउ करी रघुराई।
ताते समुझि चेति नल बौरे, जीव नरक मां जाई।

(3) संगति करौ विवेकु की, पाया भल दांउ।
मानुख देह दूलम है, हरि चरना ध्याउ।
भेखु बहुत पाखण्ड किये, ताहि भूलि ना जाय।
जिन संघु रामै पाइये, तिनका गहु जाय।
काया माया थिर नहीं, जमु कतहूँ ना जाय।
जियरा का घेरे रहै, जिउ जहाँ जहाँ जाय।
अबके छोरु छड़ाय दे दुःख बड़ा टरि जाय।
मीता बाचा नामु लै, तब भै कुशलाय।

(4) मियाँजी तब किताब को बांचै, जबु साहेब सो मन रांचै।
बिसरै देहि जपै को तसबी, प्रेम पियाले छाकै।
कलमा काल गाजै घटु मांही, कुफुर तोरि मघु लागै।
किये दिदार मिटै तन ताई, जानै जेहिका लागै।
जीव जंत्र काहुइ ना दुखवै साहेब सबु घटु राजै।
मेहर दया बिन पीउ न पावै, जगिवे होय सो जागै।
ख्वाहिंद खुशी कौन बिधि होवै, नारि हुकुम नहिं मानै।
कहि मीता सोइ बंदा मिलिहै, हक नाहक पहिचानै।

(5) मियाँजी मुसलमान सोइ दीना, जेहि पीर मिले परवीना।
हिरस हैवान दूरि कै राखै, कामु न करै कमीना।
बकरी पाँच हवैं घटु भीतरि, ममता मुर्गी संघा।
इनका मारौ जीव उबारौ, घटही मक्का मदीना।
आई गई गाई को मारो, होई जोति परगासा।
गइया दूध खान की मारै, दोजक होइहै बासा।
किया पिसाब जुइन जीव भीतरि, तहवाँ जिउ उपजाना।
तिनका मारि मांस तुम पावा, भल तुम्हरा मन माना।
कपरा मां कुछ छिटकी परई, ताको कहो नपाका।
मुर्गी भल कीरा चुगि पाये, कहौ भई यों पाका।
कहते हैं मुर्दा नहिं खाना, कै हलाल कै खाना।
जीव देही ते बाहर होइगा, तब तो भा मुर्दाना।
करौ बिचारु डरौ साहेब का, छाड़ौ गरभ गुमाना।
बिना छानु आखिर दुखु पइहौ, मारु परी घमसाना।
जाके मेहर सोइ निज पीरा, जो पर पीरा साना।
कहि मीता सोइ करम कसाई, जिन पर दरद न जाना।

(6) ओ मियाँ दरद वंद दरवेसा, जिन हक साबित कै देखा।
रहै गरीब जुलुम नहिं करता, उनका न्यारा लेखा।
मूसै आपु मुसलमाँ सोई, ईमान दोस्त जिन कीन्हा।
घर के चोर मूसै ना पावैं, भेदु पीर जब दीन्हा।
तू खूनी की है दरवेसा, मो जिय होय अंदेसा।
मुर्गी बकरी गाय जबै की, किन संदेस तोहि भेजा।
आखिर हक हक्क करेगा, तब सौदा है तेरा।
कहि मीता हियाँ कैले जोरा, हुवां दुःख हवै घनेरा।

(7) रे बौरे काहे का बन बन डोलै, मनु गाँठि काहे ना खोलै।
बनु लोखरी औ रीछ सियारा, तेऊ ना तोसों बोलै।
बन तन बड़ा तहाँ है मूरी, समुझि देखि को बोलै।
सबका साहेबु है घटु भीतरि, जानैगा जो मिलै।
मठु मां पाहन मूरति देखी, तीरथ पानी झेलै।
कहो तौ साहेबु कहाँ तू देखा, जनि भूलेन संघु भूलै।
लोभी गुरू लालची चेला, दोऊ नरक मां हेलैं।
कहि मीता गुरु रामु मिलावै, काटि देइ जमु जालै।

(8) चलु चलु नैहर ते छाड़ि, है भ्रम भारी।
कालु जालु तिहुं लोक पसारा, धरि धरि डरिहै मारी।
ससुरे राजु सुराज, परम सुख पहिरी सारी।
मरनु न कबहूँ होय, पिया सो होय पियारी।
आई गाई माई छाड़ो, छाड़ो सकल चिन्हारी।
नाहित आवति मोंगरा लीन्हे, पीछे करिहै रारी।
बुन्दक सुक्ख स्वाद के काजे, बिसरति है ससुरारी।
जहँ के गए बहुरि नहिं अवना, मीतै परी बिचारी।

(9) रे बजर परै तोरी बंभनाई, बकरी मछरी जब खाई।
औरे का कस कहै कसाई, तू तौ है वाही का भाई।
बरन सुनाय जगतु सब मूसा, अंधरे का सूझै नाहीं।
तू खावा सो डोमरा खावा, तोहिते घाटि काहे आही।
पहिरि जनेऊ चन्दन दीन्हा, नकुआ दाबा सुचि काही।
यहै बिसाति हवै बंभनइया, दमरी माहीं सबु आही।
बेदु पढ़ै कुछु भेदु न जानै, उद्दिम काजे पढ़ि जाई।
बेदु पढ़े कोउ मुक्ति न पावै, करम फाँसि बेदौ आही।
फांसे विष्णु महेसौ ब्रम्हा, असुर देव मुनि जगु आही।
चौबिस दस जमु सगरे लूटे, बाचे सन्त रामु बांहीं।
जानै काह बिखै मदु प्रानी, सन्त बरोबर कोउ नाहीं।
जिनते जुदा नहीं अभिनासी, सोई मिलि सोई हो जाई।
सन्त के निंदे निहचै नरकी, पाछे की सुधि तोहि नहीं।
काँटा बोओ राह अपन मां, हमका जोखिम कुछौ नहीं।
ब्राम्हण सो जो ब्रम्है मिलिया, सो ब्राम्हण संतै आहीं।
बिना भक्ति सगरे हैं शूद्रा, कहि मीता पदु सति आही।

(10) चकहा सतगुरु की मति ठानी, राह भली निरवानी।
चकहा ते हंसा होइ बैठा, छाना दूध औ पानी।
बेदु पुरान छोई कै जानै, पाई रसु की खानी।
पियत अमर भये अनभै उपजा, ताकी अकथ कहानी।
भूले पंडित भूले भेखी, भूले सुर मुनि प्रानी।
तीनि देउ मारगु ते भूले, सो गति हंसन जानी।
सांची कहौं ता कोउ नहिं मानै, झूठी या संसारी।
जन मीता तिनसो का बोलै, जा घटु कुमिता रानी।

(11) अचिरिज एकु सुनौ रे भाई, घर अपने की बात।
आगि लगी तब कुशल परी घर, जरा रकत औ मांस।
मछरी चढ़ी बिरछ के ऊपर ससा सिंघु भुनि खात।
अजिया के घर भेड़हा जाया, पंडित बूझौ बात।
जो बूझी सो पार उतरिया, अन बूझे नरकै जात।
पढ़ि बिद्या पंडित बौराना, दमरी की सबु घात।
जमु दारुन की सुधि बिसराई, तोहि ताके मड़रात।
कहि मीता जगु कालु खिलौना, चलै आपनी घात।

(12) जगु सो बादै मोरि बलइया, सुज्जन के हित बात जनइया।
कांदों ईंट डारि कै का गुन, देहि भरै औ मन घिनुअइया।
अनबूझे जिउ हवै कालु का, बूझे अंश हमैं मिलि जइया।
कालु का अंश हाथु ना छूअै, काहे का बादु करै बहुतइया।
छानु किये ते साहेबु पाया, सतगुरु चरन जबै मनु लइया।
या मैदान सिंघु सूरों का, कूरा तहाँ नहीं ठहरइया।
ताल तलइया हंस न पइठै, बकुला के गुन ई हैं भइया।
कहि मीता जाके मान सरोवर, सो कस पइठै ताल तलइया।

(13) का पीपा का करैं कबीरा, भजु निज नामु मिलैं रघुबीरा।
वोऊ पहुंचे हरि के तीरा, तू तौ भया माया का कीरा।
पर करनी कथि कामु न आवै, तू करनी कीन्हा नहिं बीरा।
जैसे रंकु लाख बतलावै, कौड़ी नाहीं वाके तीरा।
पानी कहे प्यास ना जइहै, बिनु पिये साधो करो बिचारा।
गल्ले रिल्ले छाड़ि अबहु दे, नाहित सेइहै जमु का द्वारा।
पाँच मारु होइहै तब मुजरा, ऐसी चालु चलै सो सिगुरा।
कहि मीता सोई गुरु मेरा, बहुरि न करई या जगु फेरा।

(14) अब मैं पाया राम सनीपी प्रीति भली तिनही की।
जाकी प्रीति कटी जमु बाधा, जगु मां बाजी जीती।
आनि देव मोरी पूजै बलइया, उनहू का जमु लूटी।
हमतौ भये मवासी वासी, सो पदवी ना छूटी।
पाखंडी का अंधा पूजै, माया खइहै धूती।
सूकर स्वान कीच मां राजी, चन्दन सो का प्रीती।
सदा मलीन पंथु का जल ज्यों, यों साकठु की रीती।
कबहुँ न होय थीर मनु तिनका, जेहि मीता अनरीती।

पद

(15) भजन बिनु कौन तरा रे भाई, सो भजन सन्त सो पाई। सो संता झूंड़न है नाहीं, एकुइ दुइ दुनियाई।
कबै भभीखन कबै अहिल्या, कबै गिद्ध गति पाई। कबै सुदामा तरी सेवली, झूठि कहे दुनियाई।
कबै विदुर औ तरी द्रोपदी, गज कैसे गति पाई। सबै हवैं चौरासी के जिउ, अंधरन समुझि न जाई।
ध्रू पहलाद नहीं भे संता, मोरद्ध्वज रे भाई। नारद मुनी परपंच मां भूले, मूंदी खोलि सुनाई।
रामचंद नहिं तरे कन्हइया, बुद्धौ ना गति पाई। शिव ब्रम्हादिक की गति नाहीं, तरिया सधन कसाई।
ब्रम्ह सनीपी गोरख भे हैं, सो गति भरथरी पाई। गोपी चंदा दास कबीरा, पीपा मीराबाई।
धरमदास रैदासा नामा, जन कमाल गति पाई। दादू बेहना पोजा जुलाहा, जन मुरारी गति पाई।
सेनि धना औ दास मलूका, हरीदास गति पाई। जन बेनी द्वारिका भगीरथ, सोई गति नानक पाई।
महिमी प्रागिनी दास सुझारी, त्रिलोचन गति पाई। जन वाजिद औ अहमद चौधी, दरगा हाथै आई।
दास छबीले बंभन यारा, सोई गति इनहू पाई। नरसीले ध्रमदास मुराई, मोसिम भागू पाई।
रूपन बलन औ शाह हुसैनी, लालदास मति पाई। सादीशेख और मलकमुहम्मद, सोई गति इनहू पाई।
सन्त मता है अगम अपारा, कोटिन मां कोइ पाई। कहि मीता बिन दीन गरीबी, हाथु न कबहूँ आई।

(16) गहो सरना, होउ गरीब भजो चरना।
राम दया अनभय पद दान, आनि देउ सो का सरै काम।
रामचन्द्र कान्हा तीनिउ देउ, ई नहिं कर्ता सुनि निजु लेउ।
ओमकार है कौने ठाउँ, सोई खोजो अब के दाउँ।
ध्रू पहलाद नारद औ सेस, वा पदु परा न इनका देखि।
प्रहलाद प्रतिज्ञा पूरी कीन्ह, असुर मारि इन्द्रासन दीन।
पिता ते ध्रू गे बनै रिसाय, माया एकु लोक दिया जाय।
परलै माहिं बिनसि सब जाये, पदवी अटल कबीरा पाये।
नामा अटल अटल रैदास, पीपा मीरा एकै साथ।
कहाँ लगि कहौं बहुत हरिदास, जे रहते अभिनासी पास।
छानु किये जन मीता जाय, आगे हरिजन देहैं बताय।
सन्त सिवाय और को आय, जो साहेब का देइ मिलाय।

(17) धनि धनि भई काया, तेरी नगरी भला सचु पाया।
खोटी हती भई अब चोखी, राम नाम जब ध्याया।
तब खोटी जब बिखु की माती, अब कंचन भई काया।
सतगुरु पारस हाथै आया, जिन धनु अलख लखाया।
तेतिस तीन अठासी, तोहि मां पूरन ब्रम्ह समाया।
अकइस लोक समुद्र पहाड़ा, खोजनहार जनाया।
जुगन जुगन हम तोहिका पाया, जानि न कुछौ पराया।
कहि मीता अब काजे आई, आवागवन मिटाया।

(18) अरे अरे काग लबार करै का बोलिया, हमै धनी की आस तहाँ चितु जोरिया।
चौदा ऊपर राज्य अटल लिखि पाइया, सतगुरु बहिंया पाई ता बनी बनाइया।
मनु आया संतोष टिसुना गई खांड़िया, किया अमी रसु पानु भई मतवालिया।
सुनु मीता के भेद बिरल कोइ जानिया, जोगी का मत सार और बिखु बादिया।

(19) सावन नारि चली सब नैहर, हमहूँ चली पिया देस रे।
श्यामा साड़ी धुरपटने की पहिरी, त्यागौं बापु औ गेह रे।
भईया भउजिया मइया जो रोवैं, रोवैं नगरिया के लोग रे।
नउवा जो रोवै बरिया जो रोवै, रोवैं धरी जिन देह रे।
पइले पार एक पीपर झलरा, पिपरौ लहरिया लेइ रे।
आगे नगर है मीता का न्यारा, जिनसे जुरा है सनेह रे।

(20) सावन घर बन अंगना न भावै, बिरन बिरन रटि लागि रे।
जाओ रे कागा मोरा लाओ संदेशवा, देहौं दूध औ भात रे।
जो रे कागा संदेशवा ना लइहौ, देहौं पंख मरोड़ि रे।
पाहुन तीन ननद के घर मां, और महतिया पाँच रे।
इनके संघ कौन मोरा रहना, कब धौं छुटिहै साथु रे।
आओ री बहना एक संघ झूलौं, हिलि-मिलि हमसे लेउ रे।
गहरी नदिया नाउ पुरानी, को धौं उतारै मोहें पार रे।
वोई मीत मोरे बिरन कहावैं, वोई उतारैं मोहें पार रे।

(21) एक जोगिनी भुलानी, जोगिया का ढूढ़ै गली रे गली।
बीच मिलिगे हैं सतगुरु, कहना जोगिनिया भुलाय परी।
आइउँ सतगुरु सरना, पार उतारो सही रे सही।
कैसे पार उतारों, भवजल नदिया अगम भरी।
घटवारु जो लागै, जमु बाटि लेति है डरी रे डरी।
हुआँ नींदा न भूँखा, रैनि नहीं हुआँ भोरनिया।
हुवां मीत सुहागिल, सतगुरु बंदी छोरनिया।

आरती

(1) करु आरति गुरु ज्ञान बिचारी का पाहन ढिग दियना बारी।
ब्रम्ह अगिन अंतर पर जारी उलटा कवँल आत्मा तारी।
सुरति निरति लै खोलु किवारी पर आतम की होऊ पियारी।
पती बरत ऐसा जो धारी सेवक साहेब होय न न्यारी।
निसि दिनु आरति लागि खुमारी आरति करति कुमति गई मारी।
ऐसी आरति हम मन धारी आवागवन चले निरुआरी।
कोटि भानु जाकी छवि पर वारी सो साहेब के भये दिदारी।
भरम पसार परी संसारी कहि मीता पीतरि ना तारी।

(2) दीपकु बारि काह दिखलावै आरति भेद बिरल कोई पावै।
सुक्रित जोर ढुरै ना पावै जागु जागु आरति बनि आवै।
गगन मंदिल ते साहेब आवै बांह पकरि जन की लै जावै।
मकर तार चढ़ि या विधि जावै कहि मीता सो बहुरि न आवै।

मंगल

(1) गुरु मिले बेनीराम तो मंगल गावउँ हो, कबिरा नानिक कोटि तिन्हें समझावउँ हो।
खोटी काढ़ौं तौलि तौ राह बतावउँ हो, उइ हैं ज्ञानी लोग जीति तिन्हें आवउँ हो।
साकठ देखि डेराउँ तौ हा हा खावउँ हो, सुज्जन का गुरु होउँ तौ पार लगावउँ हो।
साहेब का सिर नाय गरभ ना आवउँ हो, कहि मीता हरि दास तिन्है समुझावउँ हो।

(2) सतगुरु साहेब बिनती कौनि विधि करिये हो, सो विधि देउ बताय तो अरजी करिये हो।
खड़ी रहेउ कर जोरि तौ माथु नवायेउ हो, रह्यो चरन चितु लाय तौ मन ना डोलायो हो।
पूछे कहिये बात तौ नजरि बिचारेउ हो, लखि लीन्ह्यो मतसार तहाँ चित लायेउ हो।
जिन मिले तपनि बुझाय सोइ गुरु पूरे हो, रागु दोख जमु जालु कबहुँ ना ब्यापै हो।
जाति पांति सबु झूठ झूठ जगु मारगु हो, रामु मिलै जिन बांह तेई गुरु करिये हो।
कान सुनावैं मन्त्र जीभ रटि लावैं हो, ते भव सागर जीव बसैं जमु द्वारे हो।
ई गुरु जमु की फांसि नरक लै जावैं हो इनका ना पतियायो ता जलमु बेगारै हो।
गुरु विवेकु यहु मंगल झूठा निन्दै हो, सांचे लेई मानि मीत सति भाखै हो।

दोहे

(1) अपने घर में भूसी नाहीं, पर घर दूध बियारी।
कहि मीता परमेसुर छांड़े, मांगि खांय भेखु धारी।।

(2) जीव ब्रम्ह का जब मिलै, सो जोगी है सार।
जाको शंकर खोजि थकित भे, नाहीं पाये पार।।

(3) जोगी के नैनन बसै, अलख पुरुष जगदीश।
ब्रम्हा शंकर जाको ध्यावै, आँखिन परा न दीख।।

(4) दाता दानी दोउ धरि खाये, कालु बड़ा है भोगी।
कहि मीता जिन आतम दरसा, बाचे तेई जोगी।।

(5) जटा राखि छारु गहि लाई, डसा बइठि मृग छाला।
जिभ्या निभ्या दोऊ चरावै, बहुतिन का घर घाला।।

(6) तीन लोक की राज्य, सन्त जन ना चहै।
पाई सुख की राशि, मीत कासों कहै।।

(7) जोर नहीं सन्तन के ऊपर, जुगन काल नौ गृह का।
हम रंग राचे हरि मद माते, काह गनै काहू का।।

(8) हमरे कारन सबु भया, हमही सब कुछ आंही।
हमते बिमुख नरक सब परिहैं, कहि दीन्हा जगु मांही।।

(9) गुरुमुख गुरुमुख जगु कहै, गुरुमुख बिरला कोइ।
कहि मीता गुरुमुख सोई, जो राम सनीपी होइ।।

(10) गुरुमुख जग मां एक दुइ, साकठ सब संसार।
कान फुकाये का भये, बिन पहुंचे दरबार।।

(11) मीता के मारग चलै, कबीर सरीखा होय।
मीत कबीरा एक हैं, कहिबे के हैं दोय।।

(12) कबीर खोजा शरीर का, मीत बखाना सोय।
जो हमरे मारग चलै, कबीर सरीखा होय।।

(13) अधम उधारन जे कहैं, ते सब भोंदू आंय।
जे घट मीत विवेखु है, तिन्हैं मिलैं हरि आय।।

(14) सन्तन का चीन्हा नहीं, करै तरै की आस।
कहि मीता तेई नरक मां, सदा कालु के पास।।

(15) हरि सहाय ते सबु बनै, हमते कुछौ न होय।
कहि मीता जन दीन की, दीनबंधु सुधि लेय।।

(16) कबीर नानक सूर तुलसी, भरम की भीति उठाई।
कहि मीता या देउँ गिराई, तारौं जिउ बहुताई।।

(17) मीता सेवक राम का, रहता सदा हजूर।
जो चीन्है सो ऊधरै, कथनी कथै मजूर।।

(18) हीरा के ढिग कांचु है, कांचु न हीरा होय।
डिठियारे संघ आंधरे, दिष्टि न पावै कोय।।

(19) डिठियारा अगुआ करो, जाते चीन्हो सन्त।
सन्त मिले ते सबु बनै, अबहूँ तबहूँ अंत।।

(20) देही हमारी छूटिहै, जबै अवादा होय।
जी अम्मर होय रहै, कहि मीता सुनु लोय।।

(21) गाढ़ि परे दइया कहै, पीछे कहई राम।
बिना चिन्हारी पाछिली, आवै कौने काम।।

(22) सुख मां तत्ता थइया, दुःख मां दइया हाय।
दूनो में नल पातरा, कैसे मता डिढ़ाय।।

(23) सुख दुःख दोनों एक से, तिन मन राम डिढ़ाय।
लगा रहै सो ध्यान में, मीता सन्त सुभाय।।

(24) धनियां मिलि धनियां भये, या में धोख न होय।
कथनी बदनी सठु करै, ते भय पार न होंय।।

(25) गुरु का शब्द बिचारिया, चीन्हि परे सब लोय।
मीता का सोई लखै, जौन पुरुबिया होय।।

(26) जौनि पीछला आंकुरी, मीता देइ संदेस।
सोवत सन्त जगावई, अपने का उपदेस।।

(27) धूरि उड़ाये ना छपै, रवि शशि का उजियार।
मीता हरिजन ना छपैं, जे पहुंचे दरबार।।

(28) धनी सनेहा तब जुरै, बानी पलटि तब जाय।
हंस कागु कैसे छपै, मीता पारिख पाय।।

(29) दास कबीरा नानक नामा, धरमदास औ दादू।
इन सन्तन नहिं पंथु चलाया, झूठे करईं बादू।।

(30) नानक तो गुरुमुख हते, त्यागा मछरी माँस।
माँस मछरिया खाति हैं, तिनका नरकै बास।।

(31) कंठी माला का जपै, जपि ले सांचा नाम।
जाते साहेब पाइये, सदा होइ विश्राम।।

(32) वातौ नौका नामु है, जेहि जपि उतरै पार।
काठ माल मां चितु दिया, रहिगा नामु निनार।।

(33) ध्याइ लेउ सोइ नाम, कबीरा जेहि तरा।
रैनि दिना जपु माल, नजरि तो ना परा।।

(34) तारन वाला कौन, जो सतगुरु ना मिला।
भूले मूर्ख गवांर, पूजैं मूरति शिला।।

(35) गुपित मते की बात, कोई जन जानही।
जिन्हें मिलैं करतार, सो काह बखानही।।

(36) गुरु का शब्द बिचार, न कबहूँ मन परै।
झूठै करै विवाद, कौनि विधि कै तरै।।

(37) मुख ब्राम्हण कर क्षत्रिया, पेटु वैश्य पगु शूद्र।
ई अंग सबही नलन मां, को ब्राम्हण को शूद्र।।

(38) जीव ब्रम्ह का जब मिलै, सो जन ब्राम्हण होय।
कोछे ब्राम्हण झूठ है, भूले हैं जगु लोय।।

(39) पाँच तत्व ते सब बना, सब मां ब्रम्ह समान।
कहाँ अठारह बीस हैं, कहु मूरख सोइ ज्ञान।।

(40) करनी ते ब्राम्हण भये, ते जन संतै आंय।
नामा औ रैदास कबीरा, सधना दिया गनाय।।

(41) जगु अंधा का जानई को धौं ब्राम्हण आय।
जाका हरि ब्राम्हण कहा, सो तो नानक आंय।।

(42) भेदु भाव जानै नहीं, मूरख लागैं पांय।
जेहि ब्राम्हण का हरि कहा, सो तो पीपा आंय।।

(43) सतगुरु बंदी छोर, भागि ते पाइये।
नहिं तौ जमु की जालु, परे दुःख पाइये।।

(44) मीता के मारग चलै, कबीर सरीखा होय।
भोंदू कथनी का करै, मत राखा है गोय।।

(45) चतुरन का घरु नरक मां, सुज्जन के संघु राम।
मीता समुझि विचारियां, चढ़ि कै ऊँचे धाम।।

(46) सुज्जन फूल गुलाब का, आस पास हैं काँटु।
हरिजन लीन्हा चहति है, आड़े पंडित भांटु।।

(47) जिनका पिछला आंकुरा, तिनका देइ जगाय।
आगे ते चलि आइयाँ, सन्तन केरि सुभाय।।

(48) मीता तो दीपक भया, पापी भये पतंग।
बिन जारे जरि-जरि मरैं, तो काह करै चतुरंग।।

सुज्जन का उपदेस

सन्त ते आहीं जे परम पुरुष का मिले हैं, आवागवन ते रहित हैं, ते जेहि का कृपा करैं तेहि का परम पुरुष का मिलाय देईं, आवागवन ते रहित कै देईं। ते पुरुषन के संसौ नहीं होति, उनके जर-जूड़ी नहीं अउती, उनका दुःख पाइ कै मरन नहीं होत, उनके बारु पकते हैं, काया विरध नहीं होती, उनकी आंखिन की जोति मध्यम नहीं होती, उनकी आँखिन की पलक नहीं लगती, उनके बायगोला नहीं होत, उनका छई रोग नहीं होत, उइ कुष्ठी नहीं होते, उनका सांक नहीं आवै, उइ काने नहीं होते, उइ अंधरे नहीं होते। उइ कंठी माला काठु की नहीं पहिनते (पहिरते), उइ माटी घोरि कै छापु तिलक नहीं करते। उइ जगु के बरत हैं ते नहीं करते, उइ तीरथ नहीं जाते, अजुध्या, प्राग, काशी, वोड़ैसा, मथुरा-द्वारिका नहीं जाते, उनके चरनन का ध्यान सब तीरथ करते हैं, उइ कथा सुनै नहीं जाते, उइ भेखु नहीं धरते, उइ पाथर-पीतर कै मूरति नहीं पूजते। उइ गिरही होति हैं, उनके साखा-पात होति हैं, पहुँची पदवी के निर्वान। जेहि मां इतने अंग होंय तिनके पद-साखी सत्य हैं, जेहि मां ई अंग ना होंय औ साखी-शब्दी करते होंय ता जानेउ की ई नरक के जीव आहीं। सन्तन का इतना होति है- खाजु, दाद, फुरिया, आँखी उठती है, पेट झरता है, इसलेसमा होत है, फिरहलवाद होत है। सन्त वोइ आंय जे परम पुरुष का मिलाइ देईं जेहिका कृपा करैं। सो परम पुरुष कै छबी ऐसी होति है कि कोटिन सूरज चन्द्रमा वा छवि का नहीं पावैं, ऐसी छवी दिखाई देइ ते सन्त आहीं और जे किरिया बनावते हैं सो सन्त ना होंय। उरधमुख पवन चढ़ावति हैं ते अजगर होति हैं। रेचक कुंभक कै जे उल्टा पवन चढ़ावति हैं ते बाजीगर के बन्दर होते हैं। जे काढ़ि कै आंते धोते हैं ते कुत्ता होते हैं। जे पट्टी लीलते हैं ते कुत्ता होते हैं, जे धोती नेती करते हैं ते कुत्ता होते हैं। जे जल सेनी होते हैं ते मछली होते हैं, जे पचग्नी साधते हैं ते पहिले जनम चकोर का फिर भैंसा होते हैं। जो मुर्दा का लै कै नारि जरति है सो पहिला जनम चकोरी का होति है फिर विषखोपरनी होती है। जे धरती मां माटी लेते हैं अजगर होते हैं, जे छापु दिवावते हैं, तातु कै, औ कहते हैं कि हम श्री वैष्णो आहिन ते दुमुही साँप होत हैं। जो गया में ब्रम्ह जूनि कहावति है, तेहि के भीतरि पैठति हैं तेऊ अजगर होते हैं। जो जगु उत्तम कै धरति है तेहि कै खबरि सुनाई है। जौनु सब मध्यम कहति हैं तेहि कै बात नहीं चाली। यह बात मां मनुष्य देही पावै जो मांस मछरी ना खाय, काहू जीव का दुःख ना देई, आपन विगान अंश पहिचानै, दाया धरम दीनता लीन्हे रहै ता फिर मनुष्य देहि पावै। जो भक्ती करै ता परम पुरुष का मिलै, आवागवन ते रहित होय सन्तन के संघु मां, सो बड़े भागी काम होय। सो भक्ती शिव, ब्रम्हा, विष्णू नहीं पाई, नारद नहीं पाई, ध्रू, पहलाद नहीं पाई, सो भक्ती भरथरी, गोरख, गोपीचंद, सुल्तानी बलख के, कबीर-जुलाहा, सधन-कसाई, रैदास-चमार, पीपा, नामा, धरमदास-बनिया, सेनी-नाऊ, धना, मीरा, नरसीले-महतौ, पोजा-जुलाहा, दादू-बेहना, बेनी-कायथ बरई छतरुआ के, सुझारी-धोबी तेंदुली के, सेख-सादी, मलक-मुहम्मद, समन-चुरिहार, धरम-मुराई, मोसिम बेग-मुगुल, भागू-नाऊ, वाजिद-पठान, शाह हुसैनी, रहीम, कमाल, जमाल, चौधीराम, मुरारीदास, दरगा, गनिका, अजामील, महिमी-कुंजरिन, भागीरथ-ब्राम्हण, मलख हरिदास, द्वारिका-हलवाई, नानक, सुधरा, चंद किशोर-खत्री, रंका बंका, बंभनुयारा, खेम्मन, हरिदास, कान्हा दास, कड़ा का शाह-मंसूर, लाल दास दिल्ली के इन भक्ती पाई। संसार में जे छोटे कहावति हैं। और सन्त बहुत भे हैं ते नहीं लिखे, जो लिखे हैं सो सत्य हैं, जो असत्य कै जानी सो नरक ते कबहूँ ना निकसी। परम पुरुष का मिलाए सो भक्ती आय और सब पाखण्ड आय। रामचंद कन्हैया का जे कहैं कि नारायण आंय ते नरक ते कबहूँ ना निकसिहैं, आवागवन नरकुइ आय, छूटी तब सतगुरु का ध्याये ते परम पुरुष का मिलाय देहैं।

हुकुम परम पुरुष का

जिनका कीन गीता आय ते कृष्ण सन्त आहीं, सन्तन का जाना तेई अंकूर आहीं, सन्तन का जाना तेई विदुर आहीं, सन्तन का जाना तेई सेवली आहीं, सन्तन का जाना तेई गोपी आहीं। गीता के करने वाले सन्त कृष्ण आहीं। तिनके ना काम ना क्रोध निरविकार हैं। परम पुरुष है निरविकार। सन्त ते हैं जे परम पुरुष के सनीपी भे हैं, भेदी भे हैं। शिव अपने मन कहते हैं कि परम पुरुष का नहीं पावा, ब्रम्हा कहति हैं की परम पुरुष का नहीं पावा, विष्णू कहते हैं कि हम परम पुरुष का नहीं पावा, ते ही विष्णू कै उपासना दसरथ कीन्ह या मांगेनि कि मोरे तुमही अवतार लेऊ, ते विष्णू एक कला होय दसरथ के अवतरे, रामचंद्र नाउ परा, तिन देह छाड़ी, मथुरा में कृष्ण होय अवतरे, ते राजा भे, काम की बसी परे रहे, अर्जुन पाण्डवा किरिया की बसी मां रहे, विष्णू तो परम पुरुष का वार पार नहीं पावा, कन्हैया कैसे पावा। जिनका कीन गीता आय ते मथुरा के कृष्ण ना होंय, जिन पूँछा है पाण्डव अर्जुन ना होंई ना मथुरा के बिदुर आहीं जे गीता में लिखे हैं, ना मथुरा के अंकूर आहीं, ना सेवली गोपी आहीं जे गीता में लिखे हैं। जिनका कीन गीता आय ते सन्त कृष्ण आहीं। सन्तन का जाना तेई अर्जुन आहीं, सन्तन का जाना तेई अंकूर आहीं, सन्तन का जाना तेई गोपी आहीं, सन्तन का जाना तेई विदुर आहीं, सन्तन का जाना तेई सेवली आहीं जे गीता मां लिखे हैं। या मथुरा के लोगन का काम ना होई। गीता जो मथुरा के कान्ह कै जानी सो तरी ना।

ग्राम-बरईगढ़ जिला-कानपुर नगर



परिचय
सन्त बेनीराम साहेब

सन्त बेनीराम साहेब का जन्म जिला कानपुर नगर के बरईगढ़ नामक ग्राम में एक कायस्थ परिवार में संवत् 1675 विक्रमी (सन् 1618 ई०) को हुआ था। आपके माता-पिता का नाम ज्ञात नहीं हो सका है। आप सन्त हेमन्चल गिरि जी के शिष्य थे। आप एक आध्यात्मिक पुरुष थे और जीवन-यापन के लिए अध्यापन का कार्य करते थे। आपने एक अदत भक्तावली तथा कुछ पद बोले हैं। जिसमें सर्वप्रथम संवत् 1746 विक्रमी (सन् 1689 ई०) में आपने बतौर भविष्यवाणी सन्त मलूक साहेब को समझाते हुए पद बोला, कि संवत् 1780 (सन् 1723 ई०) में एक ईश्वरदूत (पैगम्बर) आयेगा और सन्त वाणी-वचन बोलेगा। अब तक बिना ईश्वर के हुकुम जो मिलावटी वाणी-वचन समाज में फैला हुआ है, उसको वह उघार कर, काट डालेगा। उसी भविष्यवाणी के अनुरूप संवत् 1747 विक्रमी तदानुसार सन् 1690 ई० में सन्त मीता साहेब प्रकट हुए और 32 वर्ष की आयु में संवत् 1780 विक्रमी (सन् 1723 ई०) में विश्व के समस्त मानवों के कल्यार्थ अपना उपदेश (वाणी-वचन) दिया। बेनीराम साहेब की भविष्यवाणी के 1 वर्ष बाद मीता साहेब प्रकट हुए तथा 28 वर्ष की उम्र में संवत् 1775 विक्रमी तदानुसार सन् 1718 ई० में मीता साहेब की मुलाकात बेनीराम साहेब से हुई। संभवतः सन् 1723 ई० में आपने देह छोड़ी होगी।

आपकी भव्य समाधि ग्राम बरईगढ़ तहसील-नरवल जिला-कानपुर नगर में बनी हुई है। समाधि के निकट गाटा संख्या-498 रकबा 0.1430 हे० (सवा ग्यारह विसुआ) व 493/1892 रकबा 0.0410 हे० (सवा तीन विसुआ) नहर के पास की भूमि को मेला आयोजन, समाधि के सुन्दरीकरण व समाधि के विस्तार मात्र के लिए ही साहेब दयाल मौर्य (उन्नाव) के सम्पूर्ण आर्थिक सहयोग से तत्कालीन मुख्यग्रन्थी (समाधि सन्त मीता साहेब पुरवा उन्नाव) सन्त गुरुनारायण कुशवाहा जी के नाम बैनामा रजिस्ट्री 21 जून सन् 2008 ई० को कराई गई थी। विक्रेता यशवर्धन व हर्षवर्धन पुत्रगण स्व० राधाकृष्ण व राजीव व संजीव पुत्रगण बालाकृष्ण व श्रीमती सरोज देवी पत्नी स्व० बालाकृष्ण व राकेश कुमार पुत्र चन्द्रशेखर व श्रीमती देवरती पत्नी स्व० चन्द्रशेखर ने नहर के उस पार वाली बरिया गाटा सं० 493/1892 रकबा 0.0410 हे० बिना पैसा लिए दान स्वरूप समाधि उपयोग के लिये ही बैनामा लिखा था रजिस्ट्री के समय क्रेता-विक्रेता के साथ-साथ क्रेता पक्ष से साहेब दयाल मौर्य, हरिप्रसाद मौर्य, रामसहांय कुशवाहा, रामलखन कुशवाहा, रामबक्स कुशवाहा आदि मौके पर उपस्थित थे।

उपरोक्त स्थल पर संगतियों के रहने के लिए दो मंजिला कमरे का निर्माण सन् 2007 ई० में डॉ० महेश एवं संगतियों के आर्थिक सहयोग से सम्पूर्ण कराया गया। स्व० गुरुचरन कुशवाहा करिया खेड़ा के आर्थिक सहयोग एवं संगतियों के श्रम सहयोग से एक बारादरी का निर्माण सन् 2010 ई० में सम्पूर्ण कराया गया। डॉ० महेश प्रसाद निवासी जगेसिया सण्डीला जिला-हरदोई ने भी लगभग बीस वर्ष से अधिक का समय समाधि की देख-रेख एवं पेड़-पौधे लगाकर सुन्दरीकरण का अति सराहनीय कार्य किया है। उपरोक्त स्थल के सारे कार्य सन्त गुरुनारायण कुशवाहा जी की देख-रेख में ही सम्पूर्ण कराये गए। आपकी समाधि पर प्रत्येक वर्ष चैत्र शुक्लपक्ष पंचमी व षष्ठी को आपके शिष्य व ईश्वरदूत सन्त मीता साहेब द्वारा रचित "परम ग्रंथ (मीता-ग्रन्थावली)" का पठन-पाठन संगतियों द्वारा किया जाता है। आपने अपने शिष्य मलूक साहेब को समझाते हुए यह कहा-"बानी अगम हमारि है"।

पद

(1) बानी अगम हमारि है, तुम सुनौ मलूका ज्ञान हो। सुई अग्र एकु घाटु है, तहं जन बिरला ठहराय हो।
बीचै मां नानक रहे रे, गुरु सो चोरा कीन। ताते सब धन ना मिला, कुछु दास कबीरा दीन हो।
जन कमाल रैदास का रे, कबीर सरबस दीन। पीपा सधना भारी भये, सोइ धरमदास का कीन हो।
नामा मिला कबीर का रे, भये ब्रम्ह मां लीन। जैसे का तैसा किया, जिन साँचु साँचु सिरु दीन हो।
बीचै मां बहुतै रहे रे, छोरु कबीरा लीन। तहां की बातें मैं कहौं, तोहि बोली परै न चीन्हि हो।
धनी हुकुम मोहिं ना किया रे, ताते ढोलु न दीन। संवत् सतरा सौ असी आये, एकु होई जग का जीत हो।
बिना हुकुम जिन पद किया रे, ते सब डारी काटि। पूरी अदल चलाइहै, वासो छपी न पूरी घाटि हो।
लूटा ज्ञान कबीर का रे, सोऊ लेई छड़ाय। कहि बेनी अस होगा, तूरि कथनी देइ बहाय हो।

(2) अरे मन राम कब भजिहौ, बहुरि यहु दाँव ना पइहौ। दोऊ कर मींजि रहि जइहौ, अंत फिरि बहुत पछितइहौ।
सुन्यो ना भागवत गीता, नहीं सत्संग कुछ चेता। रह्यो मन काम औ क्रोधा, सदा परतोख मां बोधा।
जबै जम दूत आवैंगे, निकालैं प्रान येहि तन से। सबै सुख भूलि जावैगा, नहीं कोई काम आवैगा।
सो बेनीराम यों गावैं, चरन मुनि नाथ के ध्यावैं। दया कै आप आवैंगे, बहुरि नहिं जनम पावैंगे।

भक्तावली आतम प्रगास

मन सुमिर पद निर्वान, पावन पतित हरिजन प्रान। जे पदु उर धरे अज आदि, सिद्धिवर बुद्धिवर सनकादि।
सुमिरत हर्ष हिरदै महेश, नित्य नौ निगम सुमिरत शेष। भरथु भुसुंड भरथरी भान, नारद सारद हनोमान।
गौतम गीध गिरजन भूप, सुमिरत भारद्वाज सरूप। शशि अरु शिला सिन्धु सुमेर, अत्रिक कपिल मुनि कुबेर।
मारीच मारकंडेय मदन, सुरगन मुनिवर खट बदन। कौशिक सगर मुनि सुरभान, मुनि गुरु भ्रग सन्त समान।
भुवन भूरि भूतल भाल, दिग्गज चारि दस द्रग पाल। अरसठि आठ चौदा चारि, बारा दस की समवारि।
नौ छा छानबे छत्तीस, पंद्रह पाँच अरु पच्चीस। सोरह साठि तेंतिस तीनि, पद निर्बान के आधीन।
कसिप अदिति गृह औतार, जनहित भूमि भंजन भार। जानहिं जग्यावली प्रभाव, सुमिरत सुजस तीरथ राव।
भागि भभीखन कै कही, जिन हरि सरन डिढ़ कै गही। तारा तिरजटा ऋषि धरनी, जिनको प्रेम जाय नहिं बरनी।
जन प्रहलाद जै मुनि ब्यास, गोरख दत्त गोबिंद दास। सुख देव सूर सैनी सन्त, बूढ़न विसुनदास बसन्त।
जैदेव नामदेव कबीर, मीरा मुरतजा मति धीर। भारी भक्ति ध्रुव की जानि, अविचल कीन्ह सारंग पानि।
आरा नारि सुत कर लीन, माथे मोरतधुज के दीन। रीझा रामु लीन्हा राखि, अजहूँ सन्त बोलैं साखि।
राखेउ अंबरीख को मान, जाको श्राप दिहन कृसान। भीषम द्रोण कर्ण दधीच, सूपच ते नृपवर नीच।
शोभा दीन्ही नन्द किशोर, सहजे बाजा घंटा घोरि। पाण्डव कुमार पाँचों भाय, जाके संघु जादो राय।
भागि न आनि बालि समान, जाके द्वारे श्री भगवान। सेवरी कुबरी नीर वादि, ऊधौ अंजनी उरगाद।
भोजन कौरवा परित्यागि, पायो बिदुर के घर सागु। सो भगवंत भूखे भाव, कीन्हेव रंक द्विज ते राव।
कीन्हेउ संदीपना को काज, राखेव द्रोपदी की लाज। जमला अर्जुना अंकूर, जिनको प्रेम मन भरि पूर।
कालू कृष्न दास कमाल, जनक बिदेह जमन जमाल। कूबा कीन्हा कामा पर्श, नानक शाह को जसु अर्स।
पीपा चतुर्भुज रैदास, रामानंद तुलसीदास। सालेह सालियां मकरन्द, वाई बमन परमानन्द।
धना सधना नरहरि दास, जाको सुजस लोक प्रकाश। विद्यापति गोवर्धनगीर, गणिका सहित लगावो तीर।

वाजी वाजिद फरीद, अलवलि आदि मा आसीद। हजरत नवी रोशन बीर, हिन्दू तुरक के गुरु पीर।
दरगादास दादू करम, खोजी खोई मिले भरम। घाटम औ त्रिलोचनदास, घूरी दास पूरी आस।
नृप नैनदास कल्यान, जस जड़ भरथ जोगा जानि। बीरनदास बद्रीनाथ औघड़नाथ को जस हाथ।
गंगाधर गजोधरनाथ, जाके सिद्ध चरनन साथ। भारी भाव गिर लिलकंठ, जीवन मुक्ति ज्यों बैकुंठ।
शीतल धर्मनाथ अहिबरन, पातक हरै परसत चरन। अनभो सहज प्रेम प्रगास, दास विनोद धरनी दास।
रमईदास रंका बंका, निकटै नामु धनी को अंका। हरजूदास हरि विश्वास, चिंतामनि मनोहरदास।
माधोदास मंगनीराम, मुरली मदन मोहन श्याम। अैनीराम तेजादास, गुफा रहे बारह मास।
मुनिअतिअधिक पावन सरस,पंडित चक्र पान को दरस। जाके प्रेम मन बच करम, जानत जय गोपाल को मरम।
बन्दों पद हेमंचल गीर, बेनीराम के गुरु पीर। रामानंद शंकरा चारज, लीन बनाय आपना कारज।
गुदरी धरी गुरगुरी मंद, मिले पतिशाह मुकुंद। सुमिर्.यो श्यामु गुर परताप, चक्की फिरी आप ही आप।
ईश्वरदास आसानंद, लालय सुजस ना को चंद। अहमद ऐ दिलदार वस्तु, मोहम्मद यार को जस जगतु।
आलम नवी रोशन नूर, कुदरति दस्त जाहि हजूर। भोलानाथ भोंदू भान, बोलै गैब को नीसान।
सो लुकमान को जस तेज, अजहूँ करत-फिरत बीरेज। अकिला औ इला वाकूब, मंजन मोल ना महबूब।
सम्मन सलेम साँचो बास, दास मलूक टीकमदास। टोपी पहिरी गोपीचंद, आयो सरनि परी हरि दंद।
बलख को पतिशाह प्रचंड, कम्पै लोकपति नौ खंड। देवै दंडु सेवै भार, भूपति संघु साठि हजार।
तुरिया गन अठारह लक्ष, दूसर कौरवा परतक्ष। हस्ती गन हजार बत्तीस, सारो छत्रपति को ईश।
मनि गनि मोती मानिक ढ़ेर, धनि धनि सरस नाम कुबेर। सो सुख छाड़ि डार्.यो भार, उतरेव सन्त संघ कै पार।
हेमानाथ दास किशोर, भजनी राम दास बहोर। सुरतीदास सन्त हुलास, कनक कुबेर केशव दास।
ज्यों परसोतमा को प्रेम, गवने भवन कुशल क्षेम। देव नरायना को भास, जाको सुजस लोक परकाश।
चेतन चौबिसों औतार, नखसिख सीखे निरगुन सार। भुवन भूरि भूतल भाग, पायो चरन सरनि प्रयाग।
खल अध ऋषी अबुध अचेत, पापी परम पांवर प्रेत। पीढ़ी चार पाँच को तार, दास कमाल को टकसार।
ज्यों गुलदावदी तामोल, तैसे पंथ प्रगटे कमाल। जानैं साधु जन या बात, सोई पोहप साखा पात।
दास कमाल का उपदेश, इंगला पिंगला दरवेश। वंशी बदनु दुरगादास, सपनेहु दूसरि नाहीं आस।
भातू दास दर्श प्रताप, भाग्यो त्रिविधि तन की ताप। बेनीराम कायथ जाति, बीत्यो तीनि पन येहि भांति।
बाल कुमार खेलति गयो, जुबां तीसरो पन भयो। लूटेव विप्र बेढ़िउ गाय, निन्देउ साधुजन गुर भाय।
चोरी घात पर धन धानि, आमिख पानि निसुदिन बानि। मिथ्या अधिक अधिक सोहाति, साँची बीस मां एकु बात।
देख्यो भेखु भारी भीर, बैठ्यो पीठ दै तहँ फेरि। गुरु उपदेश जबते दीन, सेवा भूलि कबहूँ ना कीन।
धोती अंचला कोपीन, कबहूँ पाव गज नहिं दीन। पूजा पुलक गुर मुनि जानी, कबहूँ न दीन कौड़ी कानी।
येहि जगु सकल औगुन खानि,नाहीं सूझै धर्म लाभ नहिं हानि। मेट्यो तरुन तन को ताप, कलि बलि काम प्रबलु प्रताप।
आयो बिरधापन को भाव, ज्यों मद उतरि मन पछिताव। तीरथ जोग जप ना कीन, गया पिण्ड पीतर नहिं दीन।
काशी द्वारिका हरद्वार, दद्दरी बद्दरी केदार। कीन्ह्यो हिंग लाज ना सेतु, लछिमन नीम खार समेत।
मथुरा गोकुल नांही कीन, अवध ना भूलि मारगु लीन्ह। शंकर जटा तीरथ राज, तीरथ रटन सन्त समाज।
जनक बिदेहपुर को धाम, नौमी दरस सीता राम। गंगा सिन्धु संगम भोर, गयो ना राज गृह की ओर।
बैजू नाथ ठाकुर द्वार, गयेउ ना तिरवेनी के पार। अरघ ना दीन हाथ उठाय, जप्यो ना मन्त्र मन चितु लाय।
जैसे बूड़त जल औ गाह, गुर गमि मिले वोहित थाह। आरत जानि असरन सरन, निरगुन दीन अबरन बरन।
सतगुरु मिले भातू दास, ज्यों रवि कमल तेज प्रकाश। बनत ना बरनी अलख लखाय,बिन गुरु लखा कहूँ ना जाय।
तिरवेनी पास त्रिकुटी पैठि, तहवाँ गगन हरिजन हाट। सोरह शंख बारह खण्ड, बूझल अकइस ब्रम्हंड।
बारह बन बहत्तरि धार, मेवर को ना वारा पार। चौदह भुवन तेरह तार, इंगला पिंगला दुइ धार।
सुखमुनि भरै नीर अकाश, सबु जगु पियै बिना पियास। बूझल बंकनाल को भेव, पीवै नारि-नर सब केव।
कंगूरा बूझा बत्तीस बीस, बूझल पाँच अरु पच्चीस। तीनिउ लोक तीनिउ गुन, सातो द्वीप सुन्य बेसुन्न।

बहुतै नदिया एकुइ सोत, दसवां द्वार जगमग जोति। शंकर जटा को परसंग, पाहन फोरि निकरी गंग।
अचिरिजु करै जनि जन कोय, तेहि जल बूड़त पर्वत दोय। माखी उड़ी बैठी डार, वाके नाहीं भाई भतार।
शब्द बुझाय सन्तन कही, बिन मूल गरभु वाके रही। बिन मुख बाँसुरी करताल, बाजा बाजते झंझकार।
दामिनि दमकी चमकै चंद, झमकै अमी उर आनंद। घूमहिं चक्र सो नितरंग, बिन पर उड़ै गगन भुअंग।
नाभी मध्य बाईं गाँठ, बूझल तीन पर सौ साठि। निसदिन जपै अजपा जाप, करम ना भरम पुन्नि ना पाप।
तिलपी वायु झिलमिल झरै, झालरि मोतियों की लरै। गुड़ी उड़ै बिना वाय, पुनि पुनि सुन्नि मांहि समाय।
देखल नैन सुनल ले कान, धरती बरखै भीजै भान। बादर ऊपर गगन अघात, फूला फूल डार ना पात।
भूला भँवरा जाकी बासु, ऊपर का नीर चढ़ै अकास। अंगुली बीस मो डारी फेरि, दाना मध्ये देखु सुमेर।
पानी मध्य पावक जरै, चित की चातुरी तहँ चरै। सांकरि बाट कहल ना जाय, पाँव पपील का न समाय।
सोडसि खांइयां खट चक्र, चारि ऊपरि पांचों वक्र। वेधै चक्र सोधै वायु, उल्टै पवन गगन समाय।
तीनिव लोक तेंतिसों देव, लख चौरासिया को भेव। लोमय लोम खिरकी खंडु, नहीं वहां पिण्ड नहीं ब्रम्हंड।
धरौ ना नाक करौं ना सैनि,करौं ना अगिन औ जल सैनि। भूलौं ना ठाढ़ि मरौं ना बैठि, मरौं ना भूख गुफा पैठि।
माला तिलक डारि कोपीन, सतगुरु हाथ अपने दीन्ह। नैनन दरस सरवन नाद, सहजे मिला गुरु परसाद।
हरि पदु बिमुखन की बात, जेहि हरि भजन नहीं सोहात। निंदहिं साधु बन्दहिं चोर, चाहैं रहनि चोर चकोर।
अंधरा हंसै दुसर दिठियार, अपना हगै चढ़े पगार। लोचन अंध हिरदय अनेमु, हरिजन हेतु हरिपदु प्रेमु।
तिनका अंध कहै सो अंध, हरि बिन सकल आसाधुन्ध। अंधरा सेन रामै जानि, कथनी कथै गीदर ज्ञान।
करनी बिना कथनी छार, जीभी बिन लोन के परकार। जीवत जलमु आमिखु खाय, मरै ता नरक निहचै जाय।
भव निधि को ना वारा पार, सतगुरु शब्द वो हित धार। सतगुरु ते ना दूसर हित्त, जो सुमिरौ तो सुमिरौ नित्त।
बूझल कवँल दल अस्थान, जेहि दल ऊपर खट दल जान। जहवाँ अष्ट दल को झाँप, तहवाँ अलख आपुहि आप।
द्वादस खोडस पर दोय, बूझल सहस दल जन कोय। बूझल उन मुनी आगार, शम्भू द्वार उमां को तार।
बूझल अरध उरध को अंग परेऊ ध्यान को परसंग। पहिला ध्यान नासा अग्र, दूसर नासिका सम अग्र।
तीसर त्रिकुटी के पास, चौथा गगन पैठि आकाश। जहवाँ दिवस नाहीं राति, जगमग जोति बिना बाति।
पावक पवनु धूम ना धूरि, धूप न छांह नेयरे ना दूरि। बिनु गुर भवन भरी सो नांहि, गुर गमि भवन अपने मांहि।
प्रेमी प्रेम होत उदोत, पल नहिं परत पलक अलोत। जबते पर्.यो अलख लखाय, दीन्ह्यो लाभु दूरि बहाय।
परसत परम पद निर्बान, बिसर्.यो लोक धंधा ध्यान। जप तप जोग पूजा दानु, आहुति होम पढ़बु पुरान।
बिसर्.यो दुनी औ तिथि वार, बरत यकादशी या ता वारि। कातिक माघ माधोमास, भव नहिं भरमि भूलै दास।
किरिया ना करौं तिरथ ना जाऊँ,छाड़ौं ना अन्न कंद ना खाऊँ। साधौ ना पवनु पिण्ड उरध, प्रानायाम पिऔ ना दूध।
लागै नीक कहल हमार, सतगुरु करौ ता उतरौ पार। आखिर अखरा करोर, तो नहिं सन्त जन की ओर।
जे जन भगति महिमां पढ़ैं, बेसक भगति सीढ़ी चढ़ैं। दासन दास बेनीदास, मन बच करम पद विस्वास।

इति श्री बेनीराम जी की
साधुमाला आतम प्रकाश समपूरन


समाधि
सन्त बदन साहेब
ग्राम-दोस्तीनगर
उन्नाव

परिचय
सन्त बदन सिंह साहेब

सन्त बदन साहेब का जन्म संवत् 1775 विक्रमी (सन् 1718 ई०) में उन्नाव जनपद के ग्राम दोस्तीनगर में हुआ था। आपके पिता का नाम ज्ञात नहीं हो सका है। आप सन्त सतगुरु मीतादास जी के शिष्य थे। आप ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी संवत् 1825 विक्रमी में मीतादास जी के प्रथम उत्तराधिकारी हुए। आपके स्वयं के लिखे वाणी-वचन संगतियों के पास उपलब्ध हैं। जिसमें 19 निर्गुण पद व एक दोहा शामिल है। आपने 85 वर्ष की आयु में फाल्गुन शुक्ल पंचमी संवत् 1861 विक्रमी (सन् 1804 ई०) में शरीर छोड़ा। दोस्तीनगर में ही आपकी समाधि बनी है, जहाँ प्रतिवर्ष फाल्गुन शुक्ल पंचमी व षष्ठी को दो दिवसीय सत्संग मेले का आयोजन होता है। जिसमें सभी संगती उपस्थित होते हैं और दो दिन तक मीता साहेब व बदन साहेब की निर्गुण वाणी का अनुपम पाठ करते हैं। मेले की मुख्य व्यवस्था ग्राम दोस्तीनगर निवासी ठाकुर शौरभ सिंह व गौरव सिंह पुत्रगण स्व० संतोष सिंह के द्वारा की जाती है। उत्तर प्रदेश के कई जिलों से संगती सपरिवार आकर सत्संग मेले का लाभ उठाते हैं।

पद

(1) साधो दीख जगत बौराना।
कोई पूजै देवी देउ भवानी दूध पूत बरदाना।
राम की भक्ती हमरे कुल खोटी, ते हैं जगत सयाना।
जो या जानै प्रभू कै देही, तिनका नरक निदाना।
सप्त पतालै अनहद बाजै, धरनी बंद देइ सुनु काना।
आदि अन्त एक मूरति झलकै, तेज न जात बखाना।
आवै ना जाय गरभु ना बासै, अस है तिनका बरदाना।
कहै बदन है भक्ति आंकरी, विरले बीरन दीन पयाना।

(2) माई मैं सखिया जांचन आई।
अबु जो कहौ करौं सोई भाई, दूजा बरत न भाई।
सतगुरु केवट पार लगावैं, जिनकी नाव चढ़ो दुनियाई।
सखी विचारि समुझि मुख बोलो, कठिन बहुत है भाई।
तन मन वारि सबु स्वादु बिसारै, सन्त मिलै तबु भाई।
धन्नि-धन्नि तूअ जुगन सुहागिन, जो या बरत डिढ़ाई।
काम क्रोध मद लोभ विसारै, हरि चरनन मनु लाई।
जैसे कमठ कुरिल का सेवै, जल बिच रहा छपाई।
कहै बदन सेवै सन्त पुनीता, रामै देइ मिलाई।

(3) सखी मैं जोगिन ढूँढ़न आई।
एकटक रही निरखि कै मूरति, नैनन पलक न परई।
सुन्नि महल माहीं उठति तरंगै, तहां सुरति लै लाई।
मकर तार चढ़ि आवै जाई, दुःख ना निकटै आई।
सप्त पताल बेधि एकु धागा, अनहद धुनी सुहाई।
शिव शक्ती गठबंधन कीन्हा, काम दहा तहं जाई।
ऐसी चालु चलै जगु कोई, ऐसी ही रहनि रहाई।
कहै बदन हम तिनके बन्दा, चरन गहै लपिटाई।

धमारि

(4) अरी मैं कैसे कै अब घर जाऊं री।
पनिया पियासी गगरी भरौं।
पिचकन मां रंग भराए, अबीर अतर-गुलाल,
गलियां खोरि छिनकत फिरौं, मैं तो झीने पट मरौं लाजु री।
पीतम मिले नैन भरि हेरे, मैं सखी रही लजाय री।
अपनी खोरि गलियां बिच पावो, मन भावै सो कामु री।
होरी खेलति हरि मिले, अबु छूटि गयी कुल लाजु री।
सतगुरु मीता धीर देईं, सब सखी उतारों पार री।

(5) रामजी लखन होरी खेलैं यह नगर अजुध्या आजु री।
बाजति ताल म्रदंग झांझ ढप निरत करैं अपद्दर वाल री।
सीता सैन सखिन को दीन्हा, घुमरि चलीं सब वाल री।
पकरहु री अवधपुर राजा, लेहु पितंबर मांगि री।
कोउ आंखी अंजि कर बोली, कोउ गावै भड़ताल री।
मानता प्रभुता ऐसी नगरी, नारि री।
कहैं बदन सो होरी खेलै, लक्षिमन का मांगैं वालि री।
मन माना प्रभु फगुवा दीन्हा, सखी लिए सब साथ री।

(6) हां हां मेरे लालन, नन्द भवन होरी रची है, जसमती देहैं दानु री।
सखी सयानी होरी खेलहिं, जसमती देहैं दानु री।
हां हां मेरे लालन, कौनि सखी पिचका लिए री, को लिये अतर गुलाल री।
नन्द भवन होरी रची है, जसमती देहैं दानु री।
हां हां मेरे लालन, सुरति सखी रंग लावई रे, निरति बजावै तालु री।
अनगन बाजा बाजई तहां, नन्दभवन वहां फागु री।
हां हां मेरे लालन, इड़ा पिंगला साधि कै तहां चलै सुख मुनी घाटु री।
दसवां द्वारा खोलि कै ये घूमति आवैं वाल री।
हां हां मेरे लालन, शिव शक्ती गठबंधन बांधे, केसर अंग लगाये।
अंगिया अग्र प्रेम रस बोरी, होरी खेलन जाये।
हां हां मेरे लालन, पाँच रतन लै नगरी आई, बाँधे है गुन तीन।
मूल दुआरे सतोगुन खेलै, सतगुरु मीता बीर।।

(7) जोगी झुण्ड न होंय, या दुनिया में एकु दुइ।
सुरति निरति लै जागै लोई, नगरी चोर मूसै ना देई।
गुरु के सबद मां रहै समाई, जाको चितु अनतै ना जाई।
मन इन्द्री जाकी बसि होई, आतम दरसी भेदी होई।
छारु ना लावै मांगै ना जाय, अपने घर किरखी कै खाय।
तिनके भेदु पावै ना कोय, जो पावै सो उन अस होय।
कहै बदन गुरु जोगी पाये, तिनका भरम सकल मिटि जाये।
भेख भरम के निकट न जाय, जोगी का मारगु न्यारा आय।

(8) मैं अंधा का जानऊँ तुम्हरी प्रभुताई।
हानि लाभ ना समझऊँ, बिखु रहा समाई।
औगुन अपने समुझि कै, जिया रहा ना जाई।
ते औगुन हरि ना धरे, ऐसे रघुराई।
मन बिनती नाना बिधि, तजि कपट कुराई।
कबहूँ कानी कौड़ी, ना गुरन चढ़ाई।
सब प्रकार औगुन भरे, गुन एकु ना आई।
अपनी ओर निहारि कै लिया नाउ चढ़ाई।
विरध तुम्हारो अधम उधारन, सो सुनि सरनै आई।
मो सम अधम न दूसर जगु मां, सो तुम लीन बचाई।
बिनती करौं कौनि लै सेवा, कहतौ ना बनि आई।
अब बदन के यहै भरोसा, तुम्हरा दास कहाई।

(9) सखी मोहि जोगिया बौराया।
सखी मोहि जोगिया बौराया।
कपरा पाँच पचीस भाँति के तामे रंग घनेरा।
साबुन देइ ना रेहू लागै, दाग धोइ सब खोया।
पैठि पताल धरनि बंद दैकै मूलै डोरि लगाये।
हँसि हँसि चितै नैन की कोरै, प्राण काढ़ि ऊ लाये।
रवि शशि मूल दुआरे लावै, घाट करै असनाना।
झलकति जोति अपार गगन पर, नैनन मांहि बसाया।
बिसरी लोक लाज तन केरी, जब पीतम घर आये।
ता दिन ते घर बार न भावै,जब होय झकाझक लाये।
सेज परे सुख उमगा अपारा, जब जोगिन जोगी पाये।
कोटि इन्द्र इन्द्रासन का सुख, जोगिन मनै न लाये।
अरजी करै बदन कर जोरे, मीत चरन उर लाये।
बज्र दुआर आगे, ते सतगुरु मीतादास उघारे।

(10) प्राण रूप अनूप शोभा, खोजि तू कस ना लिया रे।
सतगुरु का मैदान बांका, जूझि तू कस ना मुआ रे।
जूझता मैदान मांही, भक्ती दान तहँ पावता रे।
सुन्नि महल एक मूरति अद्‌भुद, सुरति भरि भरि भेंटता रे।
भेंटते भ्रम मूलि नासी, प्रेम हिरदै सींचता रे।
निरत कटोरिया चुऐ अगारी, अमृत भरि भरि पीवता रे।
सुखसागर गुरु मिले प्रीतम, अभय धुनि तहां बाजता रे।
जोहंग सोहंग दोउ शब्द बोलै, गुरु मीता तहं खेलता रे।

(11) राम रूप अखंड शोभा, हेरि हिरदै ना परा रे।
अरस परस आनन्द मूरति, नैन भरि कै देखता रे।
देखता जो रूप शोभा, प्राण ऊपर वारता रे।
भाग्य रूप सराहि आपन, हंस हंसै भेंटता रे।
प्रेम प्रीति प्रवाह उमगे, आँखिन मां जलु चूवता रे।
छकित भये अब श्रवण नासिका, जीभ नाहीं जानता रे।
जीभ बिन ना बोलता रे, रूप अखंड तहँ सोहता रे।
कहैं सतगुरु दास मीता, अब ना आवै येहि जगतु रे।

(12) आतम पहिचान, अरे तू ना किया रे।
नाभी कवँल के अंत डोरे, खोजि तू कस ना लिया रे।
पावता गुरु ज्ञान डोरी, कोटिन बीन तहँ बाजता रे।
बाढ़ता जो ध्यान उनमुनी, प्रेम अमृत चाखता रे।
किये बहुतै जगत जोरा, बिन गुरु पार न पावता रे।
अरध उरध के मध्य मूरति, उलटि कै तब भेंटता रे।
और एक अजब बाजा, त्रिकुटी मध्ये बाजता रे।
सतगुरु मीता षट् चक्र बेधे, तेहि का सुमिरत रहा रे।

(13) जलमु गयो नल हरि ना भज्यो।
कहति हते हम करबु बंदगी, यहाँ गरभ बास की सुधि विसरेउ।
कै परपंच माया के कारण, घर-घर धुत्ता धुत्ति भयेउ।
सुनति शब्द मन उठति कलोलै, गुरमुख हो अब ज्ञान सुनेउ।
सतगुरु चोट सहै सोई कंचन, माटी का घट फूटि गयेउ।
शीश उतारि धरै गुरु आगे, सकल बिखै तजि राह चलेउ।
आगे पीछे चोट न लागै, जिनकी सतगुरु बांह धरेउ।
यहि बिधि चलै भक्ति सोई पावै, तन सुख काजु न लरजि परेउ।
सतगुरु मीता विरध है बाना, बांह धरै तेहि पार करेउ।

(14) यहु जगु सपना अपना नहिं कोई रे।
समुझि देखु नल लोई रे।
आये बहुत बहुत फिर होइहैं, सिध्द साध मुनि जोगी रे।
जाकी नैआ पार उतारै, सोई राम रसु भोगी रे।
जिन रस पिया सोइ मतवारे, चाखति ही छकि जाई रे।
फूल उतारि जिन भरा कटोरा, ते ना पियति अघाई रे।
पिया कबीर पिया धरमदासा, जन बेनी मीता दासा रे।
गोरख भरथरी गोपी चंदा, अजहूं प्रेम पियासा रे।
पीपा दास पिया जन पोजा, दास मलूका मीराबाई रे।
इन संतन सब संतै थापे, ठगियन पाखण्ड थापा रे।
सतगुरु मीता न्याउ छानि करैं, निंदक नरकै जाई रे।
साहेब है औसाफ का साथी, न्याउ तफाउस जानै रे।

(15) येहि दुनिया केरा अजब तमासा, दुःख सुख काहू न सूझै रे।
पाँच पचीस राह में लागै, गुरु के शब्दै मारा रे।
बहु खोजी काया पचि हारे, जोगी जिन्द भुलाने रे।
कामु क्रोध की धारा बूड़े ज्यों पानी में बुल्ला रे।
बूड़ति जांय थाह ना पावैं, लोभ नदी की धारा रे।
सतगुरु बंहिया पार उतारैं, यह तो दीन बंधु का बाना रे।
काजी सो जो काया बिचारै, ना गुनथिन जैला रे।
अपने चलति जीव ना मारै, रामु करैं रखवारी रे।
ब्राम्हण सो जो ब्रम्ह बिनानी, बुंद अगनि मुख जारी रे।
औटति मदन अरग की धारा, पीवति ही छकि जाई रे।
ऐसे ब्राम्हण पिया पियारे, शीश वारि जिन राखा रे।
हँसि मीता तब बदन बुलाये, दियो शब्द मनमाना रे।
दान पुन्नि कुछ काजु ना आवै, ले सतगुरु का बाना रे।
येहि दुनिया केरा अजब तमासा, दुःख सुख काहू न सूझै रे।

(16) ऐ मन धोखे जलमु गवांये।
जाति-पांति या लोक बड़ाई, येही फांसी फसाये।
ज्यों मरकट मूठी गहि बाँधी, अब को ताहि छड़ाये।
छल छद्र इनही के काजे, नारि पूत मन लाये।
राम राय की सुधि बिसराई, जिन सो बाना बनाये।
अब तो बीति गया तरुनुपवा, तेहि पीछे पछिताये।
दीन होय संतन का ध्याई, करिहै रामु सहाये।
सतगुरु मीत कहैं या बानी, अनभय ज्ञान सुनाई।
चेते काह चेतु भजु रामै, नहिं तौ कालु धरि खाई।

(17) आधी राति जोगी महल मां बसई, भोरु होति रमि जाई रे।
देव दनिज औ जोगी मुलना, खोजति रहे भुलाई रे।
घाटी अगम सिन्धु तट मेला, कोहबन नदी अपारा रे।
विकट पंथु हो तहां बिहंगम, जो गुरु शब्दै पावा रे।
सतगुरु ध्यान यहै सति सुक्रित, राम होय रखवारा रे।
चढ़ै आकाश डिगन ना पावै, भेटै सिरजनहारा रे।
सुरति निरति तहां चवँर डुरावैं, बहै सुहंगम धारा रे।
गुरु मीता तहां पैठि अन्हाये, बदन ठाढ़ हैं खिजमितदारा रे।

(18) अब समुझि चलो जगु मांही।
बड़ी पुन्नि नल देही पाई, तरै की ओसरी आई।
कालु जारु तिहुं लोक परा रे, कैसे कै होय उबारा।
देव दनिज ते मारि गिराये, नल तन कालु अहारा।
जिनके चलति धरनि डगडगिया, लै पर्वत उड़ैं भारी।
तेऊ काल टोइ सबु खाये, बचा न कोऊ जगु आई।
बिन करनी कथनी है फीकी, विधवा केरि सिंगारा।
पिया की बातें कहै कुवाँरी, देखा नहीं दिदारा।
जे सखि सेज पिया की आईं, रहसि रहसि गले लाया।
उनका मिले छूटि गै गारी, आवागवन निवारा।
कहै बदन या चालु कठिन है, जाते मिलैं भतारा।
आवति जाति बहुत दिन बीते, फेरि-फेरि अवतारा।

(19) अब मैं जानि बूझि बौराना, काह करौं लै ज्ञाना।
अपने पाउँ अपने हाथ कुल्हारी मारै ऐसा जगु का ज्ञाना।
लागि दवाँरि जरे करम कसमौ, सो तू काह विचारा।
मान बड़ाई इरषा बैरिन, घर-घर हाथ बोदाया।
अबहूँ चेतु समौ भल पाया, राम भक्ति जगु सारा।
काल चक्र का डंडु न लागै, जिन गुर चरन संभारा।
आवै ना जाय गरभ ना बासै, विरध हवै यह जाका।
सतगुरु मीता दास कहैं यह, जिनके गुरु भक्ति बिचारा।

दोहा

बहुत दिना धोखे गये, नारि पूत मन लाये। सतगुरु बोली बोलिया तब सूझि बदन गाये।।


समाधि
सन्त इन्द्रजीत साहेब
समाधि
सन्त पहली साहेब
समाधि
सन्त रामदीन साहेब
ग्राम-दोस्तीनगर, उन्नाव

परिचय
सन्त पहलवान सिंह (पहली साहेब)

सन्त पहलवान सिंह (पहली साहेब) का जन्म उन्नाव जनपद के दोस्तीनगर ग्राम के ठाकुर परिवार में संवत् 1844 विक्रमी (सन् 1787 ई०) को हुआ था। आपके पिता का नाम श्री लालू सिंह था। आप सन्त मीता साहेब की परम्परा के तीसरे उत्तराधिकारी हुए। आप सन्त रामदीन साहेब के शिष्य थे। आपने निर्गुण वाणी-वचन की रचना की, जिसमें एक बारहमासी, छह अदत दोहे व पाँच पद शामिल हैं। कुछ पुराने संगती बताते रहे हैं कि आपके जीवन काल में अंग्रेजी शासन द्वारा लगाए गए लगान की वसूली करने के लिए अंग्रेज अफसर कुछ सिपाहियों के साथ हाथी पर सवार होकर आए थे। उन्होंने पहली साहेब से लगान देने की बात कही। फसल पैदा न होने के कारण "अभी लगान नहीं दे पाऊँगा" पहली साहेब ने ऐसा कहा। इस बात से नाराज होकर अफसर ने सिपाहियों से कहा कि इनको बन्दी बनाकर दफ्तर ले चलो। सिपाही पहली साहेब को साथ लेकर दफ्तर को चल दिए। आगे-आगे हाथी पर बैठकर अफसर चल रहा था और पीछे-पीछे सिपाहियों के साथ पहली साहेब चल रहे थे। चलते चलते ही आपने सन्त मीता साहेब का यह पद पढ़ा-

लाज सरम प्रभु केरि ता मेरा कुछ नहीं,
होनी होय सो होय चरन मां लागि रही। {पृष्ठ सं 156 परम ग्रन्थ से}

बताते हैं कि पूरा पद पढ़ने के तुरन्त बाद ही हाथी ने अफसर को पीठ से उठाकर नीचे डाल दिया और उसके ऊपर पैर रखने जा रहा था, पहली साहेब ने हाथी को रोंकते हुए कहा "ऐसा मत करना" यह सुन कर हाथी ने पैर हटा लिया। यह देखकर अफसर आश्चर्यचकित रह गया और कहा "क्षमा करना मुझसे अनजाने में गलती हो गई।" सिपाहियों से कहा कि इन्हें बाइज्जत घर पर छोड़कर आओ।

आपने 70 वर्ष की अवस्था में संवत् 1914 विक्रमी (सन् 1857 ई०) को देह छोड़ी। आपकी समाधि दोस्तीनगर में नहर के किनारे बड़े आश्रम जैसे स्थान पर आगे से तीसरी समाधि बनी हुई है। उपरोक्त स्थल पर क्रमशः सन्त बदन साहेब ,रामदीन साहेब ,पहली साहेब, इन्द्रजीत साहेब की समाधियाँ हैं। इनके पीछे जुगराज सिंह, रणवीर सिंह उर्फ बाबू सिंह, भूषण सिंह की स्मृति शेष बनी हुई हैं। बापू बरादरी स्मारक के बाद पश्चिम किनारे पर स्व० रामप्यारी पत्नी स्व० रणवीर सिंह उर्फ बाबू सिंह की यादगार सन् 2021-22 में बनायी गई है। उपरोक्त स्थल पर प्रत्येक वर्ष फाल्गुन शुक्ल पक्ष पंचमी व षष्ठी को आध्यात्मिक सत्संग मेले का आयोजन संगतियों द्वारा किया जाता है। मेले की मुख्य व्यवस्था ठाकुर शौरभ सिंह व गौरव सिंह पुत्रगण स्व० संतोष सिंह निवासी-ग्राम दोस्तीनगर द्वारा की जाती है। दूर-दूर से संगती सपरिवार आकर निर्गुण वाणी-वचन का पठन-पाठन करते हैं।

बारहमासी

(1) चैत चेति गुरु ध्यान लगाया, मूल मन्त्र किरपा ते पाया।
तबते जिय में प्रेम बढ़ाया, फोकट हता सो दूरि बहाया।
मन इन्द्री हांथै जब आये, रस्ता पाई अगम दुआरा।
जग्गि दानु भूला संसारा, पहली परे सन्त टकसारा।

(2) बैशाखै इन्द्री बसि कीन्हा, जोग जुगति का मारगु चीन्हा।
दुरमति दुविधा सबु मिटि जाई, जबते नाम अमोलिक पाई।
नामु पाय फिर बहुरि न आई, सत्य लोक मां रहा समाई।
पहली के निहचै या आई, सतगुरु सरनि गहे ते भाई।

(3) जेठ जीवन थोरा है भाई, ताते जिअ की करौ उपाई।
माया मोह कामु ना आई, अंत की बेरि रह्यो पछिताई।
भक्ति करौ साहेब की जाई, तामे जिअ की है कुशलाई।
उलटि जीव जब ब्रम्ह समाई, पहली पारिख घटु मां पाई।

(4) अखाड़ अरध मां आसन लीन्हा, जोगु जुगति का मारगु चीन्हा।
सुरति शब्द मां लागी जाई, पइले पार की खबरी पाई।
बहुत मसखरा बादु बढ़ाई, शब्दु ना पावै धोखा खाई।
पहली शब्द मां गए समाई, सतगुरु की किरपा ते भाई।

(5) सावन सुखु उमड़ा रे भाई, कासो कहूँ कहा ना जाई।
जगु ना जानै जमपुर जाई, सुज्जन का सति लोक पठाई।
सुज्जन है सतगुरु का बारा, साकठ का है नरक दुआरा।
पहली भे सतगुरु सरनाई, हता बेकार सो दूरि बहाई।

(6) भादौं भरम तूरि हम डारा, जब सतगुरु ते पावा खांड़ा।
मारि काटि सब दूरि बहाया, जबते सरनि तुम्हारी आया।
साहेब बिनती सुनौ हमारी, नाउ चढ़ाइ कै लेउ उतारी।
पहली सरनि तुम्हारी पाई, गुन औगुन सब देउ बहाई।

(7) कुआँर कठिन है अगम बिचारा, जो ठहरै सो पैले पारा।
सतगुरु जग मां है कड़हारा, तेई उतारैं भै जल पारा।
बांह गहैं तेहि पार लगावैं, गुन औगुन सब दूरि बहावैं।
जन पहली साँची गोहिरावै, साहेब का कोई बिरला पावै।

(8) कातिक काया खोजु लगावै, पंडित भेखु भरमि मरि जावै।
बूड़े जांय थाह ना पावैं, थाह थाह कै सबु गोहिरावैं।
साँचु कहे झूठा जरि जावै, झूठ कहे ते बहु सुख पावै।
पहली सुज्जन का अपनावै, झूठेन के निकटै ना जावै।

(9) अगहन अग्र संदेसा आया, सुनि सुनि जिअ मां प्रेम बढ़ाया।
प्रेम पियाला अमी छकाया, सन्तन की सरनागति आया।
संगति कीन्ह भली बनि आयी, बिखई बातें दूरि बहाई।
सब सन्तन का शीश नवाया, पहली सतिपुर पहुंचे जाया।

(10) पूसै प्रेम भक्ति मां लागा, सोवति ते जो हम उठि जागा।
जागि जागि हमरे रंग लागा, सोवै अभागी कबहूँ न जागा।
रोगी चोरु बहुत कै जागा, कामी काम बहुत है साजा।
यहु जागबु आवै केहि काजा, मोंगरा लै आई जमु राजा।
पहली कहै गुपित होय जागै, सरनि सरनि साहेब की ताकै।

(11) मांह महल की शोभा पाई, या शोभा कुछु कहि ना जाई।
सतयुग द्वापर त्रेता आई, कलयुग भक्ति बहुत है भाई।
बड़े बड़े सबु बूड़े जाई, चींटी होय केहु बिरले पाई।
सन्तन की सरनागति आई, कहि पहली परतीति जो लाई।

(12) फागुन फूली है फुलवाई, या शोभा कुछु कहि ना जाई।
कोटि भानु एकु रोंवा माहीं, या शोभा साहेब की आही।
अब हमते कुछु बरनि न जाई, गूंगा जैसे मिश्री खाई।
सतगुरु बिन कोऊ ना पाई, बांह पकरि साहेब लै जाई।
पहली के सब खुले केवारा, अमरलोक मां साहेब पाया।

करनी बारहमास की, पहली कही विचारि।
चाँद सुरज दोउ सम करै, पावै पद निर्बान।।

पहली पहरा देति है, हरि दरबार हजूर।
जो चीन्है सो उतरै, कथनी कथै ते चूर।।

पहली परखै जौहरी, परखेनि लाखन कोटि।
भोंदू तौल ना जानई, लीन्हे पाप की मोठि।।

पहली येहि संसार में, बड़े बड़े हैं भूप।
भक्ति भेदु जानै नहीं, परे नरक के कूप।।

पहली परदा खोलि कै, कहै अगम की बात।
मूरुख तौ समुझै नहीं, परा रहै जमु फांसि।।

पहली पारस पाइयां, पहुँचेन हरिपुर जाय।
लोहा ते कंचन भये, सतगुरु केरि सहाय।।

पद

(1) घट मां लागि अंधेर कुछौ ना सूझै हो, जो पावै उपदेश तौ आतम बूझै हो।
आतम मां है राम तौ जगु ना जानै हो, जानै सन्त सुजान कूर ना मानै हो।
कूरन परिहै मारु सूर जन हमरा हो, कूर सूर का भेदु लखै कोई विरला हो।
पहली दास सुजान तौ मति के धीरा हो, धीरा मति हम कीन गयेन हरि तीरा हो।

(2) चाँद सुरज दोउ सम कै राखे, सुखमुनी ताल बजाई हो।
ताल बजाई नगर पहूँचे, सतगुरु जुगति बताई हो।
सतगुरु का हम माथु नवाया, कालु रहा मुरझाई हो।
काल के माथे पर पगु धरि, पहुंचेन हरिपुर जाई हो।
कोटि भानु एकु रोंवा की छवि, सो हम रहेनि लुभाई हो।
अमृतसागर वहां हम पावा, जगु हमका न सुहाई हो।
तेंतिस-तीन-अठासी-नल, सो यहीं रहे अरझाई हो।
पहली के परदा सब खुलिगे, नैन मां नैन मिलाई हो।।

(3) हरि हीरा का खोजु न कीन्हेनि, कौड़ी का लपिटाई हो।
या कौड़ी जग बहुत पियारी, सो सन्तन की लौंड़ी हो।।
सन्तन येहिका बसि कै राखा, और सकल पर दौरी हो।
सरन-सरन कै जिन केहु ताका, तिनते कुछु न बिसाई हो।।
ब्रम्हा विष्नु महेसुर देवा, लूटेसि इनका जाई हो।
कहाँ लग गनौ बहुत ई खाये, बचिगे विरले कोई हो।।
चहला ईंट हवै या माया, जो जानी सो मानी हो।
गुरु प्रताप कहैं जन पहली, विरल कोई पहिचानी हो।।

(4) साधौ पार ब्रम्ह अभिनासी, जाका मिले कटै जम फांसी।
अवध वोड़ैसा मथुरा काशी, हुआं नाहीं अभिनासी।
जो तुम खोजु करौ साहेबु का, पावो सुख की रासी।
सन्त मिलाइ देंइ साहेब का, अनतै भटकि न जासी।
अन्तै भटकि भटकि मरि जैहौ, परिहौ जमु की फांसी।
पहली परे दुवार कहैं या बानी,आवागवन मिटाया सतगुरु,कुल की कानि न राखी।

(5) माया मोह बहुत जगु बाढ़ा, जिउ ना निकरै पाई हो।
कोटि उपाय करै छिनु छिनु मां, ज्यों मरकट फंसि जाई हो।।
फंसे आपु फांसे ना कोई, माया मां अरझाई हो।
जे केहु माया का बसि कीन्हा, तेही कै ठकुराई हो।।
ठाकुर जग मां बहुत कहावैं, ठकुरी बिरले पाई हो।
आतम खोजे ठकुरी पावै, तबहीं होय कुशलाई हो।।
जहाँ से आया तहाँ बिसरिगा, माया मां अरझाई हो।
जन पहली सतगुरु की दाया पहुँचेनि हरिपुर जाई हो।।


समाधि सन्त नान्हू साहेब
ग्राम-सैय्यद अब्बासपुर
जनपद- उन्नाव

परिचय
सन्त नान्हू साहेब

सन्त नान्हू साहेब का जन्म उत्तर प्रदेश के जनपद उन्नाव स्थित ग्राम सैय्यद अब्बासपुर में एक साधारण लोध परिवार में हुआ था। आप सन्त सतगुरु मीतादास जी के शिष्य थे। आपके जन्म का समय व माता-पिता का नाम ज्ञात नहीं हो सका है। आपने संभवतः संवत् 1823 विक्रमी (सन् 1766 ई०) में कुवाँर कृष्णपक्ष पंचमी को देह छोड़ी होगी। आपकी समाधि उन्नाव रेलवे स्टेशन से 3 किलोमीटर की दूरी पर हरदोई-उन्नाव मार्ग पर सैय्यद अब्बासपुर गाँव में बनी है। जहाँ प्रतिवर्ष आपकी निर्वाण तिथि कुवाँर कृष्ण पंचमी व षष्ठी को दो दिवसीय आध्यात्मिक सत्संग मेले का आयोजन होता है। मेले की देख-रेख व मुख्य व्यवस्था आपके वंशज श्रीकृष्ण वर्मा, श्रीराम वर्मा, डॉ० हृदयेश कुमार वर्मा, डॉ० राजीव कुमार वर्मा व संगतियों के द्वारा की जाती है। उपरोक्त अवसर पर सभी संगती इकठ्ठा होकर निर्गुण वाणी-वचन का मनोरम पाठ करते है। आपके द्वारा दो अदत दोहे व एक पद लिखा हुआ, संगतियों के बीच पढ़ा व सुना जाता रहा है।

पद

नान्हीं नान्हीं गइया चरावै जंगलवा हो।
एक एक गऊ खुरन सो ब्यापित, कोटि तिरथ पग ध्यावै हो।
पांचो मारि पचीसों बसि करि त्रिकुटी में ध्यान लगायो हो।
छइयो भेख छानबे पाखण्ड, इनसे नेम हटायो हो।
आतम ज्ञान हिरदै बिच उपजै सतगुरु सुरति डिढ़ायो हो।
कहत ये नान्हू, साहेब के आगे, प्रेम मगन रस, अब हम पायो हो।

दोहे

(1) नान्हू नन्हे होइ रहे, जैसे नन्हीं दूब।
बड़ी बड़ी चरि जान दे, रही दूब की खूब।।

(2) शक्कर छिरकी रेत मां, कुंजर मुखै न जाय।
नान्हू हरि के दास हैं, चींटी होय चुनि जाय।।

परिचय
सन्त इन्दो साहेब

सन्त इन्दो बीबी अग्रवालिनी का जन्म संवत् 1763 विक्रमी तदानुसार सन् 1706 ई० में लखनऊ जिले के मोहल्ला चौक स्थित एक अग्रवाल परिवार में हुआ था। आपके माता-पिता का नाम ज्ञात नहीं हो सका है। आप श्री सन्त सतगुरु मीता दास जी की शिष्या थीं। जब आप मीता साहेब से मिलने पुरवा आती थीं, तो लोग आप पर आरोप लगाया करते थे। मीता साहेब ने स्वयं लिखा है-

इन्दो बेटी आओ ना, खोटी है संसारी।
मात पुत्र की गारी लावै, तुम्हरी पति है भारी।। {पृष्ठ सं 46 मीता-इन्दो समाज से}

आपकी मुलाकात मीता साहेब से संवत् 1805 या 1806 विक्रमी (सन् 1748 या 1749 ई०) में हुई। आपने संवत् 1810 विक्रमी (सन् 1753 ई०) में एक बारहमासी, 53 पद, 106 दोहे लिखे। निर्गुण वाणी-वचन पर आधारित आध्यात्मिक सत्संग मेले का आयोजन आपके गुरू मीता साहेब की समाधि पुरवा जिला उन्नाव में प्रत्येक वर्ष की कार्तिक पूर्णिमा व अगहन परेवा तथा ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी व षष्ठी को संगतियों द्वारा किया जाता है। जिसमें इन्दो साहेब पन्नो साहेब का वाणी-वचन व अन्य संतों के वाणी-वचन एवं मीता साहेब द्वारा लिखित "परम ग्रन्थ" का व्याख्या सहित मनोरम पाठ किया जाता है। आपने 55 वर्ष की अवस्था में संवत् 1818 विक्रमी (सन् 1761 ई०) को देह त्याग दी। आपकी समाधि गोमती नदी के किनारे थी। संगतियों द्वारा कई बार ढूढ़ने का प्रयास किया गया, परन्तु कोई पता नहीं चल सका।

पद

(1) हरिजन हरि का ध्यान करै, कुकर्म करम तजै।
ब्रम्हा विष्नु महेश देव मुनि, सरि बरि नहीं जुरै।
लीला अगम विरल कोई पावै, पूरन भाग्य जगै।
गुरु पूरे की सेवा कीन्हे, तबु या प्रेम पगै।
पाँच पचीस जेरि कै राखै जोगी जोगु करै।
सो जोगी फिर गरभु न आवै, सतपुर बास करै।।

(2) परम गुरु भै ते लेउ निकासी, मैं सरनागत दासी।
गरभवास में बहु दुःख ब्यापै, सुधि आये सुधि जासी।
सम्रथ नाउ जानि कै बैठी, जग ते भई उदासी।
जो तारो ता तुमही तारो, परी है करम की फांसी।
विनती करों करि ना जानों, हों अबला मति कांची।
सकल दुःख के खोवन हारे, अउरे केहि का जाँची।
गुरु की मौज परम पदु पाया, लाज तजी खुलि नाची।
दोऊ कुल तारि चली जन इन्दो, कही हवै सो सांची।।

(3) भक्ति करु जाते कटै जमु फांसी, का करिहै सठु काशी।
हरि मां सन्त सन्त मां हरि हैं, तिनही के हाथ बिकासी।
अभिनासी के दरस पारस हैं, गरभवास ना जासी।
छाडु भटकु गहु सन्त मते का, सबै बात बनि जासी।
तीरथु बरत दान तपु विद्या, सबु नरकै लै जासी।
तरने का एकु सत्ति नामु है, बचन मानि किन जासी।
इन्दो भरमि भरमि फिर आई,गुरु मिलि तपनि बुझासी।
जो व्यापी सो गाइ चली हों, भई अमरपुर बासी।।

पदु पक्की बोली मां

(4) मन महबूब देखा खूब, मूल दिलही में पाया है।
अन्न न भावै नींद न आवै, हँसि-हँसि छतिया लाया है।
रैनि जगाई पाई पिउ अपना, झुकि झुकि छतिया लाया है।
इन्दो बांदी भलेदी, असि काहे का दोछु लगाया है।।

(5) अमरपुर मैं बसी रे, लगा जब ध्यान।
पाँच पचीसों न्योति बुलाई हरि का सौंपे प्रान।
तजी कुल कानि लोक मरजादा, लगा प्रेम का बानु।
सहजे-सहजे हरि अपने भे, तिनही के हाथ बिकानु।
सो सुख देखि जगत लगा फीका, सेई सखी सुजान।
तबते भई बावरी इन्दो, छूटा गरभ गुमान।।

(6) मिले करतार, काहे सखी तजी घरबार।
सेवा सखियन की है सार, जो करिहै सो होई पार।
जानि परा सो कीन पुकार, साँचु गहै सो उतरै पार।
चुरिया बंगलिया तिलक लिलार, जैसे विस्वा करै सिंगार।
मैके स्याबसि ससुरे खुवार, देखा ननदै केर विचार।
ब्याहा तजि सेवै लगवार, अपने गुनन ते होउ खुवार।
कहि इन्दो या सन्त विचार, जो बूझी सो झूँड़ हमार।
बिनु बूझे का कालु दुआर, कहो पति ता कौन विचार।।

(7) सन्तन की लली, खेलो बसंत मनु जीति।
काम क्रोध बलिदान दै, लागै हरि जी सो प्रीति।
तन धन सपना कै गनौ, झूठ जगत की रीति।
तजि कुल कानि बिखै का झलरा, मानि लेउ परतीति।
जौ लगि पाँचों बसि नहीं री, करम भरम की भीति।
तौ लगि हरि ना पाइहो, जलमु जाइगो बीति।
अनभै उपजा भय गया, नांघि गई मैं भीति।
इन्दो हरि अपने भये, सतगुरु की परतीति।

(8) मन रे सतगुरु सरनि न छूटै, जगु रूठै ता रूठै।
उन समान दाता ना कोई, राम मिलै घर बैठे।
परमारथ स्वारथ के साथी, पालै माता जैसे।
सकल ब्याधि ते देइं छड़ाई, कहै भागवति ऐसे।
तीनि लोक की राजि न भावै, जो पावै गुरु ऐसे।
कनफुकवा नरकै लै जैहै, ठगि ठगि खाई पैसे।
बंदीछोर मिले इन्दो का, हरि जिउ पाया ऐसे।
कुम्भ नीर सागर मां मिलिगा, काढ़ी कोऊ कैसे।।

(9) सखी कोउ रामै मिलिहौ आय, दीन्हा हवै जनाय।
जैसे दूध दही लै ग्वालिन, चौहट बेचै आय।
ऐसे हम हरि जी का बेचेनि, सका न कोई मुलाय।
बिनु दामन का कोई न गहकी, रखिबे तौन छपाय।
या जगु परा करम फांसी में, ज्यों मरकट फँसि जाय।
हरि ना भजै करम कै भूला, फिर फिर गोता खाय।
बिख का गहकी अमी ना छुअै, देखा ठोकि बजाय।
सतगुरु मिले परम पद पाया, इन्दो चली बजाय।

(10) भक्ति करु जीउ नरक ना जाई।
राम भगति मां जो मनु लागै, कालु न निकटै आई।
धन दारा सुत मात पिता हितु, कोऊ कामु ना आई।
हय हाथी निशान नगारे, सब सपना होय जाई।
सुल्तानी औ भरथरी जोगी, सतगुरु लीन्ह जगाई।
सोवत हते काम की नीद्रा, जागे ते उन पाई।
इन्दो कहै सुनो भाई साधो, भेखु कामु ना आई।
रामभगति खेड़वा कै जानी, छाड़ि देउ चतुराई।।

(11) गुरु ज्ञान ध्यान सोई, जाते उतरा पारा है।
काह भया पाहन के पूजे, का भये चन्दन गारा है।
काह भया माला के फेरे, का भये तिलकु संवारा है।
काह भये आँखिन के मूंदे, भूला मूर्ख गंवारा है।
काह भये सिर जटा रखाये, अंग लगाये छारा है।
काह भये म्रग तुचा डसाये, भीख मांगै का द्वारा है।
काह भये ग्रंथन का बांचे, भक्ति भेखु ते न्यारा है।
बिन सतगुरु करता ना पावै, इन्दो किया बिचारा है।

(12) चरनन मां लागउ, हो संतन की चेरियाँ।
तीरथ जाय भरमु हम देखा, कहुं न मिले हरि हेरियाँ।
मन मतंग कहुं जान न पावै, डारी प्रेम जंजीरियां।
आंगुस दै दै घेरि लै आऊँ, या मत हवै दुहेलियां।
लै लागी भय भागी, कटी करम की बेरियाँ।
पदु पाये हरि ध्याये, जगु सो तिनका तोरियाँ।
जलमु जलमु की तपनि बुझानी, बलिहारी गुरु तारियाँ।
इन्दो सेवा कुछौ न कीन्ही, सरन सरन कै टेरियाँ।

(13) संतन की सेवा अपना काजु संवारा है।
उन समान दाता नहिं कोई, हमसों भया दिदारा है।
बांह धरैं तेहि पार उतारैं, कै देते उजियारा हैं।
करता का उइ देंइ मिलाई, बिनु करता को तारा है।
कबीर नानक सूर तुलसी, किया ज्ञान अंधियारा है।
बांचि बांचि भरमि मरि जइहौ, बुड़िहौ मांझी धारा है।
कहि इन्दो परतीति करै जो, तेहि उतारैं पारा है।
हम साहेब के साहेब हमारा, गोरख भरथरी सारा है।

(14) भरमु गढ़ देहौं आजु गिराई, सतगुरु केरि दुहाई।
जग्य दान तीरथ तपु बिद्या, किये मुए पछिताई।
पाहन पीतरि पूजा करते, लीन्हा भेखु बनाई।
दामु ठगै का ई रंग खेलैं, बेरिया तीनि अन्हाई।
जहाँ लग भेखु हवैं सब ठगिया, पूजी सो पछिताई।
हरि के दास करमु ते न्यारे, किरखी कै कै पाई।
तीरथ सकल पाँव तरे उनके, चीन्ही सो नरक न जाई।
कहि इन्दो सब जग बौराना, की हम बौरी भाई।
हित की कहे लरन का धावैं, तिनसो काह बिसाई।

(15) डाइनिया भीतरि रे भाई, चुने करेजवा खाई।
पाँच पूत जो वहिके मारै, तेहिका पानी भराई।
सुर मुनि नल काहुइ ना छांड़ै, ना संतन नजिकाई।
उइ तो अस्त्र सिपाही बांधे, तिनका रही डेराई।
छाप तिलक माला तेरे का, वा तौ नहीं डेराई।
तूरि डारी जैसे सुआ बिलइया, रोइहौ जब धरि खाई।
कहि इन्दो सठु छाडु मसखरी, जमु सो बाजी लाई।
यही भरोसे राम न चीन्हे, जीउ नरक मां जाई।

(16) पढ़ु पढ़ु काजी तुम्हरे भरोसे मोहूँ ठाढ़ी।
पिया का मिलाव होई निजात, तब हजरत मैं होइहौं पाक।
कहै कुरान किया सो जाय, तब नाहीं है दूरि खुदाय।
रोजा रहै औ पढ़ै नमाज, बिनु औसाफ हवै मत कांच।
कबै मोहम्मद मारी गाय, फूँकि फूँकि धरा जमीं पै पांय।
लकरी हरी नहिं टोरी मियां, सुनौ मोहम्मद ऐसा किया।
पंडित पढ़ते बेद पुरान, तिन खैंचा बकरी का चाम।
ई पवित्र उइ देखे पाक, इन्दो हमही हवैं नापाक।

(17) पी सो याते भई पियरिया पहिरी चटक चुनरिया।
नाद बिन्द की गठनी कीन्ही मन मजीठ रंग बोरिया।
रवि शशि पहिरे देखि लजाने सुर मुनि हाहा करिया।
कौन भाग्य ते मिली चुनरिया हमना कबहूँ मरिया।
कालु जारु तिहुँ लोक पसारा तीनिउ देवा परिया।
निरगुन चुनरी देखो हमरी जाते कालौ डरिया।
नहाय खोरि पोथी लै बांचै जगु मां डिम्भु पसरिया।
कहि इन्दो बिन सतगुरु सेवा कहु तुमका को तरिया।

(18) अरि अरि भूली रांड़िया कस तजौ भतारा।
अपना पिउ चीन्है नहीं ध्यावै लगवारा।
पतीव्रता सोई सही, जो ससुरे सारा।
परम पुरुष के संघु रहै, चढ़ि खांड़े धारा।
हरि भगति न हांसी खेलु है, का कथै गंवारा।
पाँच मारि मनु बसि करै, तिनका मत सारा।
हरि वियोग हिरदै बसै, जब ध्यान संभारा।
इन्दो गरभ न आवई, उतरी भै पारा।

(19) भय सागर जगु दीख भारी,केहि विधि उतरब पारिया।
नींद भूख विसारि पांचो, जीवन जलमु सुधारिया।
मिले केवट थाह पाई, दै नौका सोई तारिया।
जोगु जुगति विचारि लीन्हा, ब्रम्ह अगनि उदगारिया।
कुमति का बन काटि गेरा, सुमति बिरवा लाइया।
फूल फूले फल लागन लागे, अब चाखन की बेरिया।
चढ़न की जो घातु पाई, तरत लगी ना बेरिया।
दास इन्दो मूल भेंटा, आवागवन निबेरिया।

(20) सुरति लगी सति लोक, अमीरसु पीजिया, भै ते उतरे पार जगत ते जीतिया।
नैनन भेंटे राम, दुःख सब छूटिया, आवागवन मिटाया, गुरू मत सो दिया।
भूला या संसार करम की फांसिया, बिनु गुरु बूसी खाय तत्तु का छाँड़िया।
इन्दो कहैं विचारि, ध्यान कै कै दिया, भेटा सिरजनहार, सोई मेरे हिया।।

(21) सुन्दर श्याम सांवले का, निरखत भोंहि गई अखियां।
चितवति दिस्टी लगी, लगी मोहि प्यारी, जिन रे जगाई दिन रतियां।
अन्न न भावै नींद न आवै, हूकि उठै मोरी छतिया।
मनु चंचल हाथै ना आवै, कठिन प्रीति हिये बसिया।
घर घूमै मन्दिल मन हालै, कासो कहों ई बतिया।
बांका खेल राह अटपटी, चढ़ि गई अगम अटरिया।
धनि धनि भाग्य सुभाग्य सोई जन, जिन रे लगाये पिउ छतिया।
इन्दो दासी कटी जमु फांसी, जाइ मिली सबु सखियां।।

(22) परमल बास पलटिया, घर महँ महँ होय।
हरि के चरन चितु कै दिया, अैसे ढ़िग लोय।
अजर जरै अम्रत झरै, पीवै जन कोय।
पीवन हारा अमर भा, करु करनी सोय।
जुरा सनेहा राम सो, तारे कुल दोय।
पति खोये पति लै चली, पूरे गुरु सेय।
मनु एकै जंह तंह फंसा, का कथि बदि होय।
सो मन इन्दो जीतिया, सब दुःख गे खोय।।

(23) ई जगु लोय सरांय के, मिलि बिछुरबु होय।
तातें काहे ना हरि भजै, सो साथी होय।
दूसर समरथ कोई नहीं, सबु देखा टोय।
गरभवास का दुःख हरै, अपना कै लेय।
सपने सुख मां ना फंसै, ना गाफिल होय।
चूके ते भय बूड़िहै, जमु बहु दुखु देय।
बड़ी बड़ाई सुखु बड़ा, हरि भजि कै होय।
ब्यापी सो इन्दो कही, गुरु समरथ सेय।।

(24) ठगिया राम बिमुख तबही का।
घर-घर खाति फिरै जैसे स्वाना, भेखु धरा येही का।
नाक कटाइ नाक धरि बैठे, या अतिरिजु को बूझै।
शब्द कहै कुछ भेदु न जानै, बिन बूझे बहु रीझै।
कुल का खोय चले जैसे जरी होरी,हो रहे ठूँठ डगर के।
भीर देखि खाने को मांगै, ध्रग ध्रग तेरे चलन को।
अंध मसखरा न्योति जेवांवैं, आस करैं तरने का।
भेखु के संघु नरक मां बासा, इन्दो का इस गुन का।।

(25) साधौ अैसा गुरु मन भाया, घरही मां अलख लखाया।
धोती दीन्हीं कान फुकाया, नाहक जलमु गवांया।
गुड़िया गुड़वा माया न जावा, ब्याह होय बिनु माया।
कपरा का बरु ढूढ़ै बौरी, ऐसा गुरु तुम पाया।
मरती बेरिया रोइहौ सिर धरि, हरि खेड़वा कै पाया।
काल जंजाल जाल गरे डारी, तब को करी सहाया।
सम्रथ गुरु बिनु कौन बचावै, समुझ शब्द का गाये।
कहि इन्दो मजमानी तेरी, अन्त कालु जब आये।।

(26) जोगिया मसकीन, हँसि-हँसि मेरा मन बसि कीन।
नैनन सुरमा कठिन वाकी रीति, गगन मंदिल मां साँची प्रीति।
मैके आऊँ ना ससुरे जाऊँ, अमरलोक अमरौती गाऊँ।
प्रेम ठगौरी डारी आय, ले चले रौल निसान बजाय।
इन्दो दासी चली गोहिराय, मेरा बरु अभिनासी आय।

(27) हमरे गुरु पारस आनि दई, ताते उपजी शब्द मई।
लोहे ते कंचन होना बरी, मूल मन्त्र गही।
कसे कसौटी ताव न लागे, ब्रम्ह की आँच दई।
ज्ञान डोरि असमान गुड़ी है, सुरति सो बाँधि लई।
अपरम्पार पार पुरुसोत्तम तिनसो भेंट भई।
रीति प्रीति साँची कै मानौ, चरनन लागि रही।
इन्दो दासी निकट अभिनासी, जियतै मुक्ति भई।

(28) गुरु ज्ञान ध्यान जिन पाया है, तिनही तिनहि छपाया है।
हरि काहू सो भेद न कहते, सुज्जन जन अपनाया है।
कठिन कसौटी है संतन की, कसे विरल ठहराया है।
तिन सो अंतर ना फिर राखैं, भेखिन हाथु न आया है।
भेखु विमुख सब आंय ठगइया, अंधरेन न्योति जिवांया है।
तेही की नारी का भोगवैं, तेही के घर खाया है।
कहि मीता सुनु इन्दो बेटी, सतगुरु गृह मां पाया है।
जो चीन्है तेहि पार उतारैं, आवा गवन मिटाया है।

(29) दूरि दूरि पाजी, कंठीमाल दगाबाजी।
काहे का गुदरी साजी, याते हरि होइहैं ना राजी।
माटी का तिलकु काठ की माला, याते ना छड़िहै जमु काजी।
या ना होय जगत का ठगना, जमु ते ना पइहौ बाजी।
जैसे धोबिया लादि पछारै, यों कलुआ करिहै राजी।
धोबी के घर गदहा करिहै, सोवत ते उठिहौ जागी।
माल पुआ औ खावो कचौरी, तेहिका फल आगे लागी।
कहि इन्दो बिन जौहदि खइहौ, ठौरु नहीं कतहूँ पाजी।

(30) राम राय गुरू मिलावो पूरा, जाते तुम्हरी रहौं हजूरा।
और कुछौ मैं चाहति नाहीं, इतना है बहुतेरा।
बैकुंठ बास मैं चाहत नाहीं, माल मुल्क बहुतेरा।
सन्त के चरन-रेनु की आशा, अस मंगता हौं तेरा।
ना मैं चाहौं जाति बड़ाई, ना हाथी ना घोरा।
ना मैं चाहों काया सुन्दर, द्वार परा हौं चेरा।
कहि इन्दो तुम बिपति विनासी, जागत जसु बहुतेरा।
अन्तरगत की सबु जानति हौ, और नहीं कोई मेरा।

(31) मेरे मनुआ तजौ बड़ाई, छोटे भये हरि पाई।
नल देही या जाति गवांई, हरि भक्ति करौ सुखदाई।
गोरख भरथरी गोपी चंदा, राज्य तजी येहि ताईं।
अंतरजानी लीन्ह गोदि कै, प्रीति किई बहुताई।
हम गरीब केती मति हमरी, भक्ति बराबर पाई।
कुशल परी चौरासी छूटी, सतगुरु लीन्ह बचाई।
कहि इन्दो है भक्ति दुहेली, विरलेन हाथै आई।
खेड़वा कै गनियो ना कोई, शिव ब्रम्हा ना पाई।

(32) मनु बसि कै भया दिदारा, भई पावै नहीं लबारा।
सांचे का गुरु साँचा मिलिया, उतरे भैजल पारा।
झूठे का कनफुकवा मिलिगा, बोरिस माँझी धारा।
दामन काजे धाया फिरता, जानै वार न पारा।
सुनि सुनि गल्लै ज्ञानी होइगे, विसरि गया करतारा।
गरभ गुमान अविरथा कीन्हा, अस्तुति करै गंवारा।
नेमु धरम किरिया तपु संजम, हमै नहीं दरकारा।
इन्दो कै नगदै की सौदा, बेचति नहीं उधारा।

(33) द्रग दुआरे झांकिया, हरि आये अँगना मांझ री।
मैं पापिन लज्जा भरी, ना भेंटा दीन दयाल री।
कागा मंगरे मां बसै, मैं फिरि फिरि देउँ उड़ाइ री।
भुजा फरकै मन विहसई,मेरे हरि का आवनु आजु री।
बहुत दिना ढूढ़ति रही, जब आये तबै लजाउँ री।
इतहि लाज उत लगन लगी है, वैदु चले सब हारि री।
कहि इन्दो मैं गुन नहीं जानौं, निरगुन दाबी आय री।
अमर भई पाये गुरु चरना, भेंटा सिरजन हार री।

मंगल

(34) काया नगर सुहावना, बसई सो जानै रे।
ऐ लालन फिरै उजारि उजारि, ता कैसे मानै रे।
बैठे राम सिंघासन, हा हा छबि छाई रे।
ऐ लालन मिलिया सखी तहँ जाय, बहुरि ना आई रे।
चित्रकूट हो आइन, अवध सबु वसुधा रे।
ऐ लालन बैकुंठपुरी किया खोजु, राम नहीं सपना रे।
धाये फिरैं सब पसुआ, ताकि बौराये रे।
ऐ लालन इन्दो बिना विवेकु, राम किन पाये रे।

(35) लगे रब्बु सो दिदारा, भये पैले पारा।
कोई कहै मौला, कोई कहै हरि जिउ, एकुइ सो करतारा।
कोई जाय मक्का, कोई जाय काशी, कोई जाय केदारा।
कोई रहै ग्यारसि, कोई रहै रोजा, दुनिया का व्यौहारा।
कोई कुरान किताब बखानै, कोई पढ़ै वेद पुराना।
कोई गइया का जिभै करावै, कोई बकरिया मारा।
मेहर दया दूनो ते छूटी, छूटे दिलौ बिचारा।
कहि इन्दो मुरसिद के पाये, जाना अैनि बिचारा।

(36) सो जागै जेहि गुरू जगावै, गुरू सोइ जो अलख लखावै।
कोटिन सूर शशी जुरि आवैं, अलख पुरुष की छवि ना पावैं।
अलख की महिमा संतै गावैं, जाको सुरमुनि पार न पावैं।
भेखिन का गुरु ना पतियावै, ई ठगिया ठगि ठगि जगु खावै।
बहुत मसखरा जगै जगावैं, भूले आप जगत भरमावैं।
जानै ना राह कहाँ तन जावैं, गुफा पइठि कै भरमु बढ़ावैं।
चारि खूंट धरती फिरि आवै, संतन का ना हेला पावै।
झूठ साँचु की पारिख आवै, कहि इन्दो सो सतगुरु पावै।

(37) करम भरम का त्यागि दे, प्रभु भजै ता उतरै पार रे।
जग्गि दानु तीरथु ब्रत संजम, ई उइले ब्यौहार रे।
दान देइ गिरगिट भये नृग, साखी देति गवाँरि रे।
बलि दानी ते गये रसातल, बिनु भक्ति नहीं निस्तार रे।
गोरख भरथरी गोपी चंदा, औ सुल्तानी साहु रे।
नरसीले औ पीपा मीरा, ब्रम्ह मां जाय समान रे।
इन्दो दासी कटी जमु फांसी, फांसी परा संसार रे।
तीनि देव चौबिस अवतारा, तिन पर जमु मजमानी रे।

(38) हरि सो लागे री नैना, यही हवै धैना।
घर अंगना अब नेकु न भावै, थकित भये बैना।
दिल दरिया मन मंजन कीन्हा, होइगा ज्यों अैना।
जित देखौं तित हरि ही देखौं, भये सुख चैना।
सुनौ नारि मोरी सखी सहेलरिउ, तुम आवौ सरना।
येही काजे लाज तजी हम, काह जगु करना।
रवि सुत त्रास निवारा सतगुरु, अब नाहीं डरना।
इन्दो बाजी हांथै आयी, अस कहिये परना।

(39) गुरु मेरे पिता गुरुइ मेरी माता, जिन हरि जी का सौंपि दई री।
मैका ससुरवा दोऊ कुल तारे, अब काहे की विपति रही री।
हरि रंग रंगा तपनि गई तनकी, जोति मां जोति समाय गई री।
लोनु किरच घुरि जाय नीर मां, अस प्रण बांधे भक्ति सही री।
भेखु ठगैया भक्ति न पावै, गिरही सिर दै विरल लई री।
झूठे के या हाथु न आवै, सांचे का गुरु बकसि दई री।
इन्दो जेहि लागै सो जानै, बिनु जाने का बात कही री।
जैसे गूंगा के गुड़ खाये, बिन जिभ्या वाके मनै रही री।

(40) ननदी ब्याहु भया है हमरा, बर पाया करतारा।
बारा महीना की लगन धराई, दीन्हा तिलक लिलारा।
ततु की चुनरी सत का लहंगा, लै चले चारि कहारा।
जाय उतारेनि मोरी ससुररिया, आवागवन निवारा।
दैजै प्राण दिये मोरी माई, गहन दीन बहु तेरा।
धरि धीरज मनसौ का मारा, भा औहात सिंगारा।
कहि इन्दो यह है परमारथ, स्वारथ नहीं बिचारा।
सखी सुजान लखै या बोली, जे चढ़ी खांड़े धारा।

(41) अबु इन्दो मैके ना जाई, ससुरे मां वा रही समाय।
कुम्भ नीर सागर मां मिलि जाय, अब को बपुरा काढ़ै आय।
तोरी पोथिन मां या नहिं आय, परपंच मां तू गया भुलाय।
सोई पंडित सोइ ज्ञानी आय, जो या पदु का भेदी आय।
बिन भेदै जमु धरि धरि खाय, फिरि फिरि गरभवास मां जाय।
ऐसा समय बहुरि ना आय, करु निनुआर दुःख मिटि जाय।
भाग्य बड़े ते बूझा जाय, बिना बूझ नल कहाँ समाय।
राज्य छाड़ि कै राजा जाय, जबु या मन मां लागै आय।

(42) काहे कान फूँकि बहकावै, या विधि भक्ति हाँथु ना आवै।
सोई सिख्य परमान जो हुकुम बजावै,सोई गुरु है सांचु जोअलख लखावै।
काठ की माला काम ना आवै, बिनु कर माला बिरल फिरावै।
भेखु ठगइया जगु भरमावै, संतन का कोउ लखन न पावै।
भेखु भक्ति कबहूँ ना पावै, ते भेखी जग सन्त कहावैं।
या धोखे मां सन्त न पावै, गिरही संता पार लगावै।
हरि चाहैं तेहि सन्त मिलावैं बिनु हरि कृपा न संतन पावै।
कै विवेखु इन्दो गोहिरावै, निंदक के मुख करिखा लावै।

(43) हँसि हँसि माया भोगवैं रे, रोय रोय निकसै प्रान।
या सुखु की धौं दुःख हवै, तुम समुझौ मुरुख नदान रे।
करता का तजि सुखु नहीं रे, मकु होवै इन्द्र समान।
ताहि भजै क्यों ना बावरे,जामें सबन सुखन की खानि रे।
रवि सुत त्रास निवारई रे, जौन दुखन की राशि।
मूठी भरि सुख कारने, तू जनि डारै गरे फांसि रे।
निभर भये मैं सोवती रे, सतगुरु दीन्ह जगाई।
इन्दो का गवना भया, अबु बहुरि न आवन आई रे।

(44) माई लाज संघु ना लई।
राम नाम जिहाज पाया तेही ते तरि गई।
मात-पिता-सुत-बंधु कबीला, सब मिलि दगा दई।
सब जगु देखा झूठा सपना, रामा सरनि गई।
बलिहारी गुरु अपने की, अटल पदवी दई।
इन्दो हांसी भई साँची, अधिक शोभा भई।

लटका निरगुन

(45) अरि आये आये मोरे अंगना, बलमु सुजान।
एक हाथ है लाल कमनिया, एक हाथ दोऊ बान।
सब दुःख हरे किये बसि नैना, शीतल कीन्हे प्रान।
सखी होय सो इन्दो जानै, का जानै नादान।

पदु मुसलमानी मां

(46) करु बन्दे ऐसी बंदगी, जासे अल्लौ पावै।
सोई गुरू सोई पीर है, बातिन दिखलावै।
मन मालिक का हाथु लै, सीढ़ी चढ़ि जावै।
इश्क की आगि लगाय दे, कसमो जरि जावै।
औघट घाटी लखि परै, महरम हो जावै।
सहजे चलु तो पिउ मिलै, निजाति करावै।
जो गुजरी सो कहि चली, खिलाफ न भावै।
कहि इन्दो मुरसिद मिलै, तब या मति आवै।

(47) इश्क नहीं औसान रे बौरे,कपरे रंगै नादान रे।
गुदरी सेली किस्ती तेरी अधिक करै बदनाम रे।
खुशी करै की ये नहिं बातें, ये टुकरे के कामु रे।
बिन जौहद खाना कैसे पचिहै, मारु परी घमसान रे।
हो अल्ला का सब कुछ तेरा, आप होंय निगमान रे।
जो तू उनकी मरजी जानै, वे तेरी तब जानैं रे।
का हिन्दू का मुसलमान, जो कोई मरजी जानै रे।
कहि मीता (इन्दो) सोई मरदाना,आपु तरै औरे तारै रे।

कहरा

(48) हो मन महरा दे मेरा पहरा, तेरे पहरे में सोऊँ रे।
भजौ राम का तजौ काम का, गरभवास दुःख छूटै रे।
औसर भला मिली नल देही, करम जंजिरिया टूटै रे।
चूकि गये ते ये दुःख देहै, बार बार ठगु लूटै रे।
हा हा करों मानि ले विनती, चलु सतगुरु का भेंटै रे।
बंदी छोरु सुना जस उनका, मुक्ति दानु उइ देते रे।
मनु है दोस्त मनुइ है दुसमन, जो चेतै तो पीतम रे।
कहि इन्दो मनु तारै बोरै, जैसे का तस उपजै रे।

(49) अगिलइया मां कैसी करिहौ, तीन लोक जरि जइहै रे।
ले मन महरा नामु धनी का, जाइ मवासे सूतै रे।
या संसार विषै रस माता, काहू का ना सूझै रे।
तीरथ बरत करम की फांसी, या मघ सहना लूटै रे।
जग्गि दानु पंडवन कीन्हा, जाय हिवारे गरिगे रे।
गोरख भरथरी हरि जिउ ध्यावा, जियत परमपदु लै गये रे।
सधना पीपा नामा छीपी, रामु भजन ते तरि गे रे।
सो मारग इन्दो मन लाया, सकल ब्याधि मेरी टरिगै रे।

(50) कहरा कहर किया जगु माया, सुज्जन रहेउ बिचारी रे।
सतगुरु सरनागत का ताकौ, कहिये बात पुकारी रे।
ब्रम्हा विष्णु महेश देव मुनि, ई सगरे धरि बांधे रे।
नल बपुरे का कौन छड़ावै, जुआ जलमु सबु हारे रे।
छोरन वाले गारी पावैं, बाँधन वाले प्यारे रे।
अैसे भोंदू को समझावै, अपने करै निवेरा रे।
माया कुल का करई तिनका, जिनके हरि रखवारे रे।
बंदी छोरु मिले इन्दो का, अपने कुल दोउ तारे रे।

(51) गुरु दिया ज्ञान लिया मानि, साहेबु निकटै पाया है।
हरद जरद तनु पियरी छाई, गुरु वौखदि मूल बताया है।
सुरति निरति जैसे चंग चढ़ी है, रेशम तार लगाया है।
चढ़ी चंग बहु बाजन बाजे, घटही मां अलख लखाया है।
चकई थामि लई कर अपने, ऐसा फेर फिराया है।
तनु घूमै तन की सुधि बिसरी, प्रीतम हम मन भाया है।
इन्दो गगन मगन होय रही, भेखी जगु भरमाया है।

धमारि

(52) होरी मोरी बहु बनी, छबि निरखति भई निहाल री।
जित देखौं तित वा खड़ो, मेरे मन को जाननहार री।
जो मैं देखौं आरसी, तहंवाँ वहै हेवाल री।
सोवति जागति ना टरै, सखी ऐसी रची धमारि री।
हा-हा हो-हो हो रही, तहाँ इन्दो पहुँची जाय री।
ऐसी होरी खेलियाँ, जाते बहुरि खेह ना खाय री।

(53) निर्गुन होरी खेलिले, जाते बहुरि धरै ना देह री।
बसि करु पाँच पचीस, करता सो जोरै नेहु री।
गरभवास दुःख कारने, राजन छाँड़ी राजि री।
ऐसा समौ बहुरि ना पइहौ, चलौ मवासी भागि री।
दावन धरि ठाढ़ी भई, प्रभु फगुआ दीन्ह मंगाइ री।
इन्दो अलखै होय रही, छवि नैनन रही समाय री।

खेह- राख/धूल

मीता-इन्दो समाज

इन्दो बेटी आओ ना, खोटी है संसारी।
मात पुत्र की गारी लावै, तुम्हरी पति है भारी। **मीता**

परमेसुर का हुकुम भया मोहि, का करिहों पति भारी।
मेरे मन परतीति भई है, आई सरनि तुम्हारी।। **इन्दो**

जो आई ता बैठो बेटी, तुमका देबे तारी।
परमेसुर सो बांह धरइबे, मीता कही बिचारी।।
कहि मीता इन्दो सुनो, धरो धनी का ध्यानु।
राम भगति सरि कुछु नहीं, परी विरले का जानि।।
ध्रुव-पहलाद ना पाइयाँ, सो पद तुमका देऊँ।
कहि मीता परतीति मानि ले, रामु भगति कै लेऊ।।
अनभै उपजै भगति ते, पावै पदु निरवान।
इन्दो बेटी समुझि ले, तू है परम सुजान।। **मीता**

जौनी चालु चलाइहौ, तौनी चलिहों चालु।
अब इन्दो का और न भावै, तजे करम के ख्यालु।। **इन्दो**

जोगु जुगति मां पगु धरो, रैनि दिना लौ लाऊ।
धरनि मूल मां बाँधि कै चितु ना अनतै लाऊ।।
मनसा वाचा कर्मना, जो रहै चितु लाय।
जोगिन का या मारगु दूजा नहीं उपाय।।
गोरख भरथरी गोपी चंदा, औ सुल्तानी साहु।
साहेब येही मघु मिले, मिटे जुगन के दाहु।।
इन्दो मारगु कठिन है, होरिउ ते अधिकाऊ।
जरि बरि मारग का धरै, सो जीतै या दाऊँ।।
तीनि देउ तेहि ध्यावईं, जो जीतै या दाऊँ।
खाड़े धारा पाँव दै, अमरलोक का जाऊ।। **मीता**

माथु नवाऊँ गुरूजी, धरौं जोगु मां पांऊँ।
अगम पंथु का जो चलौं, डिगौं ता कहाँ समांऊँ।। **इन्दो**

ऊँची जाति अग्रवालिनी, इन्दो प्रकटी आय।
कहि मीता हरि भगति का, तोरा बांधे जाय।। **मीता**

इन्दो लाजु निगोड़ी, ता पर जगु असवार।
मंजिल दूरि चलि ना सकै, कैसे उतरै पार।।
इन्दो गुरु पूरे मिलैं, तबु पहुंचै दरबार।
पति खोये पति पाइये, का जानै संसार।।
मात-पिता ते अधिक हैं, जे गुरु करते पार।
कहि इन्दो गुरु तेई हैं, जे मिलवैं करतार।।
कनफुकवा सब ठगु हवैं, परे कालु के गाल।
इन्दो जो नजिकाई, तिनका बुरा हेवाल।।
का राजा का रंका, जो कोई होय हमार।
कहि इन्दो तेहि पार उतारैं, ऐसा मता विचार।।
जहाँ जहाँ प्रीति देखौं अधिकाई, तहां तहां उठि धाऊँ।
कहि इन्दो साहेब की मरजी, अपने मुख से गाऊँ।।
छा भेखु पंडित सूधा, ई हैं नरक निसानी।
कहि इन्दो जगु जानति नाहीं,संत संगति मिले जानी।।
भक्ति दूरि छा भेखु ते, छल बल मां साने।
कहि इन्दो संतन की सेवा, चोरु साहु पहिचाने।।
कहि इन्दो मारगु है येही, जो चलिहै लेहै जानि।
या मारगु ना पाइहै, तिन्है नरक की खानि।।
संतन का या मारगु, जे पहुंचे हरि पास।
दूजा मारगु जे कहैं, तिनका नरकै बास।।

इन्दो

इन्दो कहौं बिचारि कै, मानि लेउ परतीति।
जो सतगुरु पहिचानिहौ, ता जइहौ बाजी जीति।।
सीता पारबती औ लक्ष्मी, तेरे पाउँ पै लोटैं।
कहि मीता सुनु इन्दो बेटी, जो करता का भेंटै।।

मीता

चौपाई

फागुन मां पिया एकै पासा, अमरलोक मां पाया बासा।
बलिहारी जाऊँ गुरु पूरे, गरभु वास के बंधन तूरे।।
सुर-मुनि कालु सकल जगु तूरे, सो काहे का आई नियरे।
जस रे किया तस आगे आये, इन्दो रागु दोखु बिसराये।।

बारहमासी

(1) चैतु चेति गुरु मारगु लाया, मूल मंत्र किरपा ते पाया।
निसि वासरि तहां ध्यानु लगाया, कपट अमल का दूरि बहाया।
असल प्राग तब नजरी आया, देखि देखि मन प्रेम बढ़ाया।
कहि इन्दो तहाँ पैठि नहाया, मनु विस्वास अधिक तब आया।

(2) बैसाखै पोहपन झरि लाई, छिनु छिनु अधिक अधिक अधिकाई।
सोवति ते मनु दीन जगाई, सुरति निरति ऐसी हो आई।
संसार सपन कै जाना भाई, नयी अनोखी खबरी पाई।
भली भई इन्दो ठहराई, कसे कसौटी गुरु मती पाई।

(3) जेठ जुगति औरै रंगु लाई, बैद रंज की माला पाई।
घरु अंगना तब कुछु न सुहाई, उठै तरंग मनु मनहि समाई।
अगम डोरि नैनन मां आई, चढ़ै चंग यों सुरति लगाई।
कहि इन्दो मैं तू विसराई, रामु भगति जागति बनि आई।

(4) अखाढ़ अरध में पहुंचे जाई, फिरै माल गई दुंद उपाई।
अबु रंगु कहौं ता कहा न जाई, अचिरिजु घटही मांझि समाई।
सार बूँद बरखै बहुताई, तिनगि झरै रज विरज जराई।
कहि इन्दो या करै कमाई ताको स्वादु कहा ना जाई।

(5) सावन झरै अकाश अंगारा, जैसे कुंदन करै सुनारा।
लागि दंवारि होय उजियारा, बैठे जरौं होय दुखु भारा।
या दुखु मोरे बहुत पियारा, जाते मिलै खबरि दरबारा।
सदा जरै सो सती विचारा, कहि इन्दो विरले संसारा।

(6) भादौं भय तजि धीरजु धारा, लगी समाधि सहज मनु मारा।
छहौं चक्र बेधे एकतारा, जीव ब्रम्ह मां मिला हमारा।
तहां का संकर पाउँ न धारा, करमु जोग फांसा संसारा।
कहि इन्दो तजि जगु ब्यौहारा, सतगुरु सेउ करै भय पारा।

(7) कुवाँर चढ़े खाड़े की धारा, पांउ न टिकै करौं बहु तेरा।
बरखै नैन अखंडित धारा, तहाँ नहीं मेघु नहीं संसारा।
ब्रम्ह अगनि का जब उदगारा, पिया अमी मनु भा मतवारा।
कहि इन्दो या अगम विचारा, निगम बहै चौरासी धारा।

(8) कातिक ब्रम्ह झका झकि लाई, जित देखौं तित रहा समाई।
सतगुरु सो जिन मूरि बताई, सुर मुनि का या जानि न जाई।
भेखिन संघ नरक जिउ जाई, सतगुरु इनका ना पतियाई।
झूठ साँचु सब नजरी आई, इन्दो दीन्ह तौनु गोहिराई।

(9) अगहन बाढ़ा अगर सनेहा, तुरी अवस्था होय गै देहा।
छूटि गया तब बिखै सनेहा, मनु बैरागी छबि लखि मोहा।
काह पढ़े भा साखी दोहा, बिनु करनी नहिं जुरै सनेहा।
सो काहे का तजिहै ग्रेहा, कहि इन्दो जाके धनी सनेहा।

(10) पूसै पारस हरि सो पाया, सुख उमड़ा नहिं छपै छपाया।
तनु सोधे भया मनु का भाया, जग्गि दान कुछु नजरि न आया।
करम हिंडोले जगत झुलाया, बाचे ते जिन निरगुन ध्याया।
गुरु मिले जोगी जोगु डिढ़ाया, इन्दो मरमु दीन होइ पाया।

(11) मांह महल मां पहुंचे जाई, बैकुंठ वास दिया दूरि बहाई।
ध्रुव पहलाद कीन बहुताई, परम भगति ना हाथै आई।
पीपा मीरा सधन कसाई, इनके हाथु सजीवनि आई।
गोरख भरथरी या मति पाई, इन्दो पारिख हमका आई।

(12) फागुन खुलिगे बजर किवांरा, पिउ का मिली छूटा जमु द्वारा।
या बिधि आवागवन निवारा, बांह गही साहेब करतारा।
संतन सेइ भई भय पारा, बूड़ा भेखु लिया संसारा।
जो सेई भेखन का द्वारा, सो बूड़ी चौरासी धारा।
कहि इन्दो हम किया बिचारा, तब कीन्हा है जगत पुकारा।।

दोहे

करनी बारहमास की, इन्दो किया बयान।
सतपुर का या मारगु, जनिहैं सन्त सुजान।। (1)
जेहि मघु इन्दो पगु दिया, सोई किया बयान।
येही मघु गोरख गये, जनिहैं सन्त सुजान।। (2)
मनु बिखई तनु भेखु धरि, किया चहति बैरागु।
कहि इन्दो सठु समुझि मसखरा, हंस न होई कागु।। (3)
अजामील गनिका औ सधना, औगुन बहुत कमाये।
कहि इन्दो संतन की सेवा, सति गति का पहुंचाये।। (4)
कोटिन अवगुन नल करै, गुन एकौ ना आय।
ध्रिग ध्रिग कै फिरि त्यागई, इन्दो ता बनि जाय।। (5)

इन्दो तहँ नैना लगे, जहाँ रूप नहिं रेख। छवि देखे गलतान भया मनु, तहाँ न पहुंचै भेख।।(6)
सन्त संगति मां नौका पाया, इन्दो उतरी पार। वारु न कबहूँ आइबे, भेंटे हैं करतार।।(7)
गुरू तौन कहावई, जौन मिलावै राम। कनफुकवा इन्दो तजा, तब पहुँची निज धाम।।(8)
इन्दो इन्द्री ना जीती, ना उपजा बैराग। भेखु धरी धरि जगु का मूसा, रामै ना मन लाग।।(9)
मन बैरागी मूढ़ करु, तन का भेखु उदारि। इन्दो कहै बिचारि कै, गिरही उतरे पार।।(10)
भेखु बूड़ि भय सिन्धु मां, पंडित येहिमां आंय। इन्दो कही बिचारि कै, गिरही रामै पाय।।(11)
कथनी बदनी बहु करै, रहनी रही न जाय। कहि इन्दो बिनु रहनी, फिरि फिरि गोता खाय।।(12)
करु किरखी रहु रहनी, भेखै धरौ उतारि। बिनु किरखी रहनी ना सधिहै, होइहै जमु सो रारि।।(13)
गृह के छाड़े सुनो मसखरा, रहनी ना ठहराय। कहि इन्दो साकठु सुनौ, भेखु भगति ना पाय।।(14)
इन्दो भेखै जो धरै, होय परोहन जाय। अबकी ठगि ठगि खाया, भारा लादे जांय।।(15)
गुरु देई का बहु मरैं, सिख्य भया ना जाय। ते नल होंय परोहना, पीछे लादे जांय।।(16)
ज्यों दरपन की कामिनी, गहि न सकत कोई बांह। इन्दो जग मां यों रहै, छुए न पावे छांह।।(17)
इन्दो घुंघचुल पहिरे भिल्लनी, मोती देइ चलाय। जे घट छान विवेक नहीं है, तेऊ भिल्ल से आंय।।(18)
ज्ञान ध्यान जानों नहीं, हरि चरनन की आस। जीव नरक सब जाइहैं, भेखिन के बिस्वास।।(19)
पी का खोजन मैं चली, पिया थे मोहीं मांहि। इन्दो मिलते मिलते मिलि गई, सतगुरु केरी बाँहि।।(20)
अपना परे नरक मां लोटैं, औरे देते सीख। नरक सरग की कौनु चलावै, मांगि खाति हैं भीख।।(21)
सतगुरु सो जो हरी मिलावै, कालु न आवै नेरे। कही मीता कनफुकवा खोटा, सतगुरु मिलिहैं हेरे।।(22)
हरि के दासा होन चले ते, होइगे बिखै बिकारी। कहि इन्दो सुनु गूदर गंदे, भेखु धरे भे खुआरी।।(23)
अपनी नारी त्यागी गंदे, पर धनियाँ भीतरि डारी। कहि इन्दो रमपरसदवा सुनिले,जमु लै नरकै डारी।।(24)
जग जीवन ध्रग जीवन, मांगि खाति हैं भीखी। अपना परे नरक मां लोटैं, करति फिरति हैं सीखी।।(25)
जुगुल सोनिया गदही गदहा ब्रज मां होइहौ जाई। कहि इन्दो हम राम सनीपी, तहँ की खबरि सुनाई।।(26)
कहि इन्दो मनसुखवा गंदे, नाहक भेखु संवारा। पर नारी पर धन का भोगवा, रहा रामु ते न्यारा।।(27)
कहि इन्दो सुनु असरफ ठगिया, कीन्ही बहुत खुआरी। बिगरी तेरी वार ते, अल्ला गरदन मारी।।(28)
अल्ला के हम हवैं सनीपी, रहते नाहीं दूरि। कहि इन्दो सुनु असरफ ठगिया, तेरे मुख मां धूरि।।(29)
निंदक के मुंह छार परैगी, हम तो सत्य सुनाई। बाँह धरी अल्ला इन्दो की, तहाँ की खबरी पाई।।(30)
मनु बिखई तनु भेखु धरि, किया चहति बैराग। इन्दो बिनु गांसी का तीर ज्यों,कहु केहिके वा लाग।।(31)
जगु मां हँसी कराइया, पति का दिया लुटाय। इन्दो मिलिया रामु का, आवागवन मिटाय।।(32)
राम राम सबु जगु कहै, मिलिया बिरला कोय। इन्दो मारगु कठिन है, मिलै सो बीरा होय।।(33)
इन्दो इन्द्री बसि किई, जीति चली मैदान। निस दिन लरी रामु के आगे, पाया पद निरबान।।(34)
इन्दो सूरी मां चढ़ी, तनु धनु कै खुरबानि। हरि जिउ आनि उबारिया, सेवक अपना जानि।।(35)
कहि इन्दो कुल खोइ बइठ हैं, भीख मांगि कै खाई। राम भगति ते भये निनारे, भूख लगे पछिताई।।(36)
करता रमिता राम है, सब घट रहा समाय। कहि इन्दो जगु आंधरा, साँचु कहे जरि जाय।।(37)
कहि इन्दो हम छानि पुकारा, जो मानी अतिबारा है। तिनका सतगुरु किरपा करिहैं,भयते करी निनारा है।।(38)
संका चारज गोपी चंदा, गोरख भरथरी सारा है। सुल्तानी हैं मति के गहिरे, इन सबका मत सारा है।।(39)
उन लपसी उन नरियर थापा, भक्ति भेदु तो न्यारा है। कबीर नानकभेखिन मूसा,अधिक किया अंधियारा है।।(40)
कबीर नानक सूरा तुलसी, कथा ज्ञान अंधियारा है। गोरख भरथरी औ सुल्तानी, करिगे सो उजियारा है।।(41)
हरि पाये तिन गिरही मां, गिरही विरला कोय। कहि इन्दो उनका जो चीन्ही, सो जन मुक्ता होय।।(42)

कहि इन्दो गुरु ऐसे कीजै, भय ते करैं निनारा। कनफुकवा नरकै लै जइहै, परी नरक के द्वारा।।(43)
गुरु पाये हरि पाये, कहि इन्दो यह सार। मंत्र जपे ते राम न पावै, भूला है संसार।।(44)
कहि इन्दो गुरु ऐसे कीजै, जैसे सिकली गरका। बहुत दिनन के मोर्चा खोवै, गुरु खोवै करमन का।।(45)
कान फूँकि कै जगु ठगि खाया, आगे होय खराबी। गदहा बैला भैसा होइहौ, या खाबे की भाभी।।(46)
जनेऊ पहिरि कै बंभन कहावैं, खाते मास मछरिया। तुही डोमु है तुही कसाई, ऐसे कुल औतरिया।।(47)
ब्रम्ह मिले ते बंभन कहावै, खाय ना मांस मछरिया। कहि इन्दो सठु जगु ठगि खाया, परिहै भारी बेरिया।।(48)
हुकुम भया साहेब राम का, सो इन्दो गोहिराया। ना मानी सो नरकै जइहै, कालु गाल मां आया।।(49)
तीनि बेरि हनाते हैं, खाते मांसै मछरी। तेरी किरिया ऐसी पांड़े भली टेक तुम पकरी।।(50)
तीनि दाँय नहाते हैं, देखौ इनकी किरिया। कहि इन्दो जो तू तरि जइहै, तरिहैं बहुत मछरिया।।(51)
कहि इन्दो सठु छाँडु मसखरी, झूठी तेरी किरिया। हरि का भजे ते भये पुनीता, तू गुमान का करिया।।(52)
साखी सब्दी बहु भईं, ग्रन्थ भे कोटि हजार। कहि इन्दो उइ दूलम हैं, जे मिलवैं करतार।।(53)
कैसे भयऊ ब्राम्हणा, मांस मछरिया खाऊ। अति निलज्ज पांड़े हवो, कहते ना सरमाऊ।।(54)
राजा सो बिनती करैं, जीव जंतु जल थल के। तुम मारो ता कौन उबारै, हम होय रहिये किनके।।(55)
सरनि आये क्षत्री प्रतिपालै, हम गुनाह का कीन्हा। जीव जंतु जल थल के बिनवैं, या विवेकु ना कीन्हा।।(56)
दोनौ घर मां आगि लगी है, समुझि न काहुइ परता। साँचु कहे ते लरने लागैं, जन इन्दो तहँ डरता।।(57)
भली कोख मां इन्दो आई, जीव न कोई बधता। परमेसुर सो बांह धराई, तेहि पर जियरा डरता।।(58)
भली भई जो मिली गरीबी, नाहित जाते मारे। आपन जानि बांह हरि टेकी, इन्दो उनही तारे।।(59)
नहाइ खोरि पाहन का पूजै, या बिधि नाहीं तरिया। कहि इन्दो संतन की मति लै, कालु करति है चेरिया।।(60)
जीव जंतु पर दाया राखै, संतन का संघु करिया। कहि इन्दो सहजे मति पावै, राम भगति मनु धरिया।।(61)
अस्तुति निंदा ना करैं, कहि इन्दो हरि दास। जैसे का तैसा कहैं, सदा रहैं हरि पास।।(62)
तीरथ मां जलु देखिया, औ पाहन का देव। इन्दो हरि हिरदै लखे, करि सतगुरु की सेव।।(63)
इन्दो मन पारिख भये, परखे सन्त सुजान। भय बूड़ति तिन राखिया, तुरत उबारे प्रान।।(64)
सन्त द्रोह जो करी रतनवा, परिहै नरकु दुआरे। बारे ना कबहूँ आगे खेली, मरिहौ भूखन मारे।।(65)
दुइ दुइ बातैं ना बनैं, भगति और अहंकार। इन्दो नन्हा होय रहै, सो जन उतरै पार।।(66)
पाहन पूजे ज्ञान न होइहै, ज्ञान बिना ना तरिया। कहि इन्दो मूरख भूले हैं, नहाय खोरि का करिया।।(67)
काम क्रोध की गरदनि मारी, हरि सो प्रीति लगाई। इन्दो इंद्री बसि किई, आपु मां आपु समाई।।(68)
तीरथ पाहन पानी देखा, राम रहा ता न्यारा। इन्दो सतगुरु सेइयां, उतरि गई भै पारा।।(69)
हरि की भक्ति भली रे भाई, चौरासी ते छूटे। इन्दो हँसी करति है दुनिया, बांह धरी हरि भेंटे।।(70)
संस्कृत मां संसै लागै, भाखा है निरुवारा। कहि इन्दो फिरि दूनो भूसी, तत्त हवै वा न्यारा।।(71)
सो पंडित जो पढ़ै न काशी, ना पंडित के द्वारा। ब्राम्हण सो जो ब्रम्है मिलिया, मत इन्दो का सारा।।(72)
हरि के मुख ते ब्राम्हण आये, विद्या उहाँ ते लाये। तिनका रोगु पढ़ै काशी में, इन्दो अनभय पाये।।(73)
वेदु कुरान दोउ हैं सांचे, झूठे जो न बिचारैं। तत्त मता येहू ते आगे, इन्दो कहै बिचारे।।(74)
घर घर विद्या जे पढ़ैं, ते सबु हैं भिखियारी। कहि इन्दो जहाँ अनभय उपजा,ते हरि के हितकारी।।(75)
सुरति निरति दोनों चढ़ीं, इन्दो निरखि निहाल। सतगुरु की किरपा भई, कटि गया जमु का जाल।।(76)
बिद्या पढ़ि मगरूर भये हो, आँखिन परिगै धूरी। हरि से विमुख भये कहि इन्दो,माया केहिबिधि जोरी।।(77)
हम ब्राम्हण सति लोक के, हरि के मुख ते आये। कहि इन्दो यहाँ पढ़ै बलइया, बिद्या हुआँ ते लाये।।(78)
एकुइ साधे सब सधै, सबु साधे सबु जाये। इन्दो भेंटै ब्रम्ह का, सोऊ ब्रम्ह होय जाये।।(79)

फूस फास मां पंडित अरझे, माया हित बौराने। कहि इन्दो हरि हिये न आये, चौरासी मां साने।।(80)
बिनु किरखी एकु दाना खइहौ, पंडित परिहौ भारे। खर महिखा फिर बैला होइहौ, इन्दो कहै बिचारे।।(81)
हरि की भगति बिना जगु हारा, कै कै बरन बिचारे। हरि का भजै सो होय पुनीता, इन्दो कहै पुकारे।।(82)
प्रेम की आगि लगी घटु भीतरि,जरी कुमति की बारी। अभिनासी की मरजी जानी, इन्दो भई पियारी।।(83)
इन्दो चली उड़ीसै, मने कीन करतार। जो तू हमका चहति है, परु संतन के द्वार।।(84)
मैं संतन मां रहति हों, मोर नाउ करतारा। झूठे ते मैं दूरि हौं, सांचा मेरे प्यारा।।(85)
जेहि चाहों तेहि करौं हजूरी, अनचाहा भटकाऊं। तीरथ मांही करों फजीहति, करम के नांच नचाऊं।।(86)
कही कही करतार की, सुज्जन केरे काज। इन्दो किये विवेकु के, मिलति हवैं महाराज।।(87)
साखी कही बिवेखु की, सुज्जन का निनुआर। इन्दो बहुतै कथि गये, कच्चे बिना विचार।।(88)
भक्ती चाहति राम की, तजै न विखै विकार। इन्दो केहि समुझाइये, जिनका मनु है खुआर।।(89)
बड़े भागि सतगुरु मिले, जिन दिया रामु मिलाय। इन्दो लज्जै का करै, दोऊ कुल तरि जाय।।(90)
अबु इन्दो मन ना डिगै, कीन्हा राम सहाय। पूँजी सौंपी साहु का, तबु हमहूँ भये सहांय।।(91)
तब इन्दो दासी भई, हरि जिउ पकरी बांह। जहाँ-जहाँ घामे मैं फिरौं, तहां-तहां करते छाँह।।(92)
जलमु अकारथ जाति है, करु सतगुरु की सेउ। तीरथ बरत बेगार है, इन्दो घटही मां हरि देउ।।(93)
तीरथ बरत पसुआ करैं, मूरख मुगद गवांर। इन्दो मन बसि जे करैं, ते जन उतरैं पार।।(94)
संतन केरा नाउ लै, भेखु ठगइया खांय। कहि इन्दो जे सन्त हैं, भीख न कबहूँ खांय।।(95)
कबीर नानक दादुआ, ई सबु गिरही आंय। जो भेखिन का पूजिहै, सो निहचै नरकै जाय।।(96)
सन्त भये ते गृह भये, बाहर भया न कोय। इन्दो गृह निगुरा तजै, सिगुरा तजै न कोय।।(97)
जिन तपियन बन तपु किया, कालु किई मजमानी। इन्दो सतगुरु के मिले, जोति मां जोति समानी।।(98)
पाया सूप विवेक का, डारा झूँठ पछोरि। इन्दो किरपा गुरन की, चली खलन मुख तोरि।।(99)
गुरु मीता हैं धोबिया, उजरा कै कै देईं। कहि इन्दो हम जाना, जगत न जानै कोई।।(100)
मछरी चढ़ी अकाश का, सूखि गया जब ताल। कहि इन्दो या है परमारथ, काटै जमु के जाल।।(101)
इन्दो भई निमानी, सतगुरु राखा मान। गोदी दीन्ही रामजी, तुरत उबारे प्रान।।(102)
नौका नामु न्यारा हवै, ओमकार वा नाहीं। इन्दो ऐसा नामु है, हरि जिउ पकरै बाँही।।(103)
राम कहे ते का भया, जो नहिं राखा राजी। इन्दो मिलिया राम का, गल्लन भूले पाजी।।(104)

हिंडोलना निरगुन

झुलवा भला अगमु का रे, इन्दो पिया के साथु। अंगिया के बंद छोरे अरी सखी, लाये अपने हाथु।।(105)
इन्दो झुलवा झूली रे, अरे गैली अगमपुर डोरि। अंग सो अंग लगाये, मिटि गई सगरी खोरि।।(106)

परिचय
सन्त सहजी साहेब

सन्त सहजी साहेब का जन्म जनपद फतेहपुर के अंतर्गत ग्राम फतुहाबाद (खजुहा) के खत्री वंश में हुआ था। आप सन्त चन्द दास के समकालीन थीं। जिनका जिक्र सन्त मीता साहेब ने सन्तों का वर्णन करते हुए कहा कि चन्द किशोर खत्री ने भक्ती पाई। आपकी जन्म-तिथि तथा माता-पिता का नाम ज्ञात नहीं हो सका है। आप श्री सन्त सतगुरु मीता साहेब की शिष्या थीं। फाल्गुन बदी संवत् 1791 विक्रमी (सन् 1734 ई०) में मीता-सहजी का मिलाप संवाद और फाल्गुन बदी दुइज संवत् 1793 विक्रमी (सन् 1736 ई०) में सहजी साहेब के देह छोड़ने का लेख मिलता है , किन्तु सहजी साहेब की समाधि के बारे में कोई जानकारी नहीं मिल सकी। सहजी साहेब की वाणी पद, संवाद का मूल लेख श्री सन्त मीता साहेब की कलम द्वारा लिखा हुआ था। जिसका हिन्दी रूपान्तरण सन्त मुंशी ज्ञान सिंह द्वारा किया गया। वह वाणी-वचन संगतियों के मध्य मौजूद है। सहजी साहेब की मुलाकात जब मीता साहेब से हुई तो सहजी साहेब ने सवाल किया और मीता साहेब ने जवाब दिया जिसको आगे लिखा गया है।

सहजी-मीता मिलाप

कहि मीता रहनी रहे सतगुरु दाया होय।
सुन सहजी करनी किये ब्रम्ह मिलाना होय।।

कहि सहजी मीता सुनो करनी राना मुनि कीन।
ब्रम्ह दरस केहिका भये पार न पाये तीन।।

मीता की बानी सुनो सहजी चितै लगाय।
जग्गि दान तप ना मिलै निरगुन करनी आय।।

कहि सहजी मीता सुनो निर्गुन करनी कौनि।
किरपा कै सोई कहो परै जो हमका चीन्हि।।

कहि मीता मैं भाखऊँ गुपित मते की बात।
सहजी जग सो ना कह्यो भारी लिखी तलाख।।

कहि सहजी कैसे कढ़ै जो तुम देव बताय।
करौं दुहाई मीत की हुकुम न टारा जाय।।

कहि मीता सहजी सुनो करनी अगम अपार।
बारामासे गुप्त हो, लागो मूल दुआर।।

भया हुकुम सिरदा करों धंधा देउं बहाय।
ध्यान लगाऊँ धनी सो चाहती हती रजाय।।

सहजी पिछला आंकुरा तुमका भया सहाय।
तौन मता मीता कहा तीनिउ देव न पाय।।

ना कुछ पिछला आंकुरा ना मैं दीन गरीब।
सरनि तकी सहजी चली राखी मेरी हूब।।

तीन लोक ताना तना चौथे बिनवौ जाय।
मीता सहजी सो कहै पहुँचो सुरति लगाय।।

सहजी की अर्जी सुनो अन्दर लगी दवाँरि।
थान परोसी छाँड़िया त्रिकुटी खरकै नारि।।

त्रिकुटी मध्ये कालु है तहँ नहिं हवै उबार।
कहि मीता चढु तार गहु जाय मिलौ निज सार।।

चढ़ों चढ़ाऊँ गिरि परों पाँव नहीं ठहराय।
सहजी की अर्जी सुनो केहि बिधि पहुँचौं जाय।।

पाचौं नारी बसि करो सहज सहज चढ़ि जाउ।
कहि मीता सहजी सुनौ माड़ि न तनकौ लाउ।।

भेदु गुरू सो पाइयाँ सहजी लीन बिचारि।
अमरलोक का मैं गई आवागमन निवारि।।

पद

(1) नल रे चेति सबेरी बेरा, ना तो होइहै जमपुर डेरा।
बड़ी बड़ाई काम न आवै, सतगुरु करै निवेरा।
काह भये हय हाथी बांधे, दौलति दामु घनेरा।
मात-पिता-सुत-नारि-बंधुवा, या माया का घेरा।
बड़े पुन्य ते या तन पाया, दाउं परा है तेरा।
अबकी चूके होइहै फजीहति, फिरि चौरासी फेरा।
कहि सहजी बिनती है मेरी, गहु नौका हरि केरा।
अंत काल जम चोट न लावै, सुख पइहै बहुतेरा।।

(2) सधुआ सुरति बरति पर लागी, तब मय ममिता सब भागी।
नैनन पलक न लागै निस दिनु, तुही तौहि रटि लागी।
गिरउँ ता चोट हजार हाथ की, चढ़ौं ता अतिरिजु लागी।
पाँचों जीति करो बसि अपनी, नटनी होउ सुभागी।
चढ़ो निसान बजाय बरति पर, करो पचीसों गाढ़ी।
अबकी बेरि जाउँ ऊंचे पर, हँसिहै जगतु अभागी।
जन सहजी के साहेब रीझे, नामु खेलु मन लागी।
आवागवनु मिटाया मेरा, ऐसी हरि जी सो पागी।।

(3) बाबाजी सोय सोय तनु खोइया,
सतगुरु सेउ परम पदु पावै, होय सकल कुशलइयाँ।
लोभु मोहु गूँजै घटु भीतरि, काम क्रोध दूनो दइया,
तौ लगि रामै कैसे पइहौ, छाँड़ि देउ चतुरइयाँ।
भेखु बनाय भगति ना पइहौ, साकठ सुनो ठगहिया,
गिरही कोई भाग्य का पूरा, ताहि मिले रघुरइया।
कहि सहजी एकु रहनि गहनि बिनु, बाँधा जमपुर जइया।
साँची कहौं मानि ले मूरुख, अंत काल पछितइया।।

(4) सेउ सतगुरु दाँउ पूरा, होइ सब कुशलाइयाँ।
तजौ बिखै बेकार टिसुना, ई सबै दुःख दाइयाँ।
मानुख तन नाव पाई, उतरि भै जल पारियाँ।
चूकिहै भै बूड़ि जइहै, फिरि चौरासी खानियाँ।
सुत मात बनिता मोह फांसी, चेति करौ बिचारियाँ।
ई अंत नाहीं काम आवैं, जलमु जुवाँ क्यों हारियाँ।
कहैं दास सहजी भजौ रामै, जीति पाँचों नारियाँ।
मिटै जमु का जोरु बांका, आवागवन निवारियाँ।।

(5) सेज पिया की सो रहै, जो होय निमानी।
सखियन सो हिलि मिलि चलै, जगु कहै अयानी।
पियै मिलावै प्रेम ते ऐसी मति ठानी।
मानिक तिलक लिलाट में, सब भूखन ठानी।
सेज धरति पगु डगमगा, तब भई दिवानी।
लोक लाजु तब को करै, देहौं बिसरानी।
सहजी कथा अगम है, कोइ बिरली जानी।
सीस देइ पिउ का मिली, तुम कहो किहानी।।

(6) पांड़े काहे का बोकरी मारी,तुम कीन्ही बड़ी खुआरी।
पाती चरती पानी पीती ती, कौन गुनाह ते मारी।
काटि कुथरि कै चुरवन लागे, चूल्हे धरी कसेहरी।
जियति बोकरिया चौका गोंदा, ताकी छूति बिचारी।
अगुवा भयेउ नरक के जगु मां, लै बूड़ेउ संसारी।
तुमते हवै और को मैला, देखी चालु तुम्हारी।
ब्राम्हण हइया दास कबीरा, नामा-सधन-सुझारी।
कहि सहजी जे मिले ब्रम्ह का, तिनकी गति है न्यारी।।

(7) गन्दा तू मूर्ख अनारी है, संतों की रहनी न्यारी है।
निर्भय रहैं ब्याधि नहिं ब्यापै, फिकिरि की कफनी फारी है।
सिव ब्रम्हादिक पार न पावा, तुम्हरी कौन हियारी है।
शीश देइ सो साहेब भेंटै, सोइ भये टकसारी है।
बिना विवेक भुलाना सब जगु, जमु का मोंगरा भारी है।
जैसे खर सूकर जगु मांही, ऐसे बिखै बिकारी है।
कहि सहजी सहजे प्रभु पाये, सतगुरु की बलिहारी है।
आवागवनु मिटाया मेरा, कुल की कानि निवारी है।।

(8) जमु का लागैगा मोंगरा, ताते छाड़ि देउ झगरा।
परा गुनन मां भाखै निरगुन, तू झूठा लबरा।
या जगु तेरी बातन भूला, जो जो हवै अंधरा।
पाँचो जीतै सो पद पावै, माल हवै अंकरा।
भक्ति हवै खांड़े की धारा, कोई कै पार परा।
बहुतै गन्दा गल्लै मारै, कथनी भूलि परा।
कहि सहजी सहजे पिउ पाया, सतगुरु शब्द धरा।
आगू पाछू करै बलइया, सीस दिया सगरा।।

(9) सुन साधो भाई, ज्ञान करो तुम तखरी।
बानी बचन समुझि कै बूझौ, वस्तु हवै बहु अंकरी।
पोथी बांचि भये पढ़ि पसुआ, बूझि न आवै आखरी।
जौ लगि सत्य नामु ना पइहौ, परे रहौ जम कांखुरी।
बिखै बिकार गांठ गठु बांधे, कैसे कै चीन्है सांचुरी।
खोटा आपु मिला खोटेन का, गल्लन परा है भुलाय री।
घटिया बांटु घाटि कै राखै, अदल न आवै बापुरी।
सतगुरु साह मिलै बानी लखि, सोई भये सौदागिरी।
समुझि गवांर तौलु मन पूरा, बहुरि न आवै हाटि री।
नाहित काजी लेखा लेहै, छपै ना झूठा साँचु री।
पूँजी खाय गये साहु की, चिमटन खैची चामु री।
अंत काल जमु मोंगरा मरिहै, तबै न अइहै बात री।
लेखा देउ मारु ते बाचौ, भला परा है दाउँ री।
अबके चूके होइहै फजीहति,भरमि भरमि मरि जाउ री।
कहि सहजी भवसागर भारी,बिरला निकरि कोई जाय री।
हरि का नाम बनिज मन कीन्हा,आवागवनु मिटाइ री।।

(10) हरि सा हितू नहीं कोई प्यारा, पलक न करिहौं न्यारा।
जो दरसै ता आनि न भावै, जीवन प्राण अधारा।
मैं भूली ती लोक बड़ाई, रहता घटु अँधियारा।
सतगुरु साहेब दीपक दीन्हा, छूटा भरम पसारा।
अवघट घाट नजरि सबु आये, आये मन भा पारा।
अब कैसे कै भूलौं भाई, जब पाया अतिबारा।
जेहि सुझावै तेही सूझै, नल का नहिं अखत्यारा।
कहि सहजी कोइ भाग्य बड़े ते, या रस का मतवारा।।

मंगल

(11) धरु धनी ध्यानु बिचारि मनु बिच, दुःख सपने ना पावई।
गये सन्त पुकारि सहियाँ, और ना मन लावई।
दीन बंधु दयाल सतगुरु, सत्य मारगु लावई।
सेइ तिनका मिलौ रामै, गरभबासु छड़ावई।
होय आनंद सकल मंगल, नौ निद्धि मनै ना आवई।
राज्य वारों तीनि पुर का, रामु धनु जो पावई।
बरत तीरथ करैं पशुआ, भरमि जलमु गवांवई।
दास सहजी राम रांची, जगत सुख ना भावई।

(12) हरि सा हितू नहीं कोई प्यारा, ताहि करौं कैसे न्यारा।
मैं भूली जो तवै न जाना, ऐसा जगु उजियारा।
मैं भूली ती लोक बेद मां, रहता घटु अँधियारा।
सतगुरु साहेब दीपक दीन्हा, छूटा भरम पसारा।
अब कैसे कै भूलौं भाई, जो पाया अतिबारा।
मीठ होय ता कैसे छूटै, या तो अगम बिचारा।
कहि सहजी कोइ भाग्य बड़े ते, या रस का मतवारा।
या संसार बिखै मद माता, ता बूड़ै मझिधारा।

(13) अरी मैं जोगिन फिरौं बिहाल री।
रावल ढूंढौं कहँ मिलैं।
रूपे की नइया करा री, ढूढ़ौं वारो पार।
वार पार जो ना मिलैं, तो या तन करिहौं छार री।
केश मलीने सीस के री, अंग लगाये छार।
भरमि भरमि बन ढूँढ़िया,ताते फिरि फिरि भई हों खुवार री।
कहि सहजी जोगिन भई री, जोग न आये हाँथु।
पाँच सखी बैरिन भई, तब रागु दोखु भये साथु री।

(14) नैना मेरे बैरागी री।
अकटक रही निरखि कै मूरति, पिया पिया रटि लागि री।
अन्न न भावै नींद न आवै, परी प्रेम गरे फांसी री।
जैसे रंक अन्न धन पाये, फूली फूली न समाति री।
कहि सहजी ये अकथ कहानी, जेहि ब्यापी तिन जानी री।

खेलाति पचतए

(15) वो मेरा इश्क की कोर गड़ैआ।
तुही तुही रटि लागि मसूका, रैनि जगे रसु पइआ।
बिनु दीदार जियबु कहु कैसे, ज्यों मीन जलु तैआ।
जा तन लागी सोई तन जानै, आन दरद काह पइआ।
अमी पियाला जिन भरि चाखा, सो ना भांग चबैआ।
ठहरी अमलु पिया मन मेरा, दारू पियै बलैआ।
सहजी इश्क लगी घटही में, पाखंड कौन पुजैआ।
पलक न टरै मशूका ढिंग ते, ऐसी लगन लगैआ।

(16) टरति ना टारी लागी इश्क खुमारी,
अन्न न भावै नींद न आवै, जरौं मदन की जारी।
संसै रहै पिया मिलने की, ननद हवै रखवारी,
घर के लोगवा परपंचु ठानैं, कोई न होइ हमारी।
तनु भया छिन्नु मरनु भया मेरा, सुरति टरै ना टारी,
जा तन लागी सोई तन जानै, बैदा टोवै नारी।
मुरसिद मेरा मरमु बताये, तिन ऐसी कै डारी,
सहजी सेज पिया बिनु सूनी, बिछुवा धरो उतारी।

(17) कपरे धोय दे बहुरि न मैले होंय, हा हा करति हों पांय परति हों, सीस धोवाई लेउ।
पइले पार के धोबिया हो, कैसे मिलना होय, नाउ नहीं धारा चलै, कौन ले आवै मोंहि।
काल कल्पना ना लगै हो सहजे कूंड़ी धोये, ऐसा धोबी ना मिला जो मन मानी कै देये।

समरी

(18) यार मेरा चितवति चित जित लीन री, दरद दिवानी मैं फिरौं री।
बैद मरम ना पावई, है न्यारा दरद हमार री।
जैसे बन्सी जल परी री, डोरी गोड़िया हाँथु,
उन झटकी बाहर की, तब छूट कुटुम का साथु री।
छिनु छिनु बाजै बांसुरी री, बजत लगावै चोट,
कैसे कै जियरा तनु रहै, जेहि लागी बिरहु की चोट री।
सहजी होरी घरही हो, बाहर खेलै ना जाय,
बाहेर होरी जे करैं, जा का पीतम घर मां नाहिं री।

रेखता

(19) तीनि को त्यागि कै, पाँच को मारि कै, धनी को ध्याउ, गहि साधना का।
मूल मैदान का, खेत भारी हवै, धीर धरि जाय, सोइ नाम छाका।
नींद औ भूख का, खाड़ि खंड खंड करु, रैनि दिनु जागि, मिटै कालु संसा।
गल्ल को मारि कोई, राम पावै नहीं, बाद का त्यागु, है झूठी आसा।
करै कोई, और लरै तू, कौनी भूलि परा, जमु झगरा माचा।
दास सहजी कहै, परम पदु सो लहै, गुरू के हुकुम पर, रहै ठाढ़ा।
भरम के कोट को, ढ़हाय मैदान करि, जाय चढ़ि गगन कोई बीर बांका।

आरती

(20) काया नगर हवै अभिनासी, तिनकी आरति बंदी खलासी।
सतगुरु सेउ परम सुख रासी, पाँच पचीसों तोरु मवासी।
रवि ससि साधि जगाओ बाती, दीपकु ज्योति होइ परगासी।
जन सहजी जगु भई उदासी, आरति साजी बारामासी।

(21) आरति करौं नाथ अपने की, चरन धोय चरनोदक लेती।
लेऊ सुमिता जागै जोती, आरति करो दिवस औ राती।
पाहन पीतरि मुरति बहाऊँ, आदि पुरुष की बलि- बलि जाऊँ।
जिनकी सेवा बहुरि ना आऊँ, सहजी सहज परम पद पाऊँ।

दोहे

सहजी सन्तन का मिले, पाप पुन्य की हानि।
रामै पाया प्रेम ते, काह जगत की कानि।।

सहजी या जगु आंधरो, चीन्है ना हरि के लोग।
काम क्रोध माते रहैं, नरक करैं तेई भोग।।

कहि सहजी दरबार के, हम हैं छरियादार।
सांचे का पहुंचावई, त्यागिन कुटिल लबार।।

सन्तन की दुपटी भली, नहिं साकठ की साल।
सहजी हरि धन पाइयां, काटि चली जमु जाल।।

दिया पलीता जोग जुगति का, ब्रम्ह अगिन उदगारी।
ऐसे अमल छकी जन सहजी,मजलिस टरति न टारी।।

अपने मन की करनी, आवै अपने काम।
जगु हितू मीता नहीं, सांचा हितू है राम।।

काम क्रोध की गरदनि मारी, लसगर लीन्हा लूटि।
मीता सहज सहज गढु पाया, तौन न कबहूँ छूटि।।

सहजी खोजति मैं फिरी मन का मिला न कोय।
जो मीता मन की करै बंदी खति लिखि लाये।।



जोतपुर पुरवा, उन्नाव



परिचय
सन्त पन्नो साहेब

सन्त पन्नो साहेब का जन्म उत्तर प्रदेश के उन्नाव जनपद में स्थित पुरवा कस्बा के मोहल्ला शीतलगंज में हुआ था। आपके जन्म का समय ज्ञात नहीं है। आपके पिता का नाम ठाकुर केसरी सिंह था। आपके देह छोड़ने का समय ठीक-ठीक ज्ञात नहीं हो सका, अनुमानतः संवत् 1808 विक्रमी (सन् 1751 ई०) में आपने देह छोड़ी होगी। आपकी समाधि पुरवा कस्बे के मोहल्ला जोतपुर, निकट पानी की टंकी व नये कालेज के पीछे तालाब के किनारे स्थित है। पहले आपकी समाधि एक छोटी यादगार के रूप में बनी थी। समय गुजरता गया, तालाब से मिट्टी निकाली जाती रही, आपकी समाधि ठीक तालाब के किनारे होने के कारण काफी टूट-फूट गयी थी। जिसे माननीय मुख्यग्रंथी सन्त गुरूनारायण कुशवाहा जी के द्वारा सन् 1992 ई० में जीर्णोद्धार कराया गया। उसके बाद सन् 2016 ई० में भी सन्त गुरुनारायण कुशवाहा जी की देख-रेख में समाधि को भव्य रूप में विकसित किया गया। समाधि के साथ किचन, बाथरूम, टॉयलेट, स्टोर-रूम, बिजली व पानी जैसी मूल जरूरतों से परिपूर्ण स्थल पर सर्वप्रथम मेले का आयोजन 12 व 13 फरवरी सन् 2016 ई० (शुक्रवार व शनिवार) को किया गया था। तब से अब तक माघ शुक्लपक्ष पंचमी व षष्ठी को निर्गुण वाणी-वचन पर आधारित आध्यात्मिक सत्संग मेले का आयोजन संगतियों द्वारा किया जाता रहा है, किन्तु मेले के समय कुछ समस्याओं को ध्यान में रखते हुए सभी संगतियों के सुझाव से आगे आने वाले मेले का समय कुवाँर पूर्णिमा व कार्तिक परेवा रहा करेगा। जो इसी ग्रन्थ के कैलेण्डर में तिथि व तारीख सहित लगाया गया है। उपरोक्त कुवाँर पूर्णिमा व कार्तिक परेवा को सभी संगती एकत्रित होकर सत्संग मेले का लाभ उठायें। आपके दो निर्गुण पद व एक बारहमासी संगतियों के बीच उपलब्ध है।

पद

(1) मैं जोगिन सतिलोक की, मेरा बहुरि न आवन होय हो।
पाँच पचीसों बाँधि कै मूलै किया विचार।
तन-मन-धन वारिया, मेरी सुरति लगी निजुसार हो।
खोजत खोजत खोजिया, खोजा वारों पार।
जो खोजे पिउ ना मिलैं, तो या तन करिहों छारु हो।
ढूढ़ति-ढूढ़ति सतगुरु मिले, मिटि गई तन की ताप।
बूड़ति आनि उबारिया, छूटे मलिन विकार हो।
अगम अटारी चढ़ि गई रे, छूटे जमु के जार।
पन्नो मजलिस देखिया, भेटा सिरजनहार हो।

(2) जमु रोके है घाटु, मैं कैसे आवउँ पारा।
भवजल नदिया अगम बहति है, नहीं घाटु नहिं धारा।
बूड़ति सकल जहान देखिया, बाँधि-बाँधि अहंकारा।
जिन जाना ते पार उतरिगे, छोड़ि ये सकल पसारा।
कालु बाँधि कै किया है चेरा, साँचुइ साँचु पुकारा।
देउ असुर मुनि नल सब लूटे, बचे न तीनिउ देवा।
सतगुरु नौका दीन पठाई, तेहि चढ़ि उतरे पारा।
पन्नो की बहियाँ गहि तारेउ, धनि तुम्हरा ब्यौहारा।

बारहमासी

(1) कातिक मां गुरु मारगु दीन्हा, मूल मन्त्र हम डिढ़ कै लीन्हा।
गंग जमुन सुरसती नहाई, अगम डोरि नैनन मां आई।
पैठि पतालै धरनि डिढ़ाई, उलटा पवन अकासै जाई।
कहि पन्नो हम गुरुमति पाई, पाँच पचीसों बाँधि मंगाई।

(2) अगहन प्रीति लगी अधिकाई, बरखै पोहप बरनि ना जाई।
सतगुरु हमका कीन सहाई, दीन्ह सुहाग तौन निरमाई।
सुहाग महिमा बरनि न जाई, चढ़ी सुरति तब मनु छकि जाई।
पन्नो अतिरिज देखा जाई, बैदुरंज की माला पाई।

(3) पूसै पारस प्रेम बढ़ाई, कुमति गई घर सुमिता आई।
पाँच पचीसों मारि भगाई, ज्ञान क्षिमा संतोष डिढ़ाई।
क्रोधै मारि पछारा भाई, सुरति कवँल मां पहुंची जाई।
पन्नो के मनु निहचै आई, तब सतगुरु मोंहि लीन्ह बचाई।

(4) माह महल पगु दीन्हा भाई, सुख उपजा तब रही न समाई।
कुमिता का बनु दीन्ह ढ़हाई, सुमति सुहागिल दीन्ह लगाई।
फूलन लागी तब फुलवाई, भरम मढ़ी सब दीन्ह गिराई।
कहि पन्नो ऐसी बनि आई, सतगुरु हमका मूरि बताई।

(5) फागुन फागु मोरे मनु भाई, अंगिया रंग केसर दीन्ह बोराई।
नैन नीर छिनकै बहु भाई, पीत पछौरी दीन्ह उढ़ाई।
सतगुरु फगुआ दीन्ह मंगाई, पिया अमी तब मनु छकि जाई।
ब्रम्ह अगिनि दगचै उर आई, पन्नो मारगु गई डिढ़ाई।

(6) चैत चारि चेतिगे भाई, चेति भये ते करम नसाई।
बेधे सप्त पताल हम भाई, त्रिकुटी मध्ये कालु रहाई।
टरिगे कालु बिलमु नहिं लाई, पदम पत्र भेटे रघुराई।
मकर तार चढ़ि आवै जाई, पन्नो आवागमन मिटाई।

(7) बैशाख अगमपुर पहुंचे जाई, जीव ब्रम्ह मां गया समाई।
जरै मदन झरि पूरी लाई, बरखै अमृत पिया अघाई।
सहजे सेज पिया की पाई, सखियन हमका भेद बताई।
अमर भये अमरौती पाई, कहि पन्नो अब बहुरि न आई।

(8) जेठ कवँल दल फूला भाई, गरजे गगन घंट घहराई।
रवि शशि बीच संधि हम पाई, ब्रम्ह मिले ब्रम्हुइ हो जाई।
तीनिउ देवा खोज कराई, खोजि मुए तिन थाह न पाई।
सतगुरु सेइ मवासी पाई, कहि पन्नो अब गरभु न आई।

(9) अखाड़ दुआरे ठाड़िउ भाई, मोतियन झालरि बरनि न जाई।
कोटि भानु शशि देखेउँ जाई, सुरति निरति ऐसी हो आई।
सुई सुमेर समाना भाई, धनि सतगुरु जिन कीन्ह सहाई।
कहि पन्नो हम कीनि कमाई, अबकी गई बहुरि ना आई।

(10) सावन सतिपुर पहुँचेन जाई, सतगुरु हमका लीन्ह लिवाई।
सुखमुनि दसवां द्वार बताई, वहि द्वारे होय आवै जाई।
करम जारि जिउ उबरा भाई, तन मन वारि मिले रघुराई।
पन्नो समुझि गरीबी पाई, मनकी बात पूरि भै भाई।

(11) भादों अगम केवांरि खोलाई, तीनिउ गुन हम डाड़े जाई।
देखा रूप पिया का जाई, पिया मुख निरखत मिटि गई ताई।
सतगुरु हमका कीन सहाई, नाउ चढ़ाइ कै पार लगाई।
कहि पन्नो भेंटे सुखसाईं, या बिधि जमु फंद तोरेउँ भाई।

(12) कुआँरि जोति झलक्कै भाई, वहै जोति मां अग्र उड़ाई।
चहुँदिसि बास रही महँकाई, इकटक रहिउँ तन गा विसराई।
अपने पिया की मैं बलि जाई, जरत अगिन ते लीन्ह बचाई।
कहि पन्नो अब बहुरि न आई, सुख सागर में गइउँ समाई।

सन्त कामता प्रसाद साहेब



फोटो- सन् 1938 ई० में मोती झील कानपुर में खींची गई थी।

परिचय
सन्त कामता प्रसाद साहेब

सन्त कामता प्रसाद का जन्म संवत् 1919 विक्रमी (सन् 1862 ई०) को बड़ी गुटैहा जिला-कानपुर नगर में हुआ था। आपके माता-पिता का नाम ज्ञात नहीं है। आप जीवन यापन के लिए कृषि कार्य करते थे। इस समय जो जगह मोती-झील के नाम से जानी जाती है, वहीं पर आपके खेत हुआ करते थे। आप कामता प्रसाद व धरमू दो भाई थे। आपकी पत्नी का नाम ज्ञात नहीं है। आपके पुत्र का नाम रामभरोसे था। आप दोस्तीनगर उन्नाव निवासी इन्द्रजीत साहेब के शिष्य थे।

आपने संवत् 2013 विक्रमी (21 नवम्बर सन् 1956 ई०) को बड़ी गुटैहा में ही शाम के समय देह त्याग दी। आपने देह त्यागने से पहले अपने भतीजे गुरुदीन लाल के पुत्र चरनदास (बड़कऊ) से कहा, कि "आओ मीता साहेब का वाणी-वचन पढ़ो।" कामता बापू लेटे हुए थे। उनके सिरहाने खड़े होकर बड़कऊ ने जबानी यह पद पढ़ा-

ना सपने मन लाओ तो अपना ना कोई।
भजिले हरि जी का नाम जिवन होवे सही।। पृष्ठ 247 परम-ग्रन्थ से

बड़कऊ ने पूरा पद पढ़ने के बाद आप से पूँछा- बापू और पढ़ें? तो बापू नहीं बोले, हिलाकर देखा तो बापू ने देह छोड़ दी थी। आपकी देह को लाकर हिन्दूखेड़ा मजरा-उन्नाव में रामनारायण के बाग में रखा गया। बाद में किसी कारण वश रामनारायण के उत्तराधिकारियों ने वहाँ पर समाधि नहीं बनाने दी। इसलिए दोस्तीनगर में आपके गुरू इन्द्रजीत साहेब की समाधि के पास बारादरी से मिला हुआ आपका स्मारक सन् 2017 ई० में संगतियों द्वारा बनाया गया। जहाँ पर प्रत्येक वर्ष फाल्गुन शुक्ल पंचमी व षष्ठी को सत्संग मेले का आयोजन संगतियों द्वारा किया जाता है।

सन्त मीता साहेब की वाणी को
कैथी लिपि से हिन्दी लिपि में रूपान्तरित करने वाले

सन्त मुंशी ज्ञान सिंह साहेब



समाधि
सन्त मुंशी ज्ञान सिंह साहेब



परिचय
सन्त मुंशी ज्ञान सिंह साहेब

सन्त मुंशी ज्ञान सिंह का जन्म मुजफ्फरनगर जिले के कुटवी नामक ग्राम में 31 मार्च सन् 1907 ई० को हुआ था। आपके पिता का नाम राम सिंह व बाबा का नाम नवरंग सिंह था। आपकी पत्नी का नाम लक्ष्मी सिंह था। आपके चार पुत्र और एक पुत्री थी। आपने मुजफ्फरनगर से आकर उन्नाव जिले के बिछिया नामक कस्बे में सींचपाल (पतरौल) के पद का कार्यभार संभाला था। आपने बिछिया में ही एक ठाकुर परिवार में रहते हुए उन्हीं से कैथी भाषा का ज्ञान प्राप्त किया था। कुछ समय बाद आपका तबादला बिछिया से दोस्तीनगर में हो गया।

आपने दोस्तीनगर नहर पर सर्वे करते हुए देखा, बाग में समाधि पर काफी लोग इकट्ठा हैं, यह देख आप उधर ही चल दिए। समाधि के पास बैठे हुए संगतियों से सन्त कामता प्रसाद (बापू) ने कहा, "देखो मेड़ई आ रहे हैं।" बाद में आपने यह भी बताया, कि मेड़ई का पूर्व जन्म में अचल नाम से मुराऊ (मौर्य) परिवार में जन्म हुआ था। आपने इस देह में सर्वप्रथम वहीं पर मीता साहेब का वाणी-वचन सुना। पूर्व संस्कार के कारण आपके मन में मीता साहेब का वाणी-वचन घर कर गया और आप मेला व समाधि संगतियों की सेवा में ही अपना सारा समय देने लगे। यहाँ तक की आपने सींचपाल का पदभार भी त्याग दिया। आपने अपने गुरू सन्त कामता बापू की सेवा करते हुए परम लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त किया।

सन्त कामता बापू के बाद आपके ही नेतृत्व में मीता मत के अनुयायी मीता वाणी-वचन का मनोरम पाठ सुनते रहे। इसी दौरान आपके मन में विचार आया, कि कैथी लिपि धीरे-धीरे लुप्त हो रही है। कैथी पढ़ने व जानने वाले लोग भी कम हो रहे हैं। नई पीढ़ी का झुकाव हिन्दी भाषा, अनिवार्य होने के कारण मीता वाणी-वचन का कैथी से हिन्दी में रूपान्तरण करना उत्तम होगा। लगभग ढ़ाई वर्ष के अथक प्रयास के बाद आपने सन् 1984 ई० में "मीता-ग्रन्थावली" के नाम से मीता वाणी-वचन का प्रकाशन कराया और मीता साहेब के बाद व उनके समक्ष जिन सन्तों ने अपना वाणी-वचन कैथी लिपि में लिखा था, उसका भी हिन्दी में रूपान्तरण किया। इस पुनीत कार्य के लिए आज भी संगती आपको हृदय से नमन करते हैं। आपने 79 वर्ष 1 माह 1 दिन की आयु में 1 अप्रैल सन् 1986 ई० को देह त्याग दी। आपकी समाधि दोस्तीनगर में ही बनी हुई है। ग्राम दोस्तीनगर में ही आपका निवास-स्थान बना हुआ है, जहाँ आपके पौत्र व प्रपौत्र आज भी रह रहे हैं।

दोहा

कौड़ी कौड़ी माया जोरी, राखी बड़ी जतन से।
साहेब राम का हुकुम हुआ, रहि गई मन की मन में।।

निर्माणाधीन समाधि
सन्त गुरुनारायण कुशवाहा साहेब
ग्राम-बरवट जिला-उन्नाव



परिचय
सन्त गुरुनारायण कुशवाहा साहेब

सन्त गुरुनारायण कुशवाहा जी का जन्म उन्नाव जिले में पश्चिमखेड़ा सिविल लाईन के कुशवाहा वंश में संवत् 2007 विक्रमी पौष शुक्ल पक्ष अष्टमी सोमवार तदानुसार 15 जनवरी सन् 1951 ई० को हुआ था। आपकी माता का नाम रामदेई और पिता का नाम मधुवन कुशवाहा था। आप सन्त ज्ञान सिंह साहेब के शिष्य थे। आप चैत्र कृष्णपक्ष अष्टमी दिन मंगलवार संवत् 2042 विक्रमी तदानुसार 1 अप्रैल सन् 1986 ई० को सन्त मीता साहेब की परम्परा के 7 वें उत्तराधिकारी हुए। आपकी पत्नी का नाम विजयलक्ष्मी कुशवाहा है, आपके 3 पुत्र एवं 4 बेटियाँ हैं। आप कुल 4 बहन व 6 भाई थे। आपने जीवन यापन के लिये 1977 ई० से 2011 ई० तक रेल डाक-विभाग में 34 वर्षों तक कार्य किया।

'आध्यात्म जगत' में आपके द्वारा किया गया कार्य- सन्त ज्ञान सिंह साहेब की समाधि का निर्माण सन् 1988 ई० में, 'सन्त पन्नो साहेब' की समाधि का निर्माण सन् 1992 ई० में, मीता साहेब की समाधि पर बाउंडरी, गेट, रोड आदि का निर्माण कार्य सन् 1996 से 1997 ई० में, सन्त मीतादास जी के गुरू 'बेनीराम साहेब' की समाधि का निर्माण सन् 2001 में, मीता साहेब की समाधि पुरवा में बारादरी निर्माण सन् 2003 में, 'दोस्तीनगर' में 'बदन साहेब' की समाधि के पास बारादरी सन् 2008 में, 'बेनीराम साहेब' की समाधि बरईगढ़ में बारादरी निर्माण सन् 2010 में, 'सुझारी साहेब' की समाधि अढ़ेना में बारादरी निर्माण सन् 2013 में, 'मीता साहेब' द्वारा लिखित 'मीता-ग्रन्थावली' के माध्यम से संगतियों में 'आध्यात्मिक ज्ञान' का प्रचार-प्रसार करने के लिये एक माह की सभा का आयोजन सन् 2015 में, पन्नो साहेब की समाधि पर पुनर्निर्माण सन् 2016 में, 'बदन साहेब' की समाधि पर दूसरी बारादरी-चबूतरा तथा 'कामता बापू' की याद में समाधि (स्मारक) निर्माण सन् 2017 में, 'महासभा' 4 माह के लिये सन् 2018 में, 'मीता-ग्रन्थावली' का प्रकाशन "परम ग्रन्थ" के नाम से सन् 2019 में, दुकनहा (दोकनहा) समाधि स्थल के पास शौचालय का निर्माण मई सन् 2019 में सम्पूर्ण कराया।

आपने 21 सितम्बर सन् 2019 को रात लगभग साढ़े ग्यारह बजे सुझारी साहेब की समाधि के पास बारादरी में देह त्याग दी। 22 सितम्बर सन् 2019 को ग्राम बरवट जिला उन्नाव में नहर के किनारे स्वयं के खेत (गाटा संख्या 497) में पहले से चिन्हित स्थान पर समाधि दी गयी। आपने 68 वर्ष 8 माह 6 दिन की आयु में अधिकतम् समय संगति और 'वाणी-वचन' में बिताया। आपके द्वारा (उपदेश) अनमोल शब्दों को अपने जीवन में अनुसरण कर संगती सदा-सदा के लिए लाभान्वित होते रहेंगे और आपको याद करते रहेंगे।

परिचय
सन्त सोधी साहेब

सन्त सोधी साहेब का जन्म समय व देह छोड़ने का स्थान अथवा समाधि के बारे में कोई जानकारी प्राप्त नहीं हो सकी है। आपके माता-पिता व गुरू के बारे में भी कोई जानकारी प्राप्त नहीं हो पाई है। सन्त सोधी साहेब का वाणी-वचन सन् 1990 ई० में सन्त नान्हू साहेब की समाधि (ग्राम सैय्यद अब्बासपुर जिला-उन्नाव) पर कोई सन्त जन किसी को कुछ बताए बिना ही चढ़ा कर चले गए थे। संगतियों ने जब उस वाणी-वचन को खोल कर देखा और उसे पढ़ा गया तो यह सन्त-वचन सबके मन को भा गया। सोधी वाणी-वचन को सन्त गुरुनारायण साहेब ने अपने हाथ से लिख कर व फोटोकॉपी कराकर संगतियों में वितरित किया। सोधी वाणी के लेखक की जानकारी आज भी संगतियों को नहीं मिल पाई है। सोधी साहेब का जन्म कब और कहाँ हुआ था? यह किसी को पता नहीं है। सभी अपना-अपना अनुमान लगाते हैं। ऐसा वाणी-वचन सन्त के अलावा कोई नहीं लिख सकता। स्वयं सोधी साहेब ने अपने परिचय को लिखा है। "परिचय सोधी का स्वरूप विनती का" सन्त गुरुनारायण साहेब के द्वारा सोधी वाणी-वचन का समय-समय पर संगतियों के मध्य व्याख्या सहित मनोरम पाठ भी किया जाता रहा है। यह सोधी वाणी-वचन अनेक संगतियों के पास हाथ से उतारा हुआ व फोटोकॉपी कराया हुआ मौजूद है।

दोहे

जगत बड़ाई ना चहैं, या संतन की रीति।
बानी बचन पसारि कै, तोड़ैं भय की भीति।।

सोई काम सोधी किया, नाम रखाया गोय।
पाखण्ड तोरि गिराइयां, समुझौ जग के लोय।।

सोधि सोधि सोधी लिखा, राखा हवै छपाय।
अपने सो अंतर नहीं, साकठ जानि न जाय।।

नाव गाँव का का करैं, करते अपना काम।
नाव गाँव भोंदू चहैं, जिनका जगत मुकाम।।

सोधी हरि के दास हैं, करते पहरेदारी।
आपन अंश ढूढ़ि अपनावैं, राखैं न्यारी न्यारी।।

बानी बूझै सन्त की, सोधी के अस होय।
जो उनके मारग चलै, सो जन सुज्जन होय।।

अरझावै का भेखु है, सरझावैं सोधी दास।
जिनका पिछला आंकुरा, तेई नल बइठैं पास।।

सोधी की बानी लखै, जौनु पुरुबिया होय।
साकठ भेदु न पावई, कोटि चतुर चहैं होय।।

सुज्जन संघ सतगुरु रहैं, सतगुरु सुज्जन मांही।
ऐसेहि सोधी सतगुरू, सतगुरु सोधी मांही।।

गुरु के संघ नारायण, नारायण गुरु पास।
गुरू नारायण सन्त संघ, सन्त भे सोधी दास।।

परिचय “सोधी” का, स्वरूप बिनती का

ना मैं जन हूँ ना मैं दास, हम हैं नाबदान की घास।
ना मैं सुज्जन नहीं फकीर, ऐसी कहाँ मेरी तकदीर।
हम ना करनी कबहूँ कीन्ह, साहेब परा न हमका चीन्हि।
ना हम साधा कबहूँ जोग, ना हम पावा अमृत भोग।
बिन सतगुरु नाहीं उद्धार, हमका सतगुरु मिले न यार।
यहु तन पाय कीन हम खोरी, हमसे अच्छी जग की सोरी।
रग रग में है मेरे ताप, मैं काला जहरीला सांप।
ना मैं ब्राम्हण ना मैं दीन, बिनती नाहीं कबहूँ कीन।
हम आरति कबहूँ नहिं गाई, ना हम अनहद सुना है भाई।
हमरी ऐसी कहाँ कमाई, जो हमका सतगुरु मिलि जाई।
हम पर ना रीझा करतार, हम हैं माया के किरदार।
ज्ञान विवेक की मिली न छाया, शील छिमा संतोष न पाया।
मैं दुलहिन नाहीं होइ पाई, कुआंरी आई कुआंरी जाई।
तन मन में है कुमिता छाई, सुमिता हमका ना मिलि पाई।
हम करते झूठी गुरुवाई, घोड़ा होना निश्चित भाई।
मूल न हमरे हाँथे आई, लटके रहे डार मां भाई।
पाहन की हम बैठे नइया, बूड़ेंगे हम निश्चित भइया।
पाँच इन्द्री हैं मन का बांधे, पाँच तत्व हैं पगही साधे।
रहे पिआसे कुआं पे आई, उबहन हमका ना मिल पाई।
हम हैं कूकुर हम हैं सांड़, हार मानि गये हमते भांड़।
हम ना पइठे गहरे जाई, मछरी हमरे हाथ न आई।
हम हैं मरकट बांधे मूठी, दया बिना या कैसे छूटी।
हीरा की हम परख न पाई, यहिते रहे कांच लपिटाई।
ना हम हाथी ना हम शेर, हम हैं गदहा हम हैं भेड़।
पर करनी रहे भूले हम, अब आगे है गम ही गम।
तीन गुनन से भये न न्यारे, हम नाहीं मालिक के प्यारे।
मैके रहिहै मेरा बासा, नहीं ससुरवा की अब आशा।
हम अज्ञानी हम अन्जान, हमसे बड़ा नहीं नादान।
सूर नहीं हैं हम हैं कूर, मंजिल हमते काफी दूर।
बिना तीर की मैं हूँ कमान, बस इतनी मेरी पहिचान।
सुक्रित साबुन हम नहिं पावा, मन का मैल धोइ ना पावा।
हम नहिं सन्त चरन की धूल, हम नहिं फूल हम हैं सूल।
सन्त बचन सर आँखों लाऊँ, हम हैं संतन केरि खड़ाऊँ।

हमरी कोई नहीं मजबूती, हम हैं सुज्जन केरी जूती।
हम है ऐसी देहीं पाई, जेहिकी चमड़िउ काम न आई।
हमरी खोटी रहै कमाई, हम साहेब की दया न पाई।
राम बिना सूना मेरा दिल, बिन मूरति का जैसे मन्दिल।
चोखा माल रहै ना हमरा, खोटा था सो रहा धरा।
भई नहीं बनजी मन भाई, चोखा होतै जात बिकाई।
हम हैं खोटे सिक्का भाई, चलै नहीं केहि दोछु लगाई।
जल के राजा से किया बैर, अब नाहीं है हमरी खैर।
रहा टेरता केहूँ न दीख, मांगत रहे मिली ना भीख।
हम हैं बिन बैलन की गाड़ी, कीचड़ फंसी तौनि को काढ़ी।
चित्र गुपित्र नहीं मेरे यार, हमरा लेखा है तैयार।
हम पर ना रीझे रघुबीर, हम हैं बँधे कालु जंजीर।
पारस हमरे हाथ न आया, येहिते कंचन ना होइ पाया।
हम हैं लोहा लगी है जंग, कैसे चढ़िहै कंचन रंग।
घट ही में थे मेरे नाहर, रहे खोजते तिनका बाहर।
भरा दलिद्दुर हम हैं छूत, करम हमारे हैं साबूत।
हम हैं सबसे बड़े कपूता, हमसे अच्छे सबके जूता।
गरभवास मां वादा कीन, बाहर आये कुछौ न कीन।
विमुखन की संगति हम पाई, सुज्जन हमका ना अपनाई।
अब का करिहौं ज्ञान की तखरी, हम हैं बिन पानी ज्यों मछरी।
हमने अपना कुछ नहिं गाया, संतन गाया सो दोहराया।
हमरी बानी देखि कै जाहिर, हम हैं तुकबंदी के माहिर।
नहीं आत्मा हमने खोजी, नहाय धोय कै काया सोधी।
कामी कुटिल बड़ा मैं क्रोधी, नाम धरा है अपना सोधी।
इतने अवगुन की मैं खान, सोंचि सोंचि मेरे सूखैं प्रान।
इतनेउ पर तारै जो कोई, धन्य धन्य सतगुरु है सोई।
कहि सोधी जो दिया कही, एक एक अक्षर हवै सही।
हवै जरूरत आन परी, सो सोधी खोली गठरी।
बिना हुकुम हम शब्द करी, साहेब दीन्ह्यो माफ करी।।

बारहमासी

(1) चैत चेति चींटी भये भाई, निर्भय चढ़ते ठाढ़ि उँचाई।
हंथिया अब हमसे घबराई, अब वहु हमका पकरि न पाई।
झीने छिद्र मां जाउँ समाई, हथिया ठाढ़ रहा पछिताई।
सोधी सतगुरु की बलि जाई, जिन पपील मोहिं दीन्ह बनाई।।

(2) बैशाखै जब आँखी पाई, तब सतगुरु मोहिं परे दिखाई।
हानि लाभ की शंक मिटाई, तिनके चरन गहे लपिटाई।
सतगुरु की दाया भई भाई, बजर किवांरा खुलिगे भाई।
सोधी चीन्हि चरन जो पाई, सत्य संघु सोई कै पाई।।

(3) जेठ ब्रम्ह अगिनी दहकाई, ताल का पानी दीन्ह उड़ाई।
बंधन रहित मीन भई भाई, चढ़ी गगन अब बिलम न लाई।
हरि वियोग जब तक ना पाई, तब तक है नाहीं कुशलाई।
सतगुरु से सोधी मति पाई, आनंद सागर रहे समाई।।

(4) असाढ़ आशा है दुखदाई, ताते कलहिन दूरि बहाई।
कुमिता अन्धकार की नांई, सुमिता तत्त ज्ञान उपजाई।
रहति शीश के नहीं भलाई, बिना शीश चरिले फुलवाई।
सोधी अपनी पूरि कमाई, अर्पन कै चरनन सुखु पाई।।

(5) सावन सतगुरु की सेवकाई, सत्य संघु याही मोरे भाई।
सुरति सत्यपुर रहै समाई, डिगै न चाहे सो होय जाई।
दीन भये दें पार लगाई, मान बड़ाई जमु धरि खाई।
सोधी पाई सो ठकुराई, जो परलै मां बिनसि न जाई।।

(6) भादौं करुण पुकार लगाई, भीजि गया अम्बर सब भाई।
बरसा अमृत पिआ अघाई, अमर भये अभिनासी पाई।
दीन बंधु लिया नाम धराई, दीनन का उइ सदा सहाई।
सोधी दुनिया सब जरि जाई, दासन पर कोइ आँच न आई।।

(7) कुआंर चरन सतगुरु के जाने, दिन औ राति रहे लपिटाने।
रवि शशि आये एक ठिकाने, राग द्वेष तत्काल मिटाने।
जब सतगुरु के चरन लुभाने, हरि वियोग तबही दिल आने।
तत्त ज्ञान सोधी उपजाने, अलख ब्रम्ह मां जाय समाने।।

(8) कातिक काया सोधी भाई, सोधि भई कंचन सी भाई।
कंचन काई लागति नाहीं, निर्विकार मन भागति नाहीं।
दीन भये मद आवति नाहीं, मंगल मिले अमंगल नाहीं।
सोधी मंगल गये समाई, ठाढ़े कालु सूखिगा भाई।।

(9) अगहन अतिरिज देखा जाई, सिन्धु बुंद मां गया समाई।
चींटी गज का गई चबाई, बिना पढ़े विद्या सब आई।
आगि लगी बारी जरि जाई, बिन बारी फल लागा आई।
सोधी या फलु चखा अघाई, आनंद मिला अमरपुर जाई।।

(10) पूस फूस मां लागी आगी, जरि बरि भये करम सब राखी।
सत्य दीनता अैसी पागी, छिन एकौ का पलक न लागी।
मीन नीर बिन जबही जागी, बरसा अमृत पीवन लागी।
सोधी कंचन होय न दागी, घन की चोट नहीं अब लागी।।

(11) माह मांजि दर्पण उजलाया, अलख पुरुष नजरी तब आया।
कोटि भानु पावैं नहिं छाया, सो छबि देखि पलक नहिं लाया।
भये प्रकट सतगुरु करि दाया, भागा भरम चीन्हि जब पाया।
सोधी मन मां रही न माया, साहेब हमका गले लगाया।।

(12) फागुन भये गुनन ते न्यारा, निर्गुन साहेब गुन नहिं प्यारा।
त्रिकुटी तक है दुःख का नारा, ताके आगे आनंद धारा।
छूटा राग द्वेष अँधियारा, बाद शून्य के है उजियारा।
सोधी पाया ज्ञान अपारा, मिले सिन्धु ना होइहै न्यारा।।

करनी बरहौं मास की, भाखी है समुझाय।
संस्कार के हीन जो, सोधी बूझि न जाय।।

करनी बारहमास की, सोधी दीन्हि बताय।
जो करनी करते बनै, तौ साहेब मिलि जाय।।

ब्रन्दाबन मां ना मिलैं, ना काशी अभिनाशी।
करनी बारहमास की, पावै सुख की राशी।।

साहेब तिसपर दाया करते, जो त्यागै अभिमान।
बिना दीनता है नहीं, सोधी का कल्यान।।

जो त्यागै अभिमान का, तिसपर रीझै राम।
सोधी पाई दीनता, सीझे सारे काम।।

“आध्यात्म-पिटारी”

मनुआ काहे जग मां फांसा, क्यों ना इससे भया उदासा।
यहु जगु कर्ता केर तमासा, बाजीगर की करु तू आशा।
जब तक राग द्वेष का बासा, तब तक हरि की झूठी आशा।
नलतन से जब जाई निकासा, बहुरि न हाथै आई पांसा।
दाँउ जो चूकै अच्छा खासा, तौ रहिहै चौरासी वासा।
बना चहै जो हरि का दासा, दीन होय औ होय उदासा।
माया हवै काल का लासा, सुमति छुड़ावै जम की त्रासा।
घर का छाड़ि रहे का बन में, सारे अवगुन तेरे मन में।
का भये जलम उच्च कुल लीन्हे, जो हैं तेरे करम मलीने।
का भया जग पंडित कहलाये, तत्त ज्ञान जो तुम नहिं पाये।
म्याऊँ म्याऊँ तेरा कौने काम, जो तू नाहीं पावा राम।
का भया बरसे जो ना भीजै, बिना दीनता राम न रीझै।
का भया बेद पुराण बखाने, ब्रम्ह भेद जो तुम नहिं जाने।
का भया कोटिन की किये पूजा, तारै रामु न तारै दूजा।
का भया बाना सिंह का धारे, जो कुकुरन लत्ता कै डारे।
का भया घाटन तीर्थन हेरे, साहेब तो है अन्दर तेरे।
दत्तात्रेय काह कै लीन्हा, पाखंडी जो चौबिस कीन्हा।
त्रिकुटी मूरति बहुतै देखे, परम पुरुष ना एकउ भेंटे।
रूप रंग रेखा मूरति के, एक भानु छबि नाहीं जाके।
रूप रंग रेखा तहँ नाहीं, कोटि भानु जेहि देखि लजाहीं।
राग द्वेष के बीच है बटिया, जेहि चलि मिलै अगमपुर हटिया।
काहे भेखै भरम भुलाना, रहति भेख के नहीं ठिकाना।
सन्त बचन सुज्जन का सोहैं, ठगिया भेखी तानै भौंहैं।
ई हैं संतन केरे बोलवा, कबहूँ हांथी कबहूँ उँटवा।
कबहूँ नदिया कबहूँ शेर, महरा दर्पण कबहूँ सुमेर।
दर्पण हाथी सिंह सुमेर, इनका बूझौ रहति उजेर।
उँटवा नदिया सिन्धु पहार, सबका मतलब एकु हमार।
जैसे करम मिलै तस भोग, काहे करता है सुख सोग।
भला दाँउ तू कैले जोगु, राम मिले मिटिहैं सबु सोग।
कोटि भानु शशि की उजियारी, एकु रोवां की छबि ते हारी।
साहेब की ऐसी छबि प्यारी, जिन जिन देखी पलक न टारी।
पलरा रवि शशि करौ बिचारी, तब डांड़ी चितु टरै न टारी।
न्याय की तखरी अस जो धारी, साहेब तिनके हैं रखवारी।
काहे फिरता पोथी लीन्हे, काहे जाता रोज मदीने।

तखरी- तराजू

सतगुरु ना मिलिहैं बिन चीन्हे, सतगुरु मिलते करनी कीन्हे।
जाहिर माया त्यागे फिरता, जो करना सो नाहीं करता।
जैसा करता वैसा भरता, न्याउ तफाउस कर्ता करता।
ऐ मन मूल नहीं क्यों गहता, काहे भरमित गाफिल रहता।
काम क्रोध मद दुःख का कारन, शील क्षिमा संतोष निवारन।
करमन ते कुमिता उपजाई, कुमिता दुख का कारन भाई।
सत्य दीनता डिढ़ कै धारै, सतगुरु रीझैं ज्ञान उघारैं।
परमानन्द ज्ञान ते पावै, बिन सतगुरु को राम मिलावै।
परमानन्द मिले दुःख नाशी, साहेब काटैं जम की फांसी।
सतगुरु देते राह बताई, ज्ञान मिले ते सूझि पराई।
सो मारगु हम गये डिढ़ाई, अब ना चाहौं मान बड़ाई।
सोधी राखौ मनु समुझाई, सरनि गहे सुख सागर पाई।
ज्ञान बखाने गाये बजाये, पाखण्ड थापे भेखु बनाये।
नानाविधि ते जगत रिझाये, काह भया जगु नाम कमाये।
राम कृष्ण बहुतै जग आये, नाम कमाये ईश कहाये।
ध्रू प्रहलाद नामु जगु छाये, बुद्धा तो भगवान कहाये।
रामानन्द से कितने आये, धरि धरि झोटी जमु घसिलाये।
बिना भजन ना तरिहौ भाई, ताते भजन करौ चितु लाई।
समुझा चहौ भजन जो भाई, संतन चरन गहौ लपिटाई।
भेखी झुण्डन परैं दिखाई, सन्त होत एकुइ दुइ भाई।
बूझि मिलौ तिनका रे भाई, बिना मिले को भेदु बताई।
तिनकी जाय करौ सेवकाई, जपि निज नाम होय सो भाई।
जबै मेनका सम्मुख पाई, विश्वामित्र गये बौराई।
यहु माया का फंदा आई, यहिते बचबु कठिन है भाई।
प्राण जांय पर बचन न जाई, सोउ माया का फंदा भाई।
रघुकुल रीति जानिकै भाई, दशरथ फंसे फंद मां आई।
माया प्रबल हवै अधिकाई, नांच नचावै बहुतै भाई।
धनुष तूरि खूब मिली बड़ाई, भा अभिमान तबै बहु भाई।
दशरथ बचन बंधे रहे भाई, रामचंद्र बन दिया पठाई।
बन मां सीता गईं चुराई, गा अभिमान पतालै भाई।
रावण से फिर भई लड़ाई, कोटिन जूझि मरे तहँ जाई।
मार तूर गुन माया आही, रामचंद्र से नाचे भाई।
यह माया कोऊ की नाहीं, संतन का यह ना नजिकाई।
कहि सोधी संतन सिरु नाई, यहिका फंद छड़ाओ भाई।
तिरदेवा ना जानै मन की, वेद बखानैं सो है तन की।
मन की करनी सन्त बखानैं, ते बाहर सबु पाखण्डु मानैं।
तन से करु जो बेद बतावैं, नाहीं काहुइ जीव सतावै।

मछरी मांस न हाथ लगावै, बिन किरखी का नाहीं खावै।
घर का छोड़ि रहे का बन में, जग का मोह बना है मन में।
तन से भोगवै या संसारी, मन से जग का देय उतारी।
मन की करनी सन्त सुझावैं, बेद भेद ना वहिका पावैं।
है बटवारा तनका मन का, मन ना धावै जग का भग का।
मन मां सदा वास संतन का, तन से भोगवै माया जग का।
यहि विधि धरै जो पाऊँ, सोधी पकरै वहिके पाऊँ।
चेतो नलतन हवै सबेरा, चूके फिरि चौरासी फेरा।
रहनी रहु करनी करु बीरा, गाल बजाये मिलै न हीरा।
सिरजा सकल अंश से कीन्ही, माया केरी पट्टी दीन्ही।
पट्टी खोलो दूरि बहाओ, मूल आपने मां मिलि जाओ।
झीनी छन्नी देय चुनौती, जेहिके पार हवै अमरौती।
जो गेहूं गुरु चक्की पावै, सहै रगड़ मैदा होइ जावै।
तहँ चोकर की है गमि नाहीं, छन्नी मैदा रोकत नाहीं।
सोधी तब तक होइहौ पैदा, जब तक ना होइ जइहौ मैदा।
सात सिन्धु वहि पार मराला, सो कागन ते अकथ निराला।
हंसा मोती चुगि चुगि खावै, बकुला मछरिन घात लगावै।
एकु कुरूप एक रूप अनूपा, कहँ हीरा कहँ कांच सरूपा।
एकु छाँछ एकु माखन होई, लोखरी सिंह भेदु है सोई।
द्रष्टिवान जब अगुआ पाये, तब अंधरेन पतियाय बलाये।
रवि प्रकाश जब नजरी आया, तब को तिमुर रहै लपिटाया।
हंसा सतगुरु ज्ञान बुझाया कागा बका तिमुर नहिं पाया।
सधन कसाई औ ध्रमदास, पीपा नामा औ रैदास।
ई थे मति के धीर गंभीर, इनके सबके गुरू कबीर।
बेनीराम के पकरे पांय, चले मलूका हरिपुर जांय।
गुरु अपने से किया सवाल, क्यों ना बानी कह्यो दयाल।
सिख अपने का दिया बताई, हम नाहीं हैं हुकुमी भाई।
संवत् सतरह सौ अस्सी मां, हुकुमी बचन पसारी जग मां।
दस्सन दोसर के घर जाय, मीता प्रकटे सहज सुभाय।
बेनीराम का गुरु कीन, बानी बचन जगत का दीन।
इन्दो पन्नो सहजी दीन, नान्हू बदन भये लौलीन।
मीता इनका लीन्ह उबारि, ई पाँचों पहुंचे दरबार।
जौन समाया दरियानंद, उनके गुरू न रामानंद।
काहुइ परा मरम ना चीन्हि, कबीर तो बस हांसी कीन।
बाल गोबिन्द सुमति के धीर, उइ थे पीर शिष्य कबीर।
मीरा रानी आज्ञा पाई, रैदास का लीन्हा गुरू बनाई।
राना कोशिश कीन्ह अघाई, मीरा नाहीं डिगी डिगाई।

भया भरथरी का जब भान, छोड़ी माया खोटी जान।
सिर पर सींग हैं मान बड़ाई, सींग पकरि कै कालु गिराई।
बड़ी बड़ाई लम्बी चोटी, जमु घसिलावै धरि धरि झोटी।
मुसलमान जहँ चोटियै नाहीं, का पकरी जमु झोटियै नाहीं।
अहंकार है घना अंधेर, खाहीं गिरत न लागै देर।
मुकुट न सोहै गदहा के सिर, सोहै साहेब के सिर फिरि फिरि।
अहंकार पाहन की नइया, जो बैठा सो बूड़ा हइया।
ज्ञान सिंह थे सिंह ज्ञान के, सिंह नाम के सिंह ध्यान के।
अचल मुराई मेड़ई दर्जी, फिर भये ज्ञान सिंह प्रभु मर्जी।
गुरू कामता काछी पाये, नल देही का सुफल बनाये।
हुकुम गुरू का जान न दीन्हा, गुरु की कृपा सतगुरु चीन्हा।
सतगुरु की कीन्ही सेवकाई, सत्य दीनता हृदय बसाई।
माया से ना राखी प्रीती, नल तन बाजी अैसे जीती।
उनकी राह चले जे भाई, धन्य सबै जिन संगति पाई।
सोधी की है यहै कमाई, जो उनकी सेवा कै पाई।
कुटवी छोड़ि बसे जेहि ठाँव, धन्य दोस्तीनगर है गाँव।
ढंग अलग पर रंग समान, खून एक सब अंग समान।
हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई, या तो माया फांसि बनाई।
धरम नहीं ई भरम हैं सारे, येही फांसि सब काम बिगारे।
धरम है सबका एक समान, जेहि चलि पावै पद निर्वान।
जेहि मारग चलि दर्शन पावै, सोधी सोई धरम कहावै।
सोइ मारग सोइ धरम कहावै, जेहि चलि पिउ अपने का पावै।
नानक मीता सोई बतावा, सोई मोहम्मद है समुझावा।
भरम छाड़ि जो धरम सम्हारै, पीर गुरू तिनही का तारै।
जो नाहीं संतन की मानै, सोधी तिनका नरक निदानै।

दोहे

शील क्षिमा संतोष दीनता, दाया केरे संग। ज्ञान विवेक धीरज सहित, हैं सुमिता के अंग।।(1)
राग द्वेष सतोगुन जानै, जर जूड़ी का तमोगुन मानै। संशय होय रजोगुन ब्यापै,इनका कहिये तीनिउ तापै।।(2)
नर नारी दोनों गये, शिष्य बनै का भाई। नारी का अपनाइ कै, नर का दिया भगाई।।(3)
संस्कार कई गुना हवै, नर से नारी केर। नारी शिष्य जो आवई, तरति न लागै देर।।(4)
मीता की बानी पढ़ै औ सन्त बनै,करै न तनिकौ खेद। जेहि पत्तल मां खाति है, करै वही मां छेद।।(5)
झूठा गुरु लै जाय नरक का, है वो बड़ा कसाई। मीता वहिकी बेटी अम्मा, समुझौ वैश्या आईं।।(6)
दाम पेट के कारन सठु, का का करै उपाय। जेहि विधि हरि ना पाइये, सो सब पाखण्ड आय।।(7)
ज्ञानी ब्यर्थ है ज्ञान बिन, दिया ब्यर्थ बिन तेल। शीश दिये बिन शिष्य ब्यर्थ है, मेल बिना सब खेल।।(8)
हरि बिना हरिजन दुखी, मणी बिना ज्यों साँप। हरि मणि जब तक ना मिलै, मिटै न तन की ताप।।(9)
धनुष ब्यर्थ है बाण बिन, पोथी बिना विवेक। सत्य संघ बिन सबै ब्यर्थ है, मन बिचारि कै देख।।(10)
मीता मत का मरम न जानो, करो बैठि गुरुवाई। खर महिखा औ बैला होइहौ, होई खूब लदाई।।(11)
हरि वियोग हिरदै बसै, करम नसावै सोय। ब्रम्ह अगनि सोइ जानिहै, जेहि अंतर प्रकटी होय।।(12)
मीन कल नहीं जल बिना, हरि के बिन हरिदास। सोई दीन गरीब है, बाकी सब बकवास।।(13)
हरि की इच्छा ते सब होता, जबहीं दाया होई। बजर किंवारा कैसे खुलते, जानै बिरला कोई।।(14)
निर्गुन काया कंचन होती, सर्गुन होती नाहीं। सोई मेरे सतगुरु साहेब, या तो मानुख देहीं।।(15)
मानुख देहीं तो है माया, छिन मां बिनसै सोई। अभिनासी काया का भेद, जानै बिरला कोई।।(16)
सतगुरु तो अंतर मां भेटैं, काया कस तहँ जाई। सुज्जन होय सो या मत पाई, कूरा गोता खाई।।(17)
सुज्जन पाइ भेदु का खोलैं, कूर न चीन्हैं बोली। तत्त ज्ञान जब पाइयां, पार गये चढ़ि डोली।।(18)
दसवां दसवां सब करैं, जानै बिरला कोई। दसवां द्वारा जेहि कहा, सो तो निर्गुन होई।।(19)
देहीं खोजैं सबै चिकित्सक, हरि ना पावै कोई। जेहिका खोजे हरि मिलैं, निर्गुन काया होई।।(20)
बाहर की माया बिसरावै, औ बिसरावै तन का। हरि चरनन लपिटाइ रहै, है काम यही सुज्जन का।।(21)
कुमिता कहाँ से आई, कोई जानति नाहीं। बिन जाने यहि सत्य का, कोई उबरति नाहीं।।(22)
ऊंचे नीचे करम कमावै, करम जंजीरिया फांसा। यह जंजीर पचीस कड़ी की, देव दनुज सब बांधा।।(23)
ऊंचे करम तिनहि का जानौ, जे लागैं हरि नीके। नीचे करम हवैं बाकी सब, तिनके फल हैं तीखे।।(24)
जो कोई जैसे करम कमावै, वैसे ही फल पावै। कोई कुमिता से घिरा, कोइ सुमिता भरि पावै।।(25)
साहेब राजी तेहि पर होते, जो निर्बल होइ जावै। मांगै भीख रजाय की, सतगुरु मिलि जावै।।(26)
सतगुरु ध्याइ परम पद पावै, टूटि जंजीरिया जावै। कहि सोधी अब करम न लागैं, नाहीं कुमिता आवै।।(27)
कुमिता मैलु हवै दर्पण का, सुमिता तेहि उजलावै। जो है अलख लखावै दर्पण, जब उजला होय जावै।।(28)
बजर किंवारा को खोलति है, को तुमका समुझावै। खुले किंवारा हरि जी भेटैं, सतगुरु दया परम पद पावै।।(29)
हरि की दाया तबहीं होई, जब सतगुरु की दाया होई। राजी होय हरि दर्शन देते, सतगुरु ध्याओ लोई।।(30)
बजर किंवारा जो खुलि जावैं, तो हरिजी के दर्शन पावै। हरि इच्छा ते सतगुरु आवैं,बांह पकरि हरि ते मिलवावैं।।(31)
सतगुरु हरि का राजी करते, तब होते उइ राजी। बजर किंवारा सतगुरु खोलैं, तब जीतै तू बाजी।।(32)
छल बल किये ते ना मिलैं, ऐसे हैं वो राम। बजर किंवारा खोलना, है सतगुरु का काम।।(33)
ताते सतगुरु ध्याइ कै, करिले स्वारथ काम। बजर किवांरा खोलिकै, तुरत मिलइहैं राम।।(34)
काया नारी ब्रम्ह पुरुष है, साकठ फिरि सुनि लीजै। देखो दुनियां की चतुराई, नारि नारि पर रीझै।।(35)

साहेब तो घट मांहि विराजै, केहि खोजै तू घाटन में। घट की खोज किये बिन साकठ,दररि मरै दुइ पाटन में।।(36)
कान फुकाये का होइ जाई, निगुरौ रहिहौ निगुरा। बाँह धरै जाकी साहेब आई, ताको कहिये सिगुरा।।(37)
बनति देर लागै बहुति, बिगरै छिन मां भाई। मान बड़ाई मां जो परिहौ, अंकुरा जाई नसाई।।(38)
जीव पालतू जानवर, खूंटा भये शरीर। तीन गुनन ते बांधिया, जो तूरै सो बीर।।(39)
मानव जानो मूल वृक्ष की, धरम भये हैं डारै। जाती हैं बिरवा की पाती, सोधी जगत पुकारैं।।(40)
मानव है सम मूल वृक्ष की, धरम है डार समान। जाति पांति पाती भई, जेहि भूले नादान।।(41)
साँचे गुरु की करौं बंदगी, वस्तु दई उन ऐसी। झूठा भखुआ जलम नसावै, ऐसे की ऐसी तैसी।।(42)
ध्याये निरंतर राम का, मिटै जीव की ताप। जैसे शीतलता मिले, पानी बनि जाय भाप।।(43)
भाप हवैं जग जीव सब, सुज्जन शीतल जल। हिम जैसा भगवान है, जानैं नाहीं नल।।(44)
शीतलता के मिले ते, ज्यों पानी जमि जाय। यों सुज्जन सतगुरु मिले, हरि समान होइ जाय।।(45)
शीतलता सतगुरु भई, पानी दिया जमाय। बूझौ सुमिता क्या भई, जो हरि दिया मिलाय।।(46)
सतगुरु शीतलता भये, पानी दिया जमाय। यों सुमिता के गहे ते, सुज्जन हरि होइ जाय।।(47)
नहीं मुक्ति में बाधा कोई, रहनी रही जो जाय। कहि सोधी एक रहनि गहनि बिनु,बहा नरक सब जाय।।(48)
रेहंकै गदहा बिन बुद्धी का, कूकै कोयलिया वैसे। बानी बचन पढ़ौ नल ऐसे, पढ़ा ज्ञान सिंह जैसे।।(49)
सिरु दै सिरजनहारा भेटें, ब्रम्ह अगिन जारा जमजार। सतगुरु के परताप ज्ञान सिंह, जाइ मिले करतार।।(50)
जिनके चक्षु विवेक के, सोई जन करिहैं गौर। ज्ञान सिंह के ज्ञान का, जानि न पाई और।।(51)
पाँच पचीसों बसि कै राखे, हाथी सुई नघाया। जेहि पद का तिरदेवा तरसैं, ज्ञान सिंह सो पाया।।(52)
सतगुरु सतगुरु सब करैं, सतगुरु मिलन न खेल। ज्ञान सिंह सतगुरु मिले, छूटी जम की जेल।।(53)
जेहिका सतगुरु मिले कामता, सो तो हता फकीर। गोली खाई बाद में, पहले तजा शरीर।।(54)
कथनी करनी में फरक, तब नाहीं रहि जाय। जैसे ऊपर तैसे भीतर, रहनी ऐसी आय।।(55)
जैसे ऊपर तैसे भीतर, सुमिता रही समाय। बाहर दाया भीतर दाया, सोई रहनी आय।।(56)
फैला है पाखण्ड जगत में, सबु जगु भया मरीज। सुज्जन यहिते बाचे हो, भई बैद्य की रीझ।।(57)
टिकिया दीन्ही रोग की, आये बैद्य कबीर। दानव तेहिका हजम करि गये,घटी न तनिकौ भीर।।(58)
ताते सोधी निहचै कीन्हा, इंजेक्शन दिये बनाय। सुज्जन यहिते होंय निरोगी, दानव देखि डरांय।।(59)
मक्का के भुट्टा में, ठेठिया दाना होते। कौआ लीन्हे ठेठिया फिरता, दाना खाते तोते।।(60)
देखो भुट्टा केरि बनावट, जेहिमां दाना ठेठिया। दाना तत्व मूल को गहिये, त्यागो माया ठेठिया।।(61)
इन्दो आईं पन्नो आईं, सहजी आईं सरन। सतगुरु मीता दाया कीन्ही, छूटे भव बंधन।।(62)
इन्दो पन्नो सहजी, नान्हू और बदन। सतगुरु मीता का मिले, तन की मिटी तपन।।(63)
इन्दो पाई पन्नो पाई, सहजी सहजे पाई। नान्हू और बदन सिंह पाई, होइ मीता सरनाई।।(64)
मीता साहेब का मिले, सतगुरु बेनीराम। बानी बचन पसारि कै, सुज्जन हित किया काम।।(65)
घरही मां हरि पाइयां, जिन राखा मनु थीर। मीता बन का कब गये, कब बन गये कबीर।।(66)
जिन खोजा तिन तन ही पाया, सोधा अपना मन। नान्हू बन का ना गये, ना बन गये बदन।।(67)
लोक बेद के ना चलैं, सन्त कबहुँ बिपरीति। पालन करते स्वयं हैं, जौनि जगत की रीति।।(68)
दोऊ दल लै कै चलैं, यह संतन की रीति। ससुररिया मां बहुत पियारी, जग के ना विपरीत।।(69)
जल में रहकर मगर से, करै जो कोई बैर। कहि सोधी उस जीव की, समझौ नाहीं खैर।।(70)
जगु काजल की कोठरी, दहूँ दिसि कालिख लागि। पइठे साबुत वोही निकरै, जेहिके पूरे भागि।।(71)
काजल कोठरी मां हवै, तुम्हरा कच्चा सूत। तनिकौ चूके कालिख लागै, होय नस्त नाबूद।।(72)

भखुआ- झूठ बोलने वाला

आंखी खोलि कै देखिये, दीवारों का घेर। सीढ़ी लै दीवार फांदिये, अबही हवै सबेर।।(73)
तेरे चारों तरफ हैं, माया केरे घेरे। राम दया ते टूटिहैं, मिटिहैं दुःख घनेरे।।(74)
त्रिदेवन का मायै जाया, माया दासी राम की। अपने ही जायेन का फांसे, अम्मा है यह नाम की।।(75)
ते माया के दास हैं, जिनके सिर हैं भारी। जिनके सिरु नाहीं रहै, माया तिनते हारी।।(76)
माया तब तक जोरु जनावै, जब तक रहता शीश। शीश दिया जब गुरु का जाई, खड़ी निपोरै खीस।।(77)
चौथा चौथा सब कहैं, जानै बिरला कोय। बिन चौथे का मतलब जाने, पइहौ कैसे लोय।।(78)
गैस बिना गुब्बारा, ज्यों नाहीं उड़ि पावै। संस्कार बिन जीव त्यों, परा धरनि रहि जावै।।(79)
बूँद बूँद कै बढ़ति है, संस्कार घट मांहि। जो घट ऊपर तक भरा, सुज्जन कहिये ताहि।।(80)
सुज्जन तबै कहावई, जब होय राम का प्यारा। घड़ा भरा तब जानिये, जब पलक न होवै न्यारा।।(81)
ब्रम्हा ढालैं विष्नू पालैं, शंकर करैं संहार। ई तीनिउ मां छांटिये, कौन हवै करतार।।(82)
ब्रम्हा स्रष्टि करैं जगमाहीं, विष्नू पालनहार। शंकर हैं संहारक जग के, इनमां को करतार।।(83)
कोसन धरती घेरिया, कोटिन हाथी घोरे। कोई ना कुछ लै गया, ना संघ जाई तोरे।।(84)
तजि विवेक अंधे भये, कैसे लखिहैं सन्त। तिनका सन्त बतावईं, जौन चलावैं पंथ।।(85)
खनखजूर सम मन हवै, टाँगै हवैं पचीस। पाँच के टूटे क्या भया, तऊ शेष रहीं बीस।।(86)
रैनि दिना के बीच मां, होते सांझ सबेरा। चौरासी है निशा सम, मानुख जनम सबेरा।।(87)
दिवस और रजनी के बीच, होती सुबहो शाम। दुर्लभ नलतन बीतिया, ताही कहिये शाम।।(88)
पाँच तत्व के सकल शरीरा, है तन पांचै केर। इन्द्री तो साधन हवै, तृप्ती तत्वन केर।।(89)
पाँच तत्व के सकल शरीरा, ता में पाँचों हेर। तन को साधन जानिये, तृप्ती इन्द्रिन केर।।(90)
बन्दर घुसिया खेत मां, भुट्टा तोरत जात। पूरा खेत नसाइयां, आये कुलि दुइ हाथ।।(91)
पर करनी कहि अैसे फूलै, पिआ पिलउना मांठा। मीता की बानी का परखौ, मारति इनके चाटा।।(92)
तिरदेवा और दस अवतारा, इनका ध्यावैं बौरे। सतगुरु सेइ परम पद पाया, सन्त हवै ते औरे।।(93)
बिन सतगुरु केहुँ राम न पाया, बहुते भागे दौरे। तीन लोक मां चक्कर काटैं, जांय न चौथे ठौरे।।(94)
जो पतियावै कांच का, कंचन कैसे होय। सोधी पारस होइ गये, सतगुरु सेये लोय।।(95)
एक नांव है पूरब जाती, एक है पश्चिम जाति। दुइ नावन पर पाँउ धरी जो, ढेढ़ा जाई फाटि।।(96)
पुत्रि पुरातिम से मिलै, राजपाट ठकुराई। बहुत जतन किये का भये, झूठ मरै दुनियाई।।(97)
पति खोये पति रीझई, रीझै यार सिंगार। रीझ यार की का करौं, जेहि छूटै ससुरारि।।(98)
पक्का गड्ढा खोदि कै, मुर्दा धरते साधि। कहि सोधी अज्ञानवश, जगु तेहि कहति समाधि।।(99)
ईंटा चूना से बनी, सो नहिं आय समाधि। वह तो मुद्रा ध्यान की, है यहु मता अगाधि।।(100)
कोइ कबुर कहै कोई यादगार, कोई कहै समाधि। कहि सोधी है तौनि समाधी,जेहि पावै मन बाँधि।।(101)
दूध दही फल और मिठाई, धरि मांगै औलाद। कहि सोधी देखो चतुराई, कहता लो परसाद।।(102)
राम कृपा जिन पर भई, तिन पाया परसाद। दूध दही फल और मिठाई, ई सब हैं बकवाद।।(103)
राम दया हम दाया पाई, जो घट नहीं समाय। कहि सोधी सोई परसाद, बाँटा सब जगु जाय।।(104)
बाहर निर्धन होत है, अंतर होता दीन। सबै गरीबी न मिलै, पाई नांही तीन।।(105)
मीन कल नहीं जल बिना, हमें बिना भगवान। अब विछोह की हद भई, हरो नाथ मेरे प्रान।।(106)
आगि लाय पानी का धावै,तबहीं तन की तपनि बुझावै। कहि सोधी यह निर्गुन बानी, निगुरा बूझि न पावै।।(107)
बिना दिदार लगी तन आगी, सो है बड़ा सुभागी। शीतल भया दरस के पाये,पलक नहीं अब लागी।।(108)
भेखी गुरु तुम बनो सयाने, जमु है बड़ा सयान। अंत समय पछिताओगे, जब अैठि निकारी प्रान।।(109)

बानी बचन मने करता जेहि, करौ रोज तुम तौन। जानि परैगा अन्त समय में, हवै सयाना कौन।।(110)
सन्त न पाखण्ड पालते, करते सदा उघार। तुम बैठे गुरुवाई करने, परे यही ते मार।।(111)
गुरू बनाइ कै बइठाले गये, जब तुम भेखै पाल। पाखण्ड केरे उघार हित, मीतै बैठाया लाल।।(112)
पाखण्ड के संहार हित, मीता निकरि न अइहैं। उनकी इच्छा से सब होता, जिससे चहैं करइहैं।।(113)
अहंकार ना रहा किसी का, चाहे जो कोई होई। साहेब है इन्साफ का साथी, गरभ न राखै कोई।।(114)
जांघ बिठाना चाही नंगी, दुर्योधन चीर खिंचाया। अन्यायी अपमान किया बहु, साहेब दोछु लगाया।।(115)
दस हजार हांथी बल वाला, दुशासन गया हारी। पुन्नि पुरातिन से द्रोपदी का, सका न चीर उघारी।।(116)
जो करता अपमान काहु का, होता खुद अपमानित। सांचा साहेब लिये तराजू, सही सही है तौलति।।(117)
परतिज्ञा करवाई भीम से, जेहि बल दिया अपारा। दुशासन की बांह उखारी, बही खून की धारा।।(118)
दुर्योधन की जांघ तुड़ाई, कीन्हा न्याउ करारा। द्रोपदी की परतिज्ञा पूरि भै,जब सने खून से बारा।।(119)
बल अपार के दाता साहेब, छिन में भीम बनाते। मीता का अपमान करै जो,तेहिका फूँकि उड़ाते।।(120)
परखी तौली बानी बोली, कबिरा किया जखीरा। दानव तेहिका हजम करि गये,बनि बैठे गुरु पीरा।।(121)
परखी तौली बानी बोली, हुकुम दिया करतारा। सुज्जन हित गठरी खोली मीता, पाखण्ड पर परहारा।।(122)
पाखण्डी छुवतै जरि बरता, सुज्जन तपनि बुझाई। मीता तीखे बान बनाये, राखे जहर बुझाई।।(123)
खरी शान के बान मीत के, हैं अचूक तिहुँ लोक। बेशर्मी की ढाल पर, तिन्हे पाखण्डी रहा रोंक।।(124)
कहि सोधी यहु देखि तमासा, साहेब उठा रिसाय। बन्दे को हुलकारि दिया है, कंधे हांथ फिराय।।(125)
सो सोधी अब एकु न राखी, का बिटिया का अम्मा। इनका ना अपमान कराओ, गुरुवाई तजि बैठो घरमा।।(126)
पाखण्डी ना करि सकै, सही बात बरदास। मीता के विपरीत करी जो, घुसी कंठ मां बांस।।(127)
पाखण्डी कोई नहीं टिकैगा, मीता के बानन से। सुनत सुनत पर्दा फटि जइहै,खून बही तोरे कानन से।।(128)
जो तू रहा चहै छलबल से, मीता रहै न देहैं कल से। उड़ हैं परिचित तोरे बल से,उड़ि जइहै एकै हलचल से।।(129)
हवैं कसाई पन से गंदे, गुरुवाई के धंधे। काहे दुर्लभ जलम नसावै, चेतु हरामी अंधे।।(130)
भान भरथरी को हुआ, त्यागी गद्दी राज की। चार सेर रुई की गद्दी, भेखिन ता हित रारि की।।(131)
रुई भराई बनवाया गद्दा, ताहि बिछाई बइठै। तेहि पर बैठि बनै गद्दीधर, सांच कहे ते अइठै।।(132)
बिटिया अम्मा से पांय छुवावै, अस भेखी ना देखा। पांय छुवायेउ बाप हूँ से, यहिका होई लेखा।।(133)
अंधरेन का परमोधै के हित, छुए पांय होइ बाप। पाँच दिना मुँह फैला रहा, किया भयंकर पाप।।(134)
पांय छुये तिनकी या गति भई,पांय छुआये का गति होई। सोधी काँपै सोंचि फलु, बड़ी बुरी गति होई।।(135)
मीता लिखि कै धरि गये, संतन की पहिचानि। कहि सोधी बिन आंखी खोले, कैसे पइहौ जानि।।(136)
करि स्नान समाधि पर, फूला नहीं समाय। मान बड़ाई जग मां चाहै, भेखिन केर सुभाय।।(137)
करि स्नान समाधि पर, क्यों करता अपमान। शीश धरै जब पांयेन पर, तब होई कल्यान।।(138)
अधर्म कुकर्म जीव नहिं करता, मन ही सब कुछ करता। तू मारै निर्दोष जीव क्यों, यहिते मन नहिं मरता।।(139)
सोय सोय जनि जलम गवांवै, सोये नरकै जावै। जो सोवै सो हीरा खोवै, जो जागै सो पावै।।(140)
जागैं रोगी चोर निशाचर, येहि जागे का होवै। सोधी हमें बतावऊ, केहि विधि जागा जावै।।(141)
सोधी अैसे जागिये, कुंजी कछुआ जैसे। बिना नीर के मीन जगै ज्यों, जागो लोई अैसे।।(142)
अपने जन को गले लगावैं, दानव ते रहैं दूरि। मिलै सजीवनि मूरि दास का,असुरन के मुख धूरि।।(143)
नामा केरी गाय जिआई, पाहन काढ़ा रैदास। मीरा के विषु ना चढ़ा, बची सेन की लाज।।(144)
सतगुरु एकु जगत मां एकुइ, नाम है भिन्न धराये। कबहूँ कबीरा नाम धराया, कबहूँ मीता कहाये।।(145)
पाँच तत्व का बकस पोखता, तीन गुनन का अटूट ताला। संस्कार कुंजी लै खोलै, भेंटै रतन निराला।।(146)

बाबू बैरीसाल से, मीता वादा कीन। रामदीन सोई भये, भये सरनि मां लीन।।(147)
रामदीन सतगुरु मिले, पहली का पार लगाये। इन्द्रजीत सोई पद पाये, पहली कीन्हि सहांये।।(148)
इन्द्रजीत की सरनि में, आये कामता काछी। सतगुरु साहेब दाया कीन्ही, भये अमरपुर बासी।।(149)
सम्बत दो हजार पैंतालिस आये, कातिक चौदसि आई। भेखी पाखण्डी गुरु की, गद्दी जाइ हटाई।।(150)
सम्बत दो हजार पैंतालिस तक, यहु दीख तमासा। सम्वत दो हजार सैंतालिस मां, लिखि कीन प्रकाशा।।(151)
राम दरस सोइ पावई, ज्ञान चक्षु जो खोलता। काया नगरी हरि बसैं, बाहर केहि टटोलता।।(152)
आंखी मूंदे जो हरि मिलैं, सब अंधे तरि जांय। कहि सोधी जब पलक न लागै,तब हरि परैं दिखाय।।(153)
चिड़िया बैठैं अनगिनत, फाटै हाथी लटका। कहि सोधी भेखी डार सम,सहै न सुज्जन झटका।।(154)
मन का सोधै सोई सोधी, सोई उतरै पार। हाड़ मांस की काया सोधैं, ते बूड़ैं मझधार।।(155)
निर्गुन काया सोधि कै, भये ज्ञान सिंह सोधी। सर्गुन खोजि मरैं ते भखुआ, हवै निपट या थोथी।।(156)
जौनी खसम का छाड़ि कै, औरेन के संघ लिपटैं। सोधी ते वैश्या हवैं, पुरुष न आवै निकटै।।(157)
हौदा में भिष्टा भरी, तेहि पर ढक्कन दीन। सोधी अइसै गरभवास है, परते करम मलीन।।(158)
मर्द जो सोवै बाँझ संघ, ना उपजै सन्तान। त्यों साकठ उपदेश है, सोधी उपजै नाहीं ज्ञान।।(159)
सोई बंजर सोइ बाँझ, सोई साकठ जानु। अन्न पुत्र ना उपजै सोधी, नाहीं उपजै ज्ञान।।(160)
ज्यों धोबी का कुत्ता, ना घर का ना घाट का। यों ठगिया का शिष्य भये, ना माया ना राम का।।(161)
गदहन के कोउ धरै ना चारा, जब लादी तब लादी। ठगियन से कुछु मिलै न सोधी, गदहे तबहूँ राजी।।(162)
सोधी कोई भेद नहीं है, सोई सन्त सोइ कंथ। ठगियन के उइ हवैं जमाई, जौन चलावै पंथ।।(163)
सोधी इनमां ना फँसै, नहीं धरम नहिं पंथ। मनका सोधै जो कोई, पावै अंत अनंत।।(164)
अश्व होइ जो छत्रपती का, सेना तेहिके साथै। यों साहेब के दास हैं सोधी, काहे का डर लागै।।(165)
मन चाहा सोइ पावई, जो संतन का ध्यावै। शहंशाह का अश्व ज्यों, मन माना रातिब पावै।।(166)
जन कबीर सब कही अनूठी,दानव कै डारेन ता झूंठी। अतिबारी का नरक दुआरा, मिली सांच मां झूठी।।(167)
अब कबीर की ऐसी बानी, दूध मिला ज्यों पानी। कहि सोधी बिरला सज्ञानी, करिहै छान बिनानी।।(168)
शुक्ल पक्ष का चन्द्र ज्यों, त्यों सुज्जन का ज्ञान। कुज्जन की मति कृष्णपक्ष सी, दिन पर दिन अज्ञान।।(169)
खूब छलकै आधी भरी, पूरी के गुन सोधी और। सुज्जन की मति धीर सदा ही, करै न जगु सो गौर।।(170)
समरथ क्यों ले काहू से कुछ, लेय सो सम्रथ नाहीं। कहि सोधी ते नकली हैं सब,भीख मांगि जे खाहीं।।(171)
बीन सुनाये भैंसि का, उपजै नाहीं चाह। सोधी साकठ उपदेश त्यों, तजै न कुमति कुराह।।(172)
सोधी बीन सुनि सर्प ज्यों, निकरि भांठ से आवै। यों सुज्जन सति संगति पाये, लोक लाज विसरावै।।(173)
भेखी पाखण्डी गुरु की, गद्दी दी गई फेंक। कहि सोधी घुसि गई संतई, चली नहीं तब एक।।(174)
गद्दी हटने का गम भारी, आया भेखु न काम। कहि सोधी संतन का द्रोही, कहि ना पाया राम।।(175)
शील क्षिमा औ दया दीनता, ई हैं अस्त्र तुम्हार। धरि धीरज संतोष करो तो, उपजै ज्ञान अपार।।(176)
हरि पद में विश्वास से, संस्कार की बाढ़ि। संस्कार ज्यों ज्यों बढ़ै, सुमिता होइ प्रगाढ़ि।।(177)
मन बच कर्म जेहि सूर के, आश चरन की होय। तेहिका अंधा जो कहै, सोधी अंधा सोय।।(178)
जुड़ा रहै जो मित्रन सो, शत्रु न कुछ करि पावै। इनसे करै बिगाड़ जो, तेहि बैरी धरि खावै।।(179)
सुमति सहेली प्रबल है, कुमति नहीं ठहरावै। सुमिता का विसराये सोधी, कल कबहूँ ना पावै।।(180)
दया निबल पर किये ते, दया प्रभू की होय। कहि सोधी छोटेन का त्रसिहै, बड़ा सतइहै तोय।।(181)
जो तेरी निंदा करै, करौ बड़ाई वहिकी। सोधी अपना किया पाओगे, मिलिहै वहिका वहिकी।।(182)
सुज्जन गगरी भरी सुमति की, छलके होई ह्रास। कहि सोधी यहु जानिकै, जग से रहै उदास।।(183)
सुज्जन बस्तर ऊजला, नहीं मैलु नहिं दाग। कहि सोधी उइ चलैं सम्भारी, फिरि ना जाये लाग।।(184)

सन्त गुलामी ना करैं, करते अपना काम। करौ नौकरी सन्त होइ, करौ नामु बदनाम।।(185)
तीन लोक में सब कुछ वहिका, जौन मिला है राम। सन्त गुलामी जो करैं, होय रामु बदनाम।।(186)
जम्बुक केरी सरनि में, मत लोटै मेरे लाल। कौन बचाई सिंह से, करिहै जबै हलाल।।(187)
सरनि गयेउ दामाद की, काहे भेखै पाल। गद्दी खतरे मां रहै, या गद्दी मां लाल।।(188)
ऊपर बाना सिंह का, भीतर निरा सियार। पांय परेउ दामाद के, संतन के संघ रार।।(189)
गद्दी के कारन मरे, सुनौ तुम्हारे बाप। तुमहूँ का लै जाइहै, गद्दी का संताप।।(190)
गद्दी पर बैठे रहौ, करि मीता लंग पीठ। कहि सोधी जमराजा देखी, हौ तुम कितने ढीठ।।(191)
जेहि नगरी में बास कृष्ण का, कंस सुफल ना होय। घट मां सुमति बसाये ते, नासि कुमति की होय।।(192)
कंस करै उत्पात नगर में, कसरि न राखै कोय। जेहि नगरी मां बास कृष्ण का,बाल न बांका होय।।(193)
पंडित भेखी फंसे औ फांसैं, नल तन करै हरामा। इन्हें उखाड़ि फेंकिये ऐसे, ज्यों गोहूँ का मामा।।(194)
पाखण्डी अरु मांसाहारी, दोनों एकु सुभाय। कहि सोधी दोनों स्वादवश, परैं नरक मां जाय।।(195)
या माया संसार बबुर बनु, ताते करता नेह। हरि सो जुरै सनेहु जो, सुफल होय नल देह।।(196)
ना लिप्त होय ना गृह तजै, ज्यों पुरइन का पात। पाखण्डु तजि हरि चरन गहु, सोधी मिलै निजात।।(197)
पीछे से ना आवई, तौ सूखि जाय सब घाटु। करम काण्ड में फंसा है, जो बोवै सो काटु।।(198)
चरन कवँल की करई, करई करुण पुकार। धरती बरसै अम्बर भीजै, खुलई बज्र किवांर।।(199)
हाड़ मांस की काया माया, फंसा इसी में जीव। निर्गुन काया सोधे सोधी, दूरि नहीं है पीव।।(200)
अपनी बसि मां जीव न मारै, पाखण्ड नाहीं थापै। सोधी ऐसे का को मारै,रक्षा राम करति हैं आपै।।(201)
जहँ तक चलै ना पाखण्ड थापै, मारै नाहीं जीव। कहि सोधी अस दीन कोई, तेहिका रक्षक पीव।।(202)
अपनी ओर निहारि कै, प्रभु लखिये अपना नाम। गुन अवगुन सब कीरि कै, करौ काम जस नाम।।(203)
गद्दी कारन देखिये, यहु कीन्हेसि कौन उपाय। गुरुवाइन से दामाद के, भेजि छुआये पांय।।(204)
सोइ सखियाँ सोइ पंखुड़ी, सोइ फूल सोइ सन्त। सोधी कही बुझाय कै, सुज्जन पाई अंत।।(205)
घ्राणशक्ति सतगुरु भयी, और पंखुड़ी सखियां। हरि सम बास है फूल की, बूझौ खोलो अंखियां।।(206)
गड़सा से गरदन का काटो, गड़से का क्या दोष। यों शरीर सब यंत्र है, इच्छा का सब दोष।।(207)
सखियन मां पागे रहैं, जिन सतगुरु चीन्हे। चौरासी छोटी परै, गुरुवाई के कीन्हे।।(208)
ज्ञान प्रकाश दोउ एक से, दोनों उपजैं सात से। उपजैं चक्का के चले, नाहीं उपजैं बात से।।(209)
जब तक रहत प्रकाश है, छाया परति देखाय। उदय भये अज्ञान के, माया चीन्हि न जाय।।(210)
जैसे तिमुर प्रकाश का, कुछु नहिं सकै बिगार। उदय ज्ञान के होत ही, छूटै भरम पसार।।(211)
नाश होय अज्ञान का, ज्ञान उदय जब होय। उदय प्रकाश के होत ही, तिमुर जाति है खोय।।(212)
सीता हरण कारण बना, रावण का भया नाश। गोली कारण बनि गई, पर्दा होइगा फास।।(213)
रहे मुसावति पुरिखा, लरिकन गये सुझाई। अपने कुल की रीति जानि कै, नाती रहे मुसाई।।(214)
किरतन नाम लेय के खातिर, भारी भीर लगावैं। सत्य नाम का चाहन वाला, विरला नजरी आवै।।(215)
कान फुकावै के हित साकठ, भारी भीर लगावै। नौका नामु हवै वहु न्यारा, भेद न कोई पावै।।(216)
कूकुर सुअर जगत में जैसे, पाखण्डी यों नीच। निर्मल नीर मनै ना भावै, राजी रहता कीच।।(217)
बहु बिधि मीता रोकिया, पाखण्डी ना मानै। इनके हित जम त्रास है, तू निश्चय कै जानै।।(218)
मीता की गारिउ ना लागै, भया बड़ा ई ढीठ। मिरचा खाय भरै सिसकारी, तऊ बतावै मीठ।।(219)
मान बड़ाई गुड़ का हंसिया, भूलि गले ना डारै। जो लीलौ तौ पेट फाटिहै, निकरै नहीं निकारे।।(220)
कीर्तन नाम की चाह में, देखी भारी भीर। सत्य नाम का ग्राहकी, कोई बिरला बीर।।(221)

करम न लागैं सन्त के, होंय जो कोटि हजार। ब्रम्ह अगिनि उहाँ जलि रही, करम देति सोइ जार।।(222)
पाँच तत्व के बने हैं, जब जग सकल शरीर। ब्राम्हण क्षत्री वैश्य शूद्र को, को इनमां गुरु पीर।।(223)
धरती मण्डप पवन अगिन जल, इनते रचे शरीर। देहीं पूजबु छाड़ि कै, पूजौ सतगुरु बीर।।(224)
माया के सब दास हैं, तीनि मां जब तक बास। चौथे के पगु धरति ही, टूटै माया फांस।।(225)
संतन केरे बाल कस, होते हवैं सफेद। सोधी की अर्जी हवै, कृपया कहिये भेद।।(226)
ब्रम्ह अगिन के ऊपजे, जाते करम नसाय। जैसे स्वेत प्रकाश से, कार अंधेर बिलाय।।(227)
ब्रम्ह ज्ञान के ऊपजे, बार स्वेत होइ जाय। काला रंग है कुमति का, तब नाहीं ठहराय।।(228)
झरै पेट क्यों सन्त का, यहिमां खूबी कौनि। सोधी का संतोष हो, देउ सुझाई तौनि।।(229)
मल ठहरे का गुन सुनो, जीव जात बिल्लाई। झरै पेट सोइ सन्त का, कारण मुख्य सफाई।।(230)
काहे होती सन्त के, फुरिया जिनका नाव। सोधी पर दाया करौ, इतना और बताव।।(231)
फुरिया बनि कै दूरि होत है, सारा रक्त विकार। रक्त शुद्ध हरदम रहै, जे पहुंचे दरबार।।(232)
मेरी मेरी क्यों करै, साथ नहीं यह जाय। निकरि जाति है हाथ से, देखत ही रहि जाय।।(233)
बिना ज्योति ज्यों अखियां, बिना महक ज्यों फूल। बिना विवेक त्यों पोथिया, सोधी हवै फिजूल।।(234)
आंखी ज्यों बिन जोती, बिन विवेक त्यों पोथी। बिन करनी की कथनी, सोधी होती थोथी।।(235)
बड़े भागि मानुख तन पावै, करु करनी भरिपूर। मन माया मां रमाये ते, सोधी मुख मां धूरि।।(236)
तन की करनी तन से करिये, मन की करिये मन से। मन मालिक में रमाइ कै, माया भोगवै तन से।।(237)
जग से तन से मन हटा, मालिक के संघ रहना। कहि सोधी जियतै मरै,उसका फिर क्या कहना।।(238)
जग तन माया सर्गुन कांच, सोई है अज्ञान। सुमिता सतगुरु साहेब सांच,सोइ तत्त सोइ ज्ञान।।(239)
सुमिता भली संभारिये, यहि बिन नहीं उबार। गरम होय ता कैसे जामै, या है अगम बिचार।।(240)
कोटिन तारागण होते हैं, चन्द्र एक ही होत। यों सोधी संसार में, सतगुरु एकुइ होत।।(241)
उतनी धरती हो प्रकाशमान, जो सम्मुख सूरज होय। तहाँ अँधेरी रात हो, सम्मुख नाहीं जोय।।(242)
वेदों की है थाह जो, संतन केर ककहरा। सन्त बचन जो बूझई, ताको कहिये महरा।।(243)
कोटिन चन्दा होइ सकत, सम्भव कोटिन भानु। दुइ सतगुरु ना होइ सकैं, यहु सोधी परमान।।(244)
होय अदृश्य जाता रहै, ज्यों तलिया का नीर। कहि सोधी त्यों कुमति का, दूरि करति हैं पीर।।(245)
लड़िकै हारे बहुत हैं, बहुतै जीते जंग। हारे जीते का भया, परे काल के फंद।।(246)
एक पलरा मां रुई जो, धरौ जतन से बाँधि। अष्ट धातु का बाँट लघु, देता वहिका टांगि।।(247)
अष्ट धातु के बाँट सम, सुज्जन गरू गम्भीर। पाखण्डी है रुई सम, ना बैठो इन तीर।।(248)
जल थल और गगनचर सारे, पालै सिरजनहार। तू काहे चिंता करै, करु करनी होई निरुआर।।(249)
गारी सुनिकै चुप रहै, शीलवान जो होय। कहि सोधी तो सारे गुंगे, शीलवान ही होंय।।(250)
पाखण्ड का रंग कार अति, चढ़ा तुम्हारी कामरी। कहि सोधी काला रंग मेटो, तब चढ़िहै रंग रामु री।।(251)
चित ते चरन कवँल ना टारै, सो भेंटै भगवान। जे अैसा ना करि सके, तिनका झूठा ज्ञान।।(252)
हरि देखाय परि जांय जेहि, पलक लगै क्यों भाई। कहि सोधी जब पलक न लागै,तब हरि परैं दिखाई।।(253)
कांच लोहा सोना पारस, इनका समुझौ लोय। जो पारस मिलि जाय तो, लोहा सोना होय।।(254)
पाखण्ड रहते कांच है, पाखण्ड छूटे लोहा। सांच बसे कंचन भया, सोधी मारग जोहा।।(255)
सांच कांच का ना छुअै, लोहे मां बसि जाय। चुम्बक गहै ना कांच को, लोहा ले अपनाय।।(256)
सतगुरु चोट मारु है घन की, कांच नहीं ठहराय। कहि सोधी लोहा भये, तब घन भया सहाय।।(257)
यहु अवसर ना जान दे, प्रीति साँचु सो जोरु। सोधी साहेबु सामने, माया टटिया तोरु।।(258)

जगत बड़ाई देइ कै, पत्थर दीन्हा दाब। भये हंसाई जगत मां, है सुज्जन का लाभ।।(259)
तुम हांसी करते रहो, हम साहेब घर जाब। कहि सोधी सुज्जन की हांसी, महँगी परै जनाब।।(260)
चाँद सुरज दोउ सम कै रखना, या है अगम बिचार। कहि सोधी जो अर्थ बतावै, तेहिकी बानी सार।।(261)
सोधी पहरू मीत का, पाई छरियादारी। सुज्जन के हित की करै, चोरन का दुतकारी।।(262)
सोधी पहरे पर खड़ा, ताने तीर कमान। जे मीता के चोर हैं, मारी तिनके बान।।(263)
सोधी पहरू सांच का, नहीं झूठ का मान। सांचे शीश नवावई, चोरन हनिहै बान।।(264)
बिन विवेक संतन की बानी, बिना नाक ज्यों फूल। पोथी बांचे हरि मिलैं, या है तेरी भूल।।(265)
मूड़ मुड़ाना छाड़िकै, शीश दक्षिना देय। सोधी जोगी सोइ है, धंसि अमरापुर लेय।।(266)
परम पुरुष ना मरता कबहूँ, ना काहुइ वहु मारै। वा तो केवल सृजन करति है,माया मरै व मारै।।(267)
रूप दिखाय कै रण्डी फांसै, कान फूँकि पाखण्डी। कहि सोधी ई पाखण्डिन ते, बहुत भली है रण्डी।।(268)
साहेब की गति सूरज जैसी, धरती की गति माया। खुद सूरज के चक्कर काटै, घूमै सबै घुमाया।।(269)
कीर्तन नाम जंजीरिया, दै बाँधै कनफुकवा। तोरि चलावै सो है अंसी, बंधे रहैं ते पशुआ।।(270)
जो साहेब की खुशी चहै तो,शीश चरन में धरना होगा। जियत मरै तो तरना होगा,वरना नरक में परना होगा।(271)
देखो दोनों भिन्न हैं, रामचंद्र औ राम। रामचंद्र का जौनि नचाया, ताहि नचावै राम।।(272)
सुख दुःख दोनों दशा में, हरि का सुमिरै जोय। कहि सोधी तेहि दीन का, बाल न बांका होय।।(273)
खुद का कौन भरोसा ऐ मन, करौ खुदा का यार। कहि सोधी विश्वास अटल भये, सीझैं काज तिहार।।(274)
अंगा पच्छी ना किई, ना काहू की राखी। कुल की रीति निबाहि कै, सोधी सांची भाखी।।(275)
ना काहू की निंदा कीन्ही, ना काहू की राखी। तू मीता की मानिले, उन भाखी सबु सांची।।(276)
करम हिंडोले झूलता रे, पाप पुन्नि दोउ छोर। राग द्वेष दोउ मेटिकै, चलिये साहेबु ओर।।(277)
राग द्वेष जो कोई मेटै, भेंटै साहेब जाय। दुःख के कारन येई हैं, इन मेटे दुखु जाय।।(278)
ना मैं बेटी बहन तुम्हारी, ना पत्नी ना माता। करम जनम का यह तन बंधन,नाता जगु भरमाता।(279)
नारि पुरुष जेहिका जगु कहता, सो काया का भेद। काया माया सबही नारी, पुरुष अलेख अदेख।।(280)
इच्छाधारी भी माया है, माया है काया री। दुनिया की सब दौलति माया, माया है छाया री।।(281)
उपजै बिनसै सो माया है, माया थिर नाहीं री। साहेब की गति हवै निनारी, उइ सिरजैं संसारी।।(282)
जो अभिनाशी सोई साहेब, नाशवान माया री। उनकी इच्छै से सब होता, नाशवान औतारी।।(283)
माया का उइ भोग करति हैं, ना होते औतारी। भोग करैं औ तजैं छोई सी, माया सिर नाया री।।(284)
तिन माया छोई कै जानी, जिन पर भई दाया री। कहि सोधीभइ दाया जिन पर,तिनही भेदै पाया री।।(285)
अमर बेलि का देखि कै, आया मन में धीर। पालनहारा पालिहै, अब जनि चूकै बीर।।(286)
कबीर का बानी बचन, लागा ठगियन हाँथ। सोधी याही बात ते, ना कीन्ह्यो विश्वास।।(287)
मीता साहेब का बचन, ठगियन धरा दबाय। ज्ञान सिंह कोतवाल भये, लीन्हा सबै छड़ाय।।(288)
सतगुरु मीता जगत में, धनी हुकुम से आये। किया जखीरा भारी, सुज्जन भेदु बताये।।(289)
तेहिका हजम करै की कोशिश, ठगियन की बहुताई। हाथ लगीं कुछ पोथी उनके, तिनका धरा छपाई।।(290)
कहि सोधी यहु दूसर अवसर, जब ठगिया डहकाये। ज्ञान सिंह का चला लबेदा, लीन्हा सबै छुड़ाये।।(291)
बानी बचन छपा मीता का, ठगिया उठे डेराये। कहि सोधी मीता की वाणी, अब को सकी चुराये।।(292)
संतन मां यों हरि बसैं, ज्यों फूलन मां बास। आनंद सागर मिलै दीन होय, कहते सोधी दास।।(293)
सुमिता के अंग पंखुड़ी, सन्त है फूल समान। हरि समान है बास फूल की, है यहु निर्गुन ज्ञान।।(294)
सोधी सुज्जन कली फूल की, सन्त जानिये फूल। साहेब तो है बास सम, अब ना करु तू भूल।।(295)

जखीरा-राशि/ढेर

करमन ते सबरा चला, महिनन हाथु फूला रहा। भोला मालिस कै थके, लूला लूला ही रहा।।(296)
सोधी कहते अपने मन से, क्यों करै छूति से प्रीति। जो साहेब चरनन से करता, तो जाता जग जीति।।(297)
वारि मने करता नहीं, भेड़ पियै या सिंह। वारि समान होय मेटिये, राग द्वेष के चिन्ह।।(298)
हलुके का लै उड़ि चलै, गरुआ नहीं डुलावै। माया पवन स्वभाव एकु, हरि की भक्ति थिरावै।।(299)
एक कागज की एक पत्थर की, एक काठ की होय। नौका नामु काठ की नइया, गहै सो पारै होय।।(300)
एकु पाखण्डी एकु अभिमानी, एकु होता है दीन। कहि सोधी तू चरन गहु, मिलै पीर परवीन।।(301)
छेदही नइया काठ की, पानी भरि भरि जाय। कहौ खेवइया का करै, काहे बूड़ि न जाय।।(302)
सुज्जन दीन का पार लगावैं, सतगुरु बड़े खेवइया। चतुर सयाना कबहूँ न बैठै, पाहन केरी नइया।।(303)
जो तत ज्ञानी जो तत ध्यानी, हरिजन कहिये सोय। सोधी इनके चरन नजरि ते, दूरि न कबहूँ होय।।(304)
अहंकार से दीनता, बहुत दूरि है भाई। सबकी गम्मि नहीं है, बिरला पहुँचै जाई।।(305)
अहंकार तजि दीनता, विरल लेति अपनाई। तिरदेवन की गम्मि नहीं, या बहुत हवै कठिनाई।।(306)
लक्ष कोस से परे दीनता, सतगुरु हैं वहि ठाईं। लक्ष्य दीनता कै चलौ, होइहैं राम सहाईं।।(307)
सतगुरु का घरु दीनता, ताही मांझ रहाईं। अहंकार तजि दीन होय जो, सोई सतगुरु पाई।।(308)
अहंकार पदवी भारी का, तीनिउ देवन केरे। साहेब इनका ना मिलैं, सोधी याही तेरे।।(309)
शिष्य बनावैं कामी क्रोधी, कतली और लबार। अैसे ठगियन सन्त बतावै, अस मूरुख संसार।।(310)
कदर बीन की कीजिये, जैसे करता सांप। यों सुमिता मां पागिये, मिटैं जुगन के पाप।।(311)
तत्तज्ञान सुख सागर लीन्हे, दिया चहति है तोय। मान बड़ाई जो तजै, सोधी पावै सोय।।(312)
मीता की बानी है निरगुन, बूझि विरल कोइ पावै। यह गुड़ अैसा नहीं है, जो चींटा खा जावै।।(313)

“मन पर”

मन है दीन मनै अभिमानी, मन की गति केहुँ बिरले जानी।
मन है राम मनै जमराजा, मनुहि भिखारी मनु ही राजा।
मन है कुआं मनै है खाईं, मनु ही देता हवै गिराई।
मन मां सुमति कुमति मन माहीं, जैसी करनी तस उपजाई।
इड़ा पिंगला सुखमुनि नारी, मन मां स्थित हैं ई सारी।
गंग जमुन मन ही की धारा, सरस्वती से होय उबारा।
मन ही से है सुख दुःख होता, विरल लगावै आनंद गोता।
मन भण्डार मां भरे बिचारा, सागर का ना वारो पारा।
मनु ही सोवै मनुहि जगावै, सो जागै जो सतगुरु पावै।
मन ही फाँसै मनै निकासै, स्वर्ग नर्क मां मनु ही बासै।
मनु ही धरती मनहि अकाश, मनै अँधेरा मनै प्रकाश।
मन ही बोरै मनहि उबारै, जब चाहै तब मन ही तारै।
मन ही डोलै मनहि डुलावै, थिर ना रहै जहाँ तहँ धावै।
मन है माला मनै जपावै, जब चाहै तब रामु मिलावै।
मन है साथी जो थिर होई, मन से बड़ा न बैरी कोई।
मन है दर्पण झूठ न बोलै, स्याह सफेद मनै सब खोलै।
मन है हाथी सुई समावै, पर्वत से राई होइ जावै।
मन है आशिक मनै मशूक, मन है बेनी मनै मलूक।
स्वर्ग यहीं और नर्क यहीं है, मन के बाहर कुछौ नहीं है।
मन बैरागी मन ही रागी, जब त्यागी तब मन ही त्यागी।
मन है कृष्ण मनै है कंसा, मन है काग मनै है हंसा।
मन है ज्ञानी मन अज्ञानी, मन है मंगता मन ही दानी।
मन मौजूद हवै जन जन मां, तीनो देव समाये मन मां।
क्या चींटी क्या गज क्या तीतर, सारी श्रष्टी मन के भीतर।
मन ही जीतै मन ही हारै, मन के खेल हवैं ई सारे।
मन मानै तो तन हवै, मन मानै तो खाक।
मन मानै तो स्वर्ण है, मन के माने राख।

कहरा

(1) भजिले राम नरक ना होइहै, गरभ वास ना अइहै रे।
जब लग डारन पातन ध्यइहै, मूल गहा ना जइहै रे।
जंगल जरा भया तब मंगल, खरहा मौज मनइहै रे।
तूरि तूरि जो अब तक खाये, सो अब शीश नवइहै रे।
माया मां फंसे कुशल है नाहीं, धरी हिंयै रहि जइहै रे।
मनुआ जब तक हाथ न अइहै, हरि दर्शन ना पइहै रे।
सुई के छोटे नाका मां जब, हथिया ठाढ़ समइहै रे।
आकाश बंद मूठी मां होइहै, मछरी का मगरु डेरइहै रे।
जियतै मुर्दा के व्यवहारा, माया ते बचि जइहै रे।
रूप अनूप महबूब के साथ, सदा सोई रहिहै रे।
तिरदेवन की जहाँ नहीं गमि, तहाँ बास अब होइहै रे।
अब वा छबि ना ओझल होइहै, निरखि-निरखि सुख पइहै रे।
सुज्जन के हित कहरा गावा, साकठ बूझि न पइहै रे।
कहि सोधी बिन बूझे कहरा, परा नरक मां रहिहै रे।।

(2) जग मां भरम पसार बहुत है, कैसे बचना होई रे।
ध्यान लगाइ सुनौ हो सुज्जन, अब मैं भाखों सोई रे।
भगति की रेल भजन करु पहिया, डीजल तत्तु भराई रे।
चाँद सुरज अैसे सम करिये, जैसे पटरी भाई रे।
मालिक दया टिकट लै बैठो, पहुँचो दिल्ली जाई रे।
राम दया बिन बैठेउ नाहीं, पार न कोऊ जाई रे।
बैठे रहो रेल मां जो तुम, पहुँचो दिल्ली जाई रे।
उतरि परो तो कैसे पहुँचो, कहु मोसो समुझाई रे।
समुझि बूझि कै गाड़ी मां बैठेउ, सबु ना दिल्ली जाई रे।
जौनि जहाँ की गाड़ी होइहै, तौनि तहैं लै जाई रे।
रस्ता मां स्टेशन मिलिहैं, जहाँ जगमग जगमग होई रे।
बैठे रहेउ ना धोखा खायो, या ना दिल्ली होई रे।
भेखी का जो पल्ला पकरौ, तोहि नरकै पहुँचाई रे।
जो सतगुरु का पकरै पल्ला, तबहीं दिल्ली पाई रे।
संतन की जो है रजधानी, दिल्ली ताहि बताई रे।
परम पुरुष तहाँ आपु विराजै, शोभा बरनि न जाई रे।
सुज्जन है संतन का प्यारा, वहिते कुछु न छपाई रे।
जो सुज्जन का संघ बसाओ, होई तोरि कमाई रे।
सुज्जन से कुछ नहीं छपाया, दीन्हा खोलि बताई रे।
कहि सोधी जो साकठ होई, कहरा बूझि न पाई रे।।

(3) गहु गहु भाई चूकै नाहीं, शील क्षिमा का जाई रे।
ज्ञान विवेक धीरज संतोष, और दीनता भाई रे।
शिव ब्रम्हादिक ना गहि पाई, नाहीं विष्णु कन्हाई रे।
रामचंद्र सुर नर मुनि रूरे, गुरु से संतन पाई रे।
राम दरस संतन ही पाया, तिनकी सरि कोऊ नाहीं रे।
जम का जालु छड़ाया सोधी, कै संतन सेवकाई रे।।

(4) पंथु चलावै भेखु बनावै, ज्ञान की भाखै भइया रे।
अन्धेन का परमोधि कै मूसै, ई सब आंय ठगइया रे।
पोथी पढ़ि-पढ़ि ज्ञानी होइगे, बूझि न अक्षर पइया रे।
खोलि दुकान करैं ई उद्यिम, खाते फिरैं मलइया रे।
बगुला भगत हवैं ई सगरे, मछरिन घात लगइया रे।
मान सरोवर इन ना देखी, इनकी पहुँच तलैया रे।
ऊपर से देखै मां उजले, भीतर मैलु भरइया रे।
राम राम ई मुख से बोलैं, अन्दर कपट रहइया रे।
हरि तो हैं अंतर के जानी, उनते कुछ न छपइया रे।
भूलि जाई तब सब ठग विद्या, जबही होइ धुनइया रे।
चित्र गुपित्र लखैं गति मन की, लेखा सब होइ जइया रे।
एक एक का होई नियाऊ, बचि ना कोई पइया रे।
ताते छाड़ि देउ ठगियाई, येहिते जलम नसइया रे।
बंद दुकान करौ धोखे की, कसम राम की खइया रे।
जब से श्रष्टि भई है तब से, अवगुन लाख करइया रे।
सतगुरु साहेब दया के सागर, देहैं पार लगइया रे।
यह सुनि सोधी के मन भाये, आनि देव विसरइया रे।
सतगुरु चरन गहे द्रढ़ता से, राम दरस तब पइया रे।।

“कुमिता के अंगों का वर्णन”

(5) पाँच इन्द्रिन के पायक पचीसा, टिशुना मोह लोभ अरु आशा।
अहंकार आहूँ अभिमाना, भय संशय अचिरिज अरु कामा।।
आलस नींद औ भरम अशंका, ममिता मय औ सोग अचम्भा।
चंचलाई क्रोध अरु मनसा संघा, तीनिउ गुन कुमिता के अंगा।।

पद

(6) किरखी कै कै हरदम खाया, नहीं बुढ़ापा आया।
मदिरा मांस भांग नहिं खाई, काहुइ नहीं सताया।।
बार स्वेत भये संतन लक्षण, मुख पर तेज समाया।
मांजि मांजि दर्पन उजलाया, मजलिस देखि परम सुख पाया।।
सतगुरु ऊपर तन धन वारा, पाखण्ड तोरि बहाया।
ज्ञानसिंह अस दास कहाये, तब दासी भई उनकी माया।।
सतगुरु चरन पलक नहिं टारे, अपना शीश चढ़ाया।
कहि सोधी अब टूटा टूटा, आवागवन मिटाया।।

(7) राग द्वेष की गठरी लीन्हे, फूले नहीं समाये हैं।
उनकी हती अवरदा पूरी, नाहक पाप कमाये हैं।।
भेखिन मिलि षड़यंत्र रचाया, या थी प्रभु की माया।
जब गई गोली मारी उनके, तब थी निर्जिव काया।।
पाप के भागी बने अभागी, सामति लिहेनि बुलाये।
जौने कारण मूड़ मुड़ाये, तौने दुखु आगे पाये।।
पापी जेहिका समुझति मारा, सो भव सागर गया तरी।
कहि सोधी सुनि लेउ घोषणा, भेखिन का अब जानि परी।।

(8) झूठे गुरु कैसे दीन भये, कौने करम मलीन भये।
कूबड़ कारण गुरु दीन भये, पाखण्ड थापि मलीन भये।
पाखण्डी के आधीन भये, सोई अंत समय गमगीन भये।
हैलट मां भर्ती जाइ भये, तब सेखी सारी भूलि गये।
जम दूतन प्राण निकारि लिये, औ घोड़ा तन मां पहनि दिये।
बिन करनी के जो-जो सन्त भये, उनके ऐसे ही अंत भये।
जग में बहुतेरे चंट भये, तिनके ही कारण पंथ भये।
कहि सोधी पंथ सब कंट भये, पंथी सारे ही असन्त भये।।

(9) पाखण्डी है बड़ा कसाई, कोटिन जलम नसावैगा।
तोरे अंतर की जो जानी, पास नहीं बैठावैगा।।
जेहिका संतन मने किया है, तौनुइ नामु जपावैगा।
सांचा नाम रटै ना जिभ्या, निरखि निरखि तेहि पावैगा।।
खुद तो परा हवै चौरासी, चेला कौन बचावैगा।
मान बड़ाई मां है भूला, जमु तोहिका समझावैगा।।
अबहूँ चेतु समय बहुतेरा, नाहीं तौ पछतावैगा।
करि सतसंग सेउ सतगुरु का, वोही पार लगावैगा।।
पाखण्डी का बुरा हवाला, पाछे भार लदावैगा।
कहि सोधी साहेब की छवि का, पाखण्डी ना पावैगा।।

(10) ग्रन्थ पंथ धन धाम अरु नाते, जप तप संजम कामु ना आते।
पुरान कुरान जौन फरमाते, सो करने में क्यों सरमाते।
दान पुन्नि नहिं कुछु करि पाते, जब चलती है जम की लाते।
जम के लोगवा भरम बढ़ाते, आपु फंसे फिर सबै फंसाते।
जो प्रतिपालै ताहि भुलाते, जो बोरै तेहि शीश नवाते।
दुनिया बूड़ी खोज कराते, रहे पूजते और पुजाते।
ईश तत्व का जब गहि पाते, सोधी तबहीं दास कहाते।

(11) खसम छाड़ि जे करती यारी, सोई हवें छिनारी।
खसम न इनका चाहै कबहूँ, राखै इनका न्यारी।
ब्रम्हा विष्नु महेश यार हैं, इनते सब संसारी।
रामचंद्र सुर नर मुनि सारे, छाड़ौ इनते यारी।
जो तुम इनते यारी करिहौ, छूटि जाई ससुरारी।
खसम की होई वहै पियारी, जो नहिं आन निहारी।
खसम छाड़ि जो औरे ध्यइहौ, होइहौ बहुत भतारी।
वैश्या के सम मारी फिरिहौ, कोऊ न पार उतारी।
पती बरतु गहै राम का, सो पतिवरता नारी।
लोक लाज कुल की मर्यादा, झूठी हैं ई सारी।
घूँघुट टारै छतिया लावै, सोई पिया पियारी।
नैनन काजर का भया दीन्हे, पिया नहीं चाहा री।
सेज पिया की सो रहै, नहिं होय निनारी।
यहिते आगे को कहै, गति नहिन हमारी।
सो कोरवा मां लै परी, जो घूँघुट टारी।
लोक की लाज निवारी सोधी, तब ही हवै कहारी।।

(12) अंधे का अंधै पतियाई, डिठियारा नजदीक न जाई।
बोरन वाला खाय मलाई, तारन वाला गारी पाई।
जब लग सुमिता ना घट आई, तब तक जिउ की नहीं भलाई।
सुमिता जब तक नाहीं आई, कुमिता तब तक नाहीं जाई।
मन एकुइ दुइ कहाँ समाई, खूब बिचारि कै देखौ भाई।
विमुखन संघ बैठे दुखदाई, सुज्जन संघ रहियो लपिटाई।
जो विवेक की आंखी पाई, सो काहे अंधे पतियाई।
कहि सोधी हम सत्य बताई, या नाहीं है निंदा भाई।

(13) जानकार समरथ हौ नाथ, तुमसे छिपी न कोई बात जी।
मेरे अंतर की तुम जानौ, परगट काह बखानौ जी।
बिसरैं नाहीं चरन तुम्हारे, रहौं दीनता धारे जी।
चरन छाड़ि कहुं नहीं ठिकाना, यह मन निहचै आना जी।
अैसी दाया दया निधान, हम पर कीजै आन जी।
चित्त रहै चरनन मां लागा, रहौं दीनता पागा जी।
पहले किया कांच ते लोहा, अब लेओ अपनाय जी।
बिनती करना मैं नहिं जानों, सो मोहिं देउ सिखाय जी।
जगु स्नेही होइ गया बैरी, झूठा यहु संसार जी।
मन चाहा व्यवहार कीजिये, परा तुम्हारे द्वार जी।
जे जे सरनि तुम्हारी आये, तिन्हैं उतारा पार जी।
कहि सोधी अबकी ना बूड़ौं, अबकी लेउ उबारि जी।

(14) सुनु गोहूँ के मामा, तुमसे सरी न हमरा कामा।
तुम रहि जइहौ परे खेत मां, गोहूँ पहुँची धामा।
भेष धरा तुम जैसे गेहूँ, मगर भिन्न हो मामा।
देखति ही पहिचानि उखारै, तुमका चतुर किसाना।
गेहूँ जानि किसनवा मूरुखु, सींचै सेवै तुमका।
तुम्हरी सेवा का फल देखो, हाथ न आवै किनका।
सोधी तिनका सेवै सींचै, सन्त कहति हैं जिनका।
पाखण्डी तो नल तन नासै, आंखि न देखै इनका।।

(15) अब काहे मनुआ बिलम करै।
मानुख तन नइया है पाई, भवसागर काहे न पार करै।
बहुरि न नल तन जल्दी पइहै, फिर चौरासी मांहिं परै।
काम क्रोध हैं गले की फांसी, तिनका काहे न दूरि करै।
माया मोह की है गति वोही, इनते तीनिउ देव डरै।
माया मां काहे लपिटाना, जो साहेब ते दूरि करै।
बड़ा सुभागी कहिये सोई, जो ना यहिके फंद परै।
जो तू गहै सरनि साहेब की, चित्त चरन मां जाय डिढ़ै।
तो ना होइहै अवगति तेरी, अगिलइया मां नहीं जरै।
यह माया बिखम बयारि हवै, तोहिका यहै डोलाये फिरै।
ठहरि सका है सोई सोई, सतगुरु जेहिकी बांह धरै।
हरि नाम सुधारस छाड़ि अरे, तू नाहक छाछ की आस करै।
है लाज तुम्हारे ही हांथों, तू चाहै तो सब काज सरै।
तू चाहै तो पार करै, तू चाहै तो सितम करै।
गरभ वास दुःख भूलि गया क्यों, काहे न कोई उपाय करै।
सतगुरु की जो सरनि मिलै, तो बाधा कोई नहीं परै।
सोधी कहै विलम ना करु अब, करना है सो वेगि करै।।

(16) अब चली बिलइया हज्ज करै।
नौ सौ चूहा अब तक खाये, सूझि न वहिका कुछौ परै।
जेहिकी गिजा रहे हों चूहा, सो तिनका अब ना पकरै।
अब चूहन से मतलब नाहीं, अब नाहीं वा पापु करै।
अब खाती छकि दूध मलाई, सब लीन्हे गोदी मांहिं फिरै।
चूहा फांस हवै माया की, इनते इच्छा नहीं भरै।
अब ना फंसै फैल मां मनुआ, भगति करै औ रहै घरै।
मालिक के जब भई भरोसे, सब कुछ मिलता हवै दरै।
मालिक के बल बिल्ली फूलै, कूकुर का वा नहीं डरै।
अब नाहीं है ताकत जग की, जो यह वहिका बाँधि धरै।
पाइ गई है मंजिल अपनी, अब आई है लौटि घरै।
मालिक कुकुरै डाँट लगाई, कूकुर नीचा शीश करै।
कहि सोधी कुकुरा भया साथी, अब नाहीं वहु घात करै।।

(17) जो कोउ काहुइ जीव न त्रासै, मांस मछरिया नाहीं खावै।
भाव दीनता का ना छाड़ै, दाया धरम नहीं विसरावै।।
अपन विगान अंश पहिचानै, गफलत नाहीं लावै।
इतनी बातैं जो कै जावै, सो फिर निहचै नल तन पावै।।
अगर कहूं भक्ती कै पावै, संतन संघ बसावै।
आवागवन नहीं फिरि होवै, परम पुरुष का पावै।।
सोई जग मां सन्त कहावै, कृपा करैं तेहि राम मिलावैं।
ते पुरुषन कै संशौ नाहीं, जर जूड़ी ना आवै।।
मध्यम होय निगाह न तिनकी, बार श्वेत होइ जावैं।
काया विरध होय ना तिनकी, मरति बेर दुखु नाहीं पावैं।।
जगु के बरत करैं ते नाहीं, तीरथ नाहीं जावैं।
कथा सुनै उइ नाहीं जावैं, नाहीं भेखु बनावैं।।
पाथर पीतरि मुरति न पूजैं, छाप तिलक नहिं लावैं।
ते घरु छाड़ि न भटकैं दर दर, नाहीं पंथु चलावैं।
अंधरे काने उइ ना होवैं, किरिआ नहीं बनावैं।
यों सुज्जन उपदेश मीता का, सोधी गाइ सुनावै।

(18) हरि चरनन मां लागु रे, या जग के निकटै ना आवै, दूरि दूरि तू भागु रे।
दाँउ मिला है तोहिका पूरा, अबकी बेर तू जागु रे।
सतगुरु धोबिया का मिलु जाई, छूटि जायेंगे दागु रे।
जेहिके संघु उबारा तेरा, ताही के संघु लागु रे।
सतगुरु सेवा पइहै मेवा, सो सुमिता सो पागु रे।
बिन विवेक ना अबकी बूड़े, चीन्हौ हंसा कागु रे।
बूझि भये अब चूकेउ नाहीं, निसदिन काढ़ेउ तागु रे।
ज्ञान कुल्हारी लै बन काटै, आंबु लगावै बागु रे।
भये सुहागिन होरी खेलउ, गाओ पिया संघ फागु रे।
सखियन के संघ मंगल गाओ, उपजै अनहद रागु रे।
दावादारी छूटि जांय सब, त्यागु द्वेष औ रागु रे।
कहि सोधी जब मंतर पावै, का करिहै तब नागु रे।।

(19) बिन जोहद का जो कोई खाई, तेहि पर आगे होई लदाई।
खर महिखा औ बैलु बनाई, तब किरखी ते कौन बचाई।
अबकी करि लेओ गुरुवाई, खाओ कचौरी और मलाई।
भूसा मिली खाय का भाई, तब को करी सहाई आई।
यहिते किरखी ले अपनाई, उर मां दाया लेउ बसाई।
दुर्लभ नल तन ना ठगि जाई, तजि गुरुवाई करु सेवकाई।
किरखी दाया औ सेवकाई, इनका जो रहिहै अपनाई।
जमु के फंद नहीं सो आई, सोधी के या निहचै आई।।

(20) माया का यहु मोह करति है, संतन के संग द्रोह करति है, चाहति है अविनाशी देखो।
भरम की भीति उठाय रहा है, पाखण्ड में भरमाय रहा है, करता है बदमासी देखो।
छल बल कै कै खाय रहा है, मानुख जलम नसाय रहा है, आगे है चौरासी देखो।
हमने सारी दुनिया छानी, जेहि जाँचा पाया अभिमानी, जग से भई उदासी देखो।
एकु रोवां की छवि है ऐसी, कोटि भानु की नाहीं जैसी, ऐसा है अविनासी देखो।
सुख दुःख आता जाता रहता, हरिजन हरि ही माता रहता, पायी सुख की राशी देखो।
तन की करनी मन से करता, मन की करनी तन से करता, ऐसी उलटवासी देखो।
घट ही में रहता अविनासी, तीरथ पाहन जल की राशी, मूरुख जाते काशी देखो।
मूल छाड़ि शाखा का ध्यावै, गाये बजाये भगत कहावै, अंत काल जमु फांसी देखो।
इन्दो पन्नो सहजी ध्याये, जिन जिन ध्याये परम पद पाये, सोधी लगाये आशी देखो।

(21) आजु मैं संतन के गुन गइहौं।
सन्त है कौन असन्त कौन है, साँचै साँच बतइहौं।।
सन्त कबीरा पीपा नामा, धरमदास बलि जइहौं।
मीराबाई इन्दो सहजी, पन्नो के गुन गइहौं।।
भये हिमंचल गिरि हैं संता, बेनीराम बतइहौं।
इन्द्रजीत के गुरु थे पहली, रामदीन सिर नइहौं।।
नान्हू लोध बदन सिंह ठाकुर, संतन मांझे पइहौं।
गोरख भरथरी गोपी चंदा, सुल्तान शाह सिर नइहौं।।
दादू बेहना पोजा जुलाहा, इनहूँ के गुन गइहौं।
सोई सधन कसाई सेनी, तिनकी सरनै जइहौं।।
रूपन बलनऔ शाह हुसैनी, महिमी कुंजरिन ध्यइहौं।
रामानंद और जगजीवन, इनके निकट न जइहौं।।
गदहा पूजै के फल ई हैं, परी दुलत्ती रोइहौ।
मूरख पूजे पाखण्डिन का, मैं ना लातैं खइहौं।।
मीता जैसा पैगम्बर कोई, बड़े भागि ते पइहौ।
यहिते सोधी अब ना भरमै, याही बल डहकइहौं।।

(22) भेखी गुरु का घोड़ा बहुत पियारा, चेलिन संग खूब कीन्ह छिनारा।
आँखिन देखा सगुन दिदारा, तानि कै कोड़ा जांघ पै मारा।
मालिक कीन्हा औसाफ करारा, बत्तिस दिन तड़फाई कै मारा।
भूली गुरुवाई गया भूलि छिनारा, घोड़ा होय जब चरा बिचारा।
कहि सोधी तुम करो किनारा, दूलभ नल तन करौ न ख्वारा।।

(23) पाँच तत्व के सकल शरीरा, तहाँ अलख का बासा रे।
पंच विषय वश जीव है अंधा, कैसा अजब तमासा रे।।
पाँच हैं राजा पाँच हैं दासी, सबै जीव का गांसा रे।
पांचो का परपंच बुरा है, सबने मिलकर फांसा रे।।
काम क्रोध ते रहै निनारा, सोई काल ते बाचा रे।
पाखण्डिन का नहीं उबारा, मारै काल तमाचा रे।।
कनफुकवा ते न्यारे सतगुरु, जिनका चौथे बासा रे।
कहि सोधी तिन सतगुरु जाना, चरन कवँल जहँ आशा रे।।

आरती

(1) आरति करना गुरु से सीखै, गुरु की कृपा अलख भरि दीखै।
रहनि गहे सब कारज सीझै, सतगुरु रीझे साहेब रीझै।
साहेब से विनती यह कीजै, कुमिता हरिकै सुमिता दीजै।
मन चंचल का थिर कै लीजै, दर्शन भये सुधारस पीजै।
भूसी छाँड़ि तत्त गहि लीजै, कबहूँ न मरिहै जुग-जुग जीजै।
कहि सोधी आरति अस कीजै, धरती बरसै अम्बर भीजै।

रेखता

(1) कुमति को छाँड़ि कै, सुमति को धारिये, सतगुरु की रीझ तब होय भाई।
शीश का देइ कै, सतगुरु का सेइ ले, नाम नौका तब हाथ आई।
सुमेर को राई कै, सुई से नघाई कै, अगम मां पैठि तब पाई।
गुनन का छाँड़ि कै, मूल मां मांड़ि रहु, तब होय कुशलाई।
रहनी रहे रीझ भै, करनी कै हाथु लै, जेहि तीनि ना पाई।
सोधि सोधी कहै, मूल का जो गहै, तेहि कौनि कठिनाई।।

(2) संतन का शीश नवाइ कै, राम नाम ध्याइ कै, चरनन मां रहै लागा।
रैनि दिन लौ लाइ कै, हिरदै माहिं बसाइ कै, हरि वियोग तब जागा।
ब्रम्ह अगिन उदगारि कै, अंतर पर जारि कै, करमन का जारु जारा।
कुमति को त्यागि कै, सुमति मां पागि कै, निपट अधीन होय रहै ठाढ़ा।
शीश विहीन होय, सरनि मां लीन होय, गुरु का आशीष पावा।
सतगुरु की रीझ भई, खोलि खिड़की दई, साहेब का तब दरस पावा।
कोटि भानु का जोरि कै, ऐसी छवि देखि कै, जगत का सुख नहीं भावा।
देखि सोधी कही, कही सो सब सही, निंदक का मुँह होय काला।

मंगल

(1) अरे अरे हनुमत बीर, हरौ मेरी पीर हो। कहो कौनि कीन तदबीर, गयेउ हरि तीर हो।
पवन हमारे पित्र, भयेउँ मैं बानर हो। सूरज मैं खा जाऊँ, शक्ति का सागर हो।
पुन्निन के परताप, शक्ति बहु पाई हो। बचपन में भई भूल, श्राप मिला मोहिं भाई हो।
विसरि गया बलबूत, हमारा भाई हो। बालापन गया बीति, जवानी आई हो।
राम नाम मन लाये, नहीं विसराये हो। संस्कार भये पूर, राम बन आये हो।
हम नहिं देखे राम, नहीं पहिचाना हो। कीन जाय पड़ताल, धरा द्विज बाना हो।
लागेन पइयाँ राम, जबै हम जाना हो। आँखिन जब हम दीख, तबै मन माना हो।
जो-जो आज्ञा कीन्ह, हम रहे बजाई हो। वापस पाई शक्ति, कृपा रघुराई हो।
जे-जे आये सरनि, प्रभु माना उन भाई हो। प्रभु के कारन सब सुख त्यागै, सो है लक्षिमन भाई हो।
विपति परै जो भाई पर, राम दुखी होइ जाई हो। छिन मां टारै विपति, बिलम नहिं लाई हो।
भया भरोसा राम, राम बल पाई हो। प्रभु का हुकुम मिला मोहिं जबही,लै पर्वत उड़ि आई हो।
अभिमानी रावण प्रभु मारा,पाखण्ड दिया विदारी हो। पाखण्डिन मां फंसा विभीषण, तेहिका लीन उबारी हो।
सीता अम्मा जग की, राम की दासी हो। रावण के दोऊ कुल बोरे, सीता होइ गई फांसी हो।
छकित भये तिन सबके नैना, राम निहारे हो। ऐसे राम मिले हनुमाना, सोधी तिनहि सहारे हो।।

(2) पिउ बसै अगम अटरिया, कैसे पावउँ हो।
बिनु सीढ़ी बिनु भेद, मैं कैसे जावउँ हो।
बिनु दीदार चैन है नाहीं, जरते तपनि बुझावउ हो।
गात होय मोरा शीतल, प्रीतम छतिया लावउँ हो।
करु पाँचों का बाँस, तत्व की कीली हो।
जड़ो पचीसों डंडा, बनाओ सीढ़ी हो।
लै सीढ़ी हरि नामु, तुम चढ़ौ अटारी हो।
दूजा नहीं उपाय, ऊँचाई भारी हो।
सहजे मिली अटरिया, जहँ विरली जइया हो।
सखियन भेद बताये, परिउँ जब पइयाँ हो।
गइन पिया की सेज, भया सुख भारा हो।
प्रीतम छतिया लाये, घूँघुट जब टारा हो।
एकु-एकु रोवां कोटि भानु सम, प्रीतम न्यारा हो।
तीनि देव याही छवि का, पाये नहीं दिदारा हो।
मिटि गइ तन की ताप, गात भया शीतल हो।
कहि सोधी अब गारी छूटी, अब गाऊँ मंगल हो।।



गोपालपुर, अढ़ेना, जिला-फतेहपुर



परिचय
सन्त सुझारी साहेब

सन्त सुझारी साहेब का जन्म फतेहपुर जनपद में बिंदकी तहसील के अंतर्गत तेंदुली नामक गाँव के एक धोबी परिवार में हुआ था। आपके माता-पिता का नाम ज्ञात नहीं हो सका। आपके उदय अथवा मोक्ष का लेख भी कहीं से प्राप्त नहीं हो सका, किन्तु मीता साहेब के लेख "परम ग्रंथ" में आपके लिए सन्त मीता साहेब ने लिखा है कि

दास सुझारी धोबिया कहाँ हती कुल नाई।
सहज परम पद पाइयां, तहँ सिव ना जाई।। {पृष्ठ 254 परम-ग्रन्थ से}

यानी कि संसार में धोबी जाति को नीचा मानते हैं, फिर भी सुझारी साहेब ने ब्रम्ह को प्राप्त किया। आपकी समाधि आपके गाँव से लगभग 12 किलोमीटर दूर ग्राम गोपालपुर अढ़ेना में गाँव के उत्तर-पूर्व एक ऊँचे स्थान पर बनी हुई है। समाधि पर वार्षिक सत्संग मेले का आयोजन वैशाख शुक्ल पक्ष पंचमी व षष्ठी को संगतियों द्वारा किया जाता है। समाधि से कुछ दूरी पर एक बारादरी का निर्माण जरहा हरदोई निवासी स्वर्गीय मूलनारायण मास्टर के आर्थिक सहयोग व संगतियों द्वारा श्रम सहयोग से सन् 2013 में सम्पूर्ण कराया गया था। आपके दो पद संगतियों द्वारा प्राप्त हुए हैं।

समाधि प्रांगड़ की भूमि देव स्थान सधारी बाबा, ग्राम-गोपालपुर, परगना-कोटिया गुनीर, तहसील-बिन्दकी, जिला-फतेहपुर के नाम खतौनी पर दर्ज है। जिसकी गाटा संख्या-847 व खाता संख्या- 00567 (रकबा-0.4420) लगभग ढ़ाई बीघा (फतेहपुर जनपद के अनुसार) है। इस भूमि पर ग्राम जरहा हरदोई निवासी रामस्वरूप मौर्य व उनके पुत्र धीरज मौर्य एवं रामप्रताप जैतपुर निवासी और संगतियों के सहयोग से वृक्षारोपण का कार्य किया गया है। उपरोक्त स्थल को भव्य एवं सुन्दर बनाने के उद्देश्य से जिला-फतेहपुर के संगती समय-समय पर आकर आर्थिक एवं शारीरिक श्रम-दान करते हैं। उपरोक्त समाधि-स्थल को विकसित करने तथा संगतियों में आध्यात्मिक ज्ञान का प्रचार-प्रसार करने के लिए सन् 2015 ई० में एक माह व सन् 2018 ई० में चार माह की महासभा का आयोजन एवं उपरोक्त स्थल के सारे कार्य आदरणीय सन्त गुरुनारायण कुशवाहा जी की देख-रेख में सम्पूर्ण कराये गए। उपरोक्त सभा में सम्मिलित लोगों के नाम अगले पृष्ठ पर लिखे गए हैं। 10 सितम्बर सन् 2021 को समाधि स्थल तक बिजली पहुँचाने का कार्य बूजी कुशवाहा द्वारा कराया गया। इससे पूर्व सन्त मीता साहेब, सन्त बदन साहेब, सन्त नान्हू साहेब और सन्त गुरुनारायण कुशवाहा साहेब के समाधिस्थलों तक बिजली पहुँचाने का कार्य भी आपके सहयोग से ही पूर्ण कराया गया है।

पद

(1) मैं कैसे धोऊँ मन का मैलु न जाय।
मैं कैसे धोऊँ मन का मैलु न जाय।
गाँव गढ़ैया का ढाबर पानी, धोबिया चिकनिया गुदरी पुरानी।
मैं कैसे धोऊँ मन का मैलु न जाय।
सतगुरु कूंड़ी मां सौंदनि कै लेऊ, सब संतन मिलि डारा है धोय।
मैं कैसे धोऊँ मन का मैलु न जाय।
धोय धाय कै धरनि निचोई, लागति मोगरा कस-कस होय।
मैं कैसे धोऊँ मन का मैलु न जाय।
दास सुझारी भागि गुदरी की, मिलिगे हैं सतगुरु छुटिगे हैं दागु।
मैं कैसे धोऊँ मन का मैलु न जाय।

(2) राम रामै धोबिया जन हौं तेरा, तू साँचा साहेब मेरा।
कपरा पाँच पचीस रंग के, ता में मैलु घनेरा।
ओछा पानी साबुन खोंटा, केहि बिधि होय निबेरा।
रेहू सेरानी लेड़ी सेरानी, होइ गइ सांझिलि बेरा।
गाँव के महतौ परपंच ठाना, किया किसनवा अड़ेरा।
का धोऊँ का मागउँ धोवउनी, छूटति आवति खेरा।
कच्चा सूत अरझि अरझाना,जुगन जुगन अरझेरा।
दास सुझारी सरनै आए, जलम जलम के चेरा।

।। दोहा।।

आठ खण्ड नौ दीप मां भूखा रहै न कोय, दास सुझारी तब झखैं जो सतगुरु धनी ना होय।

सन् 2015 की प्रथम महासभा में उपस्थित संगतियों का नाम व पता

सन्त गुरुनारायण कुशवाहा साहेब, उन्नाव			
(1)	श्रीमती गुरदेई कुशवाहा उन्नाव	(16)	श्री हरिनाम मौर्य समसपुर हरदोई
(2)	श्री सत्यनारायण कुशवाहा (सोनी) उन्नाव	(17)	डॉ० महेश प्रसाद जगेसिया, हरदोई
(3)	श्री सरजूप्रसाद यादव सिवराजखेड़ा उन्नाव	(18)	श्री संतोष मौर्य लखनऊ
(4)	श्री देवशरन बरवट उन्नाव	(19)	श्री राजकरन राठौर लखनऊ
(5)	श्रीमती दुलारा बरवट उन्नाव	(20)	श्री रामप्रसाद भानपुर लखनऊ
(6)	श्रीमती रामदेबी बरवट उन्नाव	(21)	श्री दयाशंकर भानपुर लखनऊ
(7)	श्रीमती रामरती बरवट उन्नाव	(22)	श्रीमती सरोज दिल्ली
(8)	श्रीमती शान्ती भवानीखेड़ा उन्नाव	(23)	श्री श्यामसुन्दर शुक्ला दिल्ली
(9)	कु० शिखा कुशवाहा (सचिन) उन्नाव	(24)	श्री रामकिशोर प्रजापति धनसिंहपुर फतेहपुर
(10)	श्री रामलखन कुशवाहा करियाखेड़ा उन्नाव	(25)	श्री अमरजीत प्रजापति सरकी फतेहपुर
(11)	श्री हरीशंकर यादव बरवट उन्नाव	(26)	श्री रामबहादुर प्रजापति कंधिया फतेहपुर
(12)	श्रीमती राधा शुक्लागंज उन्नाव	(27)	श्रीमती दिहुली प्रजापति सुसवन फतेहपुर
(13)	ठा० मदन सिंह दीननगर हरदोई	(28)	श्री रामविशाल प्रजापति सुसवन फतेहपुर
(14)	श्री रामनारायण राठौर दीननगर हरदोई	(29)	श्रीमती रामपती गाँधी बनर्सी फतेहपुर
(15)	श्री सतपाल मौर्य जरहा हरदोई		

सन् 2018 की द्वितीय महासभा में उपस्थित संगतियों का नाम व पता

सन्त गुरुनारायण कुशवाहा साहेब, उन्नाव			
(1)	श्रीमती गुरदेई कुशवाहा उन्नाव	(17)	श्री रामऔतार जगतीखेड़ा लखनऊ
(2)	श्री सत्यनारायण कुशवाहा (सोनी) उन्नाव	(18)	ठा० मदन सिंह दीननगर हरदोई
(3)	श्री देवशरन बरवट उन्नाव	(19)	कु० दिव्या सिंह दीननगर हरदोई
(4)	श्रीमती दुलारा बरवट उन्नाव	(20)	श्री सतपाल मौर्य जरहा हरदोई
(5)	श्रीमती रामदेबी बरवट उन्नाव	(21)	श्री रामस्वरूप मौर्य जरहा हरदोई,कोटकपूरा पंजाब
(6)	कु० शिखा कुशवाहा (सचिन) उन्नाव	(22)	श्रीमती राजपुत्री जरहा हरदोई
(7)	श्रीमती राधा शुक्लागंज उन्नाव	(23)	डॉ० महेश प्रसाद जगेसिया, हरदोई
(8)	श्री पवन बरवट उन्नाव	(24)	श्रीमती निर्मला मिश्रा बरईगढ़ कानपुर
(9)	श्रीमती आशा हसनापुर उन्नाव	(25)	श्री रामकिशोर प्रजापति धनसिंहपुर फतेहपुर
(10)	श्री सचिन वर्मा शुक्लागंज उन्नाव	(26)	श्री रामभरोसे जिंदपुर फतेहपुर
(11)	श्रीमती सरोज दिल्ली	(27)	श्री राम विशाल सुसवन फतेहपुर
(12)	श्री श्यामसुन्दर शुक्ला दिल्ली	(28)	श्रीमती दिहुली प्रजापति सुसवन फतेहपुर
(13)	कु० तमन्ना दिल्ली	(29)	श्री रमेश प्रजापति(टिर्रा) बनर्सी फतेहपुर
(14)	श्री संतोष मौर्य लखनऊ	(30)	श्री अमरजीत प्रजापति सरकी फतेहपुर
(15)	श्री मुन्ना राठौर लखनऊ	(31)	श्री इन्द्रपाल मनावाँ फतेहपुर
(16)	श्री राम कुमार राठौर लखनऊ		

(1) श्री अमरजीत सरकी फतेहपुर (2) श्री इन्द्रपाल मनावाँ फतेहपुर, (3) श्री सचिन वर्मा शुक्लागंज उन्नाव, (4) श्रीमती राजपुत्री जरहा हरदोई ये चारों संगती कुछ कारणवश 'महासभा' के बीच से ही चले गए थे।


समाधि
सन्तकेवल साहेब


'समाधि'
सन्तकेवल साहेब

परिचय
सन्त केवल साहेब

सन्त केवल साहेब का जन्म उन्नाव जनपद के पुरवा तहसील में एक हलवाई परिवार में हुआ था। बाद में आप रायबरेली जनपद के खीरों ब्लॉक के दुकनहा (दोकनहा) नामक ग्राम में आकर रहने लगे और अंत में वहीं पर देह त्याग दी। आपके जन्म का समय एवं माता-पिता का नाम ज्ञात नहीं है। आपके द्वारा लिखा गया एक पद प्राप्त हुआ है, जिसे आगे लिखा गया है। आप की समाधि के बारे में आपके वंशज-विनोद कुमार व अनूप कुमार पुत्रगण स्व० उमाशंकर (छोटे बाबा), दिनेश कुमार व राकेश कुमार पुत्रगण स्व० गयाप्रसाद (बड़े बाबा) को उनके पूर्वज बताते रहे हैं, कि पहले झील के किनारे आपकी देह रखी गई थी। बरसात में जब वहाँ पानी भर गया तो परिवार के लोगों को आकाशवाणी हुई, कि यहाँ पर पानी भर गया है और देह को यहाँ से निकाल कर दूसरी जगह रखो। जब समाधि खोली गई तो देह जैसे रखी गयी थी वैसी ही निकली, नाखून व बाल बढ़े हुए थे। दोबारा बाल बनवाकर, नहलाकर पुनः समाधि दी गई।

कुछ समय बाद व्यापारियों का एक काफिला वहाँ से निकला। काफिला जब समाधि के सामने था, उसी समय बहुत तेज बादल के साथ बारिश की संभावना बन गई। व्यापारी शक्कर व गुड़ पानी में भीगने के डर से समाधि के पास बैठकर प्रार्थना करने लगे- 'आप हमारी रक्षा करो नहीं तो हम बर्बाद हो जाएँगे।' बताते हैं, कि उतनी जगह छोड़कर, जहाँ व्यापारियों के साधन-वाहन खड़े थे, बाकी पूरे क्षेत्र में भीषण बारिश हुई। यह चमत्कार देख व्यापारी बहुत खुश हुए। बताते हैं, कि उन्हीं व्यापारियों ने धन जुटाकर किसी एक व्यक्ति की देख-रेख में समाधि का भव्य निर्माण करवाया। उसके बाद सन् 2001 में बड़े बाबा गयाप्रसाद ने समाधि का जीर्णोद्धार कराया। सन् 2020 में केवल साहेब के अनुयायी रामसेवक कुशवाहा ग्राम-दुकनहा निवासी के पुत्र चन्द्रभान कुशवाहा द्वारा समाधि का पुनः जीर्णोद्धार, सुन्दरीकरण एवं वृक्षारोपण का पुनीत कार्य कराया गया। आपकी समाधि पर प्रत्येक वर्ष भाद्रपद कृष्णपंचमी व षष्ठी को निर्गुण वाणी-वचन पर आधारित सत्संग मेले का आयोजन होता है तथा आप के निर्वाण दिवस पर कुवाँर (आश्विन) कृष्णपक्ष तीज को दंगल व बड़े मेले का आयोजन होता चला आ रहा है। दूर दूर से लोग आकर सत्संग मेले का लाभ उठाते हैं।

पद

सन्त सो पहिचान अरे सठ ना किया रे।
खोजि साँचा नाम तू कस ना लिया रे।
पावता जो नाम साँचा हिरदय बिच राखता रे।
बाढ़ता जो प्रेम अखंड ता अमृत चाखता रे।
मिथ्या तेरा जनम अरे परदेसिया रे।
नाम है महंगे मोल तू कस ना लिया रे।
किया जल पाखान ऊपर दक्षिना रे।
करम फांसी लागि हरि सुमिरन बिना रे।
धनि धनि ओई साधु जो जियतै मुये रे।
छाड़ि कुल परिवार बेदावा भये रे।
और दूजा भेद अरे मैं ना कहा रे।
दास केवल नाम का सुमिरत रहा रे।।

समाधि
सन्त मलूक साहेब



परिचय
सन्त मलूक साहेब

सन्त मलूक साहेब का जन्म कौशाम्बी जिले के कड़ा नामक गाँव के खत्री परिवार में वैशाख कृष्णपक्ष पंचमी संवत् 1688 विक्रमी तदानुसार सन् 1631 ई० को हुआ था। सन् 2020 ई० में 'मलूकदास सेवा समिति' के अध्यक्ष शिवाकान्त पाण्डेय व उनके पुत्र विमल पाण्डेय के द्वारा ज्ञात हुआ, कि मलूक साहेब के माता-पिता सपरिवार पंजाब प्रान्त से उत्तर प्रदेश में कम्बल का व्यापार करने आये थे और फिर वह यहीं बस गये। आपके पिता का नाम लाला सुन्दरदास खत्री था। कड़ा धाम से प्रकाशित एक पुस्तक ''मलूक वाणी'' से आपके गुरू मुरारी जी का उल्लेख मिलता है, परन्तु गूढ़ तथ्यों के आधार पर ऐसा प्रतीत होता है कि आप सन्त बेनीराम साहेब के शिष्य थे। मलूक साहेब की भेंट सन्त बेनीराम साहेब, बरईगढ़ जिला कानपुर नगर निवासी से संवत् 1746 विक्रमी (सन् 1689 ई०) में हुई। इसका प्रमाण "मीता ग्रन्थावली" के एक पद से मिलता है-

बानी अगम हमारि है तुम सुनौ मलूका ज्ञान हो।
सुई अग्र एकु घाटु है तहँ जन बिरला ठहराय हो।।

पृष्ठ 51 परम-ग्रन्थ से

सन्त मलूक साहेब की ख्याति सुनकर तत्कालीन शासक औरंगजेब ने अपने सिपाही फतेह खाँ द्वारा आपको बुलावा भेजा। फतेह खाँ, मलूक साहेब के प्रवचन से प्रभावित होकर आपके पास ही रह गए और औरंगजेब को कुछ लाइनें लिख कर भेज दीं। जिन्हें पढ़कर औरंगजेब ने मलूक साहेब की बहुत प्रशंसा की। फतेह खाँ ने बाकी का सारा जीवन मलूक साहेब की सेवा में ही बिताया और अंत में वहीं देह त्याग दी। मलूक साहेब ने 108 वर्ष की आयु में अपना शरीर संवत् 1796 विक्रमी तदानुसार सन् 1739 ई० में त्याग दिया। आपकी समाधि कड़ा में ही स्थित है। आपकी समाधि के पीछे नानक चंद जी की समाधि व आगे की तरफ रामसनेही जी की समाधि है। मलूक साहेब की समाधि के पास ही फतेह खाँ जी की समाधि है। फतेह खाँ को मीरमाधव भी कहा जाता था। प्रत्येक वर्ष बैसाख कृष्ण पक्ष पंचमी को मलूक जयंती बड़े धूम-धाम से मनाई जाती है। आपके द्वारा रचित दोहे जो प्राप्त हो सके हैं, उन्हें आगे लिखा गया है।

दोहे

ज्यों सोने में गहना कहै मृतिका में घट मान। सीपी में रूपा तेऊँ जीव ब्रम्ह में आन।।(1)
जब पहिचानी लेझुरी भयो सर्प को नास। जानो अपने रूप को काह जगत आभास।।(2)
मो मन मधुकर थिर भया, श्री पद पंकज पाइ। गूंगा ज्यों रस चाखि के, मन ही मन मुस्काइ।।(3)
हाँक सुनी गजराज की, चौधाये बृजराज। गोली लागै पहिले ही, पीछे होत अवाज।।(4)
जा घर भगति न भागवत, सन्त नहीं मेहमान। ता घर जम डेरा कियो, जिय तेहि परो मसान।।(5)
मैं छूटी निर्भय भया, आई मन परतीत। धर्म कर्म सब छुटि गया, लागी हरि सों प्रीत।।(6)
जीती बाजी गुरु कृपा, माया मोह नेवार। कहैं मलूक यों हरि कृपा, भयो जो भौ जल पार।।(7)
सुखद पंथ गुरुदेव यह, दीन्ही मोहि बताइ। ऐसो केवट पाइ अब, जग मग चलइ बलाइ।।(8)
नमो नमो पुनि पुनि नमो, नमो पुरुष भगवान। अर्ध नाम जाके तरे, जल ऊपर पाषान।।(9)
सो बड़ भागी जानिए, जाके मन जिज्ञास। श्री गुरु ते उपदेश लहि, गहै भक्ति विस्वास।।(10)
रे मन सूता क्या रहै, उठि भजु चरन मुरारि। जैसे सपना रैनि का, तैसा यह संसार।।(11)
बँधो मोह संसार में, छूटौं कौन उपाइ। मोक्षार्थी ऐसे कहै, सतगुरु देहु बताइ।।(12)
नाभि बसै कस्तूरिया, मृग निज सुधि बिसराय। भ्रम सो तरु वैली सकल, ढूँढ़ै बन बन जाय।।(13)
अंत एक दिन मरहुगे, गलि गलि जैहैं चाम। ऐसी झूठी देह ते, लेहु न साँचा नाम।।(14)
पसु पंछी तिनते भले, जे हरि सुमिरत नांहि। जीवत हैं भूतन भजैं, ते नर नरकहिं जाहिं।।(15)
बार न बाँका जायगा, हरि की सरन दुआर। जुग जुग है हरि को विरद, भगत उधारन हार।।(16)
नमो जगत पति जगत गुरु, जगन्नाथ जगराय। जग जीवन जग हित करन, जग मनि सो जदुराइ।।(17)
दुइत भाव मन गहि रहो, कहुँ ठाकुर कहुँ दास। तेहि हित जिग्यासा करत, कहत मलूकादास।।(18)
जाति हमारी आत्मा, नाम हमारा राम। पाँच तत्व का पूतरा, आय किया विश्राम।।(19)
सब घट मेरा साइयाँ, दुतिया भाव विसारि। हित सो पूजा कीजिये, मन बच कर्म बिचारि।।(20)
आतम चीन्हा संसय छीना, समुझा तत्त बिचार। कंचन भूसन भूसन कंचन, कंचन है गिरधार।।(21)
प्रान पियारा पाहुना, धरि एक बिलवा आइ। करिहौं सेवा भली बिधि, ना जानौं कब जाइ।।(22)
ऐसी निहचै आनि जिउ, मन सो कहा बिचार। सब घट मेरा पीउ है, करदा संतन प्यार।।(23)
नमोनमो निरंजन निरंकार, ज्योति रूप जगदीश। निर्गुन निअंता गुन रहित, गुननिधि हरि त्रिगुनीश।।(24)
शब्द सरूपी पुरुष जो, करन करावन हार। जैसे का तैसा भया, अविगत अगम अपार।।(25)
राम नाम औषधि करौं, हिरदय राखौं यादि। संकट में लौ लाइए, दूर करै सब ब्याधि।।(26)
राम नाम एकै रती, पाप के कोटि पहार। ऐसी महिमा राम की, जारि करै सब छार।।(27)
जीवहु ते प्यारे अधिक, लागैं मोही राम। बिनु हरिनाम नहीं मुझे, और किसी से काम।।(28)
भजिले चरन मुरारि के, जीती सार न हार। कहैं मलूक हरि चरन बिनु, जनमि मुए कई बार।।(29)
भजिले मुरारी के चरन, तजि अहमेव अहंकार। कहैं मलूक याते अधिक, नाहीं और बिचार।।(30)
मुआ मुई को ब्याहता, मुआ ब्याहि कै देइ। मुए बरातहि जात है, मुआ बधाई लेइ।।(31)
मरना मरना भाँति है, जौ मरि जानै कोय। राम दुआरे जो मरै, बहुरि न मरना होय।।(32)
तरु वैली बन ढूंढहीं, सो भ्रम नित अधिकाय। जब थिर देखै आप में, तब वह भ्रम नसि जाय।।(33)
जो तै हूं ज्यों मृग भ्रमहिं, छाड़ि धरै हरि ध्यान। कहैं मलूक तौ सहज ही, पावै पद निर्वान।।(34)
सुनि श्रीगुरु के बचन, जिउ लागो करन बिचार। मन तारै मन बौरै, मनै उतारै पार।।(35)

पार उतारै जो जियत, मृतक दशा होइ जाय। नतरू याके संघ मिलि, भरमै गोता खाय।।(36)
मैं जाना मन मरि गया, तन करि डारा खेह। इस मन की परतीत क्या, मारे अनेक बिदेह।।(37)
श्रीगुरु ज्यों हरि को हृदय, छाया ही दरसाइ। तौ छाया को निरखि कै, कैसे मन पतियाइ।।(38)
हरि निर्गुन क्यों बरनिए, एक अनेक प्रकार। सोइ सब कुछ सब कुछ सोई, रहत सदा संसार।।(39)
जरा मरन आवागमन, पाप पुन्य संदेह। जन मलूक के धनि प्रभू, भ्रम काटी करि नेह।।(40)
जामें श्रष्टि सकल भई, गनित विकार विवेक। बहु प्रकार वह एक प्रभु, एक अपार अनेक।।(41)
प्रकति पुरुष त्रिगुनात्म, एकै अक्षर मांहि। कहैं मलूक अपरम्पार प्रभु, आपुहिं करहिं कराहिं।।(42)
प्रीतम राम संभारिए, मन बच कर्म बिचारि। मीत कन्हाई भगत का, भाखत बेद पुकारि।।(43)
जब यह मान बिसारि कै, धरै रूप निज ध्यान। तब मलूक हरि की कृपा, पावै पद निर्बान।।(44)
आदि निरंजन निरंकार, अविगति अलख अपार। ब्रम्हा खोजत थकि परो, लहो न ताकी पार।।(45)
यह समाज सब गुन में, साजि रचो नर देह। ब्रम्ह अंश जीव निरखि कै, मानो तासो नेह।।(46)
स्वामी नाथ महंत बहु, फिरत धरे बहु भेष। साहेब का बाना सबै, हरि सेवक कोइ एक।।(47)
घरी घरी हरि गुन रटत, गै सब बिघुन बिलाय। दास मलूक सुखी भए, श्री गुरु राम सहांय।।(48)
सोवत कृष्ण-प्रताप ते, जागत मरै बलाय। उपजा ब्रम्हानन्द सुख, दुःख सब गए बिलाय।।(49)
तीन लोक मां जानिया, बैठा भला सलूक। गुरु गोविन्द किरपा करी, भया मलूक मलूक।।(50)
हिरदै राम मन हरि बसै, रघुपति कीन्ह निबाहु। दास मलूका यों कहैं, भयो चोर ते साहु।।(51)
सुनत पतित हरि को विरद, अधम उधारन हार। अब कोऊ नहिं अटकि है, मोसों उतरो पार।।(52)
हरि भगतन के काज को, नेकु नहीं अलसात। जब गज को गाढ़ो परो, पाय पियादे जात।।(53)
साँचा सौदा राम का, सन्त संग बैपार। खोटा बनिज न कीजिए, पूँजी जात न बार।।(54)
राम सुमिरि रे मना, जो चाहत कुसलात। अटके जग जंजाल में, जन्म सिरानो जात।।(55)
बिन करनी पावै नहीं, सत चित ब्रम्ह बिलास। ताते भजिले ब्रम्ह का, अटल होइ विश्वास।।(56)
कारन में कारज नहीं, कारन कारज मांहि। अस्थित घट में मृतिका, मृतिका में घट नांहि।।(57)
पावै पद निर्वान सो, जीवन मुक्ति रिसाल। हरि संग हरि उर में रहै, हरि तेहि सदा दयाल।।(58)
प्रत्याहार अरु धारना, ध्यानौ ब्रम्ह समाधि। कहै मलूक जेहिते मिटै, सबै जगत उपाधि।।(59)
सुधि पाई सत्संग ते, काल रूप पर नारि। भूलेहु नांही कीजिए, परनारी सों प्यार।।(60)
यह माया छलि जाएगी, भजि ले हरि सुख रासि। दिना चारि इस जगत में, है सरांय का बास।।(61)
मन एकै है रूप दुइ, एक कनक एक नारि। दोऊ सेती प्रीति तजि, भजि हरि पद करु पार।।(62)
का गति कहौं मलूक की, अविगति अविधि सलूक। अगम अगोचर स्वामी, पूरन पुरुष मलूक।।(63)
सर्वव्यापक आतमा, सतगुरु दियो बताइ। अब क्यों पाती तोरिकै, प्रतिमा पूजौं जाइ।।(64)
राम नाम पूजा मेरी, सुमिरन मेरे राम। तीरथ गंगा आदि सब, मेरे हरि को नाम।।(65)
यह घट है घट की दरस, दस इन्द्रिय दस द्वार। तेहिके भीतर आहि मन, चंचल जल अनुहार।।(66)
सो थिर भए आतमा, गगन सदरस दिखाय। तासो दास मलूक कहि, रखिये मनहिं लगाय।।(67)
मन मुस्कायो निरखि जिउ, बोलो लहि आनंद। और रंग फीके सकल, सांचो है हरि रंग।।(68)
महिमा प्रेम भगति की, वरनौ काह विशेष। सो हरि देखो नैन भरि, जाके रूप न रेष।।(69)
राम नाम सुमिरत सबै, जगत भए भौ पार। आरति जग्यासी आरथी, ज्ञानी निरहंकार।।(70)
हरि को नाम जहाज है, जरनधार गुरुदेव। घट औघट दुर्गम सुगम, जानत सब ही भेव।।(71)

अजगर करै न चाकरी पंछी करै न काम। दास मलूका कहि गये सबके दाता राम।।(72)
बीज सबन को श्रवन है, तरु वैराग अनूप। भगति फूल रस ज्ञान में, है रस प्रेम सरूप।।(73)
बीज मांहि तरु फूल फल, तरु फल बीरज होइ। अजर बीज हरि भगति है, द्रढ़ करि गहिये सोइ।।(74)
अस्थित उतपति प्रलै भौ, नारायन में होइ। जैसे उर्म नाभि तंत्र उगि, लै निगलै सोइ।।(75)
नारायन भजु आदि ही, नारायन मधि आहि। नारायन रहिहैं सदा, नमो मलूका ताहि।।(76)
छोटा बड़ा न घटी अधिक आपुहि सब परकास। कहै मलूक अनादि हरि साधन को बिस्वास।।(77)
कारन जग को ब्रम्ह है, और न कोऊ आहि। यह प्रपंच सब ब्रम्ह है, जानहु निस्चै ताहि।।(78)
लघु दीरघ नहिं आतमा, सब में यों दरसाय। नभ में घट घट माँहि नभ, घट महँ होइ न जाय।।(79)
ध्यान धारि गुरु रूप को काया कीजै भेंट। छूटि जाय भव काल को बाढ़ै हरि सो हेत।।(80)
नहिं भीजै जल कूकरी रहै सदा जल बीच। तेउँ निर्मल परमात्मा लिपै न दुःख सुख कीच।।(81)
रवि ते किरन न आन कछु जलहि तरंग लखाउ। खांड़ खिलौना सूत्र पट तेउं जग आतम भाउ।।(82)
जब जीवै निज मान तजि धरै रूप निज ध्यान। प्रेम भगति रस ऊपजै सुनि अनहद धुनि कान।।(83)
सन्त संगति करि ज्ञान लहि छाड़े विषय विकार। कहै मलूक सो राम भजि तरै सिंधु संसार।।(84)
यह मलूक निर्णय कियो सकल शास्त्र मत सार। भव सागर के तरन को, नामै है आधार।।(85)
ध्यान धारि गुरु रूप को काया कीजै भेंट। छूटि जाय भय काल को बाढ़ै हरि सों हेत।।(86)
श्रीगुरु भ्रम कैसे कटै क्यों करि होय प्रकाश। मन मधुकर कैसे लहै हरि पद पंकज बास।।(87)
प्रेम ज्ञान जब होय द्रढ़ रहै न भ्रम को लेश। तब मलूक संसै बिना क्या देह गुरू उपदेश।।(88)
जहाँ न भ्रम तम सूर शशि आतम स्वयं प्रकाश। पइहै प्रेम प्रकाश ते, चरन कमल में बास।।(89)
नमो जगत गुरु जगतपति असरन सरन मुरार। जो कोउ आवै सरन तकि तरै सिंधु संसार।।(90)
फीके हैं सब विषय रस तजि कुपंथ संग प्यार। तरिये भव संसार को गहि हरि नाम अधार।।(91)
जे उपाधि के मूल सब प्रगट भये जग आय। कहै मलूक इनते छुटब नहिं बिनु राम सहाय।।(92)
पूरन भागि ते पाइये ऐसो दैवी पंथ। जगत पंथ है आसुरी चलहिं न तेहि मत सन्त।।(93)
भ्रम भागा गुरु वचन सुनि मोह रहा नहि लेस। तब माया छल हित किया महा मोहिनी भेस।।(94)
रहौं भरोसे राम के बनिजहिं कबहुँ न जाउँ। दास मलूका यों कहै हरि बिरवै मैं खाउँ।।(95)
अंतर कपटी कुटिल नर बातें कहैं बनाइ। लोहे को पैसा भयो कहा देखिये ताइ।।(96)
यह मन मैं धोया बहुत साबुन तत्तु लगाय। काम क्रोध परवर्त की मैल तऊ ना जाय।।(97)
आदर मान महत्व सब बालापन को नेहु। यह चारों तबही गए जबहिं कहा कछु देहु।।(98)
सब कलियन में बास है बिना बास नहिं कोइ। अति सुगंध बामे बसै जो कोई फूली होइ।।(99)
सन्तन को आवति निरखि लीजै कंठ लगाइ। हितकरि भोजन दीजिये सादर शीश नवाइ।।(100)
गुरु गोविन्द अरु सन्त सों, नहिं अंतर निरधार। भक्ति ध्यान वैराग मग, खेइ उतारैं पार।।(101)
नाम पृथक ये तीन हैं पै तीनौं निज एक। कहै मलूक सोइ जानिहै जाके हृदय विवेक।।(102)
जेते सुख संसार के इकट्ठे किये बटोरि। कन थोरे कांकर घने देखा फटकि पछोरि।।(103)
जब आये तुम जगत में तब हँसिया सब कोय। अब तुम ऐसी करि चलौ, पाछे हँसी न होय।।(104)
पाँच पहर धंधे गए तीन पहर रहे सोय। एकौ घरी न हरि भजे कुशल कहाँ ते होय।।(105)
भेदी होय सो जानै नट बाजी संसार। झूंठे नाते जगत के तात मात सुत नारि।।(106)
ठाकुर को बिसराइ मन भूलत सपन समाज। जो ना लावत जगत में आवत नाहीं लाज।।(107)
उहाँ न कबहूँ जाइए जहाँ न हरि का नाम। दिगम्बर के गाँव में धोबी का क्या काम।।(108)

आठ पहर हरि नाम में लगा रहै जो कोय। कहि मलूक ता दास को आवागमन न होय।।(109)
इस जीने का अर्थ क्या काह देह की प्रीति। बात कहत उड़ि जात है ज्यों बालू की भीति।।(110)
उतरे आय सरांय में जाना है बड़ कोह। अटका आकिल काम बसि ली भठियारी मोह।।(111)
साधो दुनिया बावरी पाथर पूजन जाय। मलूक पूजै आत्मा कछु मांगै कछु खाय।।(112)
किरतिम देव न पूजिये ठेस लगै फुटि जाय। कहि मलूक शुभ आत्मा चारों जुग ठहराय।।(113)
हम जानत तीरथ बड़े तीरथ हरि की आस। जिनके हिरदै हरि बसैं कोटि तिरथ तिन पास।।(114)
करै भक्ति भगवंत की कबहुँ करै नहिं चूक। हरि रस में रांचो रहै, साँची भक्ति मलूक।।(115)
माला जपउँ न कर जपउँ, जिभ्या कहउँ न राम। सुमिरन मेरा हरि करै, मैं पाया विश्राम।।(116)
सुन्दर देहीं पाइकै, मत कोई करै गुमान। काल दरेरा खाएगा, क्या बूढ़ा क्या ज्वान।।(117)
सुन्दर देहीं देखि कै, उपजति है अनुराग। मढ़ी न होती चाम तो, जीवत खाते काग।।(118)
आतम राम न चीन्हई, पूजत फिरै पखान। कैसेहुँ मुक्ति न होयगी, कोटिक सुनौ पुरान।।(119)
जेते देखे आत्मा, तेते सालिगराम। बोलनहारा पूजिये, पत्थर से क्या काम।।(120)
भेष फकीरी जो करै, मन नहिं आवै हाथ। दिल फकीरी जो करै, साहेब तिनके साथ।।(121)
जो तेरे घट प्रेम है सो कहि-कहि न सुनाव। अंतर जानी जानई अंतरगत का भाव।।(122)
मक्का मदीना द्वारिका बद्री औ केदार। बिना दया सब झूठ है कहै मलूक बिचार।।(123)
वेद पुरान अरु सासतर पूजा क्रिया अचार। एक पुरुष के आसरे तजिए सब व्यवहार।।(124)
जे दुखिया संसार में खोवै तिनका दुःख। दलिद्दुर सौंपि मलूक को लोगन दीजै सुख।।(125)
संध्या तरपन सब तजे तीरथ कबहुँ न जाऊँ। हरि हीरा हिरदय बसै, ताहि पैठि अन्हाऊँ।।(126)
प्यार इंसान को इंसान बना देता है। जीस्त की राह को आसान बना देता है।।(127)
ऐ मोहब्बत तू न रख मेरी खताओं पे नजर। प्यार पत्थर को भी इंसान बना देता है।।(128)
तेरे दरबारे आला की निराली शान यह देखी। सखावत खुद तेरी गलियों में,चक्कर काटते देखी।।(129)
पसारा जिसने कर अपना तेरे दरबार में आकर। तुझे देते नहीं देखा मगर झोली भरी देखी।।(130)
कहि मलूक जबते लई राम नाम की ओट। सोवत हौं सुख नींद भरि डारि भरम की पोट।।(131)
याही बड़ा उपदेस है पर द्रोह न करिये। कहि मलूक हरि सुमिरि कै भव सागर तरिये।।(132)
उपजत बिनसत थकि परा जीव उठा अकुलाय। कहैं मलूक बहु भरमियाँ, अब नहिं भरमा जाय।।(133)
मन से करिबे को भरति सब कोउ करति उमंग। पै जो करै द्रढ़ तजि कपट रीझहिं तेहि गोविन्द।।(134)
और सकल सब धंध है साँचा तू करतार। जग फुलवारी ज्यों रची त्यों बहुरंग संवार।।(135)
सब कोउ साहेब बन्दते हिन्दू मुसलमान। साहेब तिनको बन्दता, जिनका ठौर इमान।।(136)
दया धरम हिरदै बसै बोलै अमृत बैन। तेई ऊँचे जानिये, जिनके नीचे नैन।।(137)
प्रेम भगति जाके घट पूरन ज्ञानी सोइ। कहै मलूक जल तरंग जेउँ,कहन सुनन को दोइ।।(139)
प्रेम भगति नहिं छाड़िये जब लगि घट में प्रान। जासों हित कीन्हे भले आइ मिलैं भगवान।।(139)
प्रेम परम पद पाइये प्रेम उतारै पार। प्रेम भगति की महिमा श्री मुख कही मुरारि।।(141)
प्रेम नेम जिन ना कियो जीतो नाहीं मैन। अलख पुरुष जिन ना लख्यो छार परो तेहि नैन।।(141)
भगति भाव जाके हृदय लहै सो गुरु को ज्ञान। कहै मलूक पुनि प्रेम ते ताहि मिलै भगवान।।(142)
इनकी यह गति देखिकै जहँ तहँ फिरौं उदास। अजर अमर प्रभु पाइयां कहत मलूकादास।।(143)
षट दरसन दरवेश मुनि सन्यासी धनवान। प्रेम बिना पहुँचै नहीं दुर्लभ पद निर्वान।।(144)

प्रेम प्रीति सो आरती कीजै बारम्बार। आरति आरतिवंत की सहि नहिं सकत मुरारि।।(145)
कहत मलूक सपूत सोइ भगति करै चित लाइ। जरा मरन ते बचि परै अजर अमर होइ जाइ।।(146)
कठिन पियाला प्रेम का पिये जो हरि के साथ। चारों जुग माता रहैं उतरे जिय के साथ।।(147)
प्रेम भगति नहिं छाड़िये जब लग घट में प्रान। कहै मलूक तब पाइये स्थिर पद निर्वान।।(148)
सब बाजे हिरदै बजै प्रेम पखावज तार। मंदिर ढूढ़त को फिरै मिलो बजावन हार।।(149)
मन ही के संकल्प ते उपजत तन अभिमान। सो संकल्प विसारिये निज सरूप धरि ध्यान।।(150)
रे मन तन का गर्व का काह देह का प्यार। जैसे शीशी काँच की बिनसत लगै न बार।।(151)
याही के संकल्प ते भयो जो तन अभिमान। सो छूटै जब कीजिये ब्रम्ह नदी असनान।।(152)
हरि रस में नाहीं रचा किया काँच व्यौहार। कहि मलूक यों ही पचा प्रभुता को संसार।।(153)

मलूक तीरथ करन दुइ चले मन चंचल चित चोर।
पाप रती भरि ना घटा लदा दसगुना और।
मलूक भजन तीरथ बड़े तीरथ हरि की आस।
जिनके हिरदय हरि बसैं कोटि तिरथ तिन पास।

पद

(1) मैं अब ना भूलौं भाई मोहिं सतगुरु जुगति बताई।
ना हरि रीझैं जप तप कीन्हे ना हरि काया पखारे।
ना हरि रीझैं मूड़ मुड़ाए ना आतम के जारे।
पूजा नेम अचार बिचारा छाड़ि दिया तीरथ असनाना।
सब संसार सयाना देखा मोहीं एक बौराना।
ना मैं पूजौं माटी मुंदरा ना मैं फूल चढ़ाऊँ।
ना मैं मूरति धरी सिंघासन ना मैं घंट बजाऊं।
कूटि कूटि कै गढ़ी ठठेरा बारम्बार तपाया।
येहि मूरति के रहै भरोसे पाछिल जमा गंवाया।
जो या मूरति मुख से बोलै करि पूजा अन्हवाऊं।
ढेबुआ चारि ठठेरा को दै मोहूँ एक बनवाऊं।
दया धरै धरम प्रतिपालै जग ते रहै उदासी।
आपन अस जिउ सबका जानै ताहि मिलै अभिनासी।
सहै कुसब्द बदी का त्यागै छाड़ै मान गुमाना।
यहै रीझ होय निरंकार की कहै मलूक दिवाना।।

(2) दीन बंधु दीनानाथ मेरी तन हेरिये।
भाई नांही बंधु नाहीं कुटुंब पसार नाहीं
ऐसा कोई मित्र नाहीं जाके ढिग जाइये।
सोने की सलैया नाहीं रूपे का रुपैया नाहीं
कौड़ी पैसा गाँठ नाहीं जासे कछु लीजिये।
खेती नाहीं बारी नाहीं बनिज ब्योपार नाहीं
ऐसा कोई साहु नाहीं जासो कछु मांगिये।
कहत मलूकदास छाड़ि दे पराई आस
रामधनी पाइकै अब काकी सरन जाइये।।

(3) नाम हमारा खाक है हम खाकी बन्दे।
खाकहिं ते पैदा किये अति गाफिल गंदे।
कबहुँ न करते बंदगी दुनिया में भूले।
आसमान को ताकते घोड़े चढ़ि फूले।
जोरू लड़के खुश किये साहेब बिसराया।
राह नेकी की छाड़ि कै बुरा अमल कमाया।
हरदम तिस को याद कर जिन वजूद संवारा।
सबै खाक दर खाक हैं कुछ समुझ गँवारा।
हाथी घोड़े खाक के खाक खानखानी।
कहैं मलूक रह जायेगा औसाफ निसानी।।

(4) सोते सोते जनम गंवाया।
माया मोह में सानि पड़ो सो राम नाम नहिं पाया।
मीठी नींद सोये सुख अपने कबहूँ नहिं अलसाने।
गाफिल होके महल में सोये फिर पाछे पछिताने।
अजहूँ उठो कहाँ तुम बैठे बिनती सुनो हमारी।
चहूँ ओर मैं आहट पाया बहुत भई भुँइ भारी।
बन्दीछोर रहत घट भीतर खबरि न काहू पाई।
कहत मलूक राम के पहरा जागो मेरे भाई।।

(5) अजब तमासा देखा तेरा, ताते उदास भया मन मेरा।
उतपत परलय नित उठि होई, जग में अमर न देखा कोई।
झूठा नाता लोग लगावै, मन मेरे परतीत न आवै।
जबहीं भेजे तबहिं बुलावै, हुकुम भया कोइ रहन न पावै।
उलटत पलटत जग की अंचली, जैसे फेरै पान तमोली।
कहत मलूक रह्यो मोह मोहिं घेरे, अब माया के जाऊँ न नेरे।

(6) हमारा सतगुरु कोई बिरले जानै।
सुई के नाके सुमेर चलावे सो यह रूप बखानै।
कीतौ जानै दास कबीरा गोरख गोपी चंदा।
कीतौ नामदेव और नानक धरमदास से बंदा।
हमरे गुरु की अद्‌भुत लीला ना कछु खाय न पीवै।
ना वह सोवै ना वह जागै ना वह मरै न जीवै।
बिन तरुवर फल फूल लगावै सो तो वा का चेला।
छिन में रूप अनेक धरत है छिन में रहै अकेला।
बिन दीपक उजियारा देखै एड़ी समुंद थहावै।
चींटी के पग कुंजर बांधै जा को गुरू लखावै।
बिन पंखन उड़ि जाइ अकासै बिन पंखन उड़ि आवै।
सोई शिष्य गुरू को प्यारा सूखे नाव चलावै।
बिन पायन सब जग फिरि आवै सो मेरा गुरु भाई।
कहै मलूक ताकी बलिहारी जिन यह जुगति बताई।

(7) अब तेरी सरन आयो राम।
जबै सुनिया साध के मुख पतित पावन नाम।
याही जानि पुकार कीन्ही अति सतायो काम।
विषय सेती भयो आजिज कहै मलूक गुलाम।।

(8) दीन दयाल सुनी जबते तबते हिय में कछु ऐसी बसी है।
तेरो कहाय के जाऊँ कहाँ अब तेरे हित की पट खैंचि कसी है।
तेरो ही एक भरोसा मलूक को तेरो समान न दूजो जसी है।
ऐ हो मुरारि पुकारि कहौं अब मेरी हँसी नहिं तेरी हँसी है।

(9) किरपा करि गुरु जुगुति बताई आपा खोजै भरम नसाई।
आपा खोजे त्रिभुवन सूझै गुरु परताप काल ते जूझै।
शब्द ब्रम्ह का करै विचारा भवसागर ते उतरै पारा।
पाँचौ इन्द्री गिरह करै सहज समाय जियत ही मरै।
मनुआ मारि करै नौ खंडा कबहूँ ना सहै देह को डंडा।
काम क्रोध अहंकार बहावै तीरथ बरत ना मन भरमावै।
आतम नदी करै असनाना निर्मल होय ब्रम्ह का ध्याना।
बहुरि न बिखै ठगौरी खाई पाप पुन्य का बीज नसाई।
उपजै क्षिमा होय आनंदा जनम जनम के काटै फंदा।
गुरू के वचन करै परतीती सोई साधु जाय जगु जीती।
शील संतोष हियै मां राखै सो जन राम रसायन चाखै।
काटे कटै न जारे जरै अरध नाम लै भवजल तरै।
या पैड़ा खांड़े की धार सोई चले जियत होय छार।
संतन की सेवा चित लावै पाथर पूजि ना मन भरमावै।
कुमिता कलह बहै एक नदिया सबै बूड़ जिन साँचु न धरिया।
गुरु गोविन्द सार मत दीन्हा भला भया जो आपा चीन्हा।
बड़ी भागि जो आतम जागा कहत मलूक सकल भ्रम भागा।

(10) जियोगे कितने दिन दुलहा बने जाओगे।
साठ जियो सत्तर जियो चालीस औ पचास जियो, थोड़ी जिंदगानी बन्दे फूले ना समाओगे।
खेती करिले पाती करिले बनिज औ व्योपार करिले, पाप की गठरिया सारी सिर पे धरे जाओगे।
हाथी झूमै घोड़े झूमै तम्बू औ निसान झूमै, टुटही पलकिया बन्दे दुलहा बने जाओगे।
कहति मलूक दास छाड़ि दे पराई आस, राम नाम लेते मनुआ काहे अलसात है।

(11) अब काहे बहिरे भये हरि सुनते नाहीं बरसौ मेंह अघाइ कै नीके जग माहीं।
बुरा जो ताकै अन्न का सुख कबहूँ ना सोवै उखरि जाय जर मूर ते सिर धुनि धुनि रोवै।
कहा हमारा मानिये अब बेलम न कीजै टके पसेरी अन्न करौ सबको सुख दीजै।
कलजुग ते सतजुग किया सब कंटक टारे पाप बढ़ा था उड़ गया भले राम संभारे।
किरपा करि रघुनाथ जी बरसायो पानी कहि मलूक आनंद भे सब जरनि बुतानी।।



मगहर, जिला-सन्त कबीर नगर (उत्तर प्रदेश)



परिचय
सन्त कबीर साहेब

सन्त कबीर साहेब संवत् 1455 विक्रमी सन् 1398 ई० में काशी के निकट लहरतारा नामक तालाब के समीप प्रकट हुए थे। कहा जाता है, कि नीरू और नीमा जुलाहा दंपती ने आपका पालन-पोषण किया। ऐसा सुना गया है, कि कबीर साहेब ईश्वरदूत के रूप में पृथ्वी पर प्रकट हुए। उन्होंने सारा जीवन मानवता के सुधार में बिताया। सामाजिक कुरीतियों का आप साहस पूर्वक खंडन करते, सत्य का बोध कराते, पाहन-पूजा, जीव-वध जैसे जघन्य अपराधों का विरोध करते थे। आप कोमल ह्दय के धनी, जाति-पांति के भेदभाव को ना मानने वाले थे। (एक ईश्वर सोई राम सोई रहीम)। आपने अपने दोहे और पदों में किसी भी जाति-धर्म का पक्षपात नहीं किया। जैसे को तैसा साँच-साँच कहा। आपकी कटु सत्य बात को लोग बर्दाश्त नहीं कर पाते थे। इस लिए कुछ लोग जो आडम्बर, भेष, पाखण्ड में लिप्त थे, वह कबीर साहेब से शत्रुवत् व्यवहार करते थे। उस समय के राजाओं ने उन्हें जंजीर में बंधवाकर गंगा में फेंकवा दिया, मदमस्त हाथी के सामने खड़ा कर, कबीर साहेब को मारने की हर मुमकिन कोशिश की। परन्तु सच्चे ईश्वरदूत, सच्चे भक्त कबीर साहेब का एक पल का भी बुरा नहीं कर सके

बाँधि जंजीर बोराया गंगा, बारु जन का ना झरा
कहै दास मीता सेइ समरथ कौन का पानी मरा। {परम ग्रन्थ पृष्ठ सं. 85 से}

कबीर साहेब के गुरू निर्गुण उपासक सन्त बालगोविन्द साहेब थे। जो किसी भी प्रकार का भेष अथवा सर्गुण पूजा नहीं करते थे। सन्त हमेशा मन की करनी करते हैं। इसलिए बाहर संसार का कोई व्यक्ति उन्हें सहज ही पहचान नहीं पाता। रामानंद सर्गुण उपासक थे, और निर्गुण ब्रम्ह को पा चुका हूँ, ऐसा दावा किया करते थे। इसलिए कबीर साहेब ने उनसे हँसउवा किया, कि आप मुझे अपना शिष्य बनाकर ईश्वर-दर्शन करा दीजिए। इसलिए अधिकांश लोग रामानंद को कबीर साहेब का गुरू बताते हैं।

भारत के लोगों में कुछ ऐसी विडम्बना थी, कि जो काशी में मरेगा वह स्वर्ग जाएगा और जो मगहर में मरेगा वह नर्क जाएगा। ऐसी जनभावना का खंडन करते हुए आप सारा जीवन काशी में रहे और अंत में संवत् 1575 विक्रमी सन् 1518 ई० में आपने मगहर में आकर देह त्याग दी। आपने 120 वर्ष तक मानव देह में विलास करते हुए नानक साहेब, रैदास साहेब, पीपा साहेब, सधन साहेब, धरमदास साहेब, नामा साहेब, कमाल साहेब आदि सुज्जन जनों को ब्रह्म का दर्शन कराया। आपकी ख्याति विदेशों तक फैली हुई है। आपने "कबीर-बीजक" नाम से एक ग्रन्थ की रचना की। अनेकों भाषाओं में आपके दोहे व पद मिलते हैं। आपके वाणी-वचन से प्रभावित होकर तत्कालीन मुख्यमंत्री सुश्री मायावती जी ने 5 सितंबर सन् 1997 ई० को आपके नाम पर 'सन्त कबीर नगर' का गठन कर जिला घोषित किया। आपकी देह छोड़ने का स्थान मगहर है, जहाँ आपकी भव्य समाधि हिन्दू ओर मुस्लिम दोनों धर्म के मानने वालों ने अलग अलग एक ही स्थान पर बनाई हैं।

पद

(1) सतगुरु सरनै जाय ता तामस त्यागिये।
भली बुरी कहि जाय ता उठि ना लागिये।
उठि लागे ते रारि रारि मां मींचु है।
जेहि घट बसई क्रोध तेई नल नीच हैं।
माला वाके हाथ कतरनी कांख मां।
बुझी न जानेउ आगि तुपी है राख मां।
देखि माया का रूप तिमुरु आगे चला।
भक्ति गयी बड़ी दूरि समुझि कुछु ना परा।
जोन्हरी पेरि रसु होय औटि गुड़ ना परा।
कोटिन यज्ञ कराय तऊ जिउ ना तरा।
ऊखै ते गुणु होय भगति ते कालु हटै।
जम घर बंदि ना होय करम कागद फटै।
जैसे कामिनि सो नेह ऐसे सतगुरु भजै।
छाड़ै मान गुमान दुरमति दूरि करै।
कहैं कबीर चित चेतु अरे मन भावना।
हंस चले सतलोक बहुरि ना आवना।

(2) नैहर के मोरे ब्राम्हण बाबा करिहौं मैं अति हित तोर रे।
हम तन तरुनि बिरह की व्याकुल तुम बरु ख्वाजौ मोर रे।
ज्ञानन गुनन शील का आगर बहुत दिनन का होय रे।
ऐसन खोज करेव मोरे बाबा माई बापु ना होय रे।
बिन पगु चलै बहुत मोरे बाबा बिन मुख भोजन खाय रे।
नैनन बिना सकल जगु देखै बेगि सो करो उपाय रे।
मनहीं मां तिलक करेव मोरे बाबा मनहीं मां करेव तेलवारु रे।
सतगुरु लगन धरायेउ विविधि विधि ब्याहु रचेउ उपचारु रे।
चलत चलत चले ब्राम्हण बाबा जाय परे वहि देस रे।
पानी पवन पीर ना पावक अलख पुरुष अलभेस रे।
अटपटि राह उरध मुख बाबा चढ़ति बहुत दुःख होय रे।
पाँच पचीस तीनि चारिउ मिलि मरे शीश धुनि रोय रे।
चलत चलत चले ब्राम्हण बाबा संग लै सोई बार रे।
कनक कलस गजमोतिन मुक्ता आरति विविधि उतारि रे।
धीरज खम्भ प्रेम का माड़ौ ज्ञान के बंद नेवार रे।
मोतियन झालरि लागि दहूँ दिसि बाजै अनहद तार रे।
मनसा मालिनि मौरु रे बाबा लाई हेत बकशीश रे।
देखि छके मुख बचन न आवै दूल्हा के नहिं शीश रे।
बरेउ अमर बर ब्राम्हण बाबा सुनि अस अचिरिज होय रे।
दास कबीर अस मंगल गावा बूझै बिरला कोय रे।।

(गारी)

(3) जे हैं पिया की पियारी अपने पिया का सिंगार करी।
जाके तेल तत्त का प्रेम की डोरी से चोटी गुही।
जाके सुमति की ककई करम केश निनुआरो सही।
जाके सत्य का सेंदुर अगम बरेठिन मांग भरी।
जाके अलख का कजरा बिरह की बेंदी लिलार गही।
जाके सुरति का सूता दया की हँब्याल हिरदय मां गही।
जाके चित्त की चुरिया अकिल के कंगना झलकि रहे।
जाके नेह नथुनिया सुमति के लटकन झूमि रहे।
जाके चोप चुनरिया ज्ञान घाँघरा घूमि रह्यो।
जाके जुगति का जेवर शब्द के बिछुआ बाजि रहे।
धना एतना पहिरि कै रूठे प्रभू का मनावै चली।
साहेब हम तन हेरउ दास कबीर सिंगार करी।

(4) जो तुम चाहो भक्ति लेन का,निंदा से मत डरियो जी।
पाँच छड़ी तुमरे सिर मारै, सहति बनै सहि लीन्हेउ जी।
ई संसार विषै रस माता, समुझि-बूझि पगु धरियो जी।
कहैं कबीर सुनौ भाई साधौ, महरम होय सो बूझी जी।

(5) आजु सन्त हमरे ग्रह आये अति बड़ी भागि हमारी जी।
ऊँचै साहेब का बैठक दीन्हा शीश नवाये परिवारी जी।
चरन धोय चरनामृत लीन्हा, अचरन ढुरति बयारी जी।
तीनि पाँच मिलि जेवन बैठे छुटी प्रेम रस गारी जी।
माई तुम्हारी निसदिन द्वारे, बहिनी अजब छिनारी जी।
माई तुम्हारी मोरा भइया चुरायेनि लगी सुहंगम तारी जी।
सासू तुम्हारी अमर होइके बैठीं सरहज चढ़ी अटारी जी।
फूफू तुम्हारी साहेब लगे गई थीं उइ सतवंतिन नारी जी।
हमतो सन्तों गारी देति हौं यहु पदु लेउ बिचारी जी।
हमरी गारिन का नेखु ना मानेउ गारी हैं परम पियारी जी।
अपने साहेब की बहुत पियारी मूरख जानै गारी जी।
उल्टी नहीं हैं सीधी ई गारी कहै कबीर बिचारी जी।।

(6) अपने पिया का कहाँ लौ बरनौ शोभा बरनि न जाई रे।
कोटिन भानु चंद्र तारागण बिच बिच पचरंग लाई रे।
चौदह लोक बेद की मंजिलें तहँ लग काल पसारा रे।
पंद्रहे लोक मां जोति निरंजन जहँ बैठा शून्य मंझारा रे।
सोरहें लोक अक्षर भगवाना जहँ बेदु मरमु ना पावा रे।
सत्रहें लोक मां अधर द्वीप जहँ सब्द अचिंत बिराजै रे।
तेहि के आगे चार धाम हैं बिरला मत कोउ पावै रे।
तेहि के आगे अकह लोक जहँ बैठा पुरुष पुराना रे।
कहैं कबीर आदि की बानी, बिरलै सन्त पहिचानै रे।।

(7) चलु सतगुरु की हाट ज्ञान बुधि लाइए।
जो पिया रूठे होंय ता तुरत मनाइए।।
करता सब कुछ दिया देबे को कुछ ना रहा।
हमही अभागिन नारि अमृत तजि बिषु लिया।।
गइन पिया की महलिया पिया ते ना बनी।
हिरदै कपट रहा छाय कुमति लज्जा भरी।।
चौमुख दियना बारि महल सब ढूंढती।
देखि कै सूनी सेज रैनि दिन रोवती।।
जो गुरु होंय दयाल दया करि हेरईं।
कोटि करम कटि जांय पलक छिन हेरईं।।
जो तू पिया के साथ कौन तोहिं लाजु है।
अरध मिलो तुम जाइ भला दिन आजु है।।
भला बना संजोगु प्रेम का चोलना।
तन मन अरपौ शीश सहज उठि बोलना।।
कहैं कबीर चितु चेतु अरे नल बावरे।
बहुत से हंस लिए साथ उतरे भव सागरे।।

(8) ऐसा एकु सिंह का छौना, परा गड़रिया पावा रे।
बन चरि आवै गड़र होय बोलै, बोल गड़रिया कांपा रे।
एक दिना बन चरन गया था, दुसरे सिंह उठि गरजा रे।
सुनिकै बोल गड़रिया भागा, तेहि पीछे उठि लागा रे।
बेड़ा जाय छेकि जब लीन्हा, कहौ सिंह तुम को हउ रे।
मेंउ मेंउ करै बात ना आवै, औरे मां औरु बतावै रे।
केहरि कहा त्रास जनि मानौ, रूप हमार निहारौ रे।
हम तुम एक रूप को दूजा, सो चित माहिं बिचारौ रे।
केहरि रूप मिलैं जब सतगुरु, आप मां आप मिलावैं रे।
क्षर अक्षर दूनौ परगासा, ताहि सो मोहिं मिलावैं रे।
कहैं कबीर आदि की बानी, सन्त होय सो जानै रे।।

(9) ना जानौं मिलना कब होई।
ना जानौं मिलना कब होई।
आवौ सब मिलि कइलेउ भजनवा, गरभ गुमान करौ ना कोई।
ना जानौं मिलना कब होई।
ई देहियाँ का कौन भरोसा, स्वांसा भरोसा करौ ना कोई।
ना जानौं मिलना कब होई।
भागि बड़े मानुष तन पाया, जानि बूझि ना डारेउ खोई।
ना जानौं मिलना कब होई।
कहैं कबीर बिना सतगुरु के, मानुष जनम फेरि ना होई।
ना जानौं मिलना कब होई।

(10) करौ जतन सखि सइयां मिलन की।
गुड़िया गुड्डा सूप सुपलिया, तजौ बुद्धि लरिकइयां खेलन की।
तांबा पीतरि भुइंया भवानी, ई मारग चौरासी चलन की।
ऊँचा महल अजब रंग बंगला, सइयां की सेज हुवां लागी फूलन की।
तन-मन-धन हुआं वारे करिये, तब लागी लगन हुआँ सइयां मिलन की।
कहैं कबीर निर्मल भये हंसा, कुंजी बताऊँ तुम्हें ताला खोलन की।

(11) अबहीं से चेतु करौ मन मोरे, कहना से आयो कहाँ जइहौ हो।
आयो अकेले जइहौ अकेले, संघ कोहू का नहीं लीन्ह्यो हो।
गरभा से आयो रहन नहिं पायो, पकरि दूत लइ जइहैं हो।
धरमराज जब लेखा मंगिहैं, तब तुम काह बतइहौ हो।
धन औ दौलति माल खजाने, तम्बू खड़े असमाना हो।
ई तुम्हरे कुछ काम न आवैं, फिरि पाछे पछितइहौ हो।
अटपटि रहिया रैनि अंधेरी, हुवां केहिका गोहरइहौ हो।
करु सत्संग सरनि सतगुरु की, बनति बनति बनि जाई हो।
कहैं कबीर ये सतगुरु सरना, अमरलोक पहुँचइहै हो।

(12) अवधू करो जीव निस्तारा।
चौदा कोठा दस दरवाजा येहिते को है न्यारा।
हमतो अवधू सत्य कहत हैं घट का करौ विचारा।
तुमही साहेब शब्द पारखी तुमही करो विचारा।
हम येहि का कुछ मरम न जानी तुमही करो अनुसारा।
शौच दुआरे जीव निकरि जाय नरक खानि का जाई।
नरक खानि के गुजवा होइहौ उलटि शीश धकियाई।
निभ्या दुआरे जीव निकरि जाय जला खानि का जाई।
जला खानि की मछरी होइहौ जल ही मां रहौ समाई।
जिभ्या दुआरे जीव निकरि जाय अन्न खानि का जाई।
अन्न खानि के किरवा होइहौ अन्नै मां रहौ समाई।
नासिका दुआरे जीव निकरि जाय पशू खानि का जाई।
बोला ते अनबोला होइहौ खर पानी रहि जाई।
सरवन दुआरे जीव निकरि जाय प्रेत खानि का जाई।
बरस सहस लगे ऊमरि पइहौ बिरछन रहौ लपिटाई।
चक्षू दुआरे जीव निकरि जाय अधर भूमि का जाई।
अधर भूमि के पंछी होइहौ अधरै अधर उड़ाई।
गगन दुआरे जीव निकरि जाय सो राजा होइ जाई।
कुछ दिन राज करै गद्दी पर फेरि नरक मां जाई।
अमर दुआरे जीव निकरि जाय सो अम्मर होय जाई।
कहै कबीर सुनौ भाई साधौ जो परवाना पाई।

पद सुल्तान साहेब पर

(13) धनि धनि बलख के बीरा।
अपने साहेब मिलन के कारन सब तजि भयेउ फकीरा।
छोड़ा शहर तखत बादशाही उमरायों की भीरा।
कोटिन कोटि खजाना छोड़ा लाल जवाहर हीरा।
जे पग रम्भा कुचन मलति ते बिना गुना तकसीरा।
ते पग जंगल मंझावन लागे कसकत नहीं शरीरा।
धनि धनि तुम्हरे मात पिता का जिनका पियो तुम क्षीरा।
धनि करनी करतूति कमाई धनि तुम्हरे गुरु पीरा।
हरिल की लकरी ज्यों गहि राखी ऐसे गुरू गंभीरा।
कहै कबीर हुवाँ लै राखैं अजर अमर घर पीरा।।

(14) सुल्ताना बलख बुखारे को।
जाको खाना अजब सरहना मिसिरी कंद छुहारे को।
जाको ओढ़ना मलमल खासा आठ पाट नौ तारे को।
तेओ भार चढ़ावन लागे नौ मन गूदर भारे को।
जाके संघ कटक दल बादल नौ लख तुरी खंधारी को।
सो सब छाड़ि कै लियो फकीरी देखो ज्ञान बिचारे को।
आलम छाड़ि कै भयो औलिया पकरी राह करारे को।
कहै कबीर सुनौ भाई साधू हुवाँ फकीर अखाड़े को।।

(15) मोहि का कहाँ ढूँढ़ै बन्दे मैं तो तेरे पास मां।
ना बोकरी मां ना छेगरी मां ना छूरी ना गड़ास मां।
खाल पूँछ मां हइये नाहीं ना हड्डी ना मांस मां।
ना मंदिर मां ना मस्जिद मां ना गंगा ना कुरान मां।
हरद द्वारिका हइये नाहीं ना काशी कैलाश मां।
ना जोगी मां ना भोगी मां नहीं जोग सन्यास मां।
खोजी होवै खोज लगावै छिन पल की तलास मां।
मेरी कुटी शहर ते न्यारी मैं रहता मनमां समां।
कहै कबीर सुनौ भाई साधू मोहि भेंटै विश्वास मां।

(16) चलो मन आगे कहब हम राम।
बालापन तन खेलि गंवाया ज्वानी मां बाढ़ा काम।
बिरध भये तन डोलन लागे दांतौ होयगे निकाम।
पड़े पड़े नल सोचन लागे जम के घूमैं निसान।
कहै कबीर सुनौ भाई साधू धोखे मां निकसै प्रान।।

(17) चितवन मोरी लागी तुम सो पिया।
दिन भरि चितऊँ राति भरि चितऊँ चितै चितै कै भोर किया।
हम चितई तुम चितवति नाहीं कौनि मोरि तकसीर पिया।
तुम्हरे चितये सब जग चितवै तुम चितओ मोरी ओर पिया।
कहै कबीर सुनौ भाई साधौ चितै चितै अपनाय लिया।।

(18) सतगुरु शब्द कमान ज्ञान गांसी भई, मारा हिरदै लाय पीर भारी भई।
निसदिन सालै घाव नींद आवै नहीं, पिया मिलने की आस नैहर भावै नहीं।
खुलिगे कपाट केवांर ता दीपक बारियाँ, पिया संघ जुरा सनेह तनो मन वारियाँ।
कागा बानी ना बोलु हंस बानी बोलियाँ, कहैं कबीर धरमदास ते तीनो गुन त्यागियाँ।

(19) खोजो सन्त सुजान तो मारगु पीउ का, समुझि शब्द गहु सरनि मूल जहाँ जीव का।
भै जल अगम अगाधि लहरि बेकरार है, कठिन है पाँचौ नगर बीच जम जारु है।
शिव आदिक ब्रम्हादि पार ना पावईं, गुरु बहिंया कड़हार तो पार उतारईं।
निरखु पकरु कड़िहार तो घर पहुँचावई, देंइ नाम की डोरि तो दुःख बिसरावईं।
बैठि आनंद महल मां प्रेम गुन गावई, सेज सुखमुनी नारि तो पियहि रिझावई।
अगर जोति उजियार जो पन्थ सिधारई, कोटिन भानु निछावरि आरति साजई।
बिन जल लहरि अनूप तो मोतियन झिलमिली, देखि एक छत्र उजियार तो हंसा हंस मिली।
का लिखि दीन्हा पान तो तिनुका तोरई, का नरियर के फोरे जो जमु धरि बोरई।
सत लिखि दीना पान तो तिनुका तोरई, सार शब्द परकास तो नरियर फोरई।
नरियर भेद अगम सन्त जन जानई, करु संतन की सेव कालु ते बाचई।
सतगुरु के परताप अमर पदु पावई, कहै कबीर बिचारि ता बंदी छोरई।

दोहे

कबीर गरभ ना कीजिये, रंक न हंसिये कोय।
अभी तो नाउ समुद्र में, का जानै कस होय।।

दामु न हमको चाहिये, चाहों दामनगीर।
गनौ ब्याल सम दाम को, जमु की टूटि जंजीर।।

कबीर साहेब व रैदास साहेब का मिलाप-संवाद

काशी ते आये दास कबीरा, माड़ौ ते रैदासा।
सेत बंद मां भेंट भई, तब ज्ञान किया परगासा।
मंजन करन चले दोऊ जन, लै जमुना के तीरा।
लागि समाधि फरस के ऊपर, कहिका शब्द गंभीरा।
रैदास कहा की कुमति के दल बादल फारे, सुमति भई परगासा।
हिरदै ज्ञान ध्यान धरि देखौ, सत्य कही रैदासा।
कबीर कहा की मूलतत्व बिन ब्रम्ह ज्ञान बिन, हिरदै सिद्धि न होई।
सत्य भक्ति सुखदेव कीनि है, सन्त लखावैं सोई।
रैदास कहा की जो लीला अवतार न होता, जीव कहाँ ते अवता।
अंत दंद की खबरि नहीं है, जीव नरक में परता।
कबीर कहा की कहाँ नरक है कहाँ सरग है, कौन कहाँ को देखा।
जा दिन हंसा करै पयाना, जाति न कोऊ देखा।
रैदास कहा की हमतौ देखा, कदम की छइयाँ मुरली बीन बजवता।
गोपिन के संग केलि करति है, चुटकिन नाच नचवता।
कबीर कहा की ना उइ नाचैं, ना उइ गावैं ना करताल बजावैं।
उइ तौ साहेब अगम विशम्भर, गरभवास ना आवैं।
रैदास कहा की को बकि मरै को बातैं ठानै, को लरि मरै लबारा।
भली लूटि है रतन खजाना, कृष्ण नाम अवतारा।
कबीर कहा की माटी का कलबुज्ज बना है, नांदौ बुंद समाना।
भक्ति भेद का मरमु न जाना, पसुआ भरमि भुलाना।
रैदास कहा की माई जुलाहिन बापु जुलाहा, पूत भये ब्रम्हज्ञानी।
लोक वेद का कहा न मानै, बात आपनी ठानी।
कबीर कहा की माई चमारिन बापु चमारा, पूत भये रैदासा।
लोक बेद के कहे चलति हौ, परिहौ जमु के फांसा।
उठि रैदासा तहाँ गये, जहाँ बैठीं आदि भवानी।
एक बात तुमहूँ कहि देखौ, कबिरा बात न मानी।
सिंह चढ़े देबी गरजति आवैं, बोलैं मधुरी बानी।
सत्य भक्ति रैदास कीनि है, कबीर भक्ति ना जानी।
कबीर कहा की चहुँ दिसि आठौ, गला कटायेउ लै खप्पर तुम डोलौ।
जाउ-जाउ तुम जलम की ठगिनी, झूठि साखि कस बोलेव।
लै त्रिशूल देबी गरजी, कै कै गरभ गुमाना।
छिन मां मारि कै परलै करिहौं, ठउर ठउर मरि जाना।
कबीर कहा की ना तुम्हरे कोई मारे मरिहै, ना तुमसे कुछु होई।
जा दिन हंसा करै पयाना, और न दूजा कोई।
देबी कहा की धरती की मैं हंडी करिहौं, परिया करौं अकासा।
तीन लोक का ईंधन करिहौं, कहाँ रहैं तोरे दासा।

कबीर कहा की सार शब्द से हंडी खोलौं, परिआ टरै अकासा।
सत्य लोक मां बास हमारा, तहां हवैं मोरे दासा।
उठि रैदासा वहाँ गये, जहाँ बैठे शंकर जोगी।
एक बात तुमहूँ कहि देखौ, कबिरा बात न मानी।
बैल चढ़े सिव संकर आवैं, बोलैं हर-हर बानी।
सत्य भक्ति रैदास कीनि है, कबीर भक्ति ना जानी।
कबीर कहा की भूत पिसाचा के तुम ठाकुर, गले नाग लपिटायो।
जाउ-जाउ सिवसंकर जोगी, झूठ साखि कैसे बोल्यो।
सिवसंकर तब कोप किया है, कइकै गरभु गुमाना।
छिन मां मारिकै परलै करिहौं, महूँ का भूत कहि जाना।
कबीर कहा की ना तुम करता ना तुम हरता, ना तुम सिरजनहारा।
हम तो बइठे नाम की छहियाँ, तुम का करउ हमारा।
उठि रैदासा तहाँ गये, जहाँ बैठे ब्रम्हा ज्ञानी।
एक बात तुमहूँ कहि देखौ, कबिरा बात न मानी।
हंस चढ़े ब्रम्हा आवैं, बोलैं धरम की बानी।
सत्य भक्ति रैदास कीन है, कबीर भक्ति ना जानी।
कबीर कहा की चहुँ दिसि ब्रम्हा चहुँ दिसि साखी, चहुँ दिसि बेद बखानी।
आठ कलिन मां ब्रम्हा भूले, तुमहूँ मरमु न जानी।
उठि रैदासा वहाँ गये, जहाँ बैठे श्री गोपाला।
एक बात तुमहूँ कहि देखौ, कबिरा कथा अपारा।
गरुण चढ़े गोपाला आवैं, दोनों शैल सम्हारे।
धन्नि कबीर धन्नि रैदासा, दोनों सन्त हमारे।
कबीर कहा की तुम तो केशन चतुर विवेखी, ज्ञान करन को आये।
छोटी मोटी बात न जानी, खारी खांड़ मिलाए।
गोपाल कहा की निरगुन हमरे पिता लगति हैं, सरगुन है महतारी।
केहिका निन्दन केहिका बंदन, दोनों पल्ला भारी।
कबीर कहा की निरगुन हमरे पिता लगति हैं, सरगुन है महतारी।
एक का निन्दउ एक का बंदउ, बात कहौ बिचारी।
गोपाल कहा की काहेक कबिरा रारि लगाई, राखौ ब्रम्ह छपाई।
लोक वेद मां सबु अरझा है, को तुमका पतियाई।
कबीर कहा की जिनका कहिए कृष्णकन्हैया, तिनहूँ का कालु झकझोरी।
देवकी घर जनम लिया है, पूत जसोदा केरी।
उठि रैदासा तहां गये, जहाँ रहै कदम की छाहीं।
लोक वेद मां रैदास भुलाने, मूल कबीरा पाई।
रैदास कहा की कहाँ ज्ञान है कहाँ ध्यान है, कहाँ वेद औ बानी।
केहिका लीन्हे जोगु करति हौ, को है अंतर ध्यानी।
कबीर कहा की मनै ज्ञान है मनै ध्यान है, मनै बेद औ बानी।
मन का लीन्हे जोग करति हौं, मन है अंतर ध्यानी।
एतनी लीला जो कोई बूझै, तेहिका छूटै भरम जंजीरा।
आदी बानी आदि हजूरा, कहिगे दास कबीरा।।

समाधि
सन्त नामदेव {नामा साहेब}
ग्राम-नरसी वामड़ी (महाराष्ट्र)



परिचय
सन्त नामा साहेब

सन्त नामा साहेब का जन्म महाराष्ट्र प्रान्त के नरसी वामड़ी नामक ग्राम में एक छीपी परिवार में हुआ था। आपके पिता का नाम दामासेट एवं माता का नाम गोणाई देवी था। आपके आध्यात्मिक गुरू कबीर साहेब थे। आपने पढ़रपुर महाराष्ट्र में देह छोड़ी। आपके उदय अथवा मोक्ष का समय ठीक-ठीक ज्ञात नहीं हो सका है। आध्यात्म-जगत में विश्वास रखने वाले निर्गुण उपासक नामा साहेब की ख्याति फैलते ही भेखी-पाखण्डियों से रहा न गया और उन्होंने राजा के पास जाकर शिकायत की कि नामा नास्तिक हो गये हैं, भगवान को नहीं मानते हैं। राजा ने शिकायत को सज्ञान में लेते हुए नामा साहेब की परीक्षा लेने का निश्चय किया।

नामा का धरि कैद कीन्हा बादशाह गाढ़े धरा
हता साँचा पैज राखी समुझि मजलिस का परा। {परम ग्रन्थ पृष्ठ सं. 85 से}

जहाँ पर नामा साहेब रहते थे, वहाँ जाकर देखा कि नामा साहेब की झोपड़ी के पास एक गाय और बछिया बंधी थी, कुछ खाने-पीने का सामान झोपड़ी में था। इतनी व्यवस्था देखकर राजा ने हुक्म दिया कि नामा साहेब को बंदी बना लिया जाय और गाय व बछिया का सिर काट दिया जाय। यदि वह पुनः जीवित हो जाते हैं तो नामा साहेब सच्चे हैं, नहीं तो इनका भी सिर काट दिया जायेगा। गाय और बछिया का सिर काट दिया गया। नामा साहेब ने अपनी जुबान से कुछ भी नहीं कहा परन्तु देखते ही देखते गाय और बछिया उठ कर खड़ी हो गयीं। बछिया दूध पीने लगी, गाय उसे चाटने लगी। यह देखकर सभी आश्चर्यचकित रह गये। राजा ने नामा साहेब को सच्चा ईश्वर भक्त माना और तुरन्त छोड़ने का हुक्म दिया व माफी मांगी। इस घटना के बाद नामा साहेब की ख्याति चारों तरफ फैल गयी। लोग नामा साहेब को ईश्वरदूत, अपना ईष्ट देव, सन्त, दास जैसी पदवी से सराहने लगे। यहाँ तक कि लोग उनका चित्र गले में धारण करने लगे। लगभग 67 दशक बीतने के बाद आज भी लोगों में नामा साहेब के प्रति स्नेह और आदर जैसा का तैसा बना हुआ है। आपके द्वारा लिखे हुए पद संगतियों के द्वारा प्राप्त हुए हैं, उन्हें आगे लिखा गया है।

पद

(1) राम भगति बिन गति न तरन की, कोटि उपाइ जो करही रे।
जल सींचै करि प्रवालै, आंब बबूल न फलही रे॥
आपा थापि और कूं नींदै, गर्व मान के मारे रे।
फिर पीछे पछिताओगे बौरे,रतन न मिलहिं उधारे रे॥
यहु ममिता अपनी जिनि जानौ,धन जोबन सुत दारा रे।
बालू के मंदिर बिनसि जाहिंगे, झूठे करहु पसारा रे॥
जोग न भोग मोह नहीं माया, का भयो बन में बासा रे।
चरन कवँल अनुराग न उपजै, तब लगि झूठी आसा रे॥
मानुष जनम आइ नहिं चेता, अंधे पसू गंवारा रे।
तेरे सिर काल फिरै सर बाँधे, नामदेव करत पुकारा रे॥

(2) बैरागी रामहिं गाऊँगा, सबद अतीत अनाहद राता।
अकुला के घर जाऊँगा॥
तीरथ जाऊँ न जल मैं पैसूं, जीव जंत न सताऊँगा।
अठसठि तीरथ गुरू लखाये,घट ही के भीतरि नहाऊँगा॥
पाती तोड़ि न पाहन पूजी, देवल देव न ध्याऊँगा।
प्रानि प्रानि पुरुसोत्तम राता, ताकूं मैं न सताऊँगा॥
वेद पुरान शास्त्र अरु गीता, गीत कबीत न गाऊँगा।
अखंड मंडल निराकार में, अनहद बेनि बजाऊँगा॥
जड़ी न बूटी औषदि साधूं, राजबैद न कहाऊँगा।
पूरन बैद मिल्यौ बनमाली, नित उठि नाड़ि दिखाऊँगा॥
सदा संतोष रहूं आनंद मै, साइर बूंद समाऊँगा।
गगन मंडिल मैं रहनि हमारी, पुनरपि जनमि न आऊँगा॥
इड़ा पिंगला सुखमुनि नारी, पवनां मंझि रहाऊँगा।
चाँद सूर दोऊ समकरि राखूं, ब्रह्म ज्योति मिलि जाऊँगा॥
पाँच सुभाई मन की सोभा, भला बुरा न कहाऊँगा।
नामदेव कहै मैं केसव ध्याऊं,सहज समाधि लगाऊँगा॥

(3) माधौ माली एक सयाना।
अंतरगत रहै लुकाना॥
आपै बाड़ी आपै माली, कली कली कर जोड़ै।
पाके काचे काचे पाके, मन मानै ते तोड़ै॥
आपै पवन आपही पानी, आपै बरखै मेहा।
आपै पुरुष नारि पुनि आपै, आपै नेह सनेहा॥
आपै चंद सूर पुनि आपै, आपै धरनि अकासा।
रचनहार विधि ऐसी रची है, प्रणवै नामदेव दासा॥

(4) जानौ रे जानौ बेद पुराना, छाँड़ौ पढ़ना पोथी।
बिन मेघा मुकताहल बरखै, भरब निरंतर मोती॥
बिनै बजाया बाजा बाजै, बिन भेरै होत झणकारा।
नाद बिन्द मिलि अंबर गाजै, ना दीसै बजावन हारा॥
बिन पावक जोती ही दीसै, सुनि मैं सूता जागै।
अंधिया रानौ भौ भागो रे भाई, जे जागे ते आगे॥
कर जोरिकै नामा बिनवै, मैं मूरख मति थोड़ी।
येहि पद को हेतारथ जानै, तिन्है पग लागूं कर जोड़ी॥

(5) जब तब राम नाम निसतारै।
साठि घड़ी में एक घड़ी रे सोई सकल अघ जारै।
कासीपुरी मांझि गौरपति अहनिसि सदा पुकारै।
कीट पतंग सुनत गति पावै, गोविंद जस विसतारै॥
अजामील गनिका सुक पंखी, रसना राम उचारै।
गज पसु व्याध्र तरे हरि सुमिरत, महिमां व्यास विचारै॥
परम पुनीत नाव निसि वासर, निज जन हरि ब्रत धारै।
नामदेव कहै सोई दास कहावै,जीय ते छिन न बिसारै॥

(6) राम भजन बिन गति न तरन की कोटि उपाय जो करसी रे।
जल परवाह जतन से सींचै बबुर दाख ना फरसी रे।
जोगी जती तपी सन्यासी, ब्रम्हचर जो या करसी रे।
ई सब परे करम की फाँसी, मरि मरि फिरि अवतरसी रे।
या मेरी ममिता के कारन, अनेक बार ढहकोसी रे।
मन नहिं थीर अकंत का बासा, गृह तजि वनै सिधरसी रे।
उन्चास कोटि बसुधा फिरि आवै, तीनि लोक जगु मांही रे।
शिव विरंचि रवि शशि औ दुर्गा, अंत कतहुँ गति नाहीं रे।
का भया काम क्रोध के जारे, काह लिये बनवासा रे।
ह्रदय कवँल अनुराग न उपजा, तब लग झूठी आसा रे।
जैनी सिक्ख डिगम्बर सूफी, पढ़ि समरथ ना जानैं रे।
तीरथ जग्गि नेम व्रत पूजा, प्रभु एकौ ना मानै रे।
मानुष देह पाई का कीन्हेउ, भूला पशू गवांरा रे।
तेरे सिर काल फिरै सर बाँधे, नामा कहै पुकारा रे।।



समाधि
सन्त तुलसी साहेब (हाथरस वाले)



परिचय
सन्त तुलसी साहेब (हाथरस वाले)

सन्त तुलसी साहेब का जन्म पेशवा राजघराने के ब्राम्हण परिवार में महाराष्ट्र प्रान्त के पूना सतारा स्टेट में संवत् 1820 विक्रमी (सन् 1763 ई०) में हुआ था। आपके बचपन का नाम श्यामराव था। आपके पिता का नाम रघुनाथ राव था। तुलसी साहेब ने हृदयस्थ 'कंज गुरु' या 'पद्मगुरु' को ही अपना पथ-निर्देशक माना है। इसको ही, कहीं-कहीं तुलसी साहेब ने 'मूल सन्त' भी कहा है। इस प्रकार तुलसी साहेब ने किसी लोक-पुरुष को अपने गुरू के रूप में स्वीकार नहीं किया। आप संवत् 1865 विक्रमी (सन् 1808 ई०) में पूर्व निवास स्थान को छोड़कर अलीगढ़ के हाथरस किले में रहने लगे। यहीं पर आपने संवत् 1911 विक्रमी सन् 1854 ई० में देह छोड़ दी। आपकी समाधि हाथरस के सी० एल० मोहल्ला के किले में स्थित है। जहाँ पर प्रत्येक वर्ष ज्येष्ठ मास शुक्लपक्ष द्वितीया को विशाल भंडारे का आयोजन होता है। आपके कुछ पद व दोहे संगतियों द्वारा प्राप्त हुए हैं, जिन्हें आगे लिखा गया है।

पद

(1) दिल का हुजरा साफ कर जाना[1] के आने के लिए,
ध्यान गैरों से उठा उसको बिठाने के लिए।
चश्मे दिल से देख यहाँ जो तमासे हो रहे,
दिलसितां[2] क्या-क्या है तेरे दिल सताने के लिए।
एक दिल लाखों तमन्ना उसपे और ज्यादा हबिस[3],
फिर ठिकाना है कहाँ उसको टिकाने के लिए।
नकली मंदिर मस्जिदों में जाय सद अफसोस है,
कुदरती मश्जिद का साकिन[4] दुःख उठाने के लिए।
कुदरती काबे की तू महराब में सुन गौर से,
आ रही धुर से सदा तेरे बुलाने के लिए।
क्यों भटकता फिर रहा तू ऐ तलासे मार में,
रास्ता शाहरंग में है दिलबर पै जाने के लिए।
मुरशिदे कामिल से मिल सिद्दक[5] और सबूरी से तको,
जो तुझे देगा फहम[6] साहरंग के पाने के लिए।
गोशे[7] बातिन हो कुशादा[8] जो करै कुछ दिन अमल,
लाइलाहा अल्लाहु अकबर पै जाने के लिए।
या सदा तुलसी की है आमिल अमल कर ध्यान से,
कुन[9] कुरां[10] में है लिखा अल्लाहु अकबर के लिए।

उपरोक्त के पर्यायवाची शब्द- 1.जाना-पीतम, **2.**दिलसितां-लुभाने वाली चीजें, **3.**हबिस-तृष्णा, **4.**साकिन-रहने वाला, **5.**सिद्दक-निष्ठा, **6.**फहम-समझदारी, **7.**गोशे बातिन-अन्दर के कान, **8.**कुशादा-खुल जाय, **9.**कुन-शब्द का नाम, **10.**कुरां-कुरान।

(2) आली रे काल करत बेहाली, तासे पार परम घर चाली।
तत् करु तेल सुरति करु बाती, हाथै दीपक थाली।
ब्रम्ह अगिनि परगट करि तन में, महल करौ उजियारी।
ताला खोलि चलो मंदर में, सतगुरु से ले ताली।
दीन दयाल नाम है उनको, बकसि देत दरहाली[1] ।
अन्दर जाय अलख लखि प्यारा, इश्क प्रेम प्रतिपाली।
ज्ञान विवेक जोग धरि ध्याना, तोड़ी जम जग जाली।
तुलसी मान सरोवर तीर चलि जानो, नहावो करम परवाली[2] ।
निरमल नेह सेह[3] पीतम की, आतम दरस निहाली।

उपरोक्त के पर्यायवाची शब्द- 1.दरहाली-तुरन्त, **2.**परवाली-धोकर, **3.**सेह-घर।

(3) काया कनक गढ़, लंक बंक टिसुना दधि जानी।
रावण है अहंकार माया मंदोदरि रानी।
तत्त ज्ञान श्री राम सत्य सीता है सोई।
मन मानौ हनुमान क्षिमा लक्षिमन है जोई।
कुम्भकरन निद्रा गही, भाव भभीखन देखिये।
तुलसी धरनि प्रसंग हिये रामायन देखिये।

(4) हमरा बियाहु करौ मोरे बाबा, तुम से न होय निबाहु रे।
जा के रंग रूप ना रेखा, सो बरु ख्वाजौ हमार रे।
आवै न जाय मरै ना जीवै सो बरु आय हमार रे।
बार न बूढ़ तरुन ना बाबा, आयेउ तिलकु चढ़ाइ रे।
गगनै खम्भु गड़ायेव मोरे बाबा, अरधै रचेउ बियाहु रे।
पवन बराती ब्याहन अइहै, बहु बिधि करेउ सनमान रे।
तिरवेनी का पानी भरायेव, अक्षय बिरछ की डार रे।
सुक्रित कलस धरायेउ मोरे बाबा, पूजेउ पांय हमार रे।
सुरति निरति सो गांठी जोरेउ, मड़वा देहेउ चिरुआय रे।
पाँच भाँवरी घुमायेउ मोरे बाबा, गांठी दीन्हेउ निपुचाय रे।
निरगुन सेंदुरा मंगायेउ मोरे बाबा, पिया सो देवायेउ भरि मांग रे।
सतगुरु विप्र के चरन छुवायेउ, जुग-जुग अटल सुहाग रे।
चाँद सुरज दोऊ पवंर मां राखेउ, कोहबन दसौं दुआर रे।
ऊँचा सा दरवाजा धरायेउ मोरे बाबा, निहुरै न कंथ हमार रे।
ज्ञान की डोलिया फंदायो मोरे बाबा, कै दीन्हेउ बिदा हमारि रे।
तुलसी दास छूटल मोरा नैहर, सब सो भेट अगुवार रे।

(5) हमसो कौन बड़ा परिवारी।
सत है पिता धरम है भाई लज्जा है महतारी रे।
शील बहिन संतोष पुत्र है क्षिमा हमारी नारी रे।
आशा सासु टिसुना है सारी मोह जार ससुरारी रे।
अहंकार हैं ससुर हमारे इनकी गति है भारी रे।
ज्ञानी गुरू विवेकी चेला छिन छिन रहै अधिकारी रे।
मन दीवान सुरति है राजा बुद्धि मित्र मति भारी रे।
काम क्रोध दुइ चोर बसति हैं तिनका डर है भारी रे।
राम नाम की बसै नगरिया तुलसी पंचम प्यारी रे।

समाधि
सन्त पीपा साहेब
मानपुरा, गगरौनगढ़ (राजस्थान)



परिचय
सन्त पीपा साहेब

सन्त पीपा साहेब का जन्म राजस्थान के कोटा गंगरौनगढ़ के राजघराने में संवत् 1483 विक्रमी (सन् 1426 ई०) को हुआ था। आपके बचपन का नाम राजकुमार प्रताप सिंह था। आपकी माता का नाम लक्ष्मीवती था। आपके पिता की मृत्यु के बाद कुछ समय तक राज्य का कार्यभार संभालने के पश्चात् आपने राज्य त्याग दिया और ईश्वर प्राप्ति के उद्देश्य से काशी जाकर सर्गुण उपासक रामानंद जी से मुलाकात की और अपनी बात उन्हें बताई। रामानंद ने आपके गले में एक कंठी बाँधकर सभी तीर्थों के भ्रमण का आदेश दिया। पीपा साहेब सभी तीर्थ भ्रमण के लिए निकल पड़े। अपने राज्य के पास से गुजरते समय आपने विचार किया कि अपने घर भी होते चलें। घर पहुँचकर आपने रात बिताई। सुबह जब आप चलने लगे तो तीनों रानियों ने आपके साथ चलने का आग्रह किया। काफी समझाने-बुझाने पर दो रानियाँ तो मान गईं किन्तु छोटी रानी नहीं मानी और वह आपके साथ ही चल पड़ी। घूमते-घूमते आप जब द्वारिकापुरी समुद्र के किनारे पहुँचे तो आपके मन में विचार आया, कि "भगवान तो क्षीर सागर में ही निवास करते हैं, मैं तो सागर के किनारे ही खड़ा हूँ"। ऐसा सोंचकर आप पति-पत्नी एक साथ समुद्र में कूद गये। ईश्वर ने आपके दृढ़ विश्वास को देखकर तुरन्त मायावी द्वारिका की रचना की। वहाँ पहुँचकर पीपा साहेब बहुत प्रसन्न हुए। "देवी लक्ष्मी विष्णु भगवान के पैर दबा रही हैं। सभी कर्मचारी अपने-अपने काम पर लगे हैं।" आपके रहने के लिये उत्तम व्यवस्था की गई और पीपा साहेब कुछ समय तक वहाँ रहते रहे।

विष्णुरूप माया जो वहाँ पर नामा साहेब को मिली थी। उसने कहा, कि "आपको काफी समय हो गया है, अब आप यहाँ से जाएँ"। पीपा साहेब ने कहा "मैं आपको पाकर धन्य हो गया हूँ, मैं आपके बगैर नहीं रह सकता, मैं आपके बगैर मर जाऊँगा"। तब माया ने कहा, कि "मैं तो ईश्वर की दासी हूँ। साँचे साहेब कबीर हैं, जो इस समय काशी में हैं। आप कबीर साहेब के पास जायें वह ही आपको ब्रम्ह से मिलाएँगे"। ऐसा कह कर माया चली गई और पीपा साहेब काशी कबीर साहेब के पास आ गये। रामानंद को जब मालूम हुआ, कि पीपा साहेब काशी कबीर साहेब के पास आ गये हैं, लेकिन मेरे पास नहीं आये। तब रामानंद कबीर साहेब के पास गये और कहा, कि "तुमने पीपा को क्या कर दिया, कि वह सब तीरथ करके आया है, लेकिन मेरे पैर भी नहीं लगा और आपकी प्रशंसा कर रहा है"। इस बात पर पीपा साहेब ने कहा, कि "हम द्वारिकापुरी गये थे। वहाँ हमें मालूम हुआ, कि साँचे सतगुरु तो कबीर साहेब हैं। इसलिए मैं कबीर साहेब की शरण में आया हूँ"। रामानंद ने कबीर साहेब से कहा "हमको भी बताओ सतगुरु साहेब कैसे मिलेंगे?", तब कबीर साहेब ने कहा-

चींटी होइकै पाइयाँ, तुमतौ भयेउ पहार।
खाउ कचौरी पापड़े, या जग का व्यवहार।। पृष्ठ 52 (भक्ति-विवेखु) परम-ग्रन्थ से

रामानंद अपने आश्रम चले गये। उसके कुछ समय बाद एक राजा जो संतानहीन था, वह संतान प्राप्ति की इच्छा से रामानंद जी के आश्रम आया। राजा के साथ फौज भी थी। रामानंद राजा के आने की खबर सुनकर पीछे घूमकर बैठ गये। राजा ने सोंचा, "मैं निःसंतान हूँ, इसलिए रामानंद मेरा मुँह नहीं देखना चाहते हैं, चलो वापस चलते हैं।" सभी वापस चल दिए। वापस जाने की आहट सुनकर रामानंद घूमकर देखने लगे। कुछ सैनिकों ने देखा कि रामानंद पीछे से देख रहे हैं तो राजा को बताया। इस पर राजा ने आदेश किया, कि रामानंद पाखण्डी हैं। रामानंद का सिर काट दिया जाय। आदेश मिलते ही सैनिकों ने सिर काट लिया। इस तरह रामानंद का अंत हो गया। पीपा साहेब को कबीर साहेब ने वह मार्ग बताया जिस पर चलकर पीपा साहेब ने मोक्ष की प्राप्ति की।

दोहे

(1) कायहि देवा कायहि देवल कायहि जंगम जाती।
कायहि धूप दीप नईबेदा कायहि पूजउ पाती।।

(2) कायहि बहु खंड खोजते नव निधि पाई।
ना कछु आइबो ना कछु जाइबो राम की दुहाई।।

(3) जो ब्रम्हांडे सोई पिंडे जो खोजै सो पावै।
पीपा प्रणवै परम तत्तु, सतगुरु होइ लखावै।।

(4) अनत न जाऊं राजा राम की दुहाई।
कायागढ़ खोजता मैं नौ निधि पाई।।

(5) हाथां से उद्दिम करै, मुख सो उचरै राम।
पीपा साधा सो धरम, रोम रमा है राम।।

(6) उण उजियारे दीप की, सब जग फैली ज्योत।
पीपा अंतर नैन सो, मन उजियारा होत।।

(7) पीपा जिनके मन कपट, तन पर उजरो भेस।
तिनको मुख कारो करो, सन्त जना के लेख।।

(8) जहाँ पड़दा तहाँ पाप, बिन पड़दै पावै नहीं।
जहाँ हरि आपै आप, पीपा तहां पड़दौ किसौ।।

(9) जो कलि नाम कबीर न होते।
तो लोक वेद अरु कलजुग मिलकर, भक्ति रसातल देते।।

(10) अगम निगम की कही कही पांडे, फल भागोत लगाया।
राजस तामस सातुक कहि-कहि, इन ही जगत भुलाया।।

(11) सरगुन कथि-कथि मीठा खाया, काया रोग बढ़ाया।
निरगुन नीम पियो नहीं गुरुमुख ताते हाटै जीव बिकाया।।

(12) वक्ता-श्रोता दोऊ भूले, दुनियाँ सबै भुलाया।
कल्प वृच्छ की छाया बैठा, क्यूँ कल्पना जाया।।

(13) अंध लकुटिया गही जो अंधे, पातक कूप परे कित थोरे।
अवरन वरन दोऊ रस अंजन, आँख सबन की फोरे।।

(14) हमसे पतित कहाँ कहि रहते, कौन प्रीत मन धरते।
नाना बानि देखी सुनि श्रवना, बहुमारग अनुसरते।।

(15) तिरगुन रहित भक्ति भगवत की, तेहि बिरला कोई पावै।
दया होय जो कृपा निधान की, तो नाम कबीर ही गावै।।

(16) हरी हरी भक्ति भक्त कण लीना, त्रिविध रहन थिति मोहे।
पाखण्ड रूप भेख सब कंकर, ग्यान सूप सू सोहे।।

(17) भक्ति प्रताप राखवे कारन, निज जन आप पठाया।
नाम कबीर सांच प्रकास्या, तहां पीपे ने कछु पाया।।



समाधि सन्त धरमदास साहेब,बाँधवगढ़



परिचय
सन्त धरमदास साहेब (बाँधवगढ़)

सन्त धरमदास साहेब का जन्म बाँधवगढ़ के कशौंधन वैश्य परिवार में कार्तिक पूर्णिमा संवत् 1473 विक्रमी तदानुसार सन् 1416 ई० को हुआ था। आपके निर्वाण का समय ज्ञात नहीं है। आपकी माता का नाम सुधर्मावती व पिता का नाम मनमहेश था। आपके बचपन का नाम जुड़ावन था। वयस्क होने पर आपका विवाह आमिन देवी के साथ हुआ। आप एक वैष्णव ग्रहस्थ थे। आपके विचार बचपन से ही आध्यात्मिक थे और आप साधुजनों की सेवा में रुचि रखते थे।

आपके प्रारम्भिक गुरू का नाम रूपदास था जो सर्गुण उपासक थे। किन्तु आप कबीर साहेब की भेंट के उपरान्त निर्गुण भक्तिधारा में डूब गए। आपकी कबीर साहेब से पहली भेंट मथुरा में हुई। उसके एक वर्ष बाद आप काशी जाकर कबीर साहेब से मिले और कबीर साहेब की विधिवत शिष्यता ग्रहण की। आपने अपने दोहे व पद में कबीर साहेब को अपना गुरू बताया है।

आपके समय से कुछ समय बाद रैदास साहेब के एक शिष्य धरमदास हुए इसलिए आपके नाम के साथ धनी धरमदास भी लिखा जाता है। आपके समय में बाँधवगढ़, कौशलपुर राज्य में आता था। उसके बाद मध्यप्रदेश राज्य का गठन हुआ तब बाँधवगढ़ मध्य-प्रदेश राज्य की सीमा में आ गया। जब छत्तीसगढ़ राज्य का गठन हुआ तो बाँधवगढ़ छत्तीसगढ़ की सीमा में आ गया। आपके द्वारा लिखे दोहे व पद जो प्राप्त हो सके हैं, वह नीचे लिखे हैं। आपने कबीर साहेब के देह छोड़ने के बाद कबीर परम्परा को आगे बढ़ाया। समय बीतता गया, नये-नये गद्दीधर बनते चले गये। इस तरह मूल लेख में भी मेल-मिलावट हो गयी। लालची व भेखी-आडम्बरी महंतों के कारण निर्गुण वाणी-वचन को सर्गुण व्यवहार में उपयोग कर धन उपार्जन का साधन बना लिया।

पद

(1) भक्ति दानु गुरु दीजिये देवन के देवा,
चरन चितै ठाढ़ा रहौं करिहौं संग सेवा।
तीरथ बरत थापहुँ नहीं ना देव न पूजा,
मनसा वाचा कर्मना ना देव न दूजा।
आठ सिद्धि नौ निद्धि लौ बैकुंठ की वासा,
या तुमते मांगौं नहीं जब लग तन स्वांसा।
सुख सम्पति औ साहेबी सुन्दर पर नारी,
सपनेउ इच्छा ना चलै गुरु आनि तुम्हारी।
धरमदास की बीनती सुनि लीजै सांई,
या जगु बहुरि न आवऊँ जगु हवै कसाई।

(2) हम सत नाम के बैपारी।
कोइ-कोइ लादै काँसा पीतल, कोइ-कोइ लौंग सुपारी।
हम तो लाद्यो नाम धनी को, पूरन खेप हमारी॥
पूँजी न टूटै नफा चौगुना, बनिज किया हम भारी।
हाट जगाती रोकि न सकिहै, निर्भय गैल हमारी॥
मोती बूँद घटहिं में उपजै, सुक्रित भरत कोठारी।
नाम पदारथ लादि चला है, 'धरमदास' बैपारी॥

(3) झरि लागी महलिया गगन घहराय।
घन गरजै, घन बिजली चमकै, लहर उठै सोभा बरनि न जाय॥
सुन्नि महल से अमरित बरसै, प्रेम अनंद होइ साध नहाय॥
खुली किवरिया मिटी अंधियरिया, धनि सतगुरु जिन दिया है लखाय॥
'धरमदास' बिनवै कर जोरी, सतगुरु चरन में रहत समाय॥

(4) खेलत रहलौं बाबा चौं ओरिया।
राँध परोसिन भेंटहूँ न पायों डोलिया फँदाये लिये जात हो।
डोलिया से उतरो उत्तर दिसि धनि नैहर लागल आगि हो।
सब्दै छावल साहेब नगरिया जहवाँ लिवाये लिये जात हो।
भादो नदिया अगम बहै सजनी सूझै वार न पार हो।
अबकी बेर साहेब पार उतारो फिर न आइब संसार हो।
डोलिया से उतरो साहेब घर सजनी बैठो घूंघट टारि हो।
कहैं कबीर सुनो धरमदासा पाये पुरुष पुरान हो।

(5) भक्ति दान गुरु दीजिये गुरु देवन के देवा, चरण कवँल बिसारौं नहीं करिहौं पद सेवा।
तीरथ बरत मैं ना करौं ना देवता पूजा, तुम्हरी ओर निरखत रहौं मेरे और ना दूजा।
आठ सिद्धि नौ निद्धि है बैकुंठ निवासा, सो ना मैं कुछ माँगऊँ मेरे समृथ दाता।
सुख सम्पति परिवार धन सुन्दर वर नारी, सपनेउ इच्छा ना उठै गुरु आनि तुम्हारी।
धरमदास की बीनती साहेब सुनि लीजै, दरसन देव पट खोलि कै आपन करि लीजै।।

(6) हरि जी से मिलना कठिन है मोरे भाई, साधि साधि पग धरों जतन ते बार बार डिगि जाई।
ऊँची गैल शैल रपटीली पाँव नहीं ठहराई, लोक वेद कुल की मरजादा छाँड़ति जिया सकुचाई।
जो तुम मिलिहौ पिया पियारे या अनरीति दिखाई, शुन्य शिखर पर पिया बसति हैं धरम ध्वजा फहराई।
आनंद स्वरूप रूप साहेब का सुरति झिकोरा खाई, धरमदास हरि हीरा पाये तन की तपनि बुझाई।
गुरू कबीर कृपा के सागर दुरमति दूरि भगाई, हरि जी सो मिलना कठिन है मोरे भाई।।

(7) हमरे सतगुरु केरि महलिया दियना जगमग जगमग होय।
ऊँची अटरिया चन्दन केंवरिया अलख सो लागी डोरि।
आवैगा कोई सन्त विरहिया काम कुटिल डारै तोरि।
त्रिकुटी बैठे जपौं सुमिरनी पवन तत्त रहु पोय, चाँद सुरज दोउ मारग गहिले गगन मंदिल रहु सोय।
कोटि भानु परगास होति है तिमुरु न दरसै कोय, अनहद बाजा बाजि रहे हैं शब्द मां सुरति समोय।
रहनी होय मुक्ति सोइ पावै आवागवन न होय, धरमदास की अरज गुसाईं सुनिये बंदीछोर।।

ज्ञान-गुदरी

धरमदास विनवै कर जोरी, साहेब सुनिये विनती मोरी।
काया गुदड़ी कहो संदेशा, जासे जीव का मिटै अंदेशा।
अलख पुरुष जब किया विचारा, लख चौरासी धागा डारा।
पाँच तत्व से गुदड़ी बीनी, तीन गुनन से ठाढ़ी कीन्ही।
तामें जीव ब्रह्म अरु माया, समरथ ऐसा खेल बनाया।
जीवन पाँच पचीसों लागे, काम क्रोध ममता मद पागे।
काया गुदड़ी का विस्तारा, देखौ संतों अगम सिंगारा।
चाँद सुरज दोउ पेवन्ध लागे, गुरु परताप से सोवत जागे।
शब्द की सुई सुरति कर धागा, ज्ञान टोप से सीयन लागा।
अब गुदड़ी की करु होशियारी, दाग न लागै देखु विचारी।
सुमति का साबुन सिरजन धोई, कुमति मैल को डारो खोई।
जिन गुदड़ी का किया विचारा, तिनको भेंटे सिरजन हारा।
धीरज धुनी ध्यान धरु आसन, सत की टोपी सहज सिंहासन।
युक्ति कमंडल कर गहि लीन्हा, प्रेम फावड़ी मुरसिद चीन्हा।
सेली शील विवेक की माला, दया की टोपी तन धर्मशाला।
मेहर मतंगा मत बैशाखी, मृगछाला मनही की राखी।
निश्चय धोती पवन जनेऊ, अजपा जपै सो जानै भेऊ।
रहे निरन्तर सतगुरु दाया, सन्त संगति करि सब कुछ पाया।
लौ करु लकुटी हृदया झोरी, क्षमा खड़ाऊँ पहिर बहोरी।
मुक्ति मेखला सुरति सुमिरनी, प्रेम पियाला पीवै मौनी।
उदासी कुबरी कलह निवारी, ममता कुत्ती को ललकारी।
युक्ति जंजीर बांधि जब लीन्हा, अगम अगोचर खिरकी चीन्हा।
वैराग त्याग विज्ञान निधाना, तत्व तिलक दीन्हों निर्वाना।
गुरु गम चकमक मनसा तूला, ब्रम्ह अगिन परगट कर मूला।
संशय शोक सकल भ्रम जारा, पाँच पचीसों प्रगटहि मारा।
दिल की दुरमति दुविधा खोई, सो वैरागी पक्का होई।
शुन्य महल में फेरी देवै, अमृत रस की भिक्षा लेवै।
दुःख सुख मैल जगत के भाऊ, त्रिवेणी के घाट नहाऊ।
तन मन शोधि भया जब ज्ञाना, तब लखि पावै पद निरवाना।
अष्ट कमल दल चक्कर सूझै, योगी आप-आप में बूझै।
इंगला पिंगला के घर जाई, सुषमुनि नारि रहै लौ लाई।
वोहं सोहं तत्व विचारा, बंक नाल में किया संभारा।
मन को मारि गगन चढ़ि जाई, मान सरोवर पैठि नहाई।
अनहद नाद नाम की पूजा, ब्रह्म वैराग्य देव नहीं दूजा।

छुटि गए कशमल कर्मज लेखा, यहि नैनन साहेब को देखा।
अहंकार अभिमान विडारा, घट का चौका कर उजियारा।
चित कर चन्दन मनसा फूला, हित कर सम्पुट करि ले मूला।
श्रद्धा चवँर प्रीति का धूपा, नूतन नाम साहेब का रूपा।
गुदरी पहिरे आप अलेखा, जिन यह प्रगट चलायो भेखा।
साहेब कबीर बख्शि जब दीन्हा, सुर नर मुनि सब गुदरी लीन्हा।
ज्ञान गुदरी जो पढ़े प्रभाता, जनम जनम के पातक जाता।
ज्ञान गुदरी जो पढ़ै मध्याना, सो लखि पावै पद निर्बाना।
संध्या सुमिरन जो नर करहीं, जरा मरन भवसागर तरहीं।
कहै कबीर सुनो धरमदासा, ज्ञान गुदरी का करहु प्रकाशा।।

दोहे

माला टोपी सुमिरनी, सतगुर दिया बक्शीश।
पल पल गुरु को बंदगी, चरण नवावों शीश।।
गुरु समान दाता नहीं, याचक शिष्य समान।
तीन लोक की सम्पदा, गुरु पल में दीन्हा दान।।
भव भंजन दुःख परिहरण, अमर करन शरीर।
आदि युगादि आप हौ, चारों युग कबीर।।
बंदी छोर कहाइया, बलख शहर मंझार।
छूटे बंधन सब भेष का, तन धन कहे संसार।।
मैं कबीर बिचलू नहीं, शब्द मौर समरथ।
ताको लोक पठाइहौं, जो चढ़ै शब्द के रथ।।


समाधि सन्त मीरा साहेब द्वारका ,गुजरात


सन्त मीराबाई मंदिर, चित्तौड़गढ़

परिचय
सन्त मीरा साहेब

सन्त मीरा साहेब का जन्म संवत् 1555 विक्रमी (सन् 1498 ई०) में राजस्थान में मेड़ता के पास चौकड़ी नामक ग्राम में हुआ था। आपके पिता का नाम रतन सिंह था, जो जोधपुर के राजा थे। जोधपुर के संस्थापक राव जोधा जी आपके बाबा थे। जब मीरा जी की माताजी का देहांत हुआ, तब मीरा जी 2 वर्ष की थीं। इसलिए आपके दादाजी जिनका नाम श्री राव दूदाजी था, उन्होंने आपका पालन-पोषण किया। दूदाजी धार्मिक विचारों वाले व्यक्ति थे। जिसका सीधा असर मीरा जी पर पड़ा और आपने मात्र आठ वर्ष की आयु में ही श्रीकृष्ण को अपने मन में पतिपरमेश्वर स्वीकार कर लिया था। आपका विवाह चित्तौड़ के महाराणा सांगा के बड़े पुत्र भोजराज के साथ हुआ। विवाह के कुछ समय बाद ही आपके पति की असमय मृत्यु हो गयी। पति की मृत्यु का मीरा के जीवन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा, क्योंकि वह श्रीकृष्ण को अपने मन में पति मान चुकी थीं। आध्यात्म की खोज में मीरा जी साधु जनों से मिलती थीं, तो उनके परिवार के लोगों को यह बात अच्छी नहीं लगती थी। मीरा जी के देवर राणा व राणा की बहन ऊदाबाई ने मिलकर मीरा जी को बहुत प्रताणित किया। यहाँ तक कि मीरा जी को जहर भी दिया गया।

जहर दीन्हा घोरि मीरै पियाइ राना कसि लिया
हती कंचन बाचि उबरी खलन के मुख टरि परा। {परम ग्रन्थ पृष्ठ सं. 85 से}

इस तरह मतभेद बढ़ता चला गया। मीरा जी ने मेवाड़ छोड़कर वृन्दावन की राह ली।चित्तौड़ छोड़ते ही गुजरात के सुल्तान बहादुर शाह ने संवत् 1592 विक्रमी (सन् 1535 ई०) में चित्तौड़ पर हमला कर दिया। वृन्दावन पहुँचकर मीरा जी जब जीव गोस्वामी जी से मिलीं, तो उन्होंने उन्हें गुजरात जाकर रैदास साहेब से मिलने की सलाह दी। तब मीरा जी रैदास साहेब से मिलने गुजरात चली गयीं। उस समय मीरा जी की उम्र 38 वर्ष की थी। रैदास साहेब ने उन्हें निर्गुण ब्रम्ह के बारे में जानकारी दी। मीरा जी ने रैदास साहेब को अपना गुरू स्वीकार किया। रैदास साहेब के मार्गदर्शन में मीरा साहेब ने निर्गुण ब्रम्ह की प्राप्ति की। उसके बाद मीरा साहेब ने जो साखी, पद बोले वह पूरी तरह से निर्गुण थे, जो कुछ लोग ही जान पाए। इस लिए अधिकतम् लोग मीरा साहेब को श्रीकृष्ण की भक्त ही जानते हैं, किन्तु मीरा साहेब निर्गुण भक्त ही थीं। मीरा साहेब ने संवत् 1603 विक्रमी (सन् 1546 ई०) में गुजरात के द्वारका नामक स्थान पर 48 वर्ष की अवस्था में देह छोड़ दी। द्वारका में ही आपकी भव्य समाधि बनी हुई है।

पद

(1) पायो जी मैंने राम रतन धन पायो, वस्तु अमोलिक दी मेरे सतगुरु किरपा करि अपनायो।
जनम जनम की पूंजी पाई, जग में सभी खोवायो, खरचै नहीं कोई चोर न लेवै, दिन-दिन बढ़त सवायो।
सत की नाव खेवइया सतगुरु, भवसागर तर आयो, मीरा के प्रभु गिरधरनागर,हरखि-हरखि जस गायो।

(2) तनक हरि चितवौ जी मोरी ओर, हम चितवत तुम चितवत नाहीं, मन के बड़े कठोर।
मेरे आसा चितनि तुम्हारी और न दूजी ठौर, तुमसे हमको एकै हो जी हम सी लाख करोर।
कब की ठाड़ी अरज करत हूँ अरज करत भइ भोर, मीरा के प्रभु हरि अविनासी देखेउँ प्राण अकोर।

(3) दरस बिन दूखन लागे नैन।
सबद सुनत मेरी छतिया काँपै, मीठे मीठे बैन।
कल न परत पल हरि मग जोवत, भई छमासी रैन।
जबसे तुम बिछुरे हो प्रभु जी, कबहूँ न पायो चैन।
बिरह-बिथा कासो कहूँ सजनी, बह गई करवत थैन।
मीरा के प्रभु कबहीं मिलोगे, दुख मेटत सुख दैन।

(4) तेरो कोई नहिं रोकनहार, मगन होइ मीरा चली।
लाज सरम कुल की मरजादा, सिरसै दूर करी।
मान-अपमान दोऊ धरि पटके, निकसी ग्यान गली।
ऊँची अटरिया लाल किंवड़िया, निरगुण-सेज बिछी।
पंचरंगी झालर सुभ सोहै, फूलन फूल कली।
बाजूबंद कडूला सोहै, सिंदूर मांग भरी।
सुमिरन थाल हाथ में लीन्हो, सोभा अधिक खरी।
सेज सुखमणा मीरा सोहै, सुभ है आज घरी।
तुम जाओ राणा घर अपने, मेरी थारी नाहिं सरी।

दोहा

आज कल की मैं नहीं राणा, जब यो ब्रम्हांड छायो।
मेड़तियों में जन्म लिया, मीरा नाम कहायो।**(1)**
नाम रहेगो काम ते, सुनो सयाने लोय।
मीरा सुत जायो नहीं, शिष्य किया ना कोय।**(2)**

पद
“सन्त मंसूर साहेब”

(1) तुझे है इश्क मिलने का, तो हरदम लौ लगाता जा।
बजू का तोड़कर कोजा, सरावे सौख पीता जा।
उठा ले इश्क का झाड़ू, सफा कर दिल के हुजड़े को।
धुईं की धूल को लेकर, मुसल्ले तक उड़ाता जा।
ना रहु रोजा न मरु भूखा, न जा मस्जिद करु सिरदा।
पकड़ ले घर परोसी का, गदा उसका कहाता जा।
फेंक तसबी तोड़ माला, किताबें बोर दरिया में।
खुदा की खूब खुद ही है, खुदा खुदही से कहाता जा।
कहै मंसूर सुनु काजी, पियाला जहर का मत खा।
अनल हक अैन है येही, यही कलमा पढ़ाता जा।

(2) खोलि देखौ रे किताबें आदि औवल कौन था।
नहीं जिमी असमान खिलकद खुद खुदा तब कौन था।
कुफुर खोलो रे कुराना मूल ज्ञाना भेद का।
थी कलम स्याही ना कागद आदम मियाँ कोई न था।
नहीं मोहम्मद रब ना रे नहीं पैगम्बर पीर थे।
नहीं नवी का नाम निस्बत दोजक भिस्त कुछ न था।
काजी मुल्ला रे बेहोसौ खोज करो दीदार का।
मन हुआ मंसूर जबते आशिक चश्मे यार का।

पद
“सन्त भागीरथ साहेब”

(1) विमल विमल अनहद धुनि बाजै, ध्यान करै ता सुनति बनै रे।
किंगरी शंख सरस धुनि बाजै, अरझा मन तहं केलि करै रे।
पूरब दिशा ते चली बिरहनी, पाँच रतन लिये थार भरै रे।
अष्ट कवँल दल द्वादस दल के भीतर, पिया मिलने की चाह करै रे।
बरहों मास झरि लगी बरसै, निसि वासर कुछ लखि न परै रे।
उलटा मच्छ गगन चढ़ि गरजै, बरखै अमीरस ताल भरै रे।
जैसे अजिया देखि सिंह का, काल करम का नाहिं डरै रे।
जन भागीरथ अटल साहेबी, बिन धीरज नल भटकि मरै रे।

(2) निर्लज्ज मन का को समुझावै रे, तोहि लाज ना आवै रे।
काम क्रोध मद लोभ डहै, लालच भरमावै रे।
आशा टिसुना नदी बहै, जोरा जोर जनावै रे।
या माया परपंच भरी रे, मन संतोष न आवै रे।
मोह महावत मन गयंद, चित चाल चलावै रे।
दुरमति पीठ पलान परी, थिर होन न पावै रे।
कहै भागीरथ ऐसी संगति, सतगुरु सरनि बचावैं रे।
सुज्जन अस्त्र सुमति ले धारै, तो परचै या पावै रे।

(3) महल की शोभा बरनि ना जाय, जहाँ गरजि गगन घहराय।
कलसा तीनि कंगूरा तेंतिस, ऊपर ध्वज फहराय।
अमर लोक गति बूझि न आवै जहँ राईउ ना ठहराय।
चंचल मीन चलै ऊपर का सिंह नाग अकुलाय।
दुवादशि दामिनि दमक देखावै, जहँ द्रष्ट ना मुष्ट समाय।
लै कै संघ क्षिमा घर बैठा एक पिण्ड नौ धाय।
जन भागीरथ येहि गढ़ ऊपर बिहसि मिले रघुराय।।

(4) हमरे हरी हरिल की लकरी ताते छूटै ना आध घरी।
होय निरशंक नाम गहि बैठे लोक की लाज हरी।
तीनिउ लोक सकल मंहि मण्डल जल थल समुझि परी।
जिउ मकु जाय धरनि ना छूटै तन मन देह गली।
जैसे मीन अधीन जलै बिन बिछुरत तुरत मरी।
नाम जिहाज विधाता खेवन अम्बर खेलि भरी।
कहैं भागीरथ खेवन सतगुरु खेइ कै पार करी।।

(5) शिखर ते छूटत धारा रे जहँ अम्बर दुआरा रे, होत शोर घनघोर गगन गढ़ उघरत तारा रे।
अरध उरध के बीच मां प्रभु रहत निनारा रे, अमी चुअै सरवरि भरै रे हंसा मनि आरा रे।
हिरना चरै दीपक बरै चहुँ दिसि उजियारा रे, खोजति बेद पुरान भागवति यहु जगु हारा रे।
कहै भागीरथ एकुइ बोलै जिनको सकल पसारा रे, शिखर ते छूटत धारा रे जहँ अम्बर दुआरा रे।

(6) मन रे तू केतक काछ कछे, तुम धरि धरि देह नचे, गरभवास मां उरध मुख झूले कइयो बेर पचे।
कटा ना फंद दण्ड ना छूटा, येही रंग रचे, भरमत भरमत भय सागर मां, कर मंहि डोल मचे।
लख चौरासी दाँवरि दीन्ही, को कलि काल बचे, उड़ते फिरत काग की समसरि, डारै डार बसे।
कहै भागीरथ बधिक पहूँचा पंख मिरोरि फंसे, मन रे तू केतक काछ कछे, तुम धरि धरि देह नचे।

(7) कबहूँ काग न हंस कहावै, जो पै दसों दिशा भ्रमि आवै।
जम्बुक स्वान सिंघासन बैठे, हांड़ न चित बिसरावै।
अजया कोटि करोरिन जोरे, कूर न खेत जगावै।
घर घर भामिन भाव न दूजा, काम जो सकल करावै।
पिया के साथ चली सुरलोकै, अगिनि मां अंग जरावै।
गुपित सेजरिया मां आसन करिकै, दुविधा दूरि भगावै।
किंगरी शंख सहस धुनि बूझै, सन्यास धरम तब पावै।
समर सूर सो सनमुख जूझै, जियत न पीठ देखावै।
कहै भागीरथ दोष कौन का, को मुरखै समुझावै।
कबहूँ काग न हंस कहावै, जो पै दसों दिशा भ्रमि आवै।

सन्त चौधी साहेब का निरगुन कहरा

(1) कनौज सुनिये अनहद बाजा, किया चित्त उर ताना रे।
लखनउवा का देखि तमासा, हद बेहद किया पयाना रे।
बावन पुरवा है कलपी के, समुझि कै दीख मंझाई रे।
उदयापुर मां मानिक भरिया, किया कड़े मां थाना रे।
राजमहल मां सतगुरु भेंटे, वस्तु अगोचर पाई रे।
ना सिर घाट तिमुर तहँ बिनसै, मिटि गई आवाजाही रे।
दहिने हाथ सहनाई बाजै, बाएँ हाथ कंडाला रे।
राम तुला अधिकाई बाजै, शोभा बरनि न जाई रे।
कोटिन भानु चन्द्र तारागण, वा छवि का ना पाई रे।
चौधी दास का निरगुन कहरा, महरम भेदा पाई रे।

पद लच्छन साहेब

(1) जलम नैहरवा मां खेलि भुलानी।
जननी जनक व्रथा मोहिं सेयेउ, सेइ पालि कै कियो सयानी।
जहँ तहँ वर ब्याहन को खोजति, समुझि समुझि जिया होत गलानी।
एकौ गुन ढंग भये न मोहीं कहि हमरी मति बहु सकुचानी।
साजि बरात व्याहन जब आये सादर लेन चले अगवानी।
कौन उपाय जलम भरि निबहब हँसिहैं लोग ससुर अभिमानी।
एक उपाय जलम भरि निबहब छिनु छिनु भरब पिया घर पानी।
लच्छन दास निबाह करैंगे जलम जलम तेहि हाथ बिकानी।

पद सन्त सधन साहेब

(1) तोहि सुमिरे ते का भया जो करम ना नासै रे।
स्वांति बूँद के कारने चात्रिक लौ लावै रे।
प्रान गये सरिता मिली कहु किसे पिलावै रे।
पैरत पैरत जल बढ़ा ताको अंत न पाया रे।
बूड़ि गये नइया मिली कहु किसे चढ़ावै रे।
नृप कन्या के कारने एक भया भेखधारी रे।
पाप कपट पाखण्ड रचा ताकी पैज संवारी रे।
जोगी हुए वन का गये या माया घेरे रे।
काम क्रोध छूटा नहीं का माला फेरे रे।
सिंह सरन प्रभु आइकै जम्बुक की त्रासै रे।
अजया कुंजर सिर चढ़े निर्भय फल चाखै रे।
मेरा करना तुझे भेंटना सब औगुन मेरे रे।
कूरा कपटी दासवा सधना जन तेरा रे।

बारहमासी
“सन्त दरगा साहेब”

(1) चैत चेति चित चेतन होई, अरध उरध रहि चंद समोई।
इड़ा पिंगला सुख मुनि नारी, आपनि आपनि सींचै बारी।
सींचि बारी अमर (सदिल) कीन्हा समुन्दर सत जल सो किया।
उह उहा बिन अन्न पानी पिण्ड पावक सो किया।
मूल कवँल पाताल बाँध्यो छिन अकाश न छोड़िया।
नाभि कवँल बढ़ाई डोरी सो न दरगह छोड़िया।

(2) बैसाखै बसि भये मवासी, बाय बिन्द जीती जम फांसी।
मान सरोवर निरमल झांईं, कलहु कल्पना धोय बहाई।
धोय मेटी कलहु काई, सुमति भेंटी आइ कै।
अति आनंद विनोद बाढ़ेउ गई कुमति पराय कै।
गगन सुन्नि समाधि लागी, मगन मनुआ रमि रहेउ।
जोग जुगति विचारि दरगह, परखि पद पूरा लहेउ।

(3) जेठ जुगति जब जोगी जानी, अलख पुरुष तब लखेउ बिनानी।
जुरा मरन की संक मिटाई, जाके डर सब जगत डेराई।
जगत जाके डर डेराई, सो न डर उर आवई।
उनमुनी घर बैठि आपन, सहज तारी लावई।
परम जोति सम्हारि लीन्हा, अचल मेरु न डोलई।
जोग जुगति विचारि दरगह, विमल बानी बोलई।

(4) गरजि अखाढ़ गगन घहरान्यो, दामिनि रूप देखि मनु मान्यो।
अहि निसि बरखै अमृत धारा, सो रस पीवै पीवन हारा।
पीवन हारे जगु बिसारेउ, मुनि महा रस पीवही।
अमर होय ना मरै उपजै, जुग सहस लौ जीवई।
निरविकार निरूप निरगुन, सकल करता भेंटिया।
जोगु जुगति विचारि दरगह, परखि आपा मेढ़िया।

(5) सावन सुरस सुघन बन फूलेउ, बोलत मोर न छाड़ेव कूलेव।
जहँ लता न डार फूल फल मांही, राजत चार पदारथ मांही।
रतन मा एकु जतन कीन्हा, द्रव्य लोचन देखिया।
जगत निधि जगदीश परसेउ, सुफल जीवन लेखिया।
जोति रूप अनूप सुन्दर, परम पावन जगमगेउ।
जोग जुगति विचारि दरगा, द्वार दसवें मन लगेउ।

(6) भादौ गवन भवन जब कीन्हेउ, चेतन पुरुष पुरातिम चीन्हेउ।
आदि अन्त तन अज अभिनासी, रूप शिरोमनि घट घट बासी।
सकल बासी घट निवासी, जग जुईन ना आवईं।
जहँ देव मुनि रिषि दन्त गोरख, शिव समाधि लगावईं।
निरलोभ बेलोभ ओ मना, मोह माया छाड़िया।
जोग जुगति विचारि दरगह, सहज आसन मांड़िया।

(7) असुनी आस सांपिनी मारी, नींद भूख की लहरि उतारी।
ब्रम्ह अगिन अंतर पर जारी, परम हंस की रहनि बिचारी।
परम हंसै हंस मिलिया, तब न कुछु धोखा रहेउ।
जहां पाप पुन्नि ना दंद दुःख सुख, सुन्नि का मारग लियो।
निरविकार आकार वर्णित, अकह अनहद की गिरी।
जोगु जुगति बिचारि दरगह, तजु विखै रस मंजरी।

(8) कातिक अमल कमल गति जावै, द्वादस दल के अंतर जावै।
छिन-छिन हंसा पलटै बानी, परम जोति तहं आय समानी।
परम जोती जोति मिलिया, प्राण तबु शीतल भयो।
सहज घर जम काल जीत्यो, करम कारन मिटि गयो।
छाड़ि भेद अभेद वर्जित, जमल मनै ना आवई।
जोगु जुगति बिचारि दरगा, राम रस रितु मानई।

(9) अगहन अगम अगहु गहि बैठा, गुरु गमि गगन गुफा मां पैठा।
सुरति निरति लै आनंद बाढ़ेउ, सति मत है सबही ते गाढ़ेउ।
निपट गाढ़ेउ विकट एको मत, नल न सहसा पावई।
प्रथमै जब शीश अरपै, तनक हाथै आवई।
लोक लाज निवारि, सेवा आनि सतगुरु की करै।
जोगु जुगुति बिचारि दरगा, कठिन मारगु पगु धरै।

(10) पूस परसपर प्रीति बढ़ाई, सुमति सुहागिल कंठ लगाई।
दसा एकदस ऊपर सोहै, हिलि मिलि भुवन चतुरदस मोहै।
भुवन मोहै सकल हिलि मिलि, अमरपुर परचै भयो।
निजु निसान बजाय निहचल, जाय निरभय लै लयो।
जहँ चारि बेदु न पार पावैं, मनु मराल रमावई।
जोगु जुगुति विचारि दरगह, फिरि न भै जल आवई।

(11) माह महा रसना झरि झरई, धरती बरखि अकाशै भरई।
उलटि पवनु खट चक्रै बेधा, हरिपुर गवन कीन मन मेघा।
नाहु मन मेय पुकारौं, जहाँ अनहद बाजा बाजई।
शब्द हूते अगहु आगे, तहां आपु बिराजई।
रूप रेख ना भेखु वाके, सकति सेवा कुछु नहीं।
जोगु जुगुति विचारि दरगह बास जोगी का तहीं।

(12) फागुन फूल भई मन मेरे, गुन अतीत निरगुन के हेरे।
मन मां रही न नेकु दुरासा, दुर भंजन कीन्यो परगासा।
मेटि दुतिया परगास कीन्हो, ज्ञान दीपक जर.्यो।
मोह मद अज्ञान भाग्यो, ज्ञान सम पूरन भयो।
जहाँ तत्तु बेदी सत्य भांवरि पुरुषु अभिनाशी बरेउ।
जोगु जुगति बिचारि दरगह, परखि पद पूरा लहेउ।

करनी बारहमास की, एक मास जो होय।
अथवा अक्षर प्रेम का ब्रम्ह सरूपी होय।।

सन्त न उपजै सन्त बिनु, दरगा तत्तु बिचार।
जैसे परोसिनि लै चली, दिया-दिया सो बारि।।

आठ पहर चौसठ घरी, लगा रहै अनुराग।
दरगह नेकु न बिसरै, तब पूरा बैराग।।

अनदेखी जे कहति हैं, सुनि परि जिन कान।
दरगह देखी जे कहैं, तिनही का परमान।।

लै तनु राखा बन बिखै, मन रहा चरनन मांहि।
दरगा बन मां को रहै, तनहूँ मां मन नाहिं।।

टूटी फाटी कामरी, रोटी ऊपर नोनु।
दरगह जो हरि भजन है, इन्द्र बापुरो कौन।।

बारहमासी
“सन्त बालिदास माहेबरी”

(1) अषाढ़ आनंद मनाऊँ भाई, सहज रहे जल प्रेम समाई।
जे जे सरनि राम की लागे, तिनका देखि कालु डरि भागै।
जागु प्रानी सरनि हरि की, कालु निकट ना आवई।
संभारि हरि का नाम ले, यहु दांव बहुरि ना पावई।
यहु जलमु सपना रैनि का, तन ओस मोती होय रह्यो।
जा दिन रमि हंस गे, मिलि गरद चहुँ दिसि उड़ि रह्यो।
भय भीर मारग जोर कोई, घन गैब झूला अति मचा।
बिन सरनि बाला राम की, जमु द्वार तौ सबु जगु नचा।

(2) सावन सतगुरु जिन केहुं पाये, बिन मुख मंगल तिन केहुं गाये।
बिन श्रवन हवै घंटेर सुनाई, जिन जिन सुना रहे छकि भाई।
छके प्रेम भे परम अनंदा, हँसि हँसि भेंटे परमानंदा।
भेंटि पूरे पुरुष का फिरि बहुरि भरम ना आवईं।
भगति डिढ़ जे जन भये ते अटल पदवी पावईं।
भगति डिढ़ ध्रू भये निरमल राजु टारे ना टरै।
भानु शशि नौ लाख तारा आजहुं पैकरमा करैं।
नौ बेरियां कलि आए प्रीतम, भगत हेतु औतारिआ।
कहत बाला दास कारन, असुर सब संघारिआ।

(3) भादौं भीर प्रेम झरि लागी, देखी सरनि राम की जागी।
तीनि लोक जम कीन पसारा, दीमरु आनि जारु तहँ डारा।
जिन-जिन चरन तके तेई बाचे, औरेहुं जीव सकल सब फांसे।
माया मोह कठिन बहै धारा, बिन हरि भगति न होय उबारा।
(छंद)बिना भगति भगवान की नल, देखु ना उबरा कोइआ।
बाचिहै जमु फांसि ते, हरि नाम सुमिरन सोइया।
हरि नाम चहुँ जुग गाइ कै निरशंक भे साधू जना।
यह काल चोट बचाइ कै, घर का गये निरभै सना।
निरमल भये घर का गये, फिरि बहुरि भरम ना आवई।
कहत बालि बखानि कै, जगु जलमु बहुरि ना ठानई।

(4) ई सुनु कुआँर करम की बातैं, नेहचल कालु करति है घातै।
निसुदिन कालु क्षार गृह बोलै, मोह लहरि नल गाफिल डोलै।
अपने हाथन मूल गवाँवै, करमै का सब दोछु लगावै।
करतूति करनी जो करै, ता करम बपुरा का करै।
सिर धुनै भूले ठीकरा, तब बिरधि सम्पति परि हरै।
दुखु धन्धि ते उबरा परौ, तब करम कागद फारई।
कहत बालि बखानि कै, जग जलमु बहुरि ना ठानई।

(5) कातिक काम न तिन्है सतावै, ब्रम्ह ज्ञान जिनके उर आवै।
ब्रम्ह ज्ञान रहिगा भरपूरी, सतगुरु मिले बिथा भै दूरी।
शब्द ढ़ाल गुरु दीन बंधाई, परी मानगढ़ जोर लड़ाई।
बांकी घाटी मानगढ़ जहाँ पाँव न टिकै पपील का।
सो मारि संतन जेर कीन्हा पहिरि बखतर शील का।
झमकाय सतगुरु तेग दीन्ही, ज्ञान घोड़ चढ़ाइ लिया।
दस द्वार खिरकी खोलि कै, गढ़राव राजा धरि लिया।
फेरी दोहाई हंसनपुर, इत सुन्नि महल कलोल भे।
गुरु सरनि बाला राम की, जग जलम पातक नष्ट भे।

(6) अगहन अगर अगोचर बानी, बिरलेन तत्तु परा पहिचानी।
जिन-जिन तत्तु लख्यो उर माना, भजि भगवंत भये गलताना।
मध्य अकाश गगन के आसन, सुनत किंगिरी अदबुध बाजन।
उठत धुनि घंटा घहराई, उलटा नीर अकाशै जाई।
चाँद सुरज दोऊ बरखन लागे, उपजन लाल अमोलिक लागे।
(छंद)गरजत गगन घहरात घंटा, अजल जल वर्षा भई।
बिन मेघ चहुँ दिसि दामिनि दमकै, दामिनि बहुत सोहावनी।
सुनि नाद हंस कलोल भे, जहँ प्रेम नल मंजन किया।
नाम साबुन दिया जबते, जुगन जुगन निरमल भया।
निरमल भये अमृत पिया, आनंद होय गुन गाइया।
देखि शोभा बालि जन की, काल सीस नवाइया।

(7) पूस परम गुन छिनु छिनु गइये, जाते बिरधि भगति की पइये।
उपजी भगति प्रेम घन बाढ़ी, मथि मथि तत्तु शब्द मुख काढ़ी।
निकरा तत्तु शब्द झनकारा, निरगुन सरगुन कीन पसारा।
तेरह रतन मथि काढ़ि प्रभु, तिहुं लोक मांहि घुमाइयां।
जसु गाय संतन भाउ कीन्हा, भेदु बिरलेन पाइयां।
है प्रेम सिन्धु अपार साधो, तत्तु बिरलेन लखि परा।
जिन आइ सतगुरु सीख दीन्हा, दुःख दंद ते उबरा परा।
परतीत निहचै जो करै, सो शब्द सांचा मानई।
कहत बालि बखानि कै, जग जलमु बहुरि ना ठानई।

(8) माह भवन हवै तन मन मारै, ललित प्रीति हिरदै उच्चारे।
पाँच पचीस करैं बन्दी वाना, भरमु ढ़हाय करै मैदाना।
भरम भीति जिन दीन ढ़हाई, तिनका आइ मिले रघुराई।
भंवर गुंजै भरम के बहु, उठत बिकट हिलोरिया।
बिना जल सब खलक बूड़ी, राम सों जिन टूरिया।
बूड़ जात गर कूप भे हम, देखि बैठेन हारिया।
बिना भगति बेहाल प्रानी, चले मूल गवांइया।
पन तीनि ऐसे रमि गये, हरिनामु ना हिरदै लिया।
कहत बालि बखानि कै, नल बिखै रस सींचे हिया।

(9) फागुन फेरि चित्त मन दीजै, भरि भरि अमी प्रेम रस पीजै।
पियत प्रेम गे बरन नसाई, अब हम ब्राम्हन रहेन न भाई।
बरन हमार उलटि गे ऐसे, कवँल घूमि सारंग रंग जैसे।
तट बेनी त्रिकुटी के आसन, हम बर बरेन अलख निरंजन।
अम्बर बर तौ हम बरे, ब्याहु सतगुरु ने किया।
तनक लाज ना सकुच मानी, नाम स्वामी का लिया।
नामु लै हम सजन टेरे, लाज जिय में ना करी।
यहु रंग रहस बिलास साधौ, बूझि बिरलेन का परी।
यहि रंग ब्रम्ह महेश कोटिन, जुगन जुगन ललकत रहे।
यहु रंग रहस बिलास बाला, जुगन जुगन बिलसत रहे।

(10) चैतु चारु जहाँ सुन्रि पसारा, ना दिन रैनि नहीं है तारा।
पवन नहीं सुरज नहीं चंदा, नहीं ब्रम्हा महेश नहीं कन्धा।
अदबुध ख्याल प्रकट होय रहिया, शब्द ओट होय संतन कहिया।
ख्याल अदबुध प्रकट भयऊ, हंस कल बहु बिधि कछी।
जाहि जैसी लगन लागी, ताहि तैसी सो नची।
नचे ब्रम्हा महेश कोटिन, नचे देव मुरारिया।
नचे इन्द्र फनेंद्र रिखि मुनि, नचे बेदौ चारिया।
काल होय कै नची माया, नचे और कुबेरिया।
नचे जुग औ चारि नारद, नचे गीर सुमेरिया।
देह धरि-धरि सबै नाचे, नचे नौ औतारिया।
दसौ होय फिरि नाचिहै, वह अटल जोति अपारिया।
नचत तीनिउ लोक देखे, बचत न देखा कोइआ।
गुरु सरनि बाला नाचिकै, फिरि बहुरि नाचु न होइआ।

(11) बैसाख ब्रम्ह है घट-घट वासी, सब घट रमिता राम नेवासी।
उत्तिम मद्धिम मां रमि रहिया, शब्द ओट होय संतन कहिया।
आपुइ जल थल रहेउ समाई, आपुइ घट-घट बिलसै भाई।
आपु कान्हा आपु गोपी, आपु तालु बजावई।
आपु नाचै आपु नचावै, आपु मंगल गावई।
आपु कंसा आपु माधौ, आपु आपुइ मारई।
आपु करता आपु हरता, आपु आपुइ तारई।
आपु रामा आपु रवना, आपु लंकै चढ़ि गयेव।
आपु का उन आपु मारा, आपु आपुइ रमि रहेव।
आपु देवा आपु सेवा, आपु सिद्धि कहावई।
आपु निरगुन आपु सरगुन, आपु राम रमावई।
आपु श्रोता आपु बकता, मरमु कोऊ ना पावई।
ई अकथ कासों कहौं साधौ, जानि ना काहुइ जावई।
एक मूरति सरब घूमै, वाको वार ना पार है।
सकल बालि पसार झूँठा, सत्ति एकै राम है।

(12) जेठ जमन तन आठौ मारै, ब्रम्ह ज्ञान की बात उचारै।
ब्रम्ह ज्ञान जिनके उर आवा, तिन तौ नामु अमोलिक पावा।
गगन घंट घंटा घहराना, बिरलेन शब्द सुना परवाना।
सुनत शब्द मन करै बिलासा, हरिचरन चितु करै नेवासा।
सुमिरु हरि के चरन प्रानी, कुबुधि आसा मेटिकै।
मारु तन के चोर तस कर, शब्द पूरा भेंटि कै।
यहु मूल मन्त्र जपि लेव साधौ, तत्तु तारी लावहू।
अगम अगोचर करेहु आसन, निभि बिन गुन गावहू।
जिभ्या बिन गुन गाय जिन जिन, सन्त पदवी का लहै।
कहत बालि बखानि कै, जग जलम बेहि बेतर है।

करनी बारामास की, कहेव बालि समुझाय।
जो सतगुरु कृपा करै, तौ भय जार न जाय।।
या जग मां नहिं कोई अपना, जेहिका बिढ़वा खान।
समुझि दीख जन बालि तब, ताते लाग कमान।।

समाधि
सन्त धरनी साहेब
माँझी, जिला-छपरा (बिहार)



परिचय
सन्त धरनी साहेब

सन्त धरनी साहेब का जन्म संवत् 1713 विक्रमी (सन् 1656 ई०) को बिहार प्रान्त के छपरा जिला स्थित मांझी गाँव के एक कायस्थ परिवार में हुआ था। आपके पिता का नाम परसराम दास था। कबीर साहेब की भाँति आपके प्रचलित गुरू स्वामी विनोदानन्द जी थे परन्तु निर्गुण उपासक गुरू के बारे में कहीं स्पष्ट लेख नहीं मिलता है। आप मांझी में बाबू के दीवान थे। बाबू आपकी बड़ी कद्र करते थे, परन्तु आपकी अंतरगति से बेखबर थे। एक दिन धरनी साहेब जमींदारी के काम में लगे हुए थे। अचानक पानी भरा हुआ लोटा, जो आपके पास रखा हुआ था। आपने कागज और बस्ते पर ढलका (उड़ेल) दिया। आपसे पूँछा गया कि आपने ऐसा क्यों किया, पर आपने कोई जवाब नहीं दिया। बाबू के बार-बार पूछने पर आपने बताया कि जगन्नाथ जी के वस्त्र में आरती करते समय आग लग गई थी, जिसे मैंने पानी डालकर बुझा दिया। इस कथन पर बाबू और उनके अधिकारियों को विश्वास नहीं हुआ और उन्होने अपने दो भरोसे के आदमियों को जगन्नाथपुरी भेजकर तहकीकात कराई, तो ज्ञात हुआ कि धरनी साहेब की शक्ल का एक आदमी आग बुझाकर चला गया। यह जानकर बाबू ने धरनी साहेब को वापस काम पर आने का आग्रह किया और माफी मांगी। धरनी साहेब ने काम पर आने से मना कर दिया और कहा, कि "मुझे भगवत भजन करने दो"। आपके तीन प्रसिद्ध ग्रन्थ 'रत्नावली', 'प्रेम प्रगास' व 'शब्द प्रकाश' हैं। संभवतः धरनी साहेब ने संवत् 1788 विक्रमी (सन् 1731 ई०) में देह छोड़ी होगी। आपकी समाधि ग्राम माँझी जिला छपरा बिहार में बनी हुई है ।

पद

(1) अजहूँ मिलो मेरे प्रान पियारे।
दीन दयाल कृपाल कृपानिधि, करहु छिमा अपराध हमारे।
कल न परत अति बिकल सकल तन, नैन सकल जनु बहत पनारे।
मांस पचो अरु रकत रहित भे, हाड़ दिनहुँ दिन होत उधारे।
नासा नैन स्रवन रसना रस, इंद्री स्वाद जुआ जनु हारे।
दिवस दसों दिसि पंथ निहारति, राति बिहात गनत जस तारे।
जो दुख सहत कहत न बनत मुख, अंतरगत के हो जाननहारे।
धरनी जन झलमलित दीप ज्यों, होत अंध्यार करो उजियारे।

(2) कोऊ भयो मुड़िया सन्यासी कोऊ जोगी भयो, कोऊ ब्रह्मचारी, कोऊ जतियन मानवो।
हिन्दू तुरक कोऊ राफजी इमाम साफी, मानस की जात सबै एकै पहचानबो।
करता करीम सोई राजक रहीम ओई, दूसरो न भेद कोई भूल भ्रम मानबो।
एक ही की सेव सबही को गुरुदेव एक, एक ही सरूप सबै, एकै जोत जानबो।
जैसे एक आग ते कनूका कीट आग उठे, न्यारे न्यारे ह्वैकै फेरि आग में मिलाहिंगे।
जैसे एक धूर ते अनेक धूर धूरत हैं, धूर के कनूका फेर धूर ही समाहिंगे।
जैसे एक नदते तरंग कोटि उपजत हैं, पानी के तरंग सब पानी ही कहायेंगे।
तैसे विस्वरूप ते अभूत भूत प्रगट होइ, ताहीते उपज सबै ताही में समाहिंगे।

(3) निर्जन निरूप हौ कि सुंदर स्वरूप हौ, कि भूपन के भूप हौ कि दानी महादानी हौ।
प्रान के बचैया दूधपूत के देवैया, रोग सोग के मिटैया कि धौं मानी महामानी हौ।
विद्या के विचार हौ कि अद्वैत अवतार हौ, सुद्धता की मूर्ति हौ कि सिद्धता की सान हौ।
जीवन के जाल हौ कि कालहू के काल हौ, साधुन के साल हौ कि मित्रन के प्रान हौ।

(4) जो कोई भक्ति किया चहै भाई।
करि बैराग भसम करि गोला, सो तन मनहिं चढ़ाई।
ओढ़ि के बैठु अधिनता चादर, तजु अभिमान बड़ाई।
प्रेम प्रतीति धरै इक तागा, सो रहै सुरति लगाई।
गगन मंडिल बिच अभरन झलकत, क्यों न सुरति मनलाई।
सेस सहस मुख निसु दिन बरनत, बेद कोटि गुन गाई।
सिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक, ढूंढत थाह न पाई।
नानक नाम कबीर मता है, सो मोहि प्रगट जनाई।
ध्रुव प्रहलाद यही रस माते, सिव रहै ताड़ी लाई।
गुरु की सेवा साधु की संगति, निसु दिन बढ़त सवाई।
दूलभ दास नाम भजु बंदे, ठाढ़ कालु पछिताई।

(5) पिया बड़ सुन्दर सखि बनि गैला सहज सनेह।।
जे जे सुन्दरी देखन आवै, ताकर हरि ले ज्ञान।
तीन भुवन कै रूप तुलै नहिं, कैसे कै करउँ बखान।।
जे अगुवा अस कइल बर तुई, ताहि नेवछावरि जाऊँ।
जे ब्राह्मन अस लगन विचारल, तासु चरन लपटाऊँ।।
चारिउ ओर जहाँ तहाँ चरचा, आन कै नाउ न लेइ।
ताहि सखी की बलि-बलि जैहों, जे मोरी साइति देइ।।
झलमल झलमल झलकत देखो, रोम रोम मन मान।
धरनी हर्षित गुनगन गावै, जुग जुग है जनि आन।।

(6) प्रभुजी तोकह लाज हमारी।
नीलकंठ नरहरि नारायण, नील बसन बनवारी।
परम पुरुष परमेश्वर स्वामी, पावन पउन अहारी।
माधव महाजोति मधु मरदन, मान मुकुंद मुरारी।
निर्विकार निरजुर निद्रासन, निर्बिख नरक निवारी।
कृपा सिंधु कालत्रैदरसी, कुकृत प्रनासन कारी।
धनुरवान धृतमान धराधर, अनिविकार असिधारी।
हौं मतिमंद चरन सरनागत, कर गहि लेहु उबारी।

(7) पिया मोर बसै गउरगढ़ मैं बसौं प्राग हो।
सहजहिं लगा सनेह, उपजा अनुराग हो।
असन बसन तन भूषन भवन न भावै हो।
पल पल समुझि सुरति मन, गहवरि आवै हो।
पथिक न मिलहि सुजन जन, जिनहिं जनावौं हो।
विहवल विकल विलखि चित, चहुँदिसि धावौं हो।
होई अस मोहिं लै जाय, कि ताहि लै आवै हो।
तेकरि होइबों लउँडिया, जे रहिया बतावै हो।
तबहिं त्रिया पति साथ, दोसर जब चाहै हो।
एक पुरुष समरथ धन, बहुत न चाहै हो।
धरनी गति नहिं आनि, करहु जस जानहु हो।
मिलहु प्रगट पट खोलि, भरम जनि मानहु हो।

(8) बहुत दिनन पिया बसल बिदेसा।
आजु सुनल निज अवन संदेसा।
चित चिवसरिया मैं लिहलों रंगाई।
हृदय कमल धइलों दियना लेसाई।
प्रेम पलँग तहँ धइलों बिछाई।
नख सिख सहज सिंगार बनाई।
मन हित अगुमन दिहल चलाई।
नयन धइल दोउ दुअरा बसाई।
धरनी धनि पल पल अकुलाई।
बिनु पिया जिवन अकारथ जाई।

(9) मैं निरगुनिया गुन नहिं जाना, एक धनी के हाथ बिकाना।
सोइ प्रभु पक्का मैं अति कच्चा, मैं झूठा मेरा साहेब सच्चा।
मैं ओछा मेरा साहेब पूरा, मैं कायर मेरा साहेब सूरा।
मैं मूरख मेरा प्रभु ज्ञाता, मैं किरपिन मेरा साहेब दाता।
धरनी मन मानों इस ठाऊँ, सो प्रभु जीवों मैं मरिजाऊँ।

(10) प्रभुजी अब जनि मोंहि बिसारो।
असरन सरन अधम जन तारन, जुग जुग विरद तिहारो।
जहँ जहँ जनम करम बसि पायो, तहँ अरुझे रस खारो।
पाँचहु के परपंच भुलानो, धरेउ न ध्यान अधारो।
अंधगर्भ नौ मास निरंतर, नख सिख सुरति सँभारो।
मज्जा मूत्र अग्नि मल कृम जहँ, सहजै तहँ प्रतिपारो।
दीजै दरस दयाल दया करि, औगुन गुन न बिचारो।
धरनी भजि आयो सरनागति, तजि लज्जा कुल गारो।

(11) सुमिरो हरि नाम ही बौरे।
चक्रहूं चालु चलै चित चंचल, मूलमता गहि निस्चल कौरे।
पांचहु ते परिचै करु प्रानी, काहे के परत पचीस के झौरे।
जौ लगि निरगुन पंथ न सूझै, काज कहाँ महि मंडल बौरे।
सब्द अनहद लखि नहिं आवै, चारो पन चलि ऐसेहि गै रे।
ज्यों तेली को बैल बेचारा, घरहिं में कोस पचासक भै रे।
दया धरम नहिं साधु की सेवा, काहे के सो जनमे घर चौरे।
धरनीदास तासु बलिहारी, झूठ तज्यो जिन सांचहि धौरे।

(12) हरिजन वा मद के मतवारे।
जो मद बिना काठि बिनु भाठी, बिनु अगिनिहि उदगारे।
वास अकास घराघर भीतर, बूंद झरै झलकारे।
चमकत चंद अनंद बढ़ै जिव, सब्द सघन निरुवारे।
बिनु कर धरे बिना मुख चाखे, बिनहि पियाले ढारे।
ताखन स्यार सिंह को पौरुष, जुत्थ गजंद बिडारे।
कोटि उपाय करै जो कोई, अमल न होत उतारे।
धरनी जो अलमस्त दिवाने, सोइ सिरताज हमारे।

(13) मन तुम कस न करहु रजपूती।
गगन नगारा बजत गहागहि, काहे रहो तुम सूती।
पांच पचीस तीन दल ठाढ़ो, इन संग सैन बहूती।
अब तोहि घेरी मारन चाहत, जस पिंजरा महँ तूती।
पइहो राज समाज अमर पद, ह्वै रहु विमल विभूती।
धरनी दास विचारि कहत है, दूसर नाहिं सपूती।।

दोहे करनी पर

कर्ता किया सो हो रहा, कर्ता करै सो होय। धरनी करनी चीतवै, सो मति समझै कोय॥(1)
कर्ता को अस्थूल नहिं, कर्म कल्पना काम। धरनी सबमें रमि रहा, ताते कहिये राम॥(2)
कर्ता की इच्छा भई, ताहि कियो विस्तार। सो पुनि सकल सकेलिया, धरनी कियो पुकार॥(3)
ब्रह्मा विष्णु महेश मुनि, धरनी दस अवतार। कर्ता सबके ऊपरै, औ सबहू ते पार॥(4)
धरनी कर्ता वो करै, माटी मिटै पहार। चाहे तो छिन में करै, वाहूते अधिकार॥(5)
कर्ता होता बहुत युग, आया आपहि माहिं। धरनी शून समाधि में, हद बेहद कछु नाहिं॥(6)
कर्ता सबको मूल है, औ सब ही को देव। कर्ता राम को नाम है, जो चाहे सो लेव॥(7)
आदि अन्त मध्ये कहै, युग युग कर्ता राम। धरनी सांचे कहत हैं, सन्तन को विश्राम॥(8)
धरनी सबके हृदय बस, कर्ता को निज नाम। द्रव्य दया जाने बिना, भूलि परै सो ठाम॥(9)
कर्ता रामहि को भजो, बार बूढ़ नर नारि। परिहरि आशा और को, धरनी कहै पुकारि॥(10)
कुल ऊँचो ऊँचो महल, परम सुन्दरी वाम। धिग जीवन धरनी कहै, भजै न कर्ता राम॥(11)
कर्ता को सुमिरै नहीं, करै कोटि व्रत दान। निगम साधि धरनी कहै, मुक्ति न मिलै निदान॥(12)
जाको जहँ विश्वास है, ताको तहँ विश्राम। धरनि दास को आसरो, केवल कर्ता राम॥(13)
चित्रगुप्त औ धर्म ध्वज, सकल कला यम राय। धरनी सबै कृपालु जो, कर्ता राम सहाय ॥(14)
धरनी वोहित बोझिले, जहँला माल मताय। कर्ता पार उतारि है, तू मति कबै डराय॥(15)
कर्ता राता कहु मता, साधु को जो येह। धरनी धरि लेहु सार मत, करि लेहु सारथ देह॥(16)
धरनी वरनी सकै नहिं, कर्ता को व्यवहार। भवजल सूखो सहज ही, कहां वार कहँ पार॥(17)
धरनी निज धर धरो, सो सब कर्ता नाहिं। निराधार और अधर है, कर्ता कहिये ताहि॥(18)
धरनी कहि आवै नहीं, कर्ता की करतूति। परमातम पहरो करै, रहिये आतम सूति॥(19)
मांसाहारी जीवड़ा, करै ज्ञान की बात। नंगी नाचै घूंघुट करै, धरनी देखि डरांय॥(20)

दोहे साँच पर

मिथ्या कहे ते पाप है, साँच कहे ते धर्म। धरनी साँचो जो कहै, ताहि न लागे कर्म॥(1)
धरनी साँचे जो भये, झूठे संग न जाहिं। पंचामृत को परिहरैं, रूखा टूका खांहि॥(2)
जो जन जग में झूठ तजि, साँचे व्रत गहि लेय। धरनी ताके चरण पर, शीश आपनो देय॥(3)
परनिन्दा परधन तजै, परनारी नहि चाव। साँच कहै सहजै रहै, धरनी बन्दै पांव॥(4)
मिथ्या कहै न जानिकै, साँच न धरै छपाय। धरनी सो जन निर्मला, कोइ देखो अजमाय॥(5)

दोहे मन पर

मनते कारज होत है, मनते होत अकाज। कतहूँ डेंगी डग मगै, कतहूँ होत जहाज॥(1)
मन मृग खेती खाति है, धरनी यतन जोगाव। घर मां घायल आन है, तासो जारि बुझाव॥(2)
मन कुरंग फानत फिरै, धरनी रन वन फूलि। प्रेम पारखी घेरते, गयो चौकड़ी भूलि॥(3)
धरनी यही सिखावनो, मन में आनि सुबोध। जिन अपने मन बोधिया, तिनको सब परमोध॥(4)
मन मैना तन पींजरा, धरनी प्रीति बढ़ाव। ऊठत बैठत सोवते, रामै नाम पढ़ाव॥(5)
धरनी सोवत है कहाँ, मन मूरख उठि जागु। फिरत कहां तू बावरे, कर्ता रामहिं लागु॥(6)
धरनी बरजोरी करो, मनुवा लम्पट पूल। गुरु-द्वारे लड़कांइये, लपट दूब को मूल॥(7)
धरनी मन व्याधा फिरै, मिटै न वाको स्वाद। ऐसो सावज मिलि गयो, उलटि बुझावै व्याध॥(8)

दोहे गुरू पर

निर्गुन है गुरु देवता, शिख सरगुन सब कोय। रहत सिखावत रैन दिन, धरनी देखु विलोय॥(1)
ब्रह्मा विष्णु महेश मुनि औ चौबिस अवतार। धरनी सो सब शिष्य हैं, गुरु सो अपरंपार॥(2)
गुरु तो ऐसा चाहिये, मारग देय निबाहि। धरनी निर्मल देह करि, कनक अग्नि जिमि डाहि॥(3)
धरनी सो गुरु धन्य है, जाते तपति बुझाय। बिछुरा बालमु पाइये, लीजै हृदय लगाय॥(4)
धरनी सो गुरु गरू नहिं, माया को कर घाव। भजन भेद जानै नहीं, फिरत पुजावै पांव॥(5)
धरनी गुरु के चरण पर, बार-बार बलि जाय। अंधा ते डीठा कियो, शब्द औषधी लाय॥(6)
धरनी धरनी जो फिरै, बिनु गुरु नहीं लखाय। बहुत नाम कहि का भया, जो ततु नाम न पाय॥(7)
धरनी सिर पर राखिये, ताहि गुरू के पांव। जो गुरु आतम राम से, कर गहि करै मिलाव॥(8)
जीव दया जिसमें नहीं, जिभ्या बसै न साँच। काम क्रोध साधो नहीं, धरनी सो गुरु काँच॥(9)
गुरु जो चाहत शिष्य को, खैंचि लेत बिनु डोरि। धरनी बीच परै नहीं, तरै अठासी कोरि॥(10)
धरनी सब जग आँधरो, जात नहीं मुख बोलि। सोई डिठियारो जानिये, पर्दा को दे खोलि॥(11)
गुरु महिमा को कहि सकै, गुरु देवन को देव। जो गुरु तत्व सनेहिया, धरनी सो गुरु सेव॥(12)
धरनी गुरु पूरा मिलै, शिष्य सयाना होय। पल में पार उतारई, सरबरि करै न कोय॥(13)
लरि-लरि मरै कि जरी जरि, बूड़ि मरै किन खाट। धरनी सो घर ना गयो, जेहि गुरु दियो न बाट॥(14)
हम में बैठा जो रहा, तामें बैठा हम्म। धरनी गुरु-गम गम किया, नहिं तो रहत अगम्म॥(15)

समाधि
सन्त दरिया साहेब
ग्राम-धरकंधा जिला-रोहितास (बिहार)



परिचय
सन्त दरिया साहेब

सन्त दरिया साहेब का जन्म सम्वत् 1731 विक्रमी (सन् 1674 ई०) में बिहार प्रान्त के रोहतास जिले के धरकंधा ग्राम में हुआ था। आपके पिता का नाम पृथुदास था। आपके पिता के धर्म-परिवर्तन के बाद उनका नाम पीरनशाह रखा गया। सन्त दादू साहेब की परम्परा के सन्त प्रेमदास आपके गुरू थे। दरिया साहेब ने कबीर साहेब की भाँति सामाजिक ढकोसलों पर प्रहार किया तथा नम्रता, सरलता और दीनता से रहकर नश्वर संसार में अविनाशी ब्रम्ह को प्राप्त करने की सीख दी। आपके नाम पर दरिया पंथ चला। आपके द्वारा रचित "दरिया सागर" और "ज्ञान दीपक" दो ग्रन्थ हैं। आपने सम्वत् 1837 विक्रमी (सन् 1780 ई०) में देह त्याग दी। आपकी समाधि ग्राम-धरकंधा जिला-रोहतास बिहार में बनी हुई है।

पद

(1) अमृत नीक कहै सब कोई, पिये बिना अमर नहिं होई।
कोई कहै अमृत बसै पताल, नर्क अंत नित ग्रासै काल।
कोई कहै अमृत समुंदर माहिं, बड़वा अगिन क्यों सोखत ताहिं।
कोई कहै अमृत ससि में बास, घटै बढ़ै क्यों होइहै नास।
कोई कहै अमृत सुरगां मांहि, देव पिवैं क्यों खिर खिर जाहिं।
सब अमृत बातों का बात, अमृत है सन्तन के साथ।
दरिया अमृत नाम अनंत, जाको पी पी अमर भये सन्त।
आदि अंत मेरा है राम, उन बिन और सकल बेकाम।
काह करूं तेरा बेद पुराना, जिन है सकल जगत भरमाना।
काह करूं तेरी अनुभै बानी, जिनमें तेरी सुद्धि भुलानी।
काह करूं ये मान बड़ाई, राम बिना सबही दुखदाई।
काह करूं तेरा सांख व जोग, राम बिना सब बंधन रोग।
काह करूं इन्द्रिन का सुक्ख, राम बिना देवा सब दुक्ख।
दरिया कहै राम गुरु मुखिया, हरि बिनु दुखी राम सँग सुखिया।।

(2) राम बिन भाव करम नहिं छूटै।
सन्त संग औ राम भजन बिनु, काल निरंतर लूटै।
मल सेती जो मलको धोवै, सो मल कैसे छूटै।
प्रेम का साबुन नाम का पानी, दिये मिलि तांता टूटै।
भेद अभेद भरम का भांडा, चौड़े पड़ पड़ फूटै।
गुरु मुख सब्द गहै उर अंतर, सकल भरम से छूटै।
राम का ध्यान तू धरु रे प्रानी, अमृत का मेंह बूटै।
जन दरिया अरपि दे आपा, जरा मरन तब टूटै।।

(3) है कोई सन्त राम अनुरागी, जाकी सुरति साहेब से लागी।
तीनि पाँच दल माया त्यागी, सतगुरु की सेवा में लागी।
अरस परस पिव के संग राती, होय रही पतिबरता।
दुनिया भाव कछु नहिं समझै, ज्यों समुंद समानी सरिता।
मीन जायकर समुंद समानी, जहँ देखै तहँ पानी।
काल कीर का जाल न पहुंचै, निर्भय दौर लुभानी।
बावन चंदन भौंरा पहुंचा जहँ बैठा तहँ गंधा।
उड़ना छोड़ के थिर हो बैठा निसदिन करत अनंदा।
जन दरिया इक राम भजन करि, भरम बासना खोई।
पारस परस भया लोह कंचन बहुरि न लोहा होई।।

(4) सन्तों कहाँ गृहस्थ कहाँ त्यागी।
जेहि देखूं तेहि बाहर भीतर, घट घट माया लागी।
माटी की भीति पवन का थंबा, गुन औगुन में छाया।
पाँच तत्व आकार मिलाकर, सहजां गिरह बनाया।
मन भयो पिता मनसा भइ माई, दुख सुख दोनों भाई।
आसा तृष्ना बहिनें मिल कर, गृह की सौंज बनाई।
मोह भयो पुरुष कुबुधि भई घरनी, पांचो लड़का जाया।
प्रकृति अनंत कुटुंबी मिलकर, कलहले बहुत उपाया।
लड़कों के संग लड़की जाई, ताका नाम अधीरी।
बन में बैठी घर घर डोलै स्वारथ संग खपीरी।
पाप पुन्य दोउ पाइ पड़ोसी अनंत बासना नाती।
राग द्वेष का बंधन लागा, गिरहु बना उतपाती।
कोइ गृह मांड़ि गिरह में बैठा, बैरागी बन वासा।
जन दरिया इक राम भजन बिन, घट घट में घर नासा।।

(5) दुनियाँ भरम भूलि बौराई।
आतम राम सकल घट भीतर, जा की सुधि ना पाई।
मथुरा कासी जाय द्वारिका, अरसठ तीर्थ नहावै।
सतगुरु बिन सोधा नहिं कोई, फिर-फिर गोता खावै।
चेतन मूरत जड़ को सेवै, बड़ा थूल मत गैला।
देह अचार किरिया का होई, भीतर है मन मैला।
जप तप संजम काया कसनी, सांख जोग ब्रत दाना।
या ते नहीं ब्रह्म से मेला, गुन हर करम बँधाना।
बकता होय-होय कथा सुनावै, स्रोता सुनि घर आवै।
ज्ञान ध्यान की समझ न कोई, कहि सुनि जनम गँवावै।
जन दरिया यह बड़ा अचंभा, कहे न समझै कोई।
भेड़ पूंछ गहि सागर लाँघै, निश्चय डूबै सोई।।

(6) आदि अनादि मेरा साँई।
द्रष्ट न मुष्ट है अगम अगोचर, यह सब माया उनहीं मांई।
जो बन माली सींचै मूल, सहजै पिवै डाल फल फूल।
जो नरपति को गिरह बुलावै, सेना सकल सहज ही आवै।
जो कोई कर भान प्रकासै, तौ निस तारा सहजहि नासै।
गरुड़ पंख जो घर में लावै, सर्प जाति रहने नहिं पावै।
दरिया सुमिरै एकहि राम, एक राम सारै सब काम।।

(7) जीव बचाऊ रे, बहता भाई मारग माईं।
आठ पहर का चालना, घड़ी इक ठहरै नाईं।
गरभ जन्म बालक भयो रे, तरुनाये गर्भान।
बृद्ध मृतक फिर गर्भ बसेरा, यह मारग परमान।
पाप पुन्य सुख दुख की करनी, बेड़ी थारे लागी पाँय।
पंच ठगों के बसि पड़्यो रे, कब घर पहुँचै जाय।
चौरासी बासो बस्यो रे, अपना कर-कर जान।
निश्चय निस्चल होयगो रे, पद पहुंचै निर्बान।
राम बिना तो को ठौर नहीं रे, जहँ जावै तहँ काल।
जन दरिया मन उलट जगत सूं, अपना राम सम्हाल।।

(8) जो सुमिरूँ तो पूरन राम।
अगम अपार पार नहिं जाको, सब सन्तन का बिसराम।
कोटि बिस्नु जाके अगवानी, संख चक्र सत सारँग पानी।
कोटि कारकुन विधि कर्मधार, परजापति मुनि बहु बिस्तार।
कोटि काल संकर कोतवाल, भैरव दुर्गा धरम बिचार।
अनंत सन्त ठाढ़े दरबार, आठ सिधि नौ निधि द्वारपाल।
कोटि बेढ़ जाको जस गावै, बिद्या कोटि जाको पार न पावै।
कोटि अकास जाके भवन दुवारे, पवन कोटि जाके चँवर ढुरावै।
कोटि तेज जाके तपै रसोय, बरुन कोटि जाके नीर समोय।
पृथी कोटि फुलवारी गंध, सुरत कोटि जाके लाया बंध।
चंद सूर जाके कोटि चिराग, लछमी कोटि जाके राँधैं पाग।
अनंत सन्त और खिलवत खाना, लख चौरासी पलै दिवाना।
कोटि पाप काँपै बल-छीन, कोटि धरम आगे आधीन।
सागर कोटि जाके कलस धार, छप्पन कोटि जाके पनिहार।
कोटि संतोष जाके भरा भंडार, कोटि कुबेर जाके मायाधार।
कोटि स्वर्ग जाके सुख रूप, कोटि नर्क जाके अंध कूप।
कोटि करम जाके उत्पतकार, किला कोटि बरतावनहार।
आदि अंत मध्य नहिं जाको, कोई पार न पावै ताको।
जन दरिया के साहेब सोई, ता पर और न दूजा कोई।।

(9) साधो हरि पद कठिन कहानी।
काजी पण्डित मरम न जानै, कोइ-कोइ बिरला जानी।
अलह को लहना, अगह को गहना, अजर को जरना, बिन मौत मरना।
अधर को धरना, अलख को लखना, नैन बिन देखना, बिनु पानी घट भरना।
अमिल सूँ मिलना, पाँव बिन चलना, बिन अगिन के दहना, तीरथ बिन नहावना।
पन्थ बिन जावना, बस्तु बिनु पावना, बिन गेह के रहना, बिना मुख गावना।
रूप न रेख, बेद नहिं वरनत, नहिं जाति बरन कुल-काना।
जन दरिया गुरुगम ते पाया, निरभय पद निरबाना॥

(10) राम-नाम नहिं हिरदै धरा, जैसे पसुवा तैसा नरा।
पसुवा-नर उद्दिम करि खावै, पसुवा तो जंगल चरि आवै।
पसुवा आवै पसुवा जाय, पसुवा चरै औ पसुवा खाय।
राम-नाम ध्याया नहिं भाई, जनम गया पसुवा की नाईं।
राम-नाम से नाहीं प्रीत, यह सब ही पशुओं की रीत।
जीवत सुख-दुःख में दिन भरै, मुवा पाछे चौरासी परै।
जन दरिया जिन राम न ध्याया, पसुवा ही ज्यों जनम गँवाया॥

(11) राम भरोसा राखिये, उन सा नहिं कोई।
पूरनहारा पूरसी, अकुलाय मत भाई।
जल दिखै आकास से, कहो कहाँ से आवै।
बिन जतना ही चहुँ दिसा, दह चाल चलावै।
चात्रिक भू-जल ना पिवै, बिन अहार ही जीवै।
हरि वाही को पूरवै, अन्तरगत पीवै।
राजहंस मुकता चुगै, कछु गाँठ न बाँधै।
ताको साहेब देत है, अपनों बृत साधै।
गरभ-बास में जाय करि, जिव उद्दिम ना करही।
जानराय जानै सबै, उनको वहिं भरही।
तीन लोक चौदह भुवन, करै सहज प्रकासा।
जाके सिर समरथ धनी, सोचै क्या दासा।
जबसे यह बाना बना, सब समझ बनाई।
दरिया बिकलप मेटिकै, भजु राम सहाई॥

दोहे

दरिया लच्छन साधु का, क्या गिरही क्या भेख।
निःकपटी निरसंक रहि, बाहर भीतर एक॥

कानों सुनी सो झूठ सब, आँखों देखी साँच।
दरिया देखे जानिए, यह कंचन यह काँच॥

पारस परसा जानिए, जो पलटै अंग-अंग।
अंग-अंग पलटै नहीं, तौ है झूठा संग॥

बड के बड लागै नहीं, बड के लागै बीज।
दरिया नन्हा होयकर, रामनाम गहु चीज॥

समाधि
सन्त चन्द दास साहेब
ग्राम-हसवा (हंसध्वजपुरी) जनपद-फतेहपुर



परिचय
सन्त चन्द दास साहेब

सन्त चन्द दास साहेब का जन्म संवत् 1723 विक्रमी (सन् 1666 ई०) में बिहार प्रान्त के पटना शहर में हुआ था। आपके माता-पिता मूल रूप से पंजाब के लाहौर के निवासी थे और तीर्थ यात्रा करते हुए पटना पहुँचे थे। आपके गुरू के बारे में स्पष्ट लेख प्राप्त नहीं हो सका है परन्तु आपके एक पद के अनुसार सन्त धरनी साहेब (मेवाड़ वाले) आपके गुरू थे ऐसा संकेत मिलता है। चन्द दास साहेब जाति के खत्री थे। आपकी पत्नी का नाम गौरी था। बसंतराय आपके पितामह और साहेब राय आपके पिता थे।

बसंतराय मम पितामह पिता सो साहेब राय।
सहगल खत्री वंश में कृत शरीर सुख पाय।।

आपका सम्बन्ध राज परिवार से था। आपके पितामह बसंतराय और आपके पिता साहिब राय राज्य कार्य से जुड़े हुए थे। चंद भी बिलासपुर जो पहले पंजाब में और अब हिमाचल प्रदेश में है वहीं के पहाड़ी राजा थे और 52 पहाड़ी राज्य उनके अधीनस्थ थे। उन्हीं के राज्य बिलासपुर के कहलूर आनंदपुर में गुरु गोविंद सिंह ने अपनी सिक्ख संस्कृति को संगठित किया। चंद ने अपने समय में औरंगजेब के द्वारा लगाए गए जजिया कर का सर्वप्रथम विरोध किया था। चन्द और गुरु गोविंद सिंह दोनों ने मिलकर औरंगजेब के विरोध में अनेक वर्षों तक युद्ध किया और सफलता प्राप्त की। आपकी विजय और कीर्ति गाथा का उल्लेख दिल्ली के समीप मेहरौली के कुतुबमीनार के पास लौहस्तम्भ में अंकित किया गया है।

राज्य पद छोड़कर उन्होंने तत्कालीन समाज को संगठित करने धर्म की रक्षा करने और सिख संस्कृति को हिंदू संस्कृति से जोड़कर तथा धर्म और समाज की बिखरी हुई शक्तियों को संगठित करके तथा भक्ति और सन्त काव्य की धाराओं को मिलाकर एक सांस्कृतिक क्रांति की।

विभिन्न उपाधियां जो उन्हें राज्य काल में तथा सामाजिक क्षेत्र में मिली थीं जिनमें भीम, रूद्र, वरदाई, विद्यापति, चंदसखी आदि प्रमुख थे। उन सब उपाधियों को छोड़कर अपने को दास कहना ही उचित समझा और वह चंददास के रूप में उत्तर प्रदेश के हसवा फतेहपुर में जहाँ उनके मित्र महाराज भगवंत राय का शासन था जो असोथर के राजा थे, उन्हीं के राज्य में आकर बसे और हसवा में योग साधना की और जीव को अजर अमर बनाकर संवत् 1828 विक्रमी (सन् 1770 ई०) में देह छोड़ दी। आपकी समाधि ग्राम हसवा जिला फतेहपुर की चंद दास कुटी में कच्ची मिट्टी की ही अभी भी बनी हुई है।

आपकी समाधि स्थली का सुन्दरीकरण और स्वामी चन्द दास इंटरमीडिएट कॉलेज की स्थापना तथा रामलीला मैदान आदि का विस्तार करने वाले स्वामी त्रिलोकीनाथ महराज बिहार प्रान्त से आकर लगभग 90 वर्ष तक हसवा में रहे। स्वामी त्रिलोकीनाथ का जन्म 16 फरवरी सन् 1888 ई० और देहान्त 16 फरवरी 2008 ई० को हुआ था।

सन्त मीता साहेब ने "सुज्जन का उपदेस" में लिखा है कि चन्द किशोर खत्री ने भक्ति पाई। चन्द दास ने सन्त मीता साहेब से आध्यात्मिक चर्चा करते हुए यह कहा-

कठिन जोग कहि जात न मीता।
तन निबरै कैसे विपरीता।।

हिन्दी साहित्य का शोध कर रहे डॉ० चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित 'ललित' जी ने सन्त चन्द दास जी के जीवन परिचय की खोज करते हुए जो जानकारियाँ हासिल की, उन सब से प्रभावित होकर आपने अपने संस्थान का नाम 'चन्द दास साहित्य शोध संस्थान' रखा। यहीं से "चन्द दास-ग्रन्थावली", "मीता-ग्रन्थावली" एवं सन्त लालदास कृत "अवध-विलास" आदि का प्रकाशन किया जा चुका है। आपने ही बताया कि सन्त चन्द दास हिन्दी, अरबी, संस्कृत, पंजाबी आदि छः भाषाओं के जानकार थे। इसलिए आपके साखी पदों में कुछ ऐसे शब्द हैं, जिनका भाव साधारण व्यक्ति के लिए समझना कठिन है। आपके द्वारा रचित मूल ग्रन्थ कैथी लिपि में थे जिनका देवनागरी लिपि में रूपान्तरण आदरणीय चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित जी के द्वारा किया गया है। इस महान कार्य के लिये हम सभी अनुयाई आपको ह्रदय से नमन करते हैं।।

सन्त चन्द दास ने हिन्दी पद परम्परा को एक नया समन्वय दर्शन देकर हजारों पदों की रचना की। अपनी रचना के एक दोहे में लेखन के समय का उल्लेख करते हुए लिखा है

समौ अठारह सै बरस, अपर यकादश धीर।
श्रावण शुक्ला तीज को वरनी शोध शरीर।।

इन पदों में एक ओर राम, कृष्ण तो दूसरी ओर श्लेष शैली में चन्द और गुरु गोविन्द सिंह की युद्ध लीलाओं का अद्भुत वर्णन है। चन्द दास ने जहाँ एक ओर सगुण भक्ति धारा में राम कृष्ण को समन्वित कर दिया वहीं निर्गुण भक्ति पदों की भी रचना की। इस प्रकार सन्त कवि चन्द दास ने पदावली को राष्ट्रप्रेम और हरि भक्ति दोनों से संयुक्त कर दिया। बंगाल और बिहार में उन्होंने विद्यापति के नाम से हजारों पदों की रचनाएँ की, जो घर-घर गाए जाते हैं। यहाँ पर चन्द दास ने हसवा फतेहपुर में जिन पदों व दोहों की रचना की, उनके उत्तरार्ध के कुछ दोहे व पद प्रस्तुत किए जा रहे हैं।।

चन्द अद्भुत प्रतिभाशाली एवं नाना शास्त्रों के प्रकाण्ड पण्डित भी थे। वेद, वेदांग, उपांग, पुराण, धर्म शास्त्र, नीति शास्त्र के वे गहन अध्येता थे। इस महाकवि की प्रतिभा एवं व्यक्तित्व के सम्बन्ध में 'हसवा तवारीख' का लेखक कहता है कि महात्माओं में चन्द दास खत्री जिसका नाम हम अक्सर जगह किताब हजा में लिख चुके हैं बहुत बड़ा लायक फकीर और शाहबे तसनीफ, जबान दां, फसीह बयान, कामिल, काबिल, सखुन, संज दानीसवर की लियाकत और बलागत उसके तसनीफात से अजहरमिनशम्र है। वाकिफ फनून शूरी व मानवी उस वक्त से इस वक्त तक अहले हनूद में नहीं सुना गया। निश्चय ही चन्द की प्रतिभा, उनके अध्ययन क्षेत्र की समता एवं ऐसी गंभीर वैज्ञानिक द्रष्टि वाला कोई कवि या साहित्यकार अभी तक सुनने में नहीं आया। हसवा तवारीखकार का यह कथन कि चन्द जैसा व्यक्ति 'अहले हनूद' में नहीं सुना गया। चन्द के "रासो" से भी संपुष्ट है-

तो सम न और तिहुँ लोक में नट्ट भट्ट नाटिक्कवर।
संसार पार बोहिथ समह तोहि मात देवी सुवर।।

निश्चय ही चन्द चतुर्दश कलाओं के मर्मज्ञ एवं त्रिकालद्रष्टा मनीषी थे "विद्याह चतुर्दश चित्त मोहि, बूज्झै तु कहौ त्रिभुवन होहिं"। त्रिपुरा रहस्य ज्ञान खण्ड (30/36) में जिस अवच्छेदहीन प्रतिभा का उल्लेख किया गया है, उसका दर्शन चन्द के अक्षर-अक्षर में होता है।

साखी

मन तन निर्मल होत है, सुमिरत हरि को नाम। चन्द कल्पतरु श्रवत जिमि, प्रान मनोरथ काम।।(1)
जा समीप बस बास सो, भूल जात भगवान। चन्द सुखद संसार के, करत नरन की हान।।(2)
त्रसना तरल तरंग लख, लोभ नीर की धार। चन्द भगत भगवंत बिन, नहीं होत निपटार।।(3)
फांसेउ माया फांस है, नासेउ संतत ज्ञान। जेउँ वंटा चउगान को, चन्द चढ़ै मैदान।।(4)
जब लग गोए न जीतई, तब लग चढ़ चउगान। चन्द कर्मना त्याग कर, तब नर मिलै निधान।।(5)
स्वासा जब लग देह में, आसा तब लग होय। चन्द कीर बंधन परै, भ्रमता तजत न सोय।।(6)
ऊपर ते बहु तानवै, भीतर धरै विकार। चन्द कमान प्रमान जिमि, चीता चोर गवाँर।।(7)
कर घर ऐसी कलम को, मन वासी वस आन। चन्द लिखारी लिखन को, लेखी श्री भगवान।।(8)
कर करनी कर धार सो, लिखु लिखु दिव्य विचार। चन्द निरन्तर माल रच, गुन गन सुभग मुरार।।(9)
रसना सुभग सुलक्ष वर, हरि हर रच रुच ध्यान। चन्द चकोरी चातकी, ता विध प्रीति प्रमान।।(10)
द्रग पुनीत तन वास बस, हरि दरसन रस राग। पद परसत जन चन्द प्रभु, अपर सकल गुन त्याग।।(11)
जो दरसै तो दरस को, परसै तो भगवान। चन्द लगै लग नेह नर, जिमि जल मीन प्रमान।।(12)
जेउँ मृग नाद समाध मै, श्रवन सुरन मर अंग। तेउँ जग साधू चन्द जन, रच रंगी हरि रंग।।(13)
जेउँ हित जल सो मीन को, पल छिन त्यागत नाहिं। विहरत विहरत चन्द जन, ताके प्रानन माँहि।।(14)
वारिज जेउ मधु वसन की, मधुकर निकर निवास। चन्द सुरत उर दरस उर, तिमि जन चरन विलास।।(15)
नेम धर्म संजम सोई, तीरथ पुन्य प्रयाग। चन्द सरस सतसंघ वस, रच रच हरि अनुराग।।(16)
पढ़ु पंडित मत सार सो, जासे नसै विकार। चन्द विचारी तत्व पद, हर हर नाम अधार।।(17)
नर को जीवन सुफल है, समर न संकित प्रान। तन धन चन्द सो लोभ तजि, आपु चढ़ा मैदान।।(18)
कोटि मध्य सूरो सुघर, पूरोई रन धीर। पद धरि आगे चन्द जन, संकित नाहिं शरीर।।(19)
घरी घरी तन समर में, परै घटा सी घेर। चन्द एकादश मध्य ही, मानो मृग गन शेर।।(20)
जीतो रन में काम दल, प्रबल महाबल सूर। भागे चन्द सो देख द्रग, मार चार से फूर।।(21)
जानत राग न रागिनी, चंचल चपल न यार। हउ बिसरी अउ गुन भरी, चन्द न हरी बिसार।।(22)
रूप न सुन्दर ज्ञान गुरु, पंडित गुनी न दास। चन्द सरन तुअ जोग नहिं, करत लोग उपहास।।(23)
आए औरहि काज को, करनी और कमात। चन्द मंद नर बावरे, बाँधे जमपुर जात।।(24)
सर सन मुख हेरे नहीं, जा हेरै रघुवीर। चन्द भजन परताप सो, रहै न तन मो पीर।।(25)
गुन सागर नागर लखेउ, चखेउ सो पूरो नाद। चन्द क्रिपा भगवंत की, नासी सकल उपाध।।(26)
मन वारी करतार पर, तन वारी गुन सार। मत वारी जन चन्द सो, लागी लगन खुमार।।(27)
मतवारो मातो सदा, रसवारो रस सान। चन्द निहारो नेह कर, हर हर घर दीदार।।(28)
लगी खुमारी रंग की, पगी सुवारी सूर। मतवारी जन चन्द सो, रस धारी भरपूर।।(29)
कर सारी सारी तुशी, सुरी सु तीसुर नाद। मुरी मुरी सो मुरीद होय, चन्द पंच रस वाद।।(30)
मन मारेउ धारेउ सोई, धीरो ही उर ध्यान। हीरो हेर निरन्तर, चन्द सोई भगवान।।(31)
घरी घरी घरियार की, चन्द सो करी संभार। हरी हरी हर हर हरी, हरी हरी हिय हार।।(32)
करु तन त्रान निधान गुन, धीरज धीर कमान। चन्द सरस सर भजन को, भंजन मोह गुमान।।(33)
चर्म करी गुन धर्म की, करनी चन्द कृपान। सेज सुसील सो धर्मता, मनी अनी कृत हान।।(34)
पूरित स्रिंगी सुरत रत, पूरित पूरो नाद। चन्द सो पूरी आतमा, नासी मोह विवाद।।(35)
बिन करनी नाहीं तरै, धरै न कोऊ धीर। चन्द जथा जल जाल बिन, सुखी न मीन शरीर।।(36)
भेष किये करनी नहीं, करनी कर्म विचार। चन्द बिना हरि भगति नर, जैसे चर्म लुहार।।(37)

स्रिंगी- सबसे ऊँचा शिखर संतत-सदा, निरन्तर

जो करनी बरनी अनी, सो करनी करतार। चन्द न संका प्रान जेहि, सो पाई भै पार।।(38)
जाकी कीरत स्रवन सुनि, छूटत कर्म कृपान। रसना हर हर बसत ही, होत चन्द कल्यान।।(39)
द्रग दरसत परसत चरन, मन हरषत हिय हेर। रस बरसत सरसत सुखी, चन्द सुधारी नेर।।(40)
कंठी कठिन विवेक की, बाँधै कर वैराग। छापा छापी आतमा, चन्द सो भ्रमता त्याग।।(41)
तिलक सुजस जप माल कर, कर करनी शुभ मेर। चन्दन चरचा चातुरी, अक्षत हरि जस टेर।।(42)
मूरत ममता दोष तज, एक द्रष्टि सम ज्ञान। चन्द कला रवि परस द्रग, ता विध श्री भगवान।।(43)
विद्याचारी वेद धृत, ज्ञानी कहिये सोय। चन्द सो जाके सुरन सुर, हर हर हरि धुन होय।।(44)
उर पर सेवा रमित नहिं, अमित सो महिमा देव। चन्द मिलै सतसंग में, की मन साँची सेव।।(45)
कर माला के फेर सो, सरै न तेरो काम। गृह माला को जानई, चन्द सो आतम राम।।(46)
सुरत लगै रुच नाम सो, रागी राग प्रवेश। चन्द वैरागी जानिये, जा उर नहीं कलेश।।(47)
गनती गुरियन की सही, सुरत गही हरि जाप। चन्द सो ताकी माल में, लागत रेफ न पाप।।(48)
मन भीजत नहिं भजन में, कर माला मुख जाप। चन्द बड़ाई आपनी, अधिक बढ़त है पाप।।(49)
सन्त सुगत सो जानई, नहीं मानई मान। चन्द प्रेम जा मन बसै, ताको चहत निधान।।(50)
आठौ जाम घरी बसै, पल पल पलहु विचार। चन्द भजन भगवंत को, तुम तम नहीं विसार।।(51)
मउनी मुख नहिं बोलई, इन्द्री डोल अपार। चन्द लखै जग बाहिरा, भीतर की करतार।।(52)
इन्द्री साध सो सिद्ध है, गनी गरीबी मर्म। चन्द ज्ञान उपदेश गुरु, यही सारता धर्म।।(53)
मन हस्ती गहि आनई, दै अंकुश गुरु ज्ञान। चन्द फिराये ते फिरै, जल बल नलन विधान।।(54)
समाध खेल नट देखिये, आवागवन विचार। चन्द काल ग्रासित सबै, उठत चलत कर झार।।(55)
जाको पोषन भरन है, सोध सुगंध लगाए। चन्द सोऊ तन बावरे, संघ न तेरे जाए।।(56)
जो बीती सोई गई, रही बिताय न यार। चन्द भजन कर राम उर, आवागवन निवार।।(57)
अबहूँ बेर सवेर है, जो चित करै विचार। चन्द भजन कर कर्म तज, तो निवरै संसार।।(58)
अचिंत नाम भगवंत को, सुधा सिंध परवान। पीवत चन्द जो हेत कै, होत तासु कल्यान।।(59)
संगत सुमत निवास गृह, वासदेव घट वास। प्रापत चन्द सो होत तेहि, करुनायक हरिदास।।(60)
आजु घरी दिन सुफल है, पद देखे हरिदास। चन्द पुन्य मख सर्व थल, ताही माहिं निवास।।(61)
द्रग लख पद वारिज मगन, रज शुभ तीरथ जान। चन्द सो बारम्बार ही, करत रहो इसनान।।(62)
जन रज पुन्य प्रयाग शत, कोट धर्म इसनान। काशी चन्द निरन्तरहि, कीरत एक निधान।।(63)
द्रग पलकन से झारिये, ते पद प्रेम पुनीत। चन्द दास एहु दास की, सदा सरल है रीति।।(64)
कारज सरत न बिन भजन, कहत सयाने लोग। चन्द नाम बिन सुखद सब, अंत होत हैं रोग।।(65)
रस खाए रसरी परै, स्वाद फँसै जल मीन। चन्द मिठाई नाम बिन, बाढ़त व्याधए कीन।।(66)
मन सो मन अति निकट है, तन सो तन नहिं दूर। चन्द प्रेम सस कुमुद लख, वारिज दरसी सूर।।(67)
मधुकर वारिज ही बसै, बसै न अपर निवास। चन्द ताहि विधि हरि चरन, बसत सदा उर दास।।(68)
वारिज को संकट नहीं, चन्द सो मधुकर जान। संकट सो फिर सुख मिलै, उदै होत जब भान।।(69)
द्रग सोई मधुकर गुनी, हरि पद वारिज ध्यान। चन्द प्रेम बीधे सदा, गीधे चतुर सुजान।।(70)
खुशी बसत खुशहाल में, सदा खुशी खुशहाल। उर शोभित शुभ ब्रम्ह की, सुजस सुहाई माल।।(71)
रूप रमै सब राम में, राम रमै असथान। चन्द ताहि जैकार है, जाकी जै जै वान।।(72)
मन्त्र अनाद सो जाप है, गीता गुरु को ज्ञान। चन्द भजन एक राम को, शुभ विद्या परवान।।(73)
वेद बखानत ब्रम्ह को, ब्रम्ह बखानत वेद। सिद्ध बखानत साधना, साधू चन्द निषेद।।(74)
आपुहि वेद विचार कै, कीरत आप बखान। चन्द कौन विधि भाखिए, सब विधि है भगवान।।(75)

मख-यज्ञ

कुमुद-पुष्प, मधुकर-भौंरा

खुद में खालिक खबर है, केंउ तजि जावत आन। चन्द निगाह दिलंदरा, गुरु पीरा फरमान।।(76)
रास ईमान सो तसबिए, दिलदर जीकिर निवास। अैन उजू कर देखिये, चन्द सो खालिक पास।।(77)
सिफत करा शुभान की, सिदकत वजो बास। चन्द सोई दरवेश है, खुद दिल खबर निवास।।(78)
फरजी सच सो अंग में, कर अरजी दरबार। गरजी चन्द सो दरस की, बरजी सकल विकार।।(79)
लिखा हुकुम सुल्तान का, तिसै न करै अदूल। चन्द रजा जो हक्क की, सोई करै कबूल।।(80)
दीगरा नेह निगाह तज, एको बगो सुभान। दिल तहकीकहि देखिये, चन्द सो पाक कुरान।।(81)
कहै कुरान फकीर सुनु, हक का सर्व निवास। तसवी तिसकी जानिये, चन्द सो जा दिल रास।।(82)
तज बद अमल गुमानता, हक्को हक्क हलाल। चन्द कबूल परै सोई, ताको खाय न काल।।(83)
हक्क हलाल किसै कहौ, किसै कहौ मुरदार। चन्द सो फाजिल फलन जू, कीजै यासु विचार।।(84)
अमल पराए हक्क पर, है करना मुरदार। इह सो चंगा रोज होए, उहाँ परैगी मार।।(85)
हक्क पराया त्यागिये, सोई हक्क हलाल। चन्द कहा जो पीर ने, दिल राखै तिस नाल।।(86)
हैवत उस दिल की रहै, अदल निगाह निवास। चन्द ईमान ईमानता, रब्ब कहै स्याबास।।(87)
जी की रजमा के अदल, जेर किये शैतान। चन्द फकीर सो जानिये, जाको रास ईमान।।(88)
पांड़े तजो विकार को, भजो भजो भगवान। जो कुछ भावै ब्रम्ह को, चन्द सोई परमान।।(89)
जेहि गति वेद न पावई, शिव बिरंच सुर साध। तासो सनमुख चन्द रहु, मत उर धरो विषाध।।(90)
गुन कर गीता ज्ञान पर, गीता गुन पर आन। चन्द सो नीत बखानिये, निर्मल नाम निधान।।(91)
जो कुछ चाहै सो करै, बहुर सो करने जोग। चन्द न भूलो नाम प्रभु, दे भूलन जग लोग।।(92)
काको पुन्य बताइये, काको लागत पाप। चन्द निरन्तर सर्व के, हैं नारायन आप।।(93)
भटू न भटको त्याग गृह, हरि है बाहर नाहिं। जो मन पैठे चन्द जन, तो हरि आपुहि माहिं।।(94)
ऋचा चारहु वेद की, सुया एक परमान। चन्द सो निर्मल भद्र उर, हरि गुन रच तज ज्ञान।।(95)
शिव मो सकती बसत है, शिव शक्ती मो वास। चन्द बसै जन नाथ में, नाथ बसै निजु दास।।(96)
हित चर्चित चरचा सुमत, कुमत हरन हरि नाम। जाके सुमिरन चन्द जन, मन पावत विश्राम।।(97)
इहाँ न दूजी बान है, हरि बानी हरि वान। गुरु ज्ञानी मानी हिये, चन्द सो आनी ध्यान।।(98)
जीवन सुफल घरी भली, रितु दिन पल अरु मास। चन्द मिले जब साधु जन, कीन्हो कुमति विनास।।(99)
दर्पन में दरसित जथा, हित परसित पद प्रान। उर सरसित जन चन्द इमि, काम वाम रच ध्यान।।(100)
पुहुप प्रकाश सो वासना, तेल तिलहि परमान। छाया वृक्ष सो चन्द जन, काया तिम भगवान।।(101)
सठन हठन मानत नहीं, कठिन तासु उर रीति। सूधे सुरस न आनई, चन्द बिना विपरीत।।(102)
जथा बज्र धन तर धरे, दै सिर भारी भार। सूधे चन्द न मानई, सठ हठ गुन न गँवार।।(103)
छिपै न छेप निधान सो, चतुराई तज यार। चन्द सो माला प्रीति बिन, सोहत जथा सो हार।।(104)
पाप बढ़ै जेहि स्वाद सो, सो भोजन तज धीर। चन्द काम मद लोभ खल, ये दुःख देत शरीर।।(105)
कर्म बढ़ै केहि कर्म सो, नसै कर्म केहि धर्म। चन्द कहै यहु वेद पद, पण्डित विद्या मर्म।।(106)
कर्म मिटै करनी करै, कर्म बढ़ै अपराध। चन्द द्रोह मद कामना, ये त्यागत हरि साध।।(107)
चलत चलै संघ बावरे, नहिं नारी परिवार। चन्द पुन्य अरु पाप ये, जस अपजस बिउहार।।(108)
मन एहु ससा समान है, पायो सिंह निवास। चन्द तिन्है बस आनई, साधू भजन प्रकाश।।(109)
कुसुम रंग सम संघ यहु, अति चोखो दिन चार। चन्द सो धोबी कर परे, दीन्हो सुरस विसार।।(110)
सपने सोवत लाभ सी, होत हान सी प्रात। चन्द तधा हरि भगति बिन, बहुरो नर पछतात।।(111)
कहँ लौ करै पुकार को, परी पुकार सो और। गुन तीनो लग देखिये, चन्द सो माया दौर।।(112)
कर धरकी छुट जायगी, तब घट बजै न साँस। साँस गनी गनती सोई, गनती घरी न मांस।।(113)

हैवत- उदार

ऋचा- वेद मंत्र, भद्र-भला, सज्जन

सुख शोभा को सदन हरि, मदन वारिये कोटि। लखत चन्द छवि बदन की, गहत रूप जेहि ओट।।(114)
मूरत ब्रम्ह सो ब्रम्ह मै, ब्रम्ह सर्व भरपूर। जा विधि सूर समाय शशि, चन्द पास ही दूर।।(115)
माला तेरे नाम की, मेरे मन की जाप। चन्द चकोरन सी सरस, परस हरत संताप।।(116)
जहाँ होत अपमानता, तहाँ न करिए वास। जैसे कपि के काननहिं, नाहीं सिंघ निवास।।(117)
कपि थल सिंघ बसै नहीं, सज्जन दुर्जन दूर। विष समीप नहिं सुभल है, चन्द सजीवन मूर।।(118)
घंटा बाजत आदि गृह, जहाँ न घाटी घाट। पहुँचत सोई चन्द जन, जहाँ बटोही बाट।।(119)
महाँ पाप है कामना, परनारी रस पीव। दूजे चन्द सो घात पर, तीजे हिंसा जीव।।(120)
सागर काया मीन मन, तृष्णा वाउर वारि। कर्म फाँस कर काल के, चन्द ग्रसित नर नारि।।(121)
जे नर राखैं कपट उर, साधुन के दरबार। तिनको जीवन चन्द इमि, विंजन लीन विसार।।(122)
चन्द सो चोर जहान के, बटपारी बटपार। दुवारे तौ ठाकुर परौ, करै बनी निपटार।।(123)
मम तन हितकर हेरियै, हरि करुनारुत कीर। चन्द सो अवगुन गुन भरो, सदा अधम सिर मौर।।(124)
विरध दयानिध हरि कहै, है हरि कृपा निधान। चन्द बालि रिपु राज दै, बहुरि विभीषन दान।।(125)
जब लग अपनी मन गनी, तब लग गनी न कोय। अपनी मनी निवारि कै, चन्द सो साधू होय।।(126)
नजर न राखै दूसरी, नादिर नदर निगाह। हैवत दिल हादिक बसै, अदल बख्त दरसाह।।(127)
जिसद वलत को यार तजि, दिया फकीरी पांव। तिसद वलत को चन्द लखि, अब नाहीं ललचाव।।(128)
गया न कोई साथ लै, खान अमीर सो राव। चन्द खजाना जोर कर, चले सो नंगे पाँव।।(129)
भेंट हमारे भावनी, हरि भगतन सो भाव। गुन गावत गोविन्द के, चन्द बढ़ै चित चाव।।(130)
घायल परा खुमार मैं, खीज खुमारी यार। चन्द उतारी नेक नहिं, धारी रब दीदार।।(131)
गनी गनी भी ठहि गये, खुदी हिरस दिल आन। चन्द गदाधर हैं भले, शौदागर सुलतान।।(132)
जिन सिर ऊपर पाँव पर, सिर नीचे परमान। चन्द खुदी को जे तजैं, खुद दिल खालिक जान।।(133)
जंत्र हमारे राम जस, मंत्र मुरारी नाम। बूटी हरहर जाप की, चन्द करै अब काम।।(134)
प्रेत शिल्प पूजा सबै, है भ्रमता संसार। जंत्र मंत्र बूटी सिधे, चन्द नाम करतार।।(135)
मोटी बाती का करै, बरै नहीं बिन तेल। चन्द बनाए भेष के, होत न हरि सो मेल।।(136)
सबद न साखी मानई, रच रच काया भेष। चन्द वधिर कहँ राग जिमि, सुर नहिं प्रान प्रवेश।।(137)
जे बकरा करि पतन कर, कहते किये हलाल। ते भारी भट द्वार जम, चन्द होत है काल।।(138)
जेहि हित जागत जगत अब, तेहि हित सोवत दास। चन्द जो माया जग लगी, तासो रहत उदास।।(139)
आदि ब्रम्ह अनंत पद, पर आतम परकास। चन्द न रेखा कूप पर, रूप न रेखा बास।।(140)
खुली समाध समाध सो, भई समाध समाध। रूप कला धारी नहीं, अवघट घाट बताय।।(141)
रेफ़ा लागी शून्य पर, जा दिन भया अकार। वरन विवेकी पंडिता, न्यारा करो विचार।।(142)
त्यागी रेखा शून्य पद, भई कर्मना नाश। चन्द तरंग न अम्बु पर, अम्बु तरंग निवास।।(143)
जा मुख हीरा हरि बसै, रसै सो रसना राम। पुन्य कोटि काशी कला, चन्द ताहि के धाम।।(144)
रसना तै मुख मैं बसी, क्यों न रसी रस नाम। चन्द चपल चंचल चलत, नहिं पावै विश्राम।।(145)
नारायण नव तन नितं, नीरन्तर निर्वान। भै भंजन अंजन सुमत, चन्द करन कल्यान।।(146)
एक मरै एक जीवतो, एक प्रगट संसार। चन्द न छोड़ै आतमा, रस ओछो परिवार।।(147)
जिनके ध्यान न उर बसै, सम पखान पशु सोय। चन्द कहै वैराग यहु, बिन दाया खल होय।।(148)
दया लीन तप धर्म है, दया लीन पद जोग। चन्द सो दाया दरस उर, दरसी साधू लोग।।(149)
जेहि नारायन के भजे, नसत जेठर तन ताप। चन्द प्रकट भ्रम ता परे, करत न ताकी जाप।।(150)
अक्षर भ्रष्ट न भ्रष्ट पद, मात्रा भ्रष्ट न होय। चन्द गिरा अनभय जहाँ, तहाँ नहीं भै कोय।।(151)

हादिक-ईश्वर बलत-बलपूर्वक, हठपूर्वक नादिर-नादिरशाह, अदल-आदिलशाह (17 वीं शताब्दी के बादशाह)

सुख संचै रस भोगता, गृह नारी सुधाना। चन्द सरांय सो वास है, कोई नहीं अपना।।(152)
जेउँ सोवत द्रग देख के, मन भूलै अपना। चन्द सो निश्चय जानिये, कोई नहीं अपना।।(153)
सोध सुगंध सो लेपने, अहिनिश मांज तना। बहु बींजन रस भोग कै, सोऊ नहीं अपना।।(154)
छूटे संघी संघ सो, कोई न संघ सुना। चन्द कहै कोउ लालची, फिरि फिरि परत मना।।(155)
मित्र सनेही वास वस, केउ न लाए मना। चन्द सो छाया वृक्ष की, कोई नहीं अपना।।(156)
रफतं रफतं रफतयं, परानी जान परना। चन्द कहै तहकीक कर, कोई नहीं अपना।।(157)
लसकर पील निसानता, गुम्बज गोय गुना। चन्द दगा दिल जान कर, कोई नहीं अपना।।(158)
तखत सुवारी वखत वर, भारी कोट बना। चन्द मुरारी नाम बिन, कोई नहीं अपना।।(159)
मधुर मिठाई भोग रस, मिश्री मूंग चना। चन्द सुवादी नाम बिन कोई नहीं अपना।।(160)
वाम सो धामन भै घनी, सस सम रूप बना। चन्द बिना हरि भजन के, कोई नहीं अपना।।(161)
टूट लगाम तुरंग किमि, बाग न मानत सोय। जो ई इन्द्री हठ तजै, चन्द जोग किमि होय।।(162)
हरि रस रंग सो रंग के, मत रंगै दुनियाए। नाम विसारे चन्द जन, कोई संघ न जाए।।(163)
अजमत धाने रब्ब के, जिनने किया जहान। फकीरा अजमत वंदगी, तसबी रास ईमान।।(164)
रमै न कीरत राम उर, रुचै न वेद विचार। चन्द कहै गृह ताहि के, बस्ती नहीं उजार।।(165)
जिनके प्रेम न भजन सो, नहिं उर भावत राम। चन्द कहै गृह ताहि के, कौन हमारो काम।।(166)
निर्गुन रूप निरंजना, सर्गुन श्री भगवान। निर्गुन सर्गुन मध्य में, चन्द करो इसनान।।(167)
सागर सरिता पवित्र दोउ, दुविधा कहै गवाँर। चन्द निरन्तर आप में, जिन देखेउ करतार।।(168)
रमो मुरारी राम पद, हरि पद प्रीति सुधार। गुन गावत जगदीश के, छूटत चन्द विकार।।(169)
माधौ मोहन लगन लगि, मगन मनोहर बैन। चन्द चरन हरि प्रीति उर, सो लखिए भरि नैन।।(170)
पद वारिज मन भ्रमर कै, निशा सुरत बस कोस। अघ मंजन जन चन्द ते, हरन सो कल मल रोस।।(171)
पद लागे साधू जना, भागे त्रिविधि सो ताप। उर जागे जन चन्द ते, सतगुरु दान प्रताप।।(172)
श्री करुनानिधि गाइये, मुख जिभ्या सुर साँस। चन्द सो घटका जाम पल, राम नाम सुख रास।।(173)
उर माला हरि भजन को, मन माला हरि नाम। तन शाला मो चन्द जन, करो सदा विश्राम।।(174)
रहै न जोवन देह सुख, रहै नही धन धाम। चन्द रहै थिर अपर नहिं, रहै सो हरि को नाम।।(175)
काया जोवन के गए, भएउ पुरा उपहास। चन्द सनेही सदन के, करै न ताकी आस।।(176)
दया धर्म बिन देह री, जीवन तन धन वाद। चन्द अलोने असन जिमि, रसन न पाई स्वाद।।(177)
मुख बिन दसन विचारिए, नारी बिना सो पीव। चन्द तथा हरि भजन बिन सुख नहिं पावत जीव।।(178)
नलनी सुवा सो भूल भ्रम, कर नहिं तजियत सोय। तेउ तरंग रस रंग की, छाड़ि सकत नहिं कोय।।(179)
तिन तोरी रस जेवरी, जिन जोरी हरि प्रीत। चन्द तेइ सुख पावई, जिन उर साधू रीत।।(180)
साधु चरन रज भाग सो, पावत चन्द सो कोय। परसत पुन्य पैआग सत, दरसत अति सुख होय।।(181)
सन्त समीपी बास बस, सन्तत सठता त्याग। जमगन परसत ताहि नहिं, मानत उर अनुराग।।(182)
परसो पावन चरन ते, हरन दोष अघ ताप। मन माला तिनकी करो, चन्द निरन्तर जाप।।(183)
जिनके मन गोविन्द की, सुच माला परतीत। ते पावन जन चन्द महि, यहु पद धारत नीत।।(184)
राम दास के दास को, अस परसत नहिं पाप। चन्द सो निर्मल होवई, जे मन लावत जाप।।(185)
कहु कहु साधू सुजस को, गहु गहु चरन पुनीत। रहु रहु तेहि सरनागती, लहु लहु चन्द सो प्रीत।।(186)
नर सो सुभग शरीर ते, मन पाए बड़ भागि। चन्द लगै रस अनरसी, हरि रस हीरा त्यागि।।(187)
गरल सो भोजन जानिये, बिन रस रस गोविन्द। चन्द तेइ नर मृतुक सम, जे नहिं भजत मुकुंद।।(188)
धस अस्वादी जीभ तै, वदन सदन रच वास। बिन जस गाए राम के, चन्द लुहारी साँस।।(189)

अजमत- आदर, गौरव, बड़ाई

जो मुख गावै नहिं हरी, घरी घरी दिन रात। चन्द कहै दुरगंधता, तेहि मुख सदा बसात।।190)
नहीं सुनै सुर सुरन सो, श्रवन निवासी राम। अनर अरागी चन्द जे, ते हमरे केहि काम।।(191)
जो शरीर धर मानुषी, किएउ नहीं हरि हेत। चन्द कहै ते नर नहीं, निश्चय जानो प्रेत।।(192)
श्री करुनामय जे नहीं, उरकर आनत भाव। चन्द तिन्है द्रग देख के, समर करत उर चाव।।(193)
अरे अनारी हरि भजो, भंजन अघ दुःख दोष। पद परसत जन चन्द महि, नारी भई अशोक।।(194)
निकसेउ नाम न जीभ भर, सुर धर सुरत लगाय। सो दुज सुर पुर देखिये, चन्द लगै सुर पांय।।(195)
भई गीध गति देवता, द्रग दरसत रघुराय। चन्द मिटे अघ देह सो, हरि भेटे उर लाय।।(196)
कहि केशव मुख सार सो, सो गनिका परवान। साखी गावत सन्त सब, चन्द लहे भगवान।।(197)
ऐसे करुना सिंघ सो, जे नहिं लावत प्रीत। चन्द सो चर्म लुहार की, तिमि तन जावत बीत।।(198)

नवधा भक्ति

जासो पावै मुक्ति नर, तजै कर्मना त्रास।
रचै भक्ति भगवंत पद, निवरै तृष्णा आस।।

हर्ष सहित बोले अविनाशी, भक्ति दिव्य गुन गिरा प्रकाशी।
मारग भक्ति मुक्ति वरदायक, सो अब वरनौ लोक सहायक।
जासो प्राण मुक्ति फल पावै, संकट बिना धर्म प्रगटावै।
जौन भक्ति नारद मुनि जानी, ईश ब्रम्ह सन कहा बखानी।
कलि रचि धर्म धर्म पद पाए, प्रहलाद हेत हरि रूप बनाए।
अम्बरीख नृप इच्छा धारी, चक्र तेज मुनि श्राप निवारी।
गीध साबरी गज हित धाये, द्रुपद सुता तन चीर बढ़ाये।
नृग मृग बधिक विप्र अरु नारी, भक्ति प्रभाव श्राप तजि तारी।
गनिका और विभीषन जानो, हनूमान हरि भक्ति बखानो।

जानी हरि की भक्ति उर, जानी कीरत लोक।
सोई भक्ति अंचित पद, सुनो हरन अघ शोक।

नव प्रकार हरि भक्ति विधाना, प्रथम लेइ सतगुरु सो ज्ञाना।
वैष्णव पंथ विष्णु को भक्ता, सात्विक ध्यान त्याग भ्रम मुक्ता।
सतगुरु चरन बंदना करई, लै उपदेश भक्ति अनुसरई।
सतगुरु जोग सर्व विधि जेई, गुरु निज करै लोक नर तेई।
ब्रम्ह ज्ञान सो पूरन प्राना, पूरन होय शब्द गुरु ज्ञाना।
शब्द ब्रम्ह के अर्थ विचारो, चरचा भक्ति शिष्य अनुसारो।
जो कुछ ज्ञान शिष्य मन रागी, करै बोध पद भ्रमता त्यागी।
उर संदेह रहन नहिं पावै, नाना ज्ञान शिष्य समुझावै।
सो गुरु ब्रम्ह शब्द का ज्ञाता, मुक्ता जोग सम जान विधाता।

बहुरि होय गुरु जोग वर, हरि दर्शन द्रग पाय।
वांछै दर्शन शिष्य उर, करै जतन परचाय।।

दिव्य ज्ञान दै हरी मिलावै, सो गुरु जोग्य सर्व श्रुति गावै।
ऐसो सतगुरु प्रापत जाको, कर्म न लागै निश्चय ताको।
सिष्य प्रभाव सुनो जब करनी, निसदिन परो रहै गुरु सरनी।
उर अनुराग यही प्रगटावै, हरि दर्शन हरि भक्ति बढ़ावै।
अपर मनोरथ मन ते छोरै, विष रस तृषा मोह मद तोरै।
प्रान देवता सतगुरु जानै, भगवान रूप उर ताको मानै।
मम गुरु मम परमेश्वर अहई, मन वच कर्म यही उर रहई।
तज जड़ता परपंच विभेदा, सेवा करै वचन जिमि वेदा।
तन मन धन गुरु अर्पण करई, भक्ति चाल साधू उर धरई।
जा विधि बल प्रहलाद दै, भक्ति रचे अनुराग।
ता प्रकार संतत रचै, प्रान मोह भ्रम त्याग।

तन मन सरस चरन अनुरागी, गुरु अस्नेह प्राण इव पागी।
अपर ओर मन चलन न पावै, सेवा सतगुरु भक्ति बढ़ावै।
सुच पवित्र तन करै विवेका, जल रज सो तन शोध अनेका।
गुरु सेवा सुचि संजम करिए, मन प्रसन्न कर पद उर धरिए।
दम्भ गर्भ मद मान विसारै, तजि परपंच भक्ति रुचि धारै।
गुरु पद ध्यान हेत उर ऐसो, निर्मल ब्रम्ह त्याग रस जैसो।
रच सेवा अभिमान न आनै, निज कुल धर्म श्रेष्ठ कर जानै।
मंजन क्रियाशील अनुरागी, मिथ्या वचन वाद गुरु त्यागी।
गुरु उपदेश मन्त्र दिढ़ ध्यानी, सहित प्रेम जप अहिनिसि ज्ञानी।

मन तन निर्मल भीति तज, रचै ब्रम्ह चित चार।
सेवा भक्ति विवेक जुत, गुरु चरनन सुख सार।

जब गुरु निशा सदन सुख पावै, निद्रा ध्यान प्रेम उपजावै।
ता पाछे जन निद्रा करई, यहु प्रण प्राण सदा दिढ़ धरई।
जागै प्रथम सो सेवा कारन, गुरु अनुराग ताप तम हारन।
असनान प्रथम गुरु को करवावै, ता पाछे निजु मन तृपतावै।
जो द्रग दरस श्रेष्ठ फल दरसै, वसन रतन रथ गज मनि परसै।
ते सब प्राण मनोरथ आनै, गुरु गृह जोग निरन्तर जानै।
अनुराग सहित गुरु आगे राखै, मधुर दीनता वचन सो भाखै।
गुरु मन मर्म ध्यान करि पावै, प्राण मनोरथ भक्ति बढ़ावै।
आयस बिना काज सो करई, जो गुरुदेव मनोरथ धरई।

रहै सदा गुरु दरस रत, तजि काया सुख नेह।
सेवा पल पल भक्ति जुत, करै तहाँ निजु ग्रेह।।

कर सर भक्ति नहिं अलसावै, उदास रीति उर कबहुँ न लावै।
सदा समीप नेवासी होवै, सावधान मन ध्यान न खोवै।
नित नवीन गुरु निजु उर जानै, सेवा वस कबहूँ नहिं मानै।
सदा सर्वदा संकित रहई, मन इन्द्री रस सन्तत दहई।
आज्ञा लीन सदा उर ध्यानन, असनान तेल तन चर्च विधानन।
निसा भक्ति जुत चरन सुधारै, हरि समान गुरु बदन निहारै।
भोग सर्व ते गुरु निर्लेपा, गुरु तन लगत न माया छेपा।
ये पद सदा आत्मा आनै, गुरु को प्राण निरंजन जानै।

कर सेवा उर चाह नहिं, जो गुरु होय दयाल।
देखि भक्ति मम आत्मा, करै सो मोहि निहाल।

रहित कामना इच्छा त्यागी, भक्ति सदा रत सो वैरागी।
गुरु को सदा निरन्तर जानै, अंतरजानी सतगुरु मानै।
मम उर मर्म सर्व गुरु जानत, सेवा भक्ति प्राण हित आनत।
सदा संग गुरु अंतर वासी, सो भै राखि पाप तजि रासी।
अधर्म कर्म अवगुन तजि डारै, मम गुरु गोचर मर्म निहारै।
मध्यम करम करत भय आनै, मम गुरु सर्व गोप गुन जानै।
तव विकार सो हटकै प्राना, होय सत्य ताको कल्याना।
गुरु पद मध्य बुद्धि थिर राखै, अपर स्वाद जग बिष इव भाखै।
उर भ्रमता रस कबहुँ न करई, निश्चय प्राण सत्यता धरई।
गुरु अपने को सर्वश जानै, भक्त माल रत नाम बखानै।

प्रथम भक्ति गुरु पंथ रत, साधू निर्मल ज्ञान।
अब वरनौ जन दूसरी, भक्ति ब्रम्ह पद ध्यान।

पूरन भक्ति अनन्य विचारी, हनोमान तिनको अधिकारी।
राम रूप उर राम सो ध्यानी, राम माल कृत राम बखानी।
राम ईष्ट अरु राम निधाना, रामहि ता गुरु राम प्रधाना।
राम मन्त्र अरु राम विवेका, प्रभु उर राम अपर नहिं एका।
त्रिभुवन सिद्धि दान जो पावै, तजि अनन्यता अनत न जावै।
संकट सुखद एक व्रतधारी, प्रान दान करि भक्ति संवारी।
अनुचर भाव रचै सेवकाई, जथा पवन सुत उर लघुताई।
कपि दल सहित राम अरु भ्राता, वीर रूप सुन सो विख्याता।
जटा शीश धनु पानि विराजै, नील मेघ तन दुति उपराजै।

सो स्वरूप उर ध्यान धरि, पुलक प्रेम द्रग नीर।
चन्द अनन्य अनंत सुख, साधू ध्यानी धीर।

तीजी भक्ति प्राण हठ आनै, सो प्रहलाद मर्म रचि जानै।
हठ सो प्राण पैज उर कीन्ही, पिता ताड़ना बहु विधि दीन्ही।
प्राण लोभ तज हठ नहिं त्यागे, राम मन्त्र सन्तत अनुरागे।
तथा सन्त कल त्रास न मानै, हठ इन्द्री रच नाम बखानै।
पल पल पगे प्रेम सो ध्यानन, रहस भजन गुन कथन पुरानन।
मन हठ अटक ज्ञान तजि माया, रोम रोम रचि भक्तिहि काया।
ध्यान चरन वारिज व्रतधारी, सरन सूर वर पाप प्रहारी।
अटक अटक हठ हरि सो करई, दरसन भाव आत्मा धरई।

लै दरसन हठ प्रेम रचि, जथा प्रथम प्रहलाद।
चन्द भक्ति पल पल रचै, साधू कृत अहलाद।

चौथी भक्ति दान सुनु धीरा, जथा कर्ण बलि विषद शरीरा।
बलि निजु राज विप्र कहँ दीन्हो, सुर पुर सुखद लोभ नहिं कीन्हो।
बहुरि पीठि दै भक्ति न त्यागी, दरसन कला भयो अनुरागी।
कर्ण सर्व सुख द्विज कंह दीन्हो, इन्द्र आय छल यद्यपि कीन्हो।
तुचा विदारि कवच दै ताको, कुंडल सुधा दये पुनि वाको।
भक्ति न तजी प्राण श्रम पावत, मगन प्रेम हरि चरन सो ध्यावत।
तथा सन्त कल चरनन ध्यावत, जथा जोग मन दानहि लावत।
विमुख साध गृह करै न धीरा, असन अन्न मृदु वचन सो नीरा।
जो गृह शक्ति दान नहिं होवै, तो साधू पद निर्मल धोवै।

आरत वचन विवेक कहि, व्यंजन मृदु मुख बैन।
पुलकै चन्द सो आत्मा, श्रवै द्रवै दोउ नैन।

भक्ति पंचमी बहुरि सुनीजै, प्रेम नेम सम गोपी कीजै।
जथा गोपिका बन बन डोलै, कृष्ण कृष्ण लज्या तजि बोलै।
हँसी लोक कुल कानि बिसारी, तन धन प्राण कृष्ण पर वारी।
सुनै बैन मृदु पावन रसना, करै विभूषन हरि तन बसना।
नाना रहस भक्ति अनुरागन, तथा सन्त कलि भक्ति विरागन।
जहाँ कृष्ण जस गावै कोई, तन मन पुलक हर्ष जुत होई।
नूपुर बाँधि करै नृत धीरा, श्रवै नयन दोउ सुख भर नीरा।
रोम रोम पख इव हर्ष बढ़ावै, कृष्ण कृष्ण हरि हर हर गावै।
तन मन सुरति तजै रचि ध्यानन, घर वासी वासी जन कानन।

प्रेम भक्ति पद पाय नर, होत पोत संसार।
चन्द दास जन धन्य जग, जे हरि भजन उदार।

षष्टम भक्ति सुनौ रे भाई, सुकमुनि जथा कथा समुझाई।
कथा ज्ञान गुन हरि अनुरागा, पद शुभ भक्ति भजन बैरागा।
तारे अधम पुरान सुनावत, भक्ति भागवत पंथ द्रढ़ावत।
तथा सन्त कलि चर्चा धारी, वेद पुरान पंथ अधिकारी।
साखी सिद्धि अनेक बनावै, निपुन ज्ञान जुत कथा सुनावै।
पुन्य दान तीरथ व्रत करईं, हरि व्रत सदा नेम उर धरईं।
निशि कर रहस रैन नहिं सोवै, भजन कृष्न गुन आलस खोवै।
वाद गीत नृत चर्चा धारी, पुलक अंग लोचन भर वारी।
सत्य सत्यगुन उर उपजावै, मुक्तिदान साधू वर पावै।

हंस घरी पल धीर धरि, ह्रदय हरी जप माल।
चन्द भक्ति जन जानिए, मन तन बसत गोपाल।

सप्तम भक्ति सखा सम करई, पारथ विप्र सुधा गुन धरई।
जथा सुदामा संकट पायेउ, भक्ति न तजी कृष्न मन लायेउ।
जप न जाप तप सो तन साधे, प्रान पुन्य रच हरि अवराधे।
नारी मर्म बहुरि लै धीरा, गए कृष्णपुर हर्ष शरीरा।
दर्शन पाय आस उर त्यागी, लोभ तरंग प्रान सो भागी।
सर्वस ताहि कृष्ण तब दीन्ह्यो, सखा प्रभाव साध सो कीन्ह्यो।
पारथ हेत सर्व विधि साजी, हने कृष्ण खल पाप समाजी।
सो प्रभाव रचि सखा निरंतर, कलि व्रत साधु नहीं हरि अंतर।
जब निरशंक भक्ति उपजावै, हरि तब ताको ह्रदय लगावै।

लागत उर मांगत यही, हरि दर्शन वरदान।
चन्द सखा तब प्रभु कहै, भयेउ भयेउ कल्यान।

अष्टम भक्ति सुनो अति लोनी, भई आदि दै बहुरि सो होनी।
ध्रुव व्रत अचल सो बालक करनी, गुरु माता कृत जो मुख वरनी।
राज सर्व जनि हरि मन लाए, मधुबन ध्यान कृष्ण तिन पाए।
भयउ अटल उर भक्ति बढ़ावत, तथा साध मन प्रभु पद लावत।
तजि तजि काम कामना लोका, सुत वित नारी होय असोका।
मिथ्या जानि मान मद आसा, रस सुख त्याग सो होवै दासा।
गुरु मारग लै हरि मन भीना, सपन सुखद रस तिन उर चीना।
तौन मोह नेह हरि ध्यायक, पल पल रसना हरि हरि गायक।
क्षुधा तृषा व्याधा तन नासी, मगन भयेउ हरि भक्ति विलासी।

अटल अचिंत अडोल मन, मगन लगन रस पाय।
चन्द दास हरि भक्त को, अमल न वरनो जाय।।

बहुरि शेष कृत भक्ति सुनायउँ, जथा सेस गुन तथा बतायउँ।
निरालंभ निर्लेप निवासी, नव तन नाम भजन अविनासी।
नारायन निर्गुन जग तारन, नर हर हरी हरी भव हारन।
कृष्ण कृष्ण जगदीश मुरारी, राम राम रघुकुल अधिकारी।
माधो मदन श्याम मन मोहन, नन्द लाल हरि वसुधा गोहन।
तारन तरन तरन ते तारन, हारन पाप पाप भय हारन।
गोविन्द मुकुंद मनोहर श्यामं, राधा रमण श्याम पति रामं।
कहि कहि गिरा नृतित जन कैसे, शंकर ध्यान ब्रम्ह श्रुति जैसे।

कल करनी वरनी सरन, सरन राम सुख होय।
चन्द भक्ति अनुराग सम, सन्तत राग न कोय।।

यहि प्रकार साधू सुन करनी, भक्ति रचै नर निर्मल धरनी।
संजम भक्ति बहुरि सुनि लीजै, जाम अष्ट तन सोधन कीजै।
निशा जाम वाकी जब जानै, तजि निद्रा मंजन हित आनै।
प्रात जाम हरि ध्यान प्रकासी, आसन अंग साध तप रासी।
मध्यान ध्यान निर्मल कर धीरा, बहुरि असन रचि स्वच्छ सरीरा।
तीजे जाम नाम गुरु सेवा, साधु समागम सुमिरन देवा।
सिध्या पाय समाधि लगावै, मन इन्द्री गहि सुन्य समावै।
जाम निशा चर्चा अनुरागी, कथा आदि गुन भक्ति विरागी।
अर्ध निशा निद्रा मन लावै, जथा स्वान कृत प्रान जनावै।
यहि विधि साध जामिनी जामं, सुमिरत रहै घरी पल रामं।

होय साध द्रिढ़ साधना, संजम जोग विधान।
पावै चन्द समग्र फल, वरनै वेद पुरान।।

जो पद जोग साधना पावै, नाना जतन प्राण उपजावै।
सो पद मुक्ति भक्ति अनुरागत, जब साधू जन भ्रमता त्यागत।
एक रूप हरि एकुहि जानै, नाना भांति भक्ति उर आनै।
तव पद मुक्ति चार है जेई, सुनो सन्त अब वरनो तेई।
सालोक एक सारूप बखानत, साजोव सन्त जन तीजी जानत।
चउथी मुक्ति समीप निवासी, तामो उत्तिम वचन प्रकाशी।
जुगुल श्रेष्ठ पद वरनत ज्ञानी, साजोज रूप मैं सुन हो ध्यानी।
करनी जोग करै जो कोई, सअंग रूप वर पावत सोई।
भक्ति प्रेम सायोग्य विलासी, सम सर दूनो गिरा प्रकासी।

हरि गीता पारथ गुन, वरनेउ कृष्ण विवेक।
जोग भक्ति अरु भक्ति रस, सन्तत मम हित एक।।

जामिनी-रात, जामं-पहर

तासो पैहउ मुक्ति वर, सुनो सन्त कलि कीर।
मधुर खाय फल स्वाद सो, पूरन सो मति धीर।।

सुन भक्ति रहसै हंस ज्ञानी, चरन गहि विनती करै।
तुव नाम काम सो सत्य सुरभी, सकल इच्छा वर बरै।
संवाद सुनत विषाद छूटै, साधु वारिधि जल तरै।
छिन एक चर्चा चाउ रचि गुन, यासु उर माला धरै।।

तन तासु निर्मल विमल करनी, कर्म कलि मल भय जरै।
जुग जोग भक्ति विराग उपमा, राम माया मद हरै।
खल लोक होत सो पोत गावत सर्व सिध्या गृह भरै।
जन चन्द मंगल मोद जुत, तत्काल सब कारज सरै।।

सिद्ध सारंगी सार रस, रंगी रसीले रंग।
पावै चन्द सो नेम द्रिढ़, जब आवै सत्संग।।
पूरन ध्यान वरीस यहु, जोग भक्ति अनुराग।
चन्द कोटि सत जग्य फल, प्रापत करत विराग।।

समौ अठारह सै बरस, अपर यकादश धीर।
श्रावण शुक्ला तीज को, वरनी शोध सरीर।।

पदावली

(1) जन्म जात सिरान तेरो।
अंजली को नीर जैसो, होत अहनिश हानि तेरो।
साँस छीजत पंथ आवन, घटत घट पटवान तेरो।
उड़त ऊपर शीश हू पर, काल प्रबल सचान तेरो।
घन जोर बोरत ज्ञान माया, बावरी बवरान तेरो।
समुझ बूझत हेर हेरत, चन्द रूप हिरान तेरो।

(2) जनम बीतो जात ऐसो।
जथा चर्म लोहार हू की, साँस साँस सिरात ऐसो।
ताये बज्र विहाये बहुरो, पवन पाए जुड़ात ऐसो।
सपने हू की सम्पदा में, बीत गई जिम रात जैसो।
नसत यौवन यथा काया, वृक्ष छाया छात जैसो।
ओस हू की तृषा जैसे, पियत नाहिं अघात जैसो।
नावका को संघ आवन, प्रात जात विहात जैसो।
जन चन्द हरि के भजन बिन, पुनि कौन पूछत बात ऐसो।

(3) कीजिए फकीर रीत भीजिये न माया, त्यागिए जहान मान बाधिये न दाया।
राखिए सो जेर फेर घेर कै हैवान हेर, हेर के हैवान आन मानिए रजाया।
अैन को मुकाम मान गैर को न मर्म आन, दीगरा मुकाम वास, राखिए न पाया।
देखिए कुरान खोल बोलिए न झूठ बोल रास है इमान जासु, रास सो बताया।
चन्द राम मन्त्र सार, पंडिता विवेक धार, काजी ये कुरान देख, एकु ही खुदाया।

(4) बूझो आदि पंडिता, विचार बोल ज्ञानी,
पोथी तै विसार दीन्ही, माला भी हिरानी।
हेर के न देख आप, फेरे हैं अनेक जाप,
जाप की विचार माल, शोध फेर जानी।
तीन तो प्रधान देव, पावैगा अनंत सेव,
सेवा ते निधान देव, रीझ तोरे मानी।
वासना निवास वास, बास है निवास पास,
दूर हू न जाय यार, आपु ही मो आनी।
चन्द कोट वेद जाहि, गावते पुरान ताहि,
सखा है न शोध जाहि, बोध मेक वानी।

(5) देह में सदेह ब्रम्ह, मर्मता न पावै,
बावरो अजान ज्ञान, जानै ना निधान ध्यान,
भूलो है सो पंथ और, अवर हू को लावै।
वेद को विचार देख, साधन ह्रदय निकेत,
हेत ही सो हेर देख, सन्त यहु बतावैं,
चन्द जाहि कोटि ब्रम्ह, संचना अनेक रंभ,
वेद हू पुरान रीत, नेत नीत गावै।

(6) मेरे तो मृदंग बीन, ताल राग सोई।
जाहि के सो मर्म कोटि, वेद राग होई।
सकती मैं पसार वाज, साजी दै समाज साज।
बीज है हकार भेद, एक तीन दोई।
जान ले जहान ज्ञान, मान ले निधान वान।
एक ही समाध सीध, और है न कोई।
सांस को प्रमान देख, ब्रम्ह के न रूप रेख।
चन्द है अनेक एक, जानु तीन लोई।

(7) रहै न मान रूप गर्भ, दर्व देह दाप री।
समूह साज राज के, अरंभ दम्भ काज के,
परे सो काल वाज के, शरीर वै कलाप री।
किये विभोग रोग ने, सो करम भरम सोग ने,
अनेक ताप से बने, प्रचंड दंड पाप री।
भजे न चन्द राम को, सुधार चार वाम को,
धनी सवार धाम को, करी न नेक जाप री।

(8) जोवन गहे ली माई, हेली हेर गावई।
चंचल चखान आन, राती ते झखान बान।
बेधेउ तन त्रान प्रान, लोचन नचावई।
घूँघट निवार हार, भूखन सुधार टार।
ऐसो तो मुरार नेह, देह ना छपावई।
तेरी सो सुजान चन्द, कीन्हे है अनेक फंद।
नंदन सो नन्द आली, रूप ना भ्रमावई।

(9) पाप समूल विदारन हैं हरि।
जिमि जल सिंध पोत बरनत सुर, भय सागर के तारन हैं हरि।
दारुन जहाँ तरंग धार लख, देखी और न कारन हैं हरि।
तहँ प्रभु नाम काम वरदायक, संशय सर्व निवारन हैं हरि।
चिंता माहिं चेत विसरत जब, तब तब करत उबारन हैं हरि।
चन्द दास रज आस नाथ तुम, काढ़ि लेव भ्रम हारन हैं हरि।

(10) जे प्रभु तन के ताप हरत हैं।
तिनको अधम लोक नर देखो, पल नहिं हेत करत हैं।
चतुर आपनी चेत काछनी, निध जल कुम्भ तरत है।
भुज बल गर्भ गुमान देह को, बारू लेज धरत हैं।
सुन्दर रूप भूप सेनापति, सपने मांझ परत हैं।
पर धन देख विभोग और को, लोचन जासु जरत हैं।
जप तप शील दान पूजा रुच, कबहुँ न नेह भरत है।
चन्द कहै पशु भाव राजसी, पच पच लोक मरत हैं।

काछनी-कमर में बाँधने वाला कपड़ा

बारूलेज-बालू की रस्सी

(11) क्यों नहिं नेह करै राम सो।
झूठी साज विराज देख कर, झूठो जाय परै।
द्रग चल चाल रूप युवती तज, कबहुँ न ध्यान धरै।
सठता समर रात दिन पल छिन, बीर सर सार गरै।
पावक द्रोह दम्भ ममता की, आठों अंग जरै।
कंचन नाम राम तन रसना, अवगुन काम भरै।
साधन शस्त्र अन्न दुर्वादिक, वाधिक आन अरै।
ते नर चन्द सिंध बिखिया के, कहु केहि भांति तरै।

(12) मेरी चूक विसारो राम तुम।
अवगुन जान प्रान अपने, औ नाथ क्रोध जन धारो।
सनमुख लरेउ समर रावन तुम, ताहि सिन्धु भव तारो।
बाली परस पान अपने ते, करम अजोग निवारो।
ग्रास कबंध तोहि भुजंद उन, ताको तुरत उबारो।
चरन प्रहार कियेउ भ्रग उर पर, सो भूखन सुख सारो।
गुन गन एक कीन काहू नहिं, सोई मर्म विचारो।
है नहिं जोग चन्द खल सेवा, ये है दास तिहारो।

(13) अनी दल सूर को बनो काया, हनी संग्राम चढ़ मोह माया।
प्रबल भुज दंड सी काम जानो, ज्ञान की शक्ति सो मोह मारो।
शक्ति अरु क्षिमा गहि क्रोध टारो, ध्यान परताप सो लोभ हारो।
भजन धनु धीर ते, दम्भ छेदो, विकट गढ़ सूर चढ़ ध्यान भेदो।
भगे खल समर सम ससाचारी, अमर जन चन्द लहि चूम मारी।

(14) काशी कोट विचारो पद रज।
गंग ज्ञान गरीबी गुरु की, प्रीत प्रयागहि धारो।
त्रैवेनी संगम त्रिकुटी को, नीझर धार उतारो।
करनी ही को कर्म केदारा, बहु वर पुन्य पुकारो।
सागर सिंध मिली गंगा तहँ, जहँ है रूप अपारो।
सकल पुन्य सो तीरथ भाई, निज घर मर्म निहारो।
ऐसे पंथ चलै साधू कोउ, साधन शोध संभारो।
चन्द सो याचक दान माँगई, नहिं त्यागो जन द्वारो।

कबंध-नाम का राक्षस

(15) माला मन पतियाना सन्तों।
तन साला में मूरत ठाकुर, अजर देव भगवाना।
एक सै आठ गनै गुरिया में, ऊपर मेरु समाना।
गुन के सूत परो वै भाई, धुन अनहद परमाना।
एको आस विसार न देई, सुरत हिये पद ध्याना।
एको राग बजे घर ताके, वै कर वेर न जाना।
ऐसो राग बैरागी गावै, गरज गगन गुरु ज्ञाना।
चन्द सुरे सुर जासु ध्यान के, निवर जात अभिमाना।

(16) हरि हर बेद पढ़ाओ पांड़े तुम।
विष्णु विशम्भर केशौ माधौ, गुन निधि शोध सुनावो।
राम निरन्तर माल जाप की, सो हित जाप जपाओ।
गीता ज्ञान छंद गायत्री, शुभ शुभ मन्त्र बताओ।
गोविंदे गुन सार सिद्धता, सिद्ध सो पंथ चलाओ।
ऐसी रीत रिचा पांड़े कहि, मन दस भवन समाओ।
तन पाटी पर चन्द लिखा री, याही सीख सिखाओ।

(17) कीजिए नहिं रार घर में।
पाय हाथी हाथ गहि गहि, बीस तिनकी नार।
दाप दश भर पन्थ दूनो, तीन हैं सिकदार।
एक दस ने छेक राख्यो दुआदशी पनिहार।
अष्ट विंजन चक्र है, षट प्रान अर्पित सार।
ईश ब्रम्ह निकेत गनपत, काम विष्णु निहार।
दुइ चार षट दल आठ मध्ये, परी जाय पुकार।
चन्द षोडश उतर साधो, भेंटियो करतार।

(18) विचार विवेक बखानो सन्तों।
नैनन नाम निरंजन राखेउ, काया वीर समानो।
देवा नाम कहै रैदासा, पीपा प्रेम हितानो।
धना जाट सो प्रीत बनी है, सेनी सिद्ध सो जानो।
सवर आदि सो मीराबाई, गनिका नामा आनो।
तुलसीदास मलूकहु कहिये, सदन वदन प्रगटानो।
चन्द सो दास आस जन पद रज, विरध विरत बखानो।

(19) या जग मोहै मुगुध मुरारी।
ज्ञान कला तज प्रान बावरे, लंपट लूटत नारी।
बनिक विधान आन भय सागर, कंचन रूप बिसारी।
झूठै सीप पान मुक्ता लै, फलरा कांच बिगारी।
चढ़ चढ़ हाट वाट पूँजी लै, धोखे परो गँवारी।
उठ गई पैठ भेंट नहिं हरि सो, बहुर चले कर झारी।
चन्द जहाज अकाज आज को, को अब पार उतारी।

(20) बीतत वाद सैआनी निसा दिन।
बिन हरि भजन कृष्ण लीला गुन, तन ते आस सिरानी।
सुन्दर रूप देख आनन को, धन गृह माहिं लुभानी।
जीवन छीज जात है ऐसो, जथा अंजुली पानी।
तासो चन्द चेत कर उर में, हरि हर नाम बखानी।

(21) राम रस गोचर काव्य करी है।
मानो सुखद सिंध सागर वर, पूरन सुधा भरी है।
माते नैन बैन रस राते, भ्रंगिन आन परी है।
कीधौं मधुप भएव वस वारिज, कोषहिं पोस धरी है।
कीधौं रतन रतीपत उद्दित, मुद्दित लाज हरी है।
की राकेश अनूप सनमुख लख, श्री वर सीस धरी है।
की अवतार अकार मानसी, तासुध सुरत वरी है।
चन्द सनेह सिंध सागर सुख, बनता बनक तरी है।

(22) नंदन नन्द भजो री सुख भर।
माखन छीर तक्र माखन दधि, सकले काज तजो री।
अंजन हार चीर बीरी मुख, कज्जल नैन अंजोरी।
मन भर भावे पांव पूरन सो, प्रानन नाहिं लजोरी।
लख लख चन्द बिहार लाल के, संतन सुरन रजोरी।

पैठ-बाजार उद्दित-उदय, मुद्दित-प्रसन्न होना

(23) पावत साधु मही परमपद।
विद्या वाक वेद आदिक विध, साखी बान कही।
तज मद काम लोभ माया को सरन सो राम गही।
भगत विरान सर्व गुन संजुत, सोई एक सही।
नारी नैन वान वेधन सो, काया वाच रही।
तीन सो सिद्ध समूह धर्म की, आठो अंग लही।
पर अपवाद विषाद मर्मता, जाके प्रान नहीं।
चन्द दास सो दास राम को, साँची मान सही।

(24) जीवन जनम बनाओ अरे नर।
श्री गोविन्द ज्ञान रचना सो, रसना भर भर गाओ।
तज संशय सनबन्ध दोष को, हरि पद भगति बढ़ाओ।
ममता मोह क्रोध कामहु तजि, वा महि श्रवन सुनाओ।
नारी चारु विसार देह हित, हरि सरनागत आओ।
अरझी कर्म फांस आगे की, कहि गुन गन समझाओ।
सो जम चन्द मुकत जस मंडल, धर्म अर्थ फल पाओ।

(25) रावरी छवि रास देखी।
तन मध्य तेरी कला अस्थित, सूर इन्दु प्रकास।
जल थल पवन विशाल पावक, सर्व मध्ये बास।
ब्रम्ह शंकर दिशा दिग्गज, हेम मेरु विलास।
तल वितल सातों बेउम अहि महि, जोति जोति निवास।
नव खंड सातों दीप दरसी, करत प्रान हुलास।
जमराज सर्व समाज तेरी, कला करत विनाश।
चन्द जन गत राम उपमा, कौन बरनै दास।

निर्गुन विसुन पद

(26) त्यागि चलै घरवारा एक दिन।
कंचन रतन रूप सुन्दरता, सुत बनिता पर वारा।
बाजी बाज समाज राज की, त्यागी त्याग पधारा।
काया बास हंस हू छोड़ेउ, छूटि गयेउ सो न्यारा।
तासो चेत विचार जानिए, ओछा रस संसारा।
वा दिन तोहि राखे नहिं कोई, ग्रासै काल मजारा।
तू गोहिराए गुहार न लागै, आवे नहीं गुहारा।
चन्द ताहि सो चेत बावरे, गहु हरि नाम अपारा।

(27) हंस तजै जब काया बोधे मन।
निकटहु स्वान काक नहिं आवै, पसर गई सो बसाया।
नारी नेर हेर अस भाखै, प्रेत भये गृह छाया।
बेग निकार इन्हें अब त्यागौ, कोउ केरे ना दाया।
ससुर भतीज नतेऊ नाते, नात न गोत लगाया।
सकल समग्री होत पराई, कहत हते मेरी माया।
सर्व फिरे घर आये आपने, संघ नहीं कोउ जाया।
चन्द कहै सब सपन जानिये, नाटक नेह रचाया।

(28) चन्दन अर्ग चढ़ावै जेहि तन।
सोधे और सुगंध लेप सो, अंगन अंग रचावै।
सो तन त्याग हंस जब जासी, काक सो मांस न खावै।
स्वानहु सूंघ वास को भाई, ढिग न बसै नहिं भावै।
और को चाम चमार चामरी, रच कर रुच सो बनावै।
तेरो चर्म अजान बावरे, काहु के काम न आवै।
काहे को भूल जात मन या रे, यहु गुन मर्म बतावै।
चन्द कहै मन मोह मान लहि, नाना नाच नचावै।

(29) मूढ़ो मंद अनारी मैं प्रभु।
शुभ कारज ते विसर बावरो, अशुभ भरो भय भारी।
लालच लोभ तरंग अंग में, अंगन अंग सुधारी।
सुधी रीत ना प्रीत लावई, विसरायल सो बिसारी।
लादै लाभ जान फलरा को, बनज न लै बनजारी।
जामैं मूर घटै काया को, सोई करत बिगारी।
अवगुन कोट पोत कर मस्तिक गुन ते रहन निनारी।
चन्द सो दुआर परेउ ठाकुर के, तुम राखो लाज हमारी।

(30) को सुधि लेइ हमारी प्रभु बिन।
दाता देखु दुआरे आवै, जहँ लौ जंत भिखारी।
छादन भोग अन्न रसनादिक, वासिक छुधा बिहारी।
नित प्रत मरत करत नहिं करनी, अवगुन गुन न करारी।
नीद्रा मान मोह मदिरा लहि, तन कीन्ह्यो अति भारी।
पास निवास राम नहिं देखत, छावा छिद्र निहारी।
पूजा दम्भ अरम्भ प्रानपति, आसन प्रतिमा धारी।
मेरी चन्द लाज ठाकुर को, तेरी वान सो तारी।

(31) काया कर्म कमाय सोधे भई।
अैन उजू ते पाक होत है, गैन तजै गृह पाई।
गफलत मद मनी को त्यागै, बोधैगा सो सुधाई।
तन महजित में ज्ञान रोशनी, मन सिर दै सिर नाई।
करनि कुरान ईमान रास सो, पद बूझै सो रजाई।
सिद्दक कबूल तब जो लै आवै, दिल पावै दरदाई।
खालिक ओर निगाह राखई, जदिल अवर ना जाई।
चन्द फकीर फिकिर को त्यागै, कुफुर न परै परकाई।

(32) देखु खुदा की खुदाई फकीरा दिल।
हुकुम अदूल करै नहिं कोई, मेटि न सकै रजाई।
नीगाह दिलंदर पाक बास है, पावै कर्म कमाई।
तन अपने को यहु कर मांजै, ज्यों दर्पन तजै काई।
गैरत रोज निगाह राखई, हैवत सो हित भाई।
बारम्बार शोध के वगो दिल, दिल देखै दिल लाई।
जासु उजूद पाक करनी सो, ता तन रहत न ताई।
चन्द कहै दरवेश जानिये, दिल दरवेश समाई।

(33) कै तसवी मो दाने तेरे दिल।
किस गनती सो पाक होत है कहु कहु वेग सयाने।
किस अरजी सो बरज राखई, दगा दरोग बीगाने।
कुफुर हुतो न कहर को त्यागै मेहर बसै परवाने।
कदम सरियत रीत देखई, दिलदर और न जाने।
सीरी जुवा सो नाम पाक को, बारम्बार बखाने।
होय मुस्ताक फिराक एक सो, वै कर आप बिकाने।
चन्द भेष दरवेश भेष को, भेदी होय सो जानै।

(34) है खालिक को बासा तेरे घर।
होय गरजी दीदार तलब की, कर अरजी दिल आशा।
खाली प्रेम दरस सो पूरो, पियत मरज तन नासा।
पीर रजाए हकीम मानिए दारुन दरद विनाशा।
लगन खुमार सुयार सो आवै घर आवै घर दासा।
जिगर दीगरा तर्पन जावै हवरु जाय समासा।
खाक आब आब सब पुन्य को अचिरिज बनेउ तमाशा।
चन्द ज्ञान सो गफलत छोड़ै, दर दर वै परकासा।

गैरत-आन, लज्जा हैवत-डर/दहशत

सुयार-अच्छा मित्र, हवरू-हबिस अदूल-उल्लंघन

(35) माला क्या सरकाओ पांड़े तुम।
उरझो मन माया के भीतर, अटक नहीं अटकायो।
पढ़ कर वेद भेद नहिं आतम, परआतम भटकायो।
इन्द्री प्रबल न बोध पावई, अवरहिं बोध बढ़ायो।
भीतर को मन डोल जात है, ऊपर ध्यान लगायो।
प्रेम बिना परतीत न उपजै, वेद पुरान सुनावो।
दुरो सो दूत लखै घटहू की, तासो काह दुरावो।
चन्द प्रतीति रीति साधन की, संगत मान मिटावो।

(36) बाजै कूच नगारा एक दिन।
रीतो ही उठ जाय बावरो, छाँड़ि सुखद घरवारा।
सैन समूह तरंग रंग के, नारी वित परवारा।
जब कर चोप काल ने मारी, चलो चलहु सो पुकारा।
इतनी भीर परै सिर वाके, नांगेहि पाँव पधारा।
मांसहु हांड खोज नहिं करई, मेली मिलत न छारा।
संघ सरांय मांझ जेउँ बसिए, तेउँ बसिए संसारा।
चन्द अजो मन चेत बावरे, तजु तजु कुबुधि गंवारा।

(37) कूच की नौबत आवै एक दिन।
सुन सुन साँस छीज बाढ़त जर, एहु मत साध बतावै।
सांस नसै तत हँसै काल हू, बेरा बेर बितावै।
भूल परे फिर भूल न पइहै, करि करि जतन जो धावै।
रच माया के रंग बावरे, परि बाउर सरझावै।
गुरु पूरा पूरा सनवंधी, भागि मिलै तो मिलावै।
ना वर रतन जात नहिं जानै, मन मानै भटकावै।
चन्द भावनी नाथ भाव की, छुटकाई छुटकावै।

(38) सुन्दर सुघर किए महाप्रभु।
आठो अंग अनंग अंग से, रचना साज दिए।
सिसुता पाय समाज बाल रस, छीर सुघार पिए।
तरुन भयेउ तरुनी रस लागेउ, नाना राग लिए।
कर करि भोग अरोग देह सो हर्षित मोद हिए।
पाय सम्पदा भूप आज पुर, मंदिर भान थिए।
एक अनेक साधना तन रच, बहु दिन वर्ष जिए।
चन्द प्रमान ज्ञान तिनही को, जे हरि सुजस सिए।

(39) एक दिन तोहि गही मेरे मन।
सर्व भुवन पर काल वियापै, बानी मानु सही।
जहँ लौ जीव जंत्र जल थल के, थिर नहिं आए रही।
निश्चय जान विचार ज्ञान सो, मानौ वेद कही।
सातों दीप भुवन चौदह से, औरो बास यही।
जीवन आस साँस माया की, चाहन चाह चही।
देखु विचार पसार नैन सो, पूरो ज्ञान लही।
चन्द भजन बिन जान मान मद तेरी बात वही।

(40) अवगुन विदा भये महा प्रभु।
गुरु की कृपा मगनता उपजी, साधू संघ लए।
सुख रच नेम विवेक पुन्य पद नाना ज्ञान गहे।
विद्या मर्म सुधर्म धीरता, अहिनिश राग लहे।
मन पतियाए पाए महि सतगुर, दारुन द्रोह दहे।
ममता मान अजान प्रान के, ते नहिं भूल रहे।
आरत अमर अडोल बान लहि, सबके वचन सहे।
जाचक चन्द नाम स्वामी रस, सो रस अरस चहे।

(41) हरि तजि काके भवन बसी।
निजु स्वामी ने त्याग बावरी, काहे न होय हँसी।
पति बिन नारि नहीं पति पावै, गावै वेद जसी।
दीपक हीन कुलीन मर्म यहु, केहि विधि तिमुर नसी।
तजी पात्या गल जाय लोक में, परगृह मांहि धसी।
पाँच पचीस ग्रास दै मन को, लावत लोक मसी।
ज्ञान विहीन बोर कोरी दै भ्रमता संग डसी।
तासो चेत चन्द चिन्तामनि सो बर बाम लसी।

(42) मत केहि हाथ बिकानी सन्तों।
ममता मोह मगन मतवारी, पियारी गुन अरज्ञानी।
शाह सो मूर फूर दै ताको, सुभर आस पर धानी।
लादो बैल प्रचण्ड पंथ पर, मारग परेउ न जानी।
रीती जान बान बीचहि महिं, आट सो हाट सिरानी।
चन्द कहै तन बनी कर्म बिन, परै बहुर जम हानी।

(43) तन इहि हाट बनाई सन्तों।
तामें सार दई पूँजी सो, सुघर आस अधिकाई।
निरत सुरत तहँ वार देखिए, बनज ब्रम्ह रस पाई।
सीधो सार सत्त डांड़ी को, घाट न तौल सवाई।
ता डांड़ी मो पलरा ऐसे, तवल न जाय सिराई।
नित प्रत बाढ़ जमा को देखी, घाट ना होत कमाई।
पैठत शाह दुकान शाह की, हरि बैपार न पाई।
चन्द कहै गरियार बनोटा, आयो राम दुहाई।

(44) राम विसारि पछताना सन्तों।
लोभ तरंग कुसुम रंग सी, अंत सो नाए निदाना।
जिन प्रभु ने तोहि साज सवंरेउ, नहिं तेहि सुजस बखाना।
बड़ो मुगुध इहि पण्डित भाखै, जो जन और लुभाना।
माया लीग कहै बहु चतुरो, हरि जन कहत दिवाना।
जेहि मुख बसत न रसत राम गुन, सो खीजा नित जाना।
तन ताको नहिं काज लागई, जेहि मन मद अभसाना।
चन्द कहै नहिं खात ताहि को, मांस सो काग सुवाना।

(45) हरि जस शोध सुनावो सतगुरु।
मैं भूलेउ मारग दूए भै, मैं कर गहि घर त्यागो।
अमृत धार गगन सर बरषै, सो मग मोहिं बतावो।
गोचर मर्म गोप को कीजै, जन की कही छपावो।
तुम कर्ता हरता हो सबके, निजु जन कर्म मिटावो।
कैसी राह कही गुरु हमसो, समुझ नहीं समुझावो।
मन यह बहुत फिरेउ बस माया, अब मत फेर फिरावो।
चन्द कहै हम नारि पाप रत, तुम प्रभु अंग समावो।

(46) आज गरीब के आये सतगुरु।
पद शुभ नीर परस ठाकुर के, सन्तन भागि बढ़ाए।
कर आरत बानी मन अपनो, द्रग भरि ह्यान समाए।
लखि दर्शन भूली मति मेरी, प्रेम घटा मन छाए।
जा शोभा को पार ब्रम्ह से, शेष ईश नहिं पाए।
बानिउ बेद निषेध मर्म की, नाद अनंतन गाए।
ऐसो देव सेव बस कहिए, लहिए आप गवाँए।
चन्द भगत जन सरल सारता, पूरन पुन्य जनाए।

(47) बूझो भेद विचारा सन्तों।
जे कर्ता करनी को साजै, कीव करै नियारा।
पहिले आद सुन्य गृह बरखै, बहुरो करै वै अकारा।
जो उइ ब्रम्ह जगत बरतायेउ, सो आयेउ संसारा।
दुइ अक्षर को मर्म देखिये, है सूक्षम विसतारा।
बाजै नाद सकल घट सबके, सोई सकल पसारा।
नेम सुधर्म पुन्य काया मो, करि बरतेउ बरतारा।
चन्द सर्व पुर एक बाजई, जै जै जै जयकारा।

(48) मूरत कौन पुजारी सो तै मन।
मूरत एक सर्व मो दरसै, गुरु मत ज्ञान सो हेरी।
दूर नहीं सी निकट वास मैं, बस रही बास सो मेरी।
माया सर्व बिसार जासु को, है ताही की चेरी।
सो मूरत वै मन नहिं लावै, कहु भूली मत मेरी।
पाँच पचीस नहीं बसि कीन्हो, इन राखे तोहि घेरी।
एकुइ ब्रम्ह विलास सर्व मां, सिख मन वेदहु तेरी।
चन्द दूसरो और न कोई, गुरु आंकुस मन फेरी।

संगतियों द्वारा प्राप्त हुए दोहे व पद

(1) अस कोई मनहि लोह सम तावै।
काम जारि कै कोयला करिदे, ब्रम्ह अगिन परचावै।
ताय-ताय कै निरमल करिले, शील का नीर बुझावै।
इतनी जोरी जुगति कै लावै, लगन लुहार कहावै।
ज्ञान विवेक जतन से करिले, या विधि अजर झरावै।
सुरति निरति की संगसी करिले, जुगति की निहाई जमावै।
नाम हथौड़ी द्रढ़ कै मारै, करम की रेख मिटावै।
पांचो बैरी डिढ़ कै राखै, यों करि मन समुझावै।

(2) बालम आओ हमरे ग्रेह रे, तुम बिन दुखिया देह रे।
सब कोई कहै तुम्हारी नारी, मोको यहै संदेह रे।
एक मेक होय सेज न सोवै, तब लग कैसा नेह रे।
अन्न न भावै नींद न आवै, गृह बन धरै न धीर रे।
ज्यों कामी को कामिनि प्यारी, ज्यों प्यासे को नीर रे।
है कोई ऐसा परोपकारी, पिया से कहै सुनाय रे।
ऐसा हाल बेहाल भई हौं, बिनु देखे जिया जाय रे।

(3) क्या सोवै गफलत के मारे, जागु जागु उठि जागु रे।
और कोई तेरे काम न आवैं, गुरु चरनन उठि लागु रे।
उत्तम चोला बना अमोला, लागत दाग पर दागु रे।
दुइ दिन का गुजराना जगत में, जरत मोह की आगि रे।
तन सरांय मां जीव मुसाफिर, करता बहुत दिमाग रे।
रैनि बसेरा करिले डेरा, चलन सबेरा ताक रे।
या संसार विषै रस माता, देखो समुझि विचारि रे।
मन भँवरा तजि विष के बन को, चलु सतगुरु के बागु रे।
केंचुल करम लगाइ चित्त में, हुआ मनुष ते नागु रे।
पैठा नहीं समुझि सुख सागर, बिना प्रेम बैरागु रे।
साहेब भजै सो हंस कहावै, कामी क्रोधी कागु रे।

दोहे

चींटी चावल लै चली बीच मां मिलि गई दाल, कहैं दादू दुइ ना जइहैं एक ले एक दे डाल।।
या दुनिया बाजीत पलक का पेखना, बहुत भरा बेकार कहो का देखना।।
कै रत्ती भरि काम है, कै रत्ती भर भाव, कै रत्ती भरि सुरति है, कै रत्ती भरि नाव।।
सोरह रत्ती भाव है, बत्तिस रत्ती काम, चौबिस रत्ती सुरति है, अध रत्ती है नाम।।
राम भजन के आरसी खाबे के होशियार, तेई कुत्ता होति हैं फिरैं दुआर–दुआर।।
राम भजन जहाँ होति है तहं बैठे पाप अकुलाय, की ऊँघै की सो रहै की बार–बार जमुहाय।।

दोहे प्रेम पर

पीवा चाहै प्रेम रस, राखा चाहै मान।
एक म्यान में दो खड़ग, देखा सुना न कान।।

या रस महंगा पियै सो, छाड़ि जीव की बान।
माथा सट्टे जो मिलै, तो भी सस्ता जान।।

प्रेम बिकंता मैं सुना, माथा सट्टे हाट।
बूझति विलम न कीजिए, तत्त छिन दीजै काट।।

प्रेम पियाला सो पियै, सीस दक्षिणा देय।
लोभी सीस न दै सकै, नाम प्रेम का लेय।।

दोहे बिरह पर

नाम वियोगी विकल मन, ताहि न चीन्है कोय।
तम्बोली का पान ज्यों, छिन-छिन पीला होय।। **(1)**

आय सकौं नहिं तोहि पै, सकौं न तुम्हें बुलाय।
जियरा यों लय होयगा, विरह तपाय-तपाय।। **(2)**

विरहिन दुखिया यों कहै, सुनिए कंथ सुजान।
वेगि मिलौ तुम आइकै, नहिं तौ तजिहौं प्रान।। **(3)**

की बिरहिन को मींचु दे, की आपु दिखलाय।
आठ पहर का दान्झना, मो पे सहा न जाय।। **(4)**

चूड़ी पटकौं पलंग पर, चोली लगाओं आगि।
या कारन या तन मिला, ना सूती गले लागि।। **(5)**

दोहे

सबै पियारी पीव की चहुँदिसि पिया पिया होय, ना जाने येहि झुण्ड मां कौनि पिया की होय।
अमर बेलि बिन मूल की प्रतिपालत हैं ताहि, रहिमन ऐसे प्रभुहि तजि खोजति फिरते काहि।
रहिमन बात अगम की कहन सुनन की नाहिं, जे जानत ते कहति नहिं कहति ते जानत नाहिं।
मथत मथत माखन रहै दही मही बिलगाय, रहिमन सोई मीत है भीर परे ठहराय।
हरि दीनन को दुःख सुनै लेत दया उर आन, हरि हाथी सो कब हती कहु रहीम पहिचान।
अब रहीम मुश्किल परी गाढ़े दोऊ काम, साँच गहै तो जगु नहीं झूठे मिलैं न राम।
भजन करति सब भागई अध इन्द्री चित चोर, मलयागिरि सरपन तजा जब चढ़ि बोलै मोर।
भजन करति जब जीव है जल स्वरूप होइ जाय, जार बीच जल ना परै काल ठाढ़ पछिताय।
सन्त नदी विश्राम जल जहाँ पसारे अंग, काया से निर्मल भई कोई साधू जन संघ।

लीक पर चल भूखे सिंह, घास खाने लगे।
प्यास बुझावन हेतु, ओस चाटने लगे।।

ऐसे साहूकार अब, राज्य करने लगे।
कोतवाल ही को ठग, चोर डाटने लगे।।

धुन कालीदास बनने की कुछ ऐसी लगी।
जिस डाल पर बैठे, वही डाल काटने लगे।।

चार मिले चौंसठ खिले, बीस रहे कर जोरि।
हरिजन सो हरिजन मिले, पुलकित सात करोर।।

आशा के फूल मेरे भइया, तुमको भविष्य है देख रहा।
क्या कौन कहाँ तू खेल रहा, किसकी संगति में भूल रहा।

क्या यही तुम्हारे मात पिता, जो आज अँधेरे मां बैठे।
तुमको भी उसी अँधेरे की, शिक्षा दिक्षा देते रहते।

जिन संसारी व्यवसायों में, अपना बहुमूल्य समय खोते।
बस उसी मार्ग में लाने को, तुमको भी स्वप्न सदा देखें।

भौतिक विद्या पढ़ना लिखना, अरु व्यवसाय किया करते।
पर आतम गूढ़ परा विद्या से, खाली हाथ सदा रहते।

इनको तो अपने धर्म और कर्तव्यों का कुछ ज्ञान नहीं।
भाग्य से मिला अमोलिक नर तन, खो जाने का कुछ भान नहीं।

ये अपरा विद्या के विकास में, माथा पच्ची करते रहते।
अज्ञानी मूढ़ परा विद्या, से शून्य विचार सदा रहते।

यदि इनकी संगति से बचकर, सतमार्ग ग्रहण करना चाहो।
जो मारग सतगुरु बतलाते, वह निर्गुण करनी कर जाओ।

कोयल के बच्चे कौवों के ही, घर में सदा पला करते।
पर मधुर कूक अपने कुल की, सुनते ही कुल में जा मिलते।

तजि संगति काले कौवों की, कोयल की संगति अपनाना है।
सरगुन के तजि व्योहारों को, निरगुन में मन को लगाना है।।

इन दोहों में किसी सन्त की छाप नहीं लगी है, ये स्व० हरिप्रसाद मौर्य के पास डायरी में लिखे प्राप्त हुए हैं।

"पोथी साहेब" के सहयोगी एवं अनुयायी संगती

क्र.सं	नाम	पता	क्र.सं	नाम	पता
(1)	गुरुदेई कुशवाहा	उन्नाव	(36)	रामप्रकाश कुशवाहा	उदशाह उन्नाव
(2)	साहेब दयाल मौर्य	उन्नाव	(37)	तुलसीराम कुशवाहा	सफीपुर उन्नाव
(3)	रामबख्स कुशवाहा	उन्नाव	(38)	रामलखन कुशवाहा	करियाखेड़ा उन्नाव
(4)	रामसहाँय कुशवाहा	उन्नाव	(39)	रावेन्द्र कुशवाहा	करियाखेड़ा उन्नाव
(5)	राजकुमारी कुशवाहा	उन्नाव	(40)	धर्मेन्द्र कुशवाहा	करियाखेड़ा उन्नाव
(6)	रोहित कुशवाहा	उन्नाव	(41)	आशा मौर्य	हसनापुर, उन्नाव
(7)	विनीता कुशवाहा	उन्नाव	(42)	देशराज मौर्य	हसनापुर, उन्नाव
(8)	मोहित कुशवाहा	उन्नाव	(43)	रविशंकर	पामाखेड़ा, उन्नाव
(9)	कोमल कुशवाहा	उन्नाव	(44)	हरीशंकर यादव	बरवट, उन्नाव
(10)	शोभित सिंह	उन्नाव	(45)	विनोद कुमार (बड़े)	बरवट, उन्नाव
(11)	जयप्रकाश कुशवाहा	उन्नाव	(46)	पवन	बरवट, उन्नाव
(12)	संदीप कुशवाहा	उन्नाव	(47)	रोशनी पत्नी पवन	बरवट, उन्नाव
(13)	सतगुरुदीन कुशवाहा	उन्नाव	(48)	शिवमंगल	बरवट, उन्नाव
(14)	जीत कुशवाहा	उन्नाव	(49)	रामदेवी पत्नी शिवमंगल	बरवट, उन्नाव
(15)	गुरुमीत कुशवाहा 'बासू'	उन्नाव	(50)	सुशील	बरवट, उन्नाव
(16)	सत्यनारायण कुशवाहा 'सोनी'	उन्नाव	(51)	मुखराम	बरवट, उन्नाव
(17)	सुधा कुशवाहा	उन्नाव	(52)	नीलम पत्नी मुखराम	बरवट, उन्नाव
(18)	संतोष कुशवाहा	उन्नाव	(53)	बाबूराम	बरवट, उन्नाव
(19)	विनीता कुशवाहा	उन्नाव	(54)	विसुना देवी पत्नी बाबूराम	बरवट, उन्नाव
(20)	सतपाल कुशवाहा	उन्नाव	(55)	रवी	बरवट, उन्नाव
(21)	गीता कुशवाहा	उन्नाव	(56)	रामदेवी पत्नी रवी	बरवट, उन्नाव
(22)	कु० शिखा कुशवाहा	उन्नाव	(57)	ठाकुर प्रसाद	बरवट, उन्नाव
(23)	ज्ञानमती कुशवाहा	उन्नाव	(58)	विलाशा देवी पत्नी ठाकुरप्रसाद	बरवट, उन्नाव
(24)	अभय कुशवाहा 'राजा'	उन्नाव	(59)	प्रभूदयाल	बरवट, उन्नाव
(25)	निर्भय कुशवाहा 'छोटू'	उन्नाव	(60)	रामसागर	बरवट, उन्नाव
(26)	अतीसा कुशवाहा	अतरधनी, उन्नाव	(61)	देवशरन	बरवट, उन्नाव
(27)	डॉ0 एस के कटियार	पुरवा उन्नाव	(62)	राधेलाल	बरवट, उन्नाव
(28)	सुरेन्द्र सिंह	पुरवा उन्नाव	(63)	दुलारा	बरवट, उन्नाव
(29)	लवकुश चौरसिया	पुरवा उन्नाव	(64)	भगवानदेई	बरवट, उन्नाव
(30)	जितेन्द्र श्रीवास्तव	पुरवा उन्नाव	(65)	शिवरानी	बरवट, उन्नाव
(31)	राधेश्याम सविता	पुरवा उन्नाव	(66)	रमेश	बरवट, उन्नाव
(32)	उमाशंकर मिश्रा	पुरवा उन्नाव	(67)	कुन्ता पत्नी रमेश	बरवट, उन्नाव
(33)	शिवप्रकाश बाजपेई	पुरवा उन्नाव	(68)	शान्ती	भवानीखेड़ा, उन्नाव
(34)	राधा	शुक्लागंज उन्नाव	(69)	भगवानदेई कुशवाहा	अमौरा, उन्नाव
(35)	रानी	अचलगंज उन्नाव	(70)	सुबेदार	कलंदरखेड़ा,उन्नाव

क्र.सं.	नाम	पता	क्र.सं.	नाम	पता
(71)	सुशीला गुप्ता	दोस्तीनगर, उन्नाव	(107)	श्रीमती सोनी राठौर	जगेसिया, हरदोई
(72)	सौरभ सिंह	दोस्तीनगर, उन्नाव	(108)	हरिनाम मौर्य	समसपुर, हरदोई
(73)	गौरव सिंह	दोस्तीनगर, उन्नाव	(109)	कु० दिव्या सिंह	दीननगर, हरदोई
(74)	राकेश	दोस्तीनगर, उन्नाव	(110)	विशाल सिंह	दीननगर, हरदोई
(75)	रामू	बाराबंकी	(111)	रामनारायण राठौर	दीननगर, हरदोई
(76)	संतोष मौर्य	लखनऊ	(112)	प्रदीप राठौर	दीननगर, हरदोई
(77	ममता पत्नी संतोष मौर्य	लखनऊ	(113)	गंगाशरण राठौर	दीननगर, हरदोई
(78)	सुनील मौर्य	लखनऊ	(114)	बाबू	दीननगर, हरदोई
(79)	मुन्नीदेवी पत्नी श्रीराम मौर्य	लखनऊ	(115)	स्वामी दयाल	दीननगर, हरदोई
(80)	दयाशंकर	लखनऊ	(116)	दामोदर मौर्य	बसन्तपुर, हरदोई
(81)	मुन्नी देवी पत्नी दयाशंकर	लखनऊ	(117)	रामनारायण मौर्य	बसन्तपुर, हरदोई
(82)	विनयकुमार- बिन्दू	लखनऊ	(118)	रामआसरे मौर्य	अमरगंज, हरदोई
(83)	श्रीकृष्ण राठौर	लखनऊ	(119)	कल्पना मौर्य	अमरगंज, हरदोई
(84)	लालू राठौर	लखनऊ	(120)	राजमंगल मौर्य	अमरगंज, हरदोई
(85)	रामकुमार राठौर	लखनऊ	(121)	सतपाल मौर्य	जरहा, हरदोई
(86)	मुन्ना राठौर	लखनऊ	(122)	चेतराम मौर्य	जरहा, हरदोई
(87)	कान्हालाल	रसूलपुर, लखनऊ	(123)	प्रेमवती पत्नी चेतराम मौर्य	जरहा, हरदोई
(88)	रामवती पत्नी कान्हालाल	रसूलपुर, लखनऊ	(124)	सतगुरुचरन मौर्य	जरहा, हरदोई
(89)	नन्ही माता कन्हालाल	रसूलपुर, लखनऊ	(125)	प्रभूदयाल मौर्य	गदियाना, हरदोई
(90)	महावीर	रसूलपुर, लखनऊ	(126)	बाबू मौर्य	गदियाना, हरदोई
(91)	महदेई पत्नी महावीर	रसूलपुर, लखनऊ	(127)	नन्दलाल मौर्य	गदियाना, हरदोई
(92)	सुरेश	शिवदासपुर, लखनऊ	(128)	अनुपम मौर्य	गदियाना, हरदोई
(93)	नन्दराम	शिवदासपुर, लखनऊ	(129)	रूपचन्द मौर्य (छोटू)	जखौर, हरदोई
(94)	नन्दरानी	शिवदासपुर, लखनऊ	(130)	राजेश तिवारी	बरईगढ़, कानपुर
(95)	विनोद शाहू	जगतापुर, लखनऊ	(131)	शिवपाल कुशवाहा	बरईगढ़, कानपुर
(96)	सरवन	थावर, लखनऊ	(132)	निर्मला मिश्रा	बरईगढ़, कानपुर
(97)	रामप्रसाद मिस्त्री	भानपुर, लखनऊ	(133)	नन्दकिशोर	छतरुआ, कानपुर
(98)	रामदुलारी पत्नी रामप्रसाद	भानपुर, लखनऊ	(134)	राजपाल	कानपुर
(99)	डॉ० बंशीलाल	भानपुर, लखनऊ	(135)	इन्द्रपाल मौर्य	मनावाँ, फतेहपुर
(100)	रामचन्द्र	भानपुर, लखनऊ	(136)	रामबहादुर	कंधिया, फतेहपुर
(101)	कैलाश	भानपुर, लखनऊ	(137)	अमरजीत	सरकी, फतेहपुर
(102)	सुनील	भानपुर, लखनऊ	(138)	रीता देवी पत्नी अमरजीत	सरकी, फतेहपुर
(103)	रामऔतार	जगतीखेड़ा, लखनऊ	(139)	रामकिशोर	धनसिंहपुर,फतेहपुर
(104)	छेदालाल	लक्ष्मनखेड़ा, लखनऊ	(140)	रेखा देवी पत्नी रामकिशोर	धनसिंहपुर,फतेहपुर
(105)	बेचालाल	फतेहनगर, लखनऊ	(141)	गोरेलाल	धनसिंहपुर,फतेहपुर
(106)	डॉ० महेश प्रसाद राठौर	जगेसिया, हरदोई	(142)	राजू	धारूपुर, फतेहपुर

क्र.सं.	नाम	पता	क्र.सं.	नाम	पता
(143)	रामभरोसे	जिन्दपुर, फतेहपुर	**(175)**	मनोज कुमार कुशवाहा	लालगंज, रायबरेली
(144)	रामप्रताप	जैतपुर, फतेहपुर	**(176)**	सतगुरुचरन कुशवाहा 'नन्हा'	पश्चिमखेड़ा, उन्नाव
(145)	श्रीपाल	बनर्सी, फतेहपुर	**(177)**	सुनीता पत्नी सतगुरुचरन ,,	पश्चिमखेड़ा, उन्नाव
(146)	रामबाबू	बनर्सी, फतेहपुर	**(178)**	अमन कुशवाहा	पश्चिमखेड़ा, उन्नाव
(147)	उमाशंकर	बनर्सी, फतेहपुर	**(179)**	गुलाब कुशवाहा	पश्चिमखेड़ा, उन्नाव
(148)	अखिलेश	बनर्सी, फतेहपुर	**(180)**	कु० कीर्ति कुशवाहा	पश्चिमखेड़ा, उन्नाव
(149)	रामबिहारी	बनर्सी, फतेहपुर	(181)	सत्येन्द्र कुमार मौर्य	मड़इया, उन्नाव
(150)	गुरुकृपा	बनर्सी, फतेहपुर	(182)	सर्वेश कुमार मौर्य	मड़इया, उन्नाव
(151)	रामपती गाँधी	बनर्सी, फतेहपुर	(183)	मदन सेन मौर्य	मड़इया, उन्नाव
(152)	रामविशाल	सुसवन, फतेहपुर	(184)	मेघा मिश्रा	भोपाल मध्य प्रदेश
(153)	दिहुली पत्नी रामविशाल	सुसवन, फतेहपुर	(185)	श्रीमती पद्मा कुशवाहा	पश्चिमखेड़ा, उन्नाव
(154)	सुनीता पुत्री रामविशाल	खनसेनपुर, फतेहपुर	(186)	विनीता मौर्य	जरहा, हरदोई
(155)	गीता देवी	गाजीपुर, फतेहपुर	(187)	हीरा देवी	जरहा, हरदोई
(156)	रतन सिंह मिस्त्री	सुखेती, फतेहपुर	(188)	सतगुरु सहाय कुशवाहा	लोधियाना, पंजाब
(157)	सियाराम	गंभीरी, फतेहपुर	(189)	निर्मला कुशवाहा	लोधियाना, पंजाब
(158)	सावित्री पत्नी सियाराम	गंभीरी, फतेहपुर	(190)	रामकिशोर मौर्य	कामीपुर, हरदोई
(159)	मैकू कुशवाहा	परेठी, फतेहपुर	(191)	रामप्यारी मौर्य	कामीपुर, हरदोई
(160)	रहस्पति प्रजापति	मोगा, पंजाब	(192)	रजनीश मौर्य	कामीपुर, हरदोई
(161)	रामस्वरूप मौर्य	कोट कपूरा, पंजाब	(193)	छविनाथ कुशवाहा	करियाखेड़ा, उन्नाव
(162)	सरोज	दिल्ली	(194)	रामलली कुशवाहा	करियाखेड़ा, उन्नाव
(163)	श्याम सुन्दर शुक्ला	दिल्ली	(195)	जूली (पूजा) कुशवाहा	करियाखेड़ा, उन्नाव
(164)	कु० तमन्ना	दिल्ली	(196)	विमला देवी कुशवाहा	करियाखेड़ा, उन्नाव
(165)	संजय कुमार कुशवाहा	नोयडा	(197)	माया देवी कुशवाहा	करियाखेड़ा, उन्नाव
(166)	स्व० जगदीश प्रसाद चौरसिया (परदेशी) द्वारा प्रेरित 'चौरसिया परिवार' दुकनहा, रायबरेली		(198)	राजपुत्री मौर्य	जरहा, हरदोई
			(199)	लक्ष कुशवाहा	पश्चिमखेड़ा, उन्नाव
(167)	प्रदीप कुमार श्रीवास्तव	दुकनहा, रायबरेली	(200)	रचित कुशवाहा	पश्चिमखेड़ा, उन्नाव
(168)	चन्द्रभान कुशवाहा	दुकनहा, रायबरेली	(201)	अनन्या कुशवाहा	पश्चिमखेड़ा, उन्नाव
(169)	रामसेवक कुशवाहा	दुकनहा, रायबरेली	(202)	पवन तिवारी	पुरवा, उन्नाव
(170)	विनोद कुमार	दुकनहा, रायबरेली	(203)	सुशील कुमार तिवारी	पुरवा, उन्नाव
(171)	अनूप कुमार	दुकनहा, रायबरेली	(204)	सन्तोष कुमार तिवारी	पुरवा, उन्नाव
(172)	दिनेश कुमार	दुकनहा, रायबरेली	(205)	शिव कुमार गुप्ता	पुरवा, उन्नाव
(173)	राकेश कुमार	दुकनहा, रायबरेली	(206)	सुरेन्द्र कुमार गुप्ता	पुरवा, उन्नाव
(174)	गंगाविशुन	दुकनहा, रायबरेली	(207)	अरविन्द कुमार गुप्ता	पुरवा, उन्नाव
			(208)	बग्गढ़ सिंह	पुरवा, उन्नाव
			(209)	डब्बू बाजपेई	पुरवा, उन्नाव

"पोथी साहेब"
में सन्त मीता साहेब व उनकी परम्परा के सन्तों द्वारा प्रमाणित विवरण

क्र.सं.	सन्तों के नाम	पेज सं० में	जहाँ से प्राप्त
(1)	**सन्त बेनीराम साहेब**	95, 233	परम ग्रन्थ में
(2)	**सन्त बदन सिंह साहेब**	मूल हस्तलेख का कैथी लिपि से रूपान्तरण (सन्त ज्ञान सिंह द्वारा)	संगतियों के मध्य में
(3)	**सन्त पहलवान सिंह (पहली साहेब)**	मूल हस्तलेख का कैथी लिपि से रूपान्तरण (सन्त ज्ञान सिंह द्वारा)	संगतियों के मध्य में
(4)	**सन्त नान्हू साहेब**	मूल हस्तलेख का कैथी लिपि से रूपान्तरण (सन्त ज्ञान सिंह द्वारा)	संगतियों के मध्य में
(5)	**सन्त इन्दो साहेब**	मूल हस्तलेख का कैथी लिपि से रूपान्तरण (सन्त ज्ञान सिंह द्वारा)	संगतियों के मध्य में
(6)	**सन्त सहजी साहेब**	मूल हस्तलेख का कैथी लिपि से रूपान्तरण (सन्त ज्ञान सिंह द्वारा)	संगतियों के मध्य में
(7)	**सन्त पन्नो साहेब**	मूल हस्तलेख का कैथी लिपि से रूपान्तरण (सन्त ज्ञान सिंह द्वारा)	संगतियों के मध्य में
(8)	**सन्त मुंशी ज्ञान सिंह साहेब**	मूल हस्तलेख से उतार	संगतियों के मध्य में
(9)	**सन्त सोधी साहेब**	मूल हस्तलेख से उतार (सन्त गुरुनारायण कुशवाहा द्वारा)	छायाप्रति संगतियों के पास सुरक्षित है।
(10)	**सन्त सुझारी साहेब**	93,95,233	परम ग्रन्थ में
(11)	**सन्त केवल साहेब**	93	परम ग्रन्थ में
(12)	**सन्त मलूक साहेब**	51,93,233	परम ग्रन्थ में
(13)	**सन्त कबीर साहेब**	51,127,228,233	परम ग्रन्थ में
(14)	**सन्त नामा साहेब**	51,93,127,233	परम ग्रन्थ में
(15)	**सन्त तुलसी साहेब (हाथरस वाले)**	मूल लेख से उतार	संगतियों के मध्य में
(16)	**सन्त पीपा साहेब**	51,93,95,228,233	परम ग्रन्थ में
(17)	**सन्त धरमदास साहेब**	51,93,233	परम ग्रन्थ में
(18)	**सन्त मीरा साहेब**	95,127,228,233	परम ग्रन्थ में
(19)	**सन्त मंसूर साहेब**	1	परम ग्रन्थ में
(20)	**सन्त भागीरथ साहेब**	93,95,233	परम ग्रन्थ में
(21)	**सन्त दरगा साहेब**	93,95,233	परम ग्रन्थ में
(22)	**सन्त बालि साहेब**	मूल हस्तलेख से उतार	संगतियों के मध्य में
(23)	**सन्त धरनी साहेब**	95	परम ग्रन्थ में
(24)	**सन्त दरिया साहेब**	मूल लेख से उतार	**दरिया सागर व "कविता कोश" से**
(25)	**सन्त चन्द दास साहेब**	1,95	परम ग्रन्थ में
(26)	**सन्त चौधी साहेब**	1,233	परम ग्रन्थ में
(27)	सन्त लच्छन साहेब	मूल लेख से उतार	संगतियों के मध्य में
(28)	सन्त सधन साहेब	1,233	परम ग्रन्थ में

प्रकाशक एवं संकलनकर्ता



ठाकुर मदन सिंह (सुशील कुमार सिंह)

संचालक—समाधि सन्त मीता साहेब पुरवा जिला उन्नाव उत्तर प्रदेश

मूल निवास—ग्राम दीननगर पोस्ट हथौरा (राज्य) तहसील संडीला

जिला हरदोई उत्तर प्रदेश एरिया पिन कोड 241126

मोबाइल नं० 9936703354

E-mail : santmeetasaheb@gmail.com

यह सत्संग कार्यक्रम वीडियो और आडियो के माध्यम से निम्न यूट्यूब चैनलों पर उपलब्ध है, देखने के लिए यूट्यूब पर सर्च करें।

1. Satsang Sant Meeta Sahab, 2. Sant MEETA SAHEB Bani Bachan
3. Satsang Sant Meeta Saheb & his Tradition's Saints.

978-93-5627-017-6